प्रकाशक :—
विप्लव कार्यालय
लखनऊ

मुद्रक
साथी प्रेस
लखनऊ

समर्पण

कल्पना के चाँद को --

जिसे पाने का प्रयत्न

सतोष, सहस और सुख देता है।

'यशपाल

परिचय

परिचय के यह शब्द पुस्तक समाप्त हो जाने के बाद लिखे गये है परन्तु इन्हे आरम्भ मे दिया जा रहा है। रीति और उपयोगिता की दृष्टि से यही उचित भी जान पडता है।

लेखक यदि कलाकार भी है तो उस के प्रयत्न की सार्थकता समाज के दूसरे श्रमियो की भाँति कुछ उपयोगिता की सृष्टि करने मे ही है। उस के श्रम की उपयोगिता विकास द्वारा समाज को सामर्थ्य और पूर्णता की ओर ले जाने मे ही है।

लेखक के लिये समाज के अस्तित्व से स्वतंत्र कोई कल्पना कर सकना सम्भव नही। उस की कला या प्रयत्न का आधार समाज की अनुभूतिया, अकाक्षाये और आदर्श होते है। हमारी अनुभूति हमारे अनुभवो का सार होती है और हमारे आदर्श हमारी सवारी हुई कल्पनाएँ है। आदर्श के बिना हम जीवन की अकाक्षा और चेप्टा खो वैठेगे। आदर्श हमारे जीवन का लक्ष है परन्तु यथार्थ की हमारी अनुभूति भी कम महत्वपूर्ण नही है। वह असन्तोप और उसे दूर करने का उत्साह उत्पन्न कर आदर्श की सृष्टि करती है। आदर्श की तुलना मे यथार्थ अरुचिकर होगा ही वर्ना आदर्श की कल्पना और उस के लिये प्रयत्न ही क्यो किया जाय ?

यथार्थ से खिन्न होकर हम आदर्श की ओर वढना चाहते है। यथार्थ के अरुचिकर वीभत्स सत्य की नग्नता को प्रकट करके उस से मुक्ति की इच्छा को उत्कट और दुर्दमनीय वनाना आवश्यक होता है। हमारे यथार्थ का नग्न रूप अतृप्त 'शिष्णोदर' का चीत्कार भी है। वह श्रेणी सघर्प और राष्ट्रो के सघर्ष के रूप मे प्रकट होता है। वह जघन्य है परन्तु वह हमारी अपनी सामाजिक स्थिति की वास्तविकता है। हमारा साहित्य, कला, नैतिकता और न्याय इस अतृप्त शिष्णोदर की आवश्यकता की पूर्ति के व्यापक और रूपान्तरित प्रयत्न है। हमारी परम्परागत सुरुचि और सस्कृति उसे आवरण मे रख कर सतुष्ट है। जिन लोगो को सुरुचि और सस्कृति का अवसर और सौभाग्य प्राप्त नही है वे भी मनुष्य ही है। उनके चीत्कार को प्रकट करना क्या कला का कर्तव्य नही है।

मनुष्य के इस असंतोष को विश्वास और प्रवंचना से ढाँक देना मुक्ति का उपाय नहीं है। हमारा आदर्श समाज में ऐसी अवस्था प्राप्त करना है जिसमें मनुष्य शिश्नोदर की अतृप्ति और तृष्णा से पशु न बना रहे और मनुष्य-समाज श्रेणियों और राष्ट्रों के संघर्ष से ध्वंस न होता रहे !

समाज की उस अवस्था को आज 'कल्पना का चाँद' कह कर उसकी प्राप्ति के स्वप्न और प्रयत्न को केवल विडम्बना-मात्र कहा जा सकता है परन्तु यदि मनुष्य आत्म-विवेचन द्वारा अपनी शक्ति को पहचान ले तो?...... किसी दिन आकाश मार्ग से यात्रा कर सकना और देश भर के नागरिकों का स्वयं स्वामी और राजा बन जाना भी तो आकाश-कल्पना ही थी ?

हमारे वर्तमान जीवन का यथार्थ क्या है ?

क्या ऐसे समय में भी मिथ्या-विश्वास और प्रवंचना की पिनक में सन्तुष्ट रह सकना सम्भव है ?

सौन्दर्य और तृप्ति की अभिलाषा उत्पन्न कर देना एक काम है। सौन्दर्य और तृप्ति की स्मृति जगा कर सुख की अनुभूति उत्पन्न कर देना भी काम है परन्तु उससे बढ़ कर काम हो सकता है, सौंदर्य और तृप्ति के साधनों की उत्पत्ति और परिस्थिति के निर्माण के लिये भावना और संकेत द्वारा सहयोग देना। साहित्य का कलाकार केवल चारण बनकर सौंदर्य, पौरुष और तृप्ति की महिमा गाता रहकर ही अपने सामाजिक कर्तव्य को पूरा नहीं कर सकता। विकास और पूर्णता के सामाजिक प्रयत्न की इच्छा और उत्साह उत्पन्न करना और उस उत्साह को विवेक और विश्लेषण की प्रवृत्ति द्वारा सजग और सचेत रखने की भावना जगाना साहित्य के कलाकार का काम है।

अगले पृष्ठों में अपनी इसी धारणा को लेखक के कर्तव्य और अधिकार की दृष्टि से निबाहने का यत्न किया है। यही उस का परिचय है।

अनेक ज्ञातव्य विषयों में अनेक सहृदय सज्जनों से मुझे सहायता मिली है। इन सज्जनों और प्रकाशन कार्य में सहयोग देने वाले मित्रों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। अपने पाठकों को धन्यवाद देता हूँ जिन का प्रोत्साहन मेरे साहस का आधार है।

मई दिवस, ४३ — यशपाल

विप्लव, लखनऊ

परिष्कृत संस्करण

अजानी अँधेरी राह

अजानी अँधेरी राह पर उसे घसीटे लिये जा रहे थे। आँखो पर कपडा बँधा था, दोनो हाथ पीठ पीछे जकडे हुये, गले और कमर मे दाँये-बाये से फन्दे पडे थे। जो कुछ सुनाई पड रहा था, उस मे वह समझ सका, उस के आगे पीछे, अगल-बगल आदमियो के भारी-भारी चुस्त कदम पड रहे है।

उस के नगे पाँव सुन्न हो चुके थे। पाँवो के नीचे कङ्कर है या पत्थर, रेत है या धूल, समझ पाने लायक मस्तिष्क की अवस्था नही थी। कदम शिथिल हो जाने मे पीठ पर काठ की बोझल-सी वस्तु की चोट आ पडती। पाँव उखडने से वह दो-तीन कदम आगे लुढक जाता। उसे कहाँ ले जाया जा रहा है ?—यह प्रश्न मन मे उठे बिना ही वह अनुभव कर रहा था, किसी अज्ञात प्राणान्तक भय की ओर वह जा रहा है, जो आशा और कल्पना के क्षितिज से परे था, जहाँ निश्चय था केवल मृत्यु का। किसी भी रूप मे हो।

बहुत देर तक तेज चाल से चलते हुये सबल कदमो के गिरोह मे चुपचाप घसिटते चले जाने के बाद, उन कदमो के अनुकूल शरीरो के सबल कठ की सक्षिप्त बातचीत के शब्द उस के कानो मे पडने लगे। चोट और भय से धुधले मस्तिष्क मे स्मृति की अस्पष्ट-सी फूटने वाली चिनगारियो मे दीख पडने लगा, गहरी नीद मे एक प्रहार से जाग कर आँखो के सामने सहसा छुरा देख सहम जाना। वे भयानक रौद्र चेहरे, वे गोल-गोल चक्करदार बडी-बडी काली सफेद पगडियाँ, अँधेरे मे अस्पष्ट रूप से चमकती हुई आँखे, भिचे हुये दाँत, लाल, काली, भूरी छँटी हुई दाढियाँ, हाथो मे छुरे और कधो या बगल से झाँकती हुई बन्दूक की नलियाँ, कुछ गोलियाँ छूटने का शब्द। मोटे कपडे के चौडे कुरते, रगीन वास्कटे और सिलवारे। सबल कदमो की तेज चाल के कारण उनके ढीले मोटे कपडे फरफराते जा रहे थे। मुदी हुई आँखो से ही वह सब अनुभव कर रहा था, जैसे कोई महा भयकर दुस्वप्न देख रहा हो।

प्रत्यक्ष भय से बहुत अधिक भयकर स्वप्न की निस्सीम कल्पना की भाति इस भय की भी सीमा न थी। सचेत हो जाने पर जैसे स्वप्न के भय का अत हो जाता है, वैसे इस भय का अन्त न हुआ। प्रति क्षण वह निराशा मे बदलता जाता था।

शरीर की चेतना और इच्छा से चलने वाली शक्ति समाप्त हो चुकी थी। उस के साथ ही चेतना से अनुभव होने वाले भय की अनुभूति भी जड हो गई। केवल पीडा के अनुभव और भय से चौक कर शरीर अपने आप को खीचे लिये जा रहा था। जैसे मृत्यु का धक्का ही उसे ढकेलता जा रहा हो।

चढाई और उतराई मे ठोकर खा वह कई बार गिर पडा। ओठो और दाँतो मे निकल आये खून के नमकीन स्वाद से उसे जान पडा, रक्त आ गया है परन्तु निश्चय न था वह निरा रक्त ही है। माथे और कनपटियो से बह कर आने वाला पसीना भी हो सकता है परन्तु पीठ और कन्धो पर पडने वाली चोटो के विषय मे सन्देह न था। उनसे उस की चाल तेज हो जाती। कानो मे आने वाले शब्द से यह भी सूझ पड रहा था कि उस की भाति हाँके जाने वाले दूसरे जीव भी हैं। उन मे कुछ पशु भी हैं, जिनके सुमो की आहट, श्वास लेने का शब्द और पसीने की तीखी गध अनुभव हो रही थी।

मुलायम बिस्तर पर पडे गाढी नीद मे जाने कैसे यह वीभत्स स्वप्न आरभ हो गया और वास्तविकता मे परिणत हो समाप्त होने मे न आता था। जैसे गले और कमर मे पडे फन्दे का खिचाव और पीठ-कधो पर पडने वाली चोट सत्य थी, वैसे ही चल-चलकर जख्मी हो गये पैरो से निकलने वाली आग भी सच थी। वैसे ही चलना रुक कर पत्थरो पर बैठा दिया जाना और बहते पानी का कल-कल शब्द भी वास्तविक ही था। जल स भरे किसी बर्तन के होठो से आ लगने मे भी सन्देह न था। उस खूब ठण्डे जल को वह पेट भर पी गया। शरीर के निढाल होने के अनुभव के साथ ही मस्तिष्क मे बिजली-सी कौंद गई—क्या वह यात्रा की मजिल पर पहुँच गया ?

कुछ क्षण बैठ पाने पर धूप की गरमी अनुभव होकर सूर्य की किरणे माथे पर चुभने लगी। बहते जल का कल-कल शब्द अधिक स्पष्ट जान पडने लगा। पत्थरो पर खच्चरो की नालो का शब्द, शीतल जल मे उन का थिरकते होठो से फुफकार कर जल पीना, तृप्त हो आकाश की ओर मुख उठा कर कुछ हिनहिनाना यह सब उसे सुनाई देने लगा। स्थिति स्पष्ट हो गई, रात मे धावा बोल वजीरियो ने कैम्प लूट लिया था और उसे पकड कर वे भगाये लिये जा रहे हैं।

सीमान्त से वजीरियो द्वारा लूटमार और स्त्री-पुरुषो के उठा ले जाने की अनेक रोमान्धकारी कहानियाँ उसने सुनी थी परन्तु उसे कभी आशका न हुई थी कि तुत्ती मे शक्तिशाली ब्रिटिश-सेना के कैम्प से, कप्तान के ओहदे के फौजी डाक्टर को भी वजीरी विवश पशु की भाति हॉक ले जायगे। उसे मालूम था, वजीरिस्तान और मसूदी इलाको के पठान पेशावर, कोहाट और बन्नू से इस प्रकार लोगो को बाँध ले जाते है। उनकी रिहाई के लिये तावान पाकर वे उन लोगो को छोड देते हैं। उस की रिहाई के लिये तो ब्रिटिश-सेना, हजारो सिपाही, तोपे और हवाई जहाज मौजूद है परन्तु उस क्षण तो वह बिल्ली के पजे मे फँसे हुये जख्मी चूहे की भाति बेबस था।

आँखो पर बंधे कपडे की कोरो से मिलने वाले प्रकाश के आभास की भाति, मृत्यु और निराशा के घटाटोप अधकार मे रक्षा की सुदूर आशा झलकने लगी। मस्तिष्क ने सोचना शुरू किया—यदि ब्रिटिश सेना की शक्ति इन दुरूह पहाडो की छिपी खोहो मे उस का पता न भी पा सकी तो तावान देकर छूट जाना ही सम्भव है। तावान कहाँ से आयेगा ? तावान के विचार के साथ ही अपनी पत्नी राज की छवि और उस के साथ ही देहली मे अपना घर उस की मुदी हुई आँखो के सामने नाच गया। राज और स्वयम उस के बडे भाई उसे बचा लेने के लिये कुछ भी न उठा रखेगे। देहली से तुत्ती के लिये उसे विदा देते समय राज की आँखो मे छलक आये आँसू, उसका उदास पीला चेहरा, दर्द से फटते और चकराते दिमाग के सामने घूमने लगे। एक शब्द सुनाई दिया, जिसे वह समझ न सका। कमर पर एक ठोकर लगी। शायद यह उठ खडे होने के लिये इशारा था।

फिर ठेला जाना शुरू हुआ। वही अनेक मनुष्यो और पशुओ के चलने की आहट। विश्राम पा लेने से थकावट और कष्ट की अनुभूति और भी तीव्र हो गई। दिखाई न पडने वाला मार्ग अधिक बीहड होता जा रहा था। दुरूह चढाइयो और सकरी पगडण्डियो पर खच्चरो के शरीर के धक्के से वह अनेक बार गिरते-गिरते बचा। जानवर का सुम अपने नगे पाँव पर पड जाने की आशका से वह सिहर उठता। धूप से तपी चट्टानो पर चलना और भी कठिन हो गया। प्यास बार-बार लगने लगी। हाँफ-हाँफ कर उस के मुख से हताश पुकार निकल जाती—पानी ! पर उस ओर किसी का ध्यान न था। कदम शिथिल होने पर पीठ या कधे पर पडी चोट सकेत करती—बढे चलो ! उस की सज्ञा और चेतना घटती जा रही थी। घना कोहरा सा उसके मस्तिष्क मे

भरता जा रहा था। सहसा सब कुछ शून्य हो गया। वह मूर्छित होकर गिर पड़ा। मारने और घसीटने से भी उठते न देख कर उसे एक खच्चर पर टांग दिया गया और काफिला चलता गया।

कप्तान डाक्टर भगवानदास खन्ना की मूर्छा टूटी। उस समय उस की आँखो पर पट्टी न थी। भयभीत चकित दृष्टि चारो ओर फैला कर उसने देखा। उस का चेहरा भीग रहा था, सिरहाने बैठी एक बुढ़िया उस के मुह मे पानी की बूदे टपकाती जा रही थी और चेहरे पर छींटे दे रही थी। बुढ़िया ने पानी का बर्तन उस के होठो की ओर बढ़ाया। डाक्टर ने सिर उठा कर कुछ घूँट पिये और फिर लेट गया। उस के गले और कमर से फन्दा खुल चुका था। पीठ पीछे बँधे हाथ भी खुल गये थे परन्तु कलाइयो के बहुत कस कर इतनी देर बंधे रहने के कारण उँगलियाँ हिल न पाती थीं। बुढ़िया ने उस की कलाइयो पर पानी छोड दिया। डाक्टर पीड़ा मे छटपटा उठा।

डाक्टर एक लम्बे-चौडे सहन मे पड़ा था। चारो ओर नीची छतो के मकान बने थे, जिनके कोनो पर बाहर जाने की राह बनी थी। मकानो के सामने नीची खटिया पर दीर्घकाय पठान शिथिल भाव मे बैठे खा-पी रहे थे या हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। डाक्टर को सचेत होते देख उनका ध्यान उस ओर गया। उन के सिर और दाढ़िया हिलने से जान पड़ा वे सतुष्ट है।

काले-नीले कपडे पहने, सिर पर कलगीदार टोपी रखे, छोटे-छोटे बच्चे भय और विस्मय से गोल-गोल गाल, भूरी-नीली आंखे फैलाये, मैल से चितकबरे चेहरो पर गम्भीर मुद्रा लिये कुछ दूर खडे उसे देख रहे थे। खाने मे व्यस्त पठानो के लिये बडी-बडी रोटियाँ, मिट्टी के बर्तन मे खाने की दूसरी चीजे या पानी लाने वाली स्त्रियाँ भी काली-नीली चादर से माथा और चेहरा नाक तक ढके, कौतूहल भरी दृष्टि उसकी ओर डाल जाती। डाक्टर की दृष्टि जिस ओर भी जाती, सभी को अपनी ओर देखती पाती। उसने अपने सिरहाने बैठी बुढ़िया की ओर देखा। आँखे चार होने पर बुढ़िया ने सतोष से डाक्टर के सिर पर हाथ धर कर पूछा—'तबीयत खत ?" (अच्छा है) और पानी का बर्तन लिये वह एक ओर के घर मे चली गई।

अपनी ओर लगी आँखो से बचने के लिये वह उठकर करवट से बैठ गया। खाने-पीने मे लगे पठानो की ओर से दृष्टि हटा वह समीप ही बधे खच्चरो की ओर देखने लगा। मार्ग मे आँखे बँधी रहने पर भी खच्चरो के सुमो की सुनी आहट याद आ जाने से उसने अनुमान किया, वे भी उसी की तरह और उसके

साथ ही आये है। वे ताजे गाडे खूटो से बेतरतीब, बिना पिछाडी के बँधे थे। खच्चर अपनी काली पुतलियाँ और आँखो के श्वेत और लाल भाग को फैला, सतृष्ण दृष्टि से खाने-पीने मे लगे लोगो की ओर देख रहे थे। बृटिश सेना के इन जानवरो को अभ्यास था, किसी भी पडाव पर पहुँचते ही मनुष्य से पहले अपनी खातिर होते देखने का। उस दिन अपनी उपेक्षा के इस नये ढग से वे शायद विस्मित थे।

खच्चरो की ओर से हटकर उसकी दृष्टि सहन से ढलवान की ओर उतर जाने वाली गली मे गई। चट्टानो के पीछे कुछ बकरियाँ रूखी झाडियो के डण्ठल चबाने का यत्न कर रहा थी। नीचे ढलवान से कुछ पठान स्त्रियाँ काले कपडे के खूब ढीले, नीचे कुरते और मोरवो पर तग मिलवार, कानो और गले मे चाँदी का बहुत सा जेवर पहने, सिर पर पानी का घडा या कमर पर मशक लादे चली आ रही थी। वे उसकी ओर सकेत कर परस्पर बात करती आती परन्तु सहन मे कदम रखते ही मर्दो के अदब से सिर की चादर से नाक तक चेहरा ढक अपने घर मे जा घुसती।

पीठ पीछे से आहट सुन डाक्टर ने घूम कर देखा—वही बुढिया एक वडी सी रोटी, जिस पर शोर्वे की तरी के दाग और दो टुकडे मास के रखे थे, उसकी ओर वढा रही है। डाक्टर ने रोटी थाम ली और वह उसे खाने भी लगा। बुढिया ने खटिया पर से आधे पिये जल का बर्तन ले उसके समीप रख दिया। खाने-पीने मे लगे पठानो की ओर देखने का उसका सकोच दूर हो गया। स्वयम खा-पी कर पठान लोग वही खटिया पर बैठ हुक्के गुडगुडाने लगे। एक आदमी ने एक कूडे मे खच्चरो को जल पिला कुछ सूखा घास और भुट्टे के छिलके डाल दिये। सूर्यास्त तक डाक्टर वही बैठा रहा। नये-नये लोग आते और उसकी ओर देख वातचीत कर चले जाते।

रात पडने पर उसके सहन के किनारे की एक कोठरी मे उसे ले जाया गया। उसके दोनो पाँव एक काठ मे फँसा अजीब ढँग का एक ताला लगा दिया गया। नीचे बिछाने के लिये उसे घास की एक चटाई दी गई। काठ के एक छोर से बकरी के दो मेमने बँधे थे और दूसरी ओर दो बकरियाँ बँधी जुगाली कर रही थी। समीप ही खाट पर एक बूढा वजीरी दमे की खाँसी खाँसता हुआ कराह रहा था। मिट्टी के हुक्के मे लगी नेचे की निगाली उसके ओठो से छू रही थी। अर्धचेतन अवस्था मे भी वह नेचे को गुडगुडा कर अपने खबरदार रहने का सकेत कर देता।

काठ में जकड़े पाँवों की असुविधा, गाँजा मिले सूखे तम्बाकू की दम घोटने वाली गंध, बकरी के पेशाब की भभक और उनके श्वास से आने वाली बबूल की कसैली गंध, एक विचित्र सी जी मिचला देने वाली गंध से डाक्टर का सिर चकरा रहा था। मेमने कभी काठ पर चढ़ने-उतरने का खटका करने लगते, कभी मिमिया देते। दोनों पाँव काठ में जकड़े डाक्टर दिन ढला ही गाढ़ी नींद में सो गया। करवट लेने का यत्न करने पर पाँव काठ में फँसे होने के कारण नींद उचटी परन्तु वह शरीर को जैसे-तैसे साध कर फिर नींद में बेखबर हो गया। सर्दी लगने पर घुटने सिकोड़ने में असमर्थ वह स्वयं काठ की ओर खिसक गया।

नींद पूरी हो, कई प्रकार करवटें ले औंघाते रहने के बाद जब दिन का प्रकाश फैल गया और बकरियों को खोल कर बाहर निकाल दिया गया, डाक्टर ने विवश हो खाट पर बैठे बूढ़े को हाजत रफा करने की सुविधा के लिये संकेत किया। उसका अभिप्राय समझ, बूढ़े ने उसे प्रतीक्षा के लिये इशारा किया। कुछ देर में एक जवान कंधे पर बन्दूक रख, डाक्टर की कमर में रस्सी बाँध उसे प्राकृतिक आवश्यकता पूरी कराने का अवसर देने के लिये ले चला।

आँगन में रखे घड़े की ओर संकेत कर डाक्टर ने जल की आवश्यकता प्रकट की। जवान ने संकेत से पूछा—प्यास लगी है? डाक्टर के दूसरा अभिप्राय प्रकट करने पर जवान ने वितृष्णा से उसे आगे चलने के लिये धमका दिया। बिना किसी तर्क के डाक्टर समझ गया, यत्न से सिर पर ढोकर लाये जल को यों बरबाद करने की क्या आवश्यकता? परिस्थिति ने डाक्टर को यह भी समझा दिया कि बन्दूक लिये एक मनुष्य के उसकी ओर आँख लगाये रहने पर भी प्राकृतिक आवश्यकता को पूरा कर लेने में संकोच क्या?

वह समझ गया कमोड, साबुन, तौलिये और चिलमची के बिना भी जीवन चल सकता है। मोटे गद्दों, दूध-सी सफेद चादर, तकिये और मुलायम कम्बलों के बिना भी नींद आ जाती है। मेज, कुर्सी, सफेद चादर, स्फटिक के समान स्वच्छ प्लेटों और काँटा-छुरी के बिना भी भोजन पेट में चला जाता है। कैम्प में रहते एक बूँद भी बिना उबला और बिना छाना जल पेट में जाने से या मक्खी-मच्छरों के समीप आ जाने से उसे रोग की आशंका आ घेरती। रोग के कीटाणुओं को मारने वाली दवाइयाँ लाइसोल और कार्बोलिक लोशन उसके लिये अत्यन्त आवश्यक थीं। मन को स्वस्थ रखने के लिये लेवेण्डर जरूरी था परन्तु अब निरंतर बकरी के पेशाब और सेना के अस्तबल से भी मैले मकान में उसे रोग

के छूत की चिन्ता न रही। किसी प्रकार काठ से पाव छुड़ाने की चिन्ता ही उस के मस्तिष्क को घेरे थी।

वजीरी लोग लूट मे आये माल का लेखा-जोखा करने मे व्यस्त थे। कैम्प के हस्पताल से लाये गये कम्बलो, चादरो, दूसरे कपडो और रसद के ढेर अलग-अलग लगे थे। सतरियो से छीनी राइफले और कारतूस एक ओर रखे थे। दूसरी ओर खच्चर बँधे थे। बूढे और जवान बडे चाव से इन राइफलो की जाँच कर रहे थे। कोई उनकी नाल सूर्य की ओर उठा उनकी बनावट को देखता, कोई उनके कल-पुर्जे को। डाक्टर की समझ मे न आने वाली पश्तू मे खूब कहासुनी हो रही थी। प्रश्न था, माल की हिस्सा-बाँट का। वजीरी स्त्रियाँ ओढनी से माथा और नाक ढके पानी लाने और दूसरे काम मे लगी थी। उन्हे इस सब व्यापार से कोई सम्बन्ध न था। आठ-दस अधनगे बच्चे हाथ मे थमे रोटी के टुकडे चबाते इधर-उधर घूम रहे थे। वे खच्चरो पर ककर फेक तमाशा देखना चाहते। खच्चर बिजुक कर दुलत्ती झाडने लगते इससे वजीरियो की बातचीत मे विघ्न पड जाता। कभी डाक्टर की ओर आकर्षित होने पर, बच्चे उस पर भी ककर फेक तमाशा देखना चाहते। डाक्टर अपनी बेबसी मे उन्हे पुचकार कर बचने का यत्न करता परन्तु फल कुछ न होता। बच्चो की शरारत से परेशान हो लाल दाढी वाले एक पठान ने उनके गालो और पीठ पर धौल जमाने शुरू किये। बच्चो के भाग जाने पर डाक्टर को ककरो की मार से तो छुटकारा मिला पर वह भूख मे छटपटा रहा था। सूर्य के मध्याकाश से उतर जाने पर भी बँटवारे मे व्यस्त वजीरियो को खाने की चिन्ता न थी।

तीसरा पहर समाप्त होते-होते खूब शोरगुल और चख-चख के बीच सामान के ढेर बँट-बँटा कर उठ गये। खच्चर भी एक-एक कर चले गये। खच्चर अकेले घसीटे जाने पर पाव पटक और पिछाडी झाड़ अकेले ले जाये जाने का विरोध करते। बाद मे अकेला रह जाने वाला खच्चर घबराने लगा। उसके भी चले जाने पर रह गया अकेला डाक्टर, अपने साथ से बिछुडा हुआ, निस्सहाय अदृश्य भय की आशका करता हुआ।

लूट के सामान का बँटवारा समाप्त कर वजीरी हुक्का ले डाक्टर के चारो ओर आ बैठे। डाक्टर का हृदय आशका से मुह को आने लगा—जाने उसके भाग्य मे क्या होने को है ?

कुछ देर आपस मे परामर्श कर चुकने के बाद गिरोह के प्रतिनिधि के

रूप मे एक अधेड वजीरी ने डाक्टर से प्रश्न किया—

"तुम क्या आदमी है ?"

"डाक्टर !" डाक्टर ने उत्तर दिया।

"तुम्हारा गर किधर है ? तुम इन्दू है कि मुसलमीन ?"

डाक्टर ने बताया उसका घर देहली मे है। वह हिन्दू है। सुनने वालो के चेहरे की ओर देख डाक्टर समझ गया कि अधिकाश वजीरी उस की बात समझ गये।

अधेड पठान ने प्रश्न किया—"तुम पैसा वाला आदमी है ?" वजीरी लोग डाक्टर के शरीर पर रात मे पहनने के रेशमी कपडो (नाइट सूट) और उस की उँगली मे सोने की अगूठी को ध्यान से देख रहे थे। डाक्टर कुछ उत्तर न दे सका। अधेड वजीरी ने समझाया, "तुम चीटी लिखेगा अपने आदमी को। हम को तुम्हारा फिदिया मिलने से तुम को बन्नू, कोहाट, डेरा इस्मीलखाँ जहा बोलेगा, छोड देगा। नही हम तुमको गजनी मे बेच देगा।"

आत्मरक्षा की प्रवृत्ति ने डाक्टर को सुझाया, उस के शरीर का जितना अधिक मूल्य पा सकने की आशा यह बर्बर लोग करेगे, उतनी ही रक्षा और चिन्ता उस के शरीर की की जायगी। वह सोच ही रहा था कि वजीरी ने फिर प्रश्न किया—"तुम कितना रुपया कमाता ?"

"मै फौज मे डाक्टर हूँ !" डाक्टर ने उत्तर दिया, "मेरी तनख्वाह आठ सौ रुपया माहवार है।"

"आठ सौ ?" कई वजीरियो ने विस्मय से आँखे फैला कर दोहराया। समझ न सकने वालो ने प्रश्नात्मक दृष्टि से विस्मय प्रकट करने वालो की ओर देखा। उन्होने दोनो हाथो की चार-चार उँगलियाँ खडी कर अपनी भाषा मे दोहराया, "हफ्त सद रुपिया मही !"

वजीरी फिर आपस मे बहस करने लगे। उत्साह से बातचीत का स्वर ऊँचा हो गया। कुछ देर आपस मे बहस कर चुकने के बाद अधेड वजीरी ने चार उँगलियाँ दिखाकर कहा—"चार हजार रुपिया मिलने से चोडेगा। तुम्हारा घर मे बहुत रुपिया। हम लोग गरीब हैं। तुम चार हजार रुपिया हमारा आदमी को देने को लिखेगा। रुपिया मिलने से तुमको चोडेगा।"

अधीनता के स्वर मे डाक्टर ने पूछा—"हम यहाँ से चिट्ठी कैसे भेजेगा ?"

वजीरी ने समझाया—"इधर बन्नू, कोहाट, डेरा इस्मीलखाँ, पेशावर मे तुम्हारा कोई आदमी है, उस को लिखो !"

निराशा से डाक्टर ने कहा—"इन जगहो मे उस का कोई नही। उसका घर देहली मे है। रुपये के लिये वह वही लिख सकता है, वन्नू छावनी मे सरकारी दफ्तर को लिखने से तो रुपया मिलेगा नही।"

वजीरी फिर आपस मे बहस करने लगे। डाक्टर मन मे कल्पना करने लगा—उसके जीवन का मूल्य केवल चार हजार ! यदि किसी प्रकार राज या उसके भाई तक खबर भर पहुच सके तो वे चार नही चालीस हजार अदा कर उसे छुडा लेगे। सब कुछ कुर्बान करके भी यदि किसी तरह एक बार फासी के इस फदे से वह छूट सके तो अपनी राज को लेकर वह गरीबी मे भी सतोप मे दिन बिता कृतार्थ हो जायगा।

डाक्टर ने देखा, शेष वजीरी चुप हो गये। उनमे से केवल एक जानकारी के अधिकार मे बोल रहा है। वन्नू और तुत्ती मे दो मास रहकर जो शब्द पश्तू के उसने समझे थे और अधिकाँश कल्पना की सहायता से वह समझा कि विज्ञ पठान अपने साथियो को समझा रहा है, इस मामले मे रुपया मिलना कठिन है। डाक्टर सरकार का अफसर नौकर है। सरकार अपने आदमी की रिहाई के लिये रुपया कभी नही देगी। चार हजार नही, चार लाख बल्कि चालीस लाख रुपया खर्च कर फौज-फाटा, तोपे और हवाई जहाज ले अपने आदमी के लिये लडाई लडेगी पर चार हजार क्या चार रुपिया नही देगी। अग्रेजी सरकार ऐसी ही बेवकूफ है। बकरे का कान भेडिया पकड लेगा तो कान नही काट देगी बल्कि भेडिया पकडने के लिये गोल के गोल बकरियो के कटा देगी। इस आदमी को गजनी मे बेच देने के सिवा चारा नही।

किस्मत की ठोकर से और भी दूर किसी अज्ञान स्थान मे जा पहुचने की आशका से डाक्टर ने गिडगिडाकर अधेड वजीरी को समझाया कि उसका पत्र देहली के पते पर डलवा देने से बहुत जल्दी चार हजार रुपया, जहाँ वे चाहेगे पहुच जायगा।

कुछ देर बहस होने के बाद तय पाया कि चार हजार रुपया बहुत होता है। वन्नू के किसी मातबर आदमी से डाक्टर की चिट्ठी देहली भिजवा कर तीन महीने तक रुपया आने की प्रतीक्षा की जाय वर्ना जिस मोल हो, उसे गजनी मे बेच रुपया बाँट लिया जाय।

काठ मे पाव फसे बैठे-बैठे डाक्टर की यह अवस्था हो गई कि छालो से घाव बनने लगे और बैठ पाना असम्भव हो गया। कभी वह दायाँ घुटना मोड इस करवट लेटता और कभी बाया घुटना मोड उस करवट। करवटो से

लेटे-लेटे कूल्हे दुखने लगे। नींद और भूख दोनों जाती रही। जान पड़ता, ज्वर से शरीर टूटा जा रहा है, चेहरे पर मक्खियाँ भिनभिनाने लगी।

वह सोचता, जब तक देहली से चार हजार रुपया आयेगा, शरीर घावों से भर जायगा, उनमें कीड़े पड़ जायँगे और जीवन-शक्ति नष्ट होकर वह निर्जीव हो जायगा। कल्पना में वह देखने लगता, काला रंग घोल, अखबार के फटे कागज पर लिखे पत्र से उसकी अवस्था जान राज किस प्रकार मलिन और बदहवास हो उठेगी। आसू भरे, बाल खोले राज की विक्षिप्त मूर्ति उसकी आँखो के सामने आ खड़ी होती।

वह सोचने लगता—यदि उसके भाग्य से उसका पत्र देहली में भाई साहब और राज के हाथों तक पहुँच ही न पाये तो उसे यों ही सड़-सड़ कर कीड़ों का भोजन बन जाना पड़ेगा और तब किसी प्रकार उसके मर जाने की खबर राज सुने ... । इस कल्पना से उसे राज की विधवा वेश में विलखती मूर्ति दिखाई देने लगती। दारुण कल्पना से बचने के लिये वह कुछ और सोचने का यत्न करता परन्तु फिर ख्याल आने लगता, यदि किसी भी प्रकार का कोई भी समाचार राज तक पहुँचे ही न, तो बेचारी अनन्त प्रतीक्षा में आँखें खोले बैठी रहेगी। उसके नेत्रों की ज्योति मंद हो जायगी और केश श्वेत ... । शरीर के किसी भाग में उठने वाला दर्द उसे कल्पना से वास्तविकता की ओर खींच लाता जो कल्पना से भी भयंकर था।

बूढ़ा जमानगुल अपनी खटिया पर लेटे-लेटे बेवा गुड़गुड़ाते डाक्टर पर पहरा देता रहता। बढ़े हुये दमे के कारण और कोई काम कर सकना उसके लिये सम्भव न था। डाक्टर गिड़गिड़ाकर कुछ समय के लिये काठ से निकाल देने की प्रार्थना करता। जमान खासते-खासते उत्तर देता—"तरनटो दिल' (भाग जाना चाहता है?) और करवट बदल खांसने लगता।

दमे के एक भयंकर दौरे में जमान ने डाक्टर से कहा—"कोई इलाज तकलीफ का करो। तुम तो बहुत बड़ा डाक्टर है।" डाक्टर ने विश्वास दिलाया, काठ से छूटने पर वह इलाज कर सकता है।

जमान ने अपने साथियों को समझाया—इस आदमी को यों काठ में फँसाकर बैठा रखने से लाभ क्या? वह पड़ा-पड़ा सड़ रहा है। अगर चिट्ठिया का रुपया न आया तो ऐसी हालत में उसे गजनी के बाजार में बेचने पर कौड़ी मोल वसूल न होगा। कमबख्त को यों बैठा कर खिलाने से फायदा? उस से कुछ काम ही लो। वह खेत में गुडाई कर सकता है, बकरी चरा सकता है,

पानी ही भरेगा और फिर डाक्टर है। मैं बीमार हूँ, रहीमगुल की बीवी बीमार है, हबीब का लडका बीमार है। यह इन लोगो का इलाज ही करे।

रहीम और हबीब ने जमान का समर्थन किया परन्तु लाल दाढी वाले बुड्ढे वजीरी ने शका की—"अगर भाग गया तो ? आखिर दो हाथ-पैर का इन्सान है ? एक दफे पेशावर की छावनी से लूट कर लाया घोडा जामाहाई से भाग गया था तो सीधा पेशावर जा पहुचा। यह तो इन्सान है, फिर पढा-लिखा। ताज्जुब नही जादू भी जानता हो।"

जमान ने खाँसते-खाँसते समझाया—"जादू जानता तो क्या मुझ से छिपा रहता ? मै रात भर एक आँख से देखा करता हूँ। जादू जानता तो कभी रात मे भेड या बकरी, या दिन मे ही चील बन काठ से उडारी भर जाता तो कौन पकड लेता ? यो पडे-पडे सड जायगा तो पाँच-छः सौ की रकम पर पानी फिर जायगा। आदमी है कुछ तो काम आये। जानवर होता तो खाने के ही काम आता। भागेगा कैसे ? मैं क्या मर गया हूँ ? आधा मील तक तो इस बुढापे मे भी निशाना नही चूक सकता, और फिर काफिर के पाँव आग से ऐसा दाग दूगा कि बस काम लायक आहिस्ता-आहिस्ता चल सके।"

डाक्टर के पाँव दाग दिये गये। वह काठ से छूट गया। हबीब ने अपने बीमार बेटे को लाकर उसे दिखाया। लडके को अतिसार का रोग था। उस का पेट टटोल और अनेक प्रश्न पूछ डाक्टर ने एक कागज पर खूब सोचकर नुसखा लिख दिया। उसे आशा थी, उस की दवाई से बीमारो को लाभ होने पर उस की कद्र होने लगेगी और उसे कुछ आराम मिलेगा।

तीन-चार दिन बाद हबीब ने शिकायत की—लडके को कुछ लाभ नही हुआ।

डाक्टर ने पूछा—"दवाई कहाँ दी ?"

लडके की गर्दन से लटकती एक गाँठ दिखा। हबीब ने उत्तर दिया—"यह देखो तुम्हारा तावीज पहना तो दिया।"

डाक्टर न समझाया—"यह तावीज नही। इसमे दवाई का नाम लिखा है। किसी बाजार से शीशी मे लाकर लडके को खिलाओ।"

क्रोध मे लडके के गले का तावीज झटकते हुये हबीब बोला—"तो इस कागज को हम क्या करेगा ? तुम दवाई दो।" डाक्टर ने विवशता प्रकट की, "जब सामान यहाँ नही तो दवाई कैसे बनाऊँ ?"

इससे पहले कबीले की हिकमत (चिकित्सा) लाल दाढीवाला करीमगुल

करता था। कबीले भर मे वह सब से दानिशमन्द और पढा-लिखा समझा जाता। अपने इस प्रतिद्वन्दी की ओर ईर्ष्यापूर्ण कौतूहल से देखकर उसने कहा—"जब दवाई दूसरा बनायेगा तो तुम क्या करोगे ? सामान क्या नही ? सब कुछ तो है। जडी-बूटी, मुर्गे का पर, मकडी का जाला सब कुछ है। तुम दवाई बनाओ।"

करीम की बात सुन कर अविश्वास से डाक्टर की ओर देख हबीब अपने लड़के को लौटा ले गया।

रहीमगुल की बीवी को महीनो से खाँसी आती थी। उसे हल्का-हल्का पसीना छूटता, गले मे दर्द रहता और बदन टूटता रहता। वह सूख कर काँटा हो गई थी। रहीम ने हाल सुनाकर दवाई माँगी।

डाक्टर ने कहा—"बीमार को अच्छी तरह जाँचे बिना वह दवाई कैसे दे ?"

रहीम बीवी को साथ लेते आया था। उस ने कहा—"सामने बैठी तो है।"

डाक्टर ने समझाया—"वह बीमार के सीने और फेफडो को टटोल कर देखेगा फिर दवाई बतायेगा।"

डाक्टर की बेहूदा बात से लोग नाराज हो गये। अपनी औरत का बदन खोल कर देखे जाने की बात से रहीम की आँखो मे खून उतर आया। उसके दिल मे आया कि बेईमान का सिर काट ले परन्तु लोगो के बीच-बचाव कर देने से वह छुरा म्यान से न निकाल सका।

करीम ने अपनी दाढी पकडकर गम्भीरता से समझाया—"बेसमझ काफिर की बात का बुरा क्या मानना ? वह बदनीयत नही। यह लोग न शरह जानते हैं न हदीस। इखलाक नही होता इन लोगो मे। औरत मर्द मे पर्दा नही होता। बेसमझ है इसलिये ऐसी बात कह गया। यह साला नामर्द, औरत के एक थप्पड की मार तो है नही। बदनीयती क्या करेगा ?

रहीम के दोस्त ने गुस्से मे घूसा बाँध कर डाक्टर को पीर की गाली देकर कहा—"कहता है, बहुत पढा है ? तीन ही तो किताबे हैं, कुरान मजीद, शरह और हदीस। यह पढा नही तो हरामजादा हिकमत क्या करेगा ?" क्रोध मे उसने डाक्टर की ओर देख थूक दिया।

करीम ने विद्वतापूर्ण ढग से समझाना शुरु किया—"काफिर लोग सच्चा इल्म नही जानते। वे शैतान का कुफ्र पढते है इसलिये खुदावंद करीम की इन पर मार है। तभी तो फिरगी की इतनी बडी तोप से वजीरी को चोट नही लग सकती। इन की बन्दूक की गोली हवा मे ठडी हो जाती है। इतनी बडी

सल्तनत काफिर की है, लेकिन वजीरी का बाल नही बाँका कर सकता।"

करीम की बात समझ मे आ जाने से वजीरी सतोष से हस दिये। डाक्टर की जान बच गई। वह भय से काँप रहा था, कही उसे फिर से काठ मे न जकड दिया जाय। उस का वह भय दूर हो गया जब करीम ने अपनी लाल दाढी खुजा कर कहा—"इस साले नामर्द को बैठा कर खिलाने से क्या फायदा? इसे कोडे लगा कर काम लो। खेतो मे भेजा करो, पानी लाये, मक्का दो, पीसा करेगा।"

अपने आचार के प्रति लाछन सुनकर डाक्टर सोचने लगा—आदमी जितना जाहिल रहता है, उतना ही अधिक अभिमान और भरोसा उसे अपने आचार का होता है। स्वय उसके अपने घर मे योरुप के आचार को अनाचार समझते थे। अब आचार और अनाचर का एक नया ही नकशा उसके सामने पेश हुआ। जिसमें पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण की दिशा दूसरी ही थी। तुत्ती मे जब वह वर्दी पहन कर निकलता, मैले चीथडो मे लिपटे पठान उसके लिये राह छोड एक ओर हो जाते। यहाँ 'अजवाई' मे हर एक आने-जाने वाले को वह मुस्कराकर सलाम करता। वह यत्न करता, सब उससे प्रसन्न रहे। उस के विचित्र पश्तू उच्चारण पर हँसने के लिये छोकरे उसे देखते ही पूछते—"तबिहत खत?" (कैसा हाल है) और वह हँसकर उत्तर देता—"खैरयुस?" (सब ठीक है) पश्तू के शब्द ठीक से बोल पाने पर उसे वैसा ही सतोष होता जैसा बचपन मे टूटी-फूटी अग्रेजी बोल पाने पर होता था। अग्रेजो की तरह अंग्रेजी बोल पाने और अपने को सभ्य समझने का अभिमान पश्तू ठीक से न बोल पाने की असफलता मे डूब गया।

डाक्टर के पैरो के घाव भरने लगते तो जमान उन्हे फिर से दाग देता। उसने सीखी थी घाव ठीक करने की विद्या। यहाँ उसने देखा, घाव बनाने का इल्म। पैरो मे चीथडे लपेट, लँगडा-लँगडा कर लकडी के सहारे चल सकना ही उसके लिये सम्भव था। यह तमाशा देखने के लिये बच्चे प्राय उसकी लाठी छीन दूर खडे हो जाते। तब दोनो बाहे फैला, धीरे-धीरे पैर उठा कर उस का चलना भालू के नाच जैसा मालूम पडने लगता। उस की अवस्था देख बूढे जवान भी हँसने लगते। अपनी असहाय अवस्था के प्रति दूसरो को हँसते देख कर भी क्रोध प्रकट करना उसके लिये सम्भव न था।

डाक्टर के हाथ मे लाठी लिये और दूसरे हाथ से कधे पर पानी का घडा सम्भाले, धीमी चाल से चलने पर द्रुत-गति से चलती वजीरी स्त्रियाँ और

लडकियाँ कनखियो से हँस देती। कुदाल से खेत मे काफी जमीन न खोद पाने पर मर्द उस का मजाक उडाते। वे कहते स्त्रियो से भी गया बीता यह मर्द किस काम का, जो पानी नही ढो सकता, जमीन नही खोद सकता, लकडी नही काट सकता, चढाई-उतराई पर चलता है तो जैसे गाभिन औरत! बन्दूक लेकर वह लडेगा क्या? इस आदमी को फिरगी आठ सौ रुपया महीना देते थे! फिरगी को रुपया बनाने की मशीन शैतान ने दी है। रुपये के लिये उसे मेहनत नही करनी पडती। वह कागज का रुपया बना देता है।

डाक्टर के विषय मे चर्चा होने पर करीम कहता—"काफिरो के मुल्क मे शैतान का राज है। वहाँ दो तरह के आदमी है, एक काम करने वाले, दूसरे खाने वाले। मेहनत करने वाले खूब मेहनत करते है और कमा कर आराम से रहने वालो को दे देते है। सब रुपया आराम करने वाले रखते है। मेहनत करने वालो को थोड़ा-थोडा खाने को देते है कि वह मोटे होकर काम करना बन्द न कर दे। यह डाक्टर आराम करने वाला है न? देखो, इस के हाथ-पैर! जैसे खान के घर की बेगम हो। इसने कभी काम थोडे ही किया है। इसी से कुछ कर नही पाता। यह अफसर था न! सिपाही लडते है और अच्छा कपडा पहन कर सलाम लेते है। डाक्टर इन बातो को लज्जा और विस्मय के विचित्र भाव से सुनता और सोचने लगता—क्या मेरा पत्र राज के पास अभी तक न पहुँचा होगा?

कभी वह वजीरियो को चिन्तित भाव से अग्रेजी फौज के हमले की बात करते सुनता। वजीरी उपेक्षा से कहते, अग्रेजी फौज अगर धावा कर भी देगी तो क्या? अपना अनाज गुफाओ मे छिपा, जानवरो को हाँक चल देगे। ऐसा क्या पहले कभी नही हुआ? करीमगुल कहता—और कुछ नही इस काफिर को चार महीने से खिला-पिला रहे है। इस की कौडी वसूल न होगी, यो ही काट कर कुत्तो को डाल देना पडेगा।

भय से डाक्टर के रोये खडे हो जाते परन्तु वह देहली से पत्र आने की प्रतीक्षा के सिवा और कर क्या सकता था? वह तन्मय हो भगवान से प्रार्थना करता, अग्रेजी फोज उस ओर न आये और भगवान उस की सुध ले। कभी वह सोचता अग्रेजी सेना उसके गाँव की ओर नही बढ रही, यही शायद भगवान की दया है परन्तु करीम का कहना था—"खुदावद करीम काफिरो से नाराज है इसलिये फिरगी उन के गाँव की ओर मुह नही कर सकते।

डाक्टर सोचता, ससार के जिस भाग मे भाग्य से वह पहुँच गया है, वहाँ

भगवान का रूप और उस के नियम शायद दूसरे ही हैं।

पाँच मास समाप्त होते-होते कबीले के एक वजीरी ने बन्नू से लौट समाचार दिया, अंग्रेजी फौजे लौट गयी और तुरगजई के हाजी जिहाद बन्द कर इबादत के लिये गुफा मे चले गये है। बन्नू से ऊँची मसजिद के मुल्ला ने देहली जाने वाले एक आदमी के हाथ डाक्टर की चिट्ठी भेज दी थी। उस का कोई उत्तर नही आया।

निराशा से डाक्टर का माथा झुक गया, अब आगे क्या ?



समय का प्रवाह

चुनाव के झंझट के कारण बद्री बाबू कई दिन से बहुत परेशान थे। पिछले पाँच वर्ष से अपना सब समय लगा कर उन्हो ने देहली मे काँग्रेस को सगठित किया था। वही काग्रेस उन के दल के हाथ से निकली जा रही थी। सरकार के खिलाफ लडना उतना कठिन न था, जितना भीतरी शत्रुओ मे! काँग्रेस का नियत्रण दूसरे दल के हाथ मे चले जाने का अर्थ था, उनका और उन के दल का प्रभाव जनता पर से हट जाना। बद्रीबाबू की दृष्टि मे यह बात अपने दल और काँग्रेस के महान उद्देश्य के लिये घातक थी। पिछले वर्षो मे उनका कोई प्रतिद्वन्दी चुनाव के मैदान मे न था। व्यक्ति-गत प्रश्न को ले कर उन के सामने खडे होने की सामर्थ्य किसी मे न थी। कौन नही जानता कि पिछले पाँच वर्षो मे उन्होने अपने कारोबार को एक ओर छोड कर दिन और रात परिश्रम कर, प्रकट और गुप्त उपायो से काँग्रेस को जिन्दा रखने का यत्न किया है। जेल जाने से वे कभी कतराये नही। कभी किसी व्यक्तिगत या आर्थिक लाभ की अ। उन्होने नही की।

बद्री बाबू के घर लोहे का पुराना पुश्तैनी कारोबार था। रुपया पैदा करने की ओर यदि वे ध्यान देते तो बहुत कुछ कर सकते थे। पाँच वर्ष पहिले चढती जवानी मे उनकी स्त्री का देहान्त हो जाने पर बडे-बडे घरो से विवाह की बात उठी परन्तु उन्होने विवाह न किया। उन्हो ने अपना जीवन देश और जनता की सेवा के लिये अर्पण कर दिया था। जनता ऐसे व्यक्ति का विश्वास और आदर कैसे न करती? खद्दर का सफेद कुर्ता और धोती, सिर पर गाधी टोपी, पैर में चप्पल पहने गोरे चेहरे पर नम्र मुस्कराहट लिये बद्री बाबू को देहली मे कौन नही पहचानता था। अपने घर और अपने आपको भूल कर वे शहर भर के अपने हो गये थे। किसी भी बाजार और गली से निकलते समय उन के दोनो हाथ जनता के सम्मान का उत्तर देने के लिये निरन्तर उठते रहते।

अपनी पारिवारिक और आर्थिक स्थिति के कारण उनकी पहुच सब कही थी। कोई भी सस्था धन के बिना नही चल सकती। अपने प्रति विश्वास और प्रतिष्ठा के कारण धन एकत्र करने मे उन्हे कभी कठिनाई नही हुई। जिस किसी के आगे कॉंग्रेस और जनता की सेवा के नाम पर उन्होने झोली फैलाई, इनकार करने की हिम्मत उसे न हुई। काग्रेस के कार्यकर्ताओ को उन पर भरोसा था कि उनके जेल चले जाने पर वद्री वावू उनके परिवार को न भूलेगे।

परन्तु उस वर्ष चुनाव मे परेशानी पैदा हो गई। व्यक्तिगत प्रश्न पर नही, सिद्धान्त के नाम पर। कपडा मिल के मजदूरो की हडताल के वाद से निम्न मध्यम वर्ग के कुछ कार्यकर्त्ता काग्रेस मे मजदूरो और नौकरी पेशा लोगो की शक्ति वढा कर कॉंग्रेस के कार्यक्रम मे आर्थिक पहलू पर जोर देने का यत्न करने लगे थे। किसी भी नई और उग्र जान पडने वाली वात की ओर नौजवानो की प्रवृत्ति स्वाभाविक हो जाती है। इनके साथ मिल गये कुछ विद्यार्थी। जलूस निकाल कर किसान-मजदूर राज और पूंजीवाद के नाश के नारे लगाये जाने लगे। इन लोगो का यत्न था, कॉंग्रेस के चुनाव मे उनके विचार के लोग प्रतिनिधि चुने जाय और कॉंग्रेस स्वराज्य की लडाई को समाजवादी विचार-धारा के अनुसार लडे।

इन नौजवानो ने समाजवादी दल कायम कर लिया। काग्रेस का वामपक्ष वन कर स्वतत्रता और साम्राज्यवाद के विरोध की लडाई को अग्रसर करने के लिये वे उसकी हरावल बन बैठे। जनता की समस्याओ को उठाने के लिये उन्होने वाजार-मजदूरो और मिल-मजदूरो के सगठन वनाने आरम्भ किये। देहली मे इस दल का नेता था शिवनाथ।

सार्वजनिक सेवा के किसी पूर्व इतिहास के बिना ही शिवनाथ देहली के राजनैनिक आकाश में धूम्रकेत की भॉति चमक उठा था। देश-सेवा और त्याग का प्रमाण-पत्र उसके पास था—वम केस मे चार वर्ष जेल की सजा। राजनैतिक अपराध मे लाठी की मार खाने और जेल की सजा पाने वालो की सख्या देहली मे सैकडो-हजारो थी परन्तु शिवनाथ जेल गया था, जान की वाजी लगा, वम वनाने के अपराध मे। उसकी सजा ओर रिहाई का हाल मोटे-मोटे अक्षरो मे सभी अखबारो ने छापा था। उसके साहस और त्याग को जनता कैसे स्वीकार न करती? देहली मे उसे कोई भी न जानता था परन्तु १९३२ मे वम बनाने के अभियोग मे गिरफ्तार होकर उसने अदालत मे साहस से बयान दिया था कि वम उसने जनता पर लाठी चार्ज करने और गोली चलाने का बदला

लेने के लिये तैयार किया था। उसके इस बयान से बिजली का बटन दबा देने मे उस का नाम सहसा रोशन हो गया था। वही शिवनाथ बद्री बाबू के दल का प्रतिद्वन्द्वी बन बैठा था। शिवनाथ की सहायता उन्होंने की थी वही उनके विरुद्ध जा रही थी।

× × ×

शिवनाथ के पिता मुशी रामचरन ने अपनी आयु के पैंतीस वर्ष डाकखाने की नौकरी मे बिताये थे। गरीबी के कारण उम्र भर नौकरी करने के बाद बुढ़ापे मे पेंशन पा वे और भी गरीब हो गये। उम्र भर की कमाई से वे अपने छोटे से पुश्तैनी मकान को नये सिरे मे बनवा पाये थे। मकान के एक भाग मे स्वय रहते। दूसरे को उन्होंने किराये पर उठा दिया। शिवनाथ बी० ए० पास कर चुका था। अच्छी नौकरी न मिल सकने के कारण जैसे-तैसे वकालत की परीक्षा पास करने की धुन मे था। पिता को आशा थी, लडका मेहनती है, इम्तहान पास कर कुछ कर ही लेगा, घर की गरीबी दूर हो जायगी, लडकी का ब्याह ढग से हो जायगा। पिता की चिरपोषित आशा पर पानी फेर कर शिवनाथ बम बनाने के अपराध मे जेल चला गया।

१९३१ मे कांग्रेस आन्दोलन में उत्साह भरने के लिये बद्री बाबू ने कालिज के विद्यार्थियो को आन्दोलन की ओर आकर्षित करने का यत्न किया। शिवनाथ भी उस मे भाग लेना चाहता था परन्तु पिता की नाराजगी के भय से उसे प्रदर्शन और जुलूस मे दूर रहना पडता। स्वराज्य के आन्दोलन और देश सेवा के प्रति प्रबल अनुराग होने पर भी वह बेबस था।

भगवानदास खन्ना शिवनाथ का पुराना मित्र और सहपाठी था। दोनो की आर्थिक अवस्था मे बहुत अन्तर होने पर भी आयु और विचारो मे समानता थी। दोनो एक साथ आर्य समाज के जुलूसो मे भजन गाने जाते थे। एक साथ सेवा समिति के मेम्बर बने थे। दोनो एफ० ए० तक देहली मे एक साथ पढे थे। इस के बाद खन्ना डाक्टरी पढने लाहौर चला गया। गरमी की छुट्टी मे खन्ना के देहली आने पर दोनो की खूब घुटती। राजनैनिक आन्दोलन मे भाग न ले सकने पर भी शिवनाथ उस विषय पर खन्ना से बहस करता रहता। उस ने बताया, कालेज के कई लडके आन्दोलन मे भाग लेकर गिरफ्तार हो गये है। अपनी बेबसी प्रकट कर उसने कहा—"वह भी कुछ करना चाहता है परन्तु घर की अवस्था कुछ करने नही देती।"

शिवनाथ की यह बात खन्ना पर भी लागू थी। मित्र की बात के समर्थन मे उसने कहा—"हाँ""जब यहाँ यह सब कुछ हो रहा है, मै दूर लाहौर मे पडा हूँ। मैडिकल कालिज मे भरती हो जाना भी एक मुसीबत है। यहाँ कालिज मे जाकर ऐसा जान पडता है कि पूरा डाक्टर बने बिना और कुछ हो ही नही सकता।" पहले के अनेक प्रसगो के आधार पर इस अधूरी बातचीत का अर्थ एक दूसरे के लिये स्पष्ट था—एक दबी हुई इच्छा जो परिस्थितियो के कारण सिर नही उठा सकती थी।

जुलूस मे सम्मिलित होने का इरादा न होने पर भी खन्ना और शिवनाथ हृदय मे दबी सहानुभूति के कारण उसे देखने के लिये सडक के किनारे की पटरी पर खडे थे। चाँदनी चौक मे फव्वारे के पास लाठी-बन्द और हथियार-बन्द पुलिस तैनात थी। दो दिन से सध्या समय काग्रेस इस स्थान पर कानून तोडती थी और सरकार कानून तोडने वालो को गिरफ्तार कर लारियो मे भर जेल रवाना कर देती थी। गिरफ्तार होने वाले लोग नारे लगाते चले जाते थे। लडाई लडने वाले दोनो दल अपना-अपना काम कर जाते थे। शहादत और असतोष का एक वातावरण बन कर रह जाता था। गिरफ्तार होकर नारे लगाते हुये चले जाने वालो के उदाहरण से गिरफ्तारी के लिये तैयार हो जाने वालो की भी कमी न थी। उद्देश्य के लिये मर मिटने की लगन के बजाय शहादत का सस्तापन उन्हे उत्साहित कर रहा था। यदि यह लडाई इसी प्रकार सज्जनता से चलती रहती तो सम्भवत आधा शहर जेल पहुँच जाता। जनता को अपने नेताओ की बात बहुत सीधी और सरल जान पडती थी, पराधीन देश एक बहुत बडा जेल है। उस बडे जेल से एक छोटे जेल मे चले जाना कौन बडी बात है ?

गिरफ्तारियो की सख्या बढा सकने मे काग्रेस की प्रतिष्ठा और विजय थी परन्तु सरकार के लिये बात दूसरी थी। उस दिन जलूस को गैरकानूनी करार देने के बाद पुलिस को गिरफ्तारियाँ कर लेने का हुक्म न दिया गया। एक जिम्मेदार अफसर अपनी मोटर मे घटना-स्थल पर मौजूद थे। जुलूस भग न होने पर उन्हो ने पुलिस को लाठी-चार्ज करने की आज्ञा दी। अहिसा को हथि-यार मानने वाले लोग लाठियो की चोट खा कर विजय पाने के लिये बैठ गये परन्तु सभी लोगो का उत्साह एक-सा न था। कुछ लोगो ने भागना शुरू किया, कुछ लोगो ने उत्तेजित हो कर पुलिस को गालियाँ देनी आरम्भ की। मान-सिक हिसा के इस सकेत से कुछ लोगो ने पुलिस पर ईंटे फेंक कर बदला लेना

चाहा। मार खाने के नशे की अपेक्षा मार सकने का नशा तेज होता है। पुलिस पर पड़ने वाले ईंट पत्थर की संख्या बढ़ी। धर्मयुद्ध शक्तियुद्ध में बदल गया। हथियार-बंद पुलिस को गोली चलाने का हुक्म दे दिया गया।

लाठी, लाठी है और बन्दूक, बन्दूक! एक के साथ चोट का सम्बन्ध है, दूसरी के साथ मृत्यु का। फिर सेना और भीड़ में अन्तर होता है। सेना में प्रत्येक सिपाही कर्तव्य को व्यक्तिगत रूप से निभाता है और मौत का सामना सामूहिक रूप से करता है। भीड़ की मनोवृत्ति उल्टी होती है। वहाँ कर्तव्य का बोझ सम्मिलित रूप से होता है और जान का भय सभी को व्यक्तिगत रूप से। भीड़ को आगे बढ़ने और पीछे लौटने में किसी की आज्ञा की आवश्यकता नहीं होती। व्यक्ति आगे बढ़ता है दूसरों के साहस से और पीछे भागता है, अपनी कायरता के कारण।

गोली चलते ही जुलूस की भीड़ भाग निकली। किसी ने नहीं देखा, कितने मरे, कितने जख्मी हुए। गोली की चोट की अपेक्षा भागने वालों के धक्के से अधिक जख्मी हुए। शिवनाथ भगवानदास का हाथ थामे सड़क किनारे की पटरी पर खड़ा था। भीड़ को भागते देख कर उसके मन में एक उबाल उठा। वह खन्ना का हाथ छोड़ कर बजाय भागने के बीच सड़क पर आ गया। खन्ना विस्मय से देखता रहा। पुलिस जुलूस के आगे-आगे झण्डे ले कर चलने वालों को गिरफ्तार करने के लिये दौड़ रही थी। शिवनाथ कुछ देर सड़क पर खड़ा रहा। खन्ना भी अपनी जगह से भागा।

आधा मिनट सड़क पर खड़ा रह शिवनाथ लाल आँखें और गम्भीर चेहरा लिये लौट आया। बिना कुछ कहे खन्ना का हाथ थामे वह लाल किले की ओर चल दिया। दोनों चुपचाप चले जा रहे थे—फैज बाज़ार, देहली दरवाजे, कोटला फिरोज़शाह होते हुए वे दोनों कौरवों-पाण्डवों के किले के विशाल सूने आँगन में आकर बैठ गये। खन्ना अनुभव कर रहा था, शिवनाथ गरम तन्दूर की भांति सना रहा है। स्वयम् कुछ कह सकना उसके लिये भी सम्भव न था। बहुत देर चुप रहने के बाद शिवनाथ ने अपने विचारों की शृंखला से छुट्टी पाने के लिये कहा—"इससे क्या फायदा!"

खन्ना ने समझा और हुंकारा भर उसका समर्थन कर दिया।

कुछ देर और चुप रह कर शिवनाथ ने पूछा—"फिर?"

उसकी ओर देख कर खन्ना ने पूर्ण स्वीकृति के भाव से उत्तर दिया—"तुम बताओ?"

दोनो की आँखे चार हुई। शिवनाथ ने कहा—"तुम तो लाहौर जाओगे ?"

वाहे सीने पर बाधते हुए खन्ना ने उत्तर दिया—"न जाऊँगा, उसमे क्या है ?"

लौटते समय शिवनाथ ने कहा—"दो एक आदमियो को तो मैं जानता हूँ। मिल कर तुम्हे बताऊँगा।"

खन्ना ने हामी भरी, वह भी तैयार था।

गरमियो की छुट्टी के दिन थे। शिवनाथ दिन भर इसी धुन मे घूमता फिरता। सध्या समय खन्ना के मकान की छत पर बैठ कर दोनो सलाह करते। खन्ना ने रुपया दिया। पुलिस के सन्देह से बचने के लिये देहली से ग्यारह मील दूर, एक साथी ने गाजियाबाद मे छोटा-सा मकान ले लिया। बम बनाने का कारखाना खुल गया। दो पिस्तौले, दो एक छुरे चोरी-चोरी खरीदे गए। शिवनाथ ने अपनी गरीबी दूर करन के लिये वकील बनने की कल्पना की थी। कालिज मे उसने साहित्य और इतिहास पढ कर वकालत की तैयारी की थी। बम फेकने का साहस बटोर लेने पर भी बम बना सकने की विद्या वह न जानता था। खन्ना ने डाक्टर बनने की तैयारी मे रसायन पढी थी। पुस्तके पढ कर विस्फोटक तैयार करने का नुसखा मालूम करने की जिम्मेवारी उसने ली। उस छोटे से कच्चे मकान मे सशस्त्र क्राति की तैयारी होने लगी।

कई दिन मेहनत करके खन्ना ने एक बम तैयार कर लिया। निश्चय हुआ कि किसी बडे सरकारी अफसर की हत्या कर जनता पर लाठी और गोली चलाने से सरकार को डराया जाय। शिवनाथ सब से पहले अपना बलिदान करने के लिये तैयार हुआ। पुलिस के सन्देह से बचने के लिये वह बम को एक छोटी हाण्डी मे रख कर साइकिल पर देहली ला रहा था।

चुगी के सिपाही ने टोक कर पूछा—"क्या है ?"

"घी है, सेर भर" शिवनाथ ने उत्तर दिया।

"दो पैसे" सिपाही ने चुगी मॉगी।

दुर्भाग्य से समीप ही इन्सपेक्टर खडा था। 'हाण्डी देखो" उसने आज्ञा दी।

"देखने को उसमे क्या है ?" जेब से दो पैसे निकालते हुए शिवनाथ ने कहा।

"क्यो ? घी की जगह अफीम भी हो सकती है ?" इन्सपेक्टर ने उस की ओर घूर कर उत्तर दिया। आशका देख कर कुछ उत्तर दिये बिना शिवनाथ साइकिल से भाग चला।

चुगी वाला ने शोर मचाया—"पकडो-पकडो !"

कुछ लोग शिवनाथ के पीछे भागे। सामने से आने वालों ने राह रोक ली। शिवनाथ ने साइकिल छोड़कर भागने का यत्न किया परन्तु पकड़ा गया। हाण्डी में से निकली लोहे की अजीब सी वस्तु। सन्देह में उसे पुलिस चौकी पहुँचाया गया। वहाँ पता लगा, वह बम था।

पुलिस ने कहा—"खूब? जाल लगाया था सियार पकड़ने को आ फंसा बाघ!"

आधी रात तक शिवनाथ का पता न लगने पर खन्ना रात में चुपचाप सो गया। सुबह अखबार वाले की पुकार सुन कर उस के पैरों तले की धरती निकल गई 'हाण्डी में बम! बम-केस का असामी गिरफ्तार!' नीचे विवरण था—कूचा बिल्लीमारा का शिवनाथ माथुर बम लिये भागने की कोशिश में गिरफ्तार हो गया। पुलिस षड्यन्त्र की खोज कर रही है।

भगवानदास खन्ना परेशान था, वह क्या करे? उसे अनुभव हुआ, पुलिस का पंजा उस की भी गर्दन दबोच रहा है। बिना कुछ किये ही जेल, कालापानी, शायद फाँसी! शिवनाथ के घर की तलाशी हो गई थी। उस की भी बारी आयेगी। वह आगरे अपने मामा के यहाँ चला गया।

प्रतिदिन वह सुबह ही अखबार पढ़ता परन्तु शिवनाथ की खबर के अतिरिक्त और कोई समाचार न मिलता। जो साइकिल शिवनाथ के साथ पकड़ी गई थी, उस से भी कोई भेद न खुल सका। साइकिल खन्ना की ही थी परन्तु उस का नम्बर पहले ही रगड़ दिया गया था। जब पन्द्रह दिन तक भय का कोई कारण न मालूम हुआ तो खन्ना मित्र की कुछ सहायता कर सकने के विचार से देहली लौट आया।

देहली लौट कर खन्ना ने सुना—बम बनाने और हत्या के षड्यन्त्र के अभियोग में पुलिस ने शिवनाथ का चालान किया है। उस के लिये पन्द्रह दिन की मोहलत तहकीकात के लिये अदालत ने पुलिस को दी थी। शिवनाथ से उस के साथियों के नाम कबुलवाने के लिये सब तरह की कोशिश की गई परन्तु वह न बोला। अब उस पर केवल विस्फोटक पदार्थ रखने का मुकद्दमा चलाया जा रहा था।

सत्याग्रही अभियुक्तों का जैसा सम्मान और खातिर होती थी, उस से ठीक विपरीत शिवनाथ के साथ हो रहा था। उस के सहानुभूति प्रकट करने का अर्थ था, अपने प्रति पुलिस के दिमाग में सन्देह पैदा करना। उस के बूढ़े पिता विशेष कुछ कर न सकते थे। उन के अतिरिक्त शिवनाथ के घर में थे, बुढ़िया माँ और उससे तीन वर्ष छोटी एक अविवाहित बहन, जो सयानी होकर

और भी असहाय और निर्बल थी ।

भगवानदास खन्ना बद्री बाबू के पास गया । बद्री बाबू को शिवनाथ से सहानुभूति थी । एक वकील उन के कहने से, बिना फीस, केवल सुयश पाने की आशा मे, शिवनाथ की पैरवी के लिये राजी हो गये । खन्ना शिवनाथ की बहिन यमुना से भी मिला और यथासम्भव सहायता देने का आश्वासन दिया। गरमी की छुट्टी समाप्त होने पर वह अपने लिये देहली मे कोई काम न देख कर लाहौर मेडिकल कालिज मे पढाई जारी रखने के लिये लौट गया ।

× × ×

सन् १९३२ मे जेल सत्याग्रही कैदियो से भरे थे । जेल मे अनेक कष्ट होने पर भी इन कैदियो को सगति का सुयोग था । यह कैदी, जेल के कष्टो को मेले-ठेले के योग मे तीर्थस्थान की यात्रा की भाति सह रहे थे । अपने प्रयत्नो की सफलता-विफलता और परिणाम की उन्हे चिन्ता न थी । आन्दोलन मे भाग लेकर उन्होने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया था और अब जेल भुगत कर भी कर्तव्य पूरा कर रहे थे । सफलता-विफलता की जिम्मेवारी उन के नेताओ पर थी । जहाँ तक सम्भव होता, वे लोग जेल जीवन को जेल की दाल-रोटी सुधारने के आन्दोलन, झण्डा अभिवादन गाने, तसला बजा कर शहादत के गीत अलापने, मालिश, दण्ड-बैठक और हँसी-खेल मे गुजार रहे थे ।

शिवनाथ के लिये जेल मे ऐसी बेफिक्री सम्भव न थी । बम-केस का खतरनाक कैदी होने के कारण उसे, दूसरे कैदियो से दूर, तनहाई की कोठरी मे बन्द रहना पडता था । मूज की तीन सौ गज रस्सी बटते समय, अपने बिस्तर के मूज-पट्टे और कम्बल से खटमल बीनते समय, निरतर सोचते रहने के सिवा कोई उपाय न था । जब वह जेल की धारीदार कुर्ती और घुटनो तक जाँघिया पहने अपनी कोठरी के बीचोबीच, पापोश जैसे खुरदरे मूज के फट्टे पर वैसा ही खुरदरा कम्बल बिछा, सिर के नीचे तकिये के लिये तस्ला रख कर, दोनो बाहो को सीने पर बाँधे कोठरी की छत की ओर टकटकी लगाये आराम के लिये लेटा रहता, तब भी उस का मन और दिमाग अनेक समस्याओ को सुलझाने के यत्न मे दुनिया भर का चक्कर लगाता रहता । वह सोचने लगता कि वह जेल मे बन्द हो गया तो क्या, उसके कई साथी बाहर है । वे साथी सैकडो दूसरे साथी बना सकते है । उस के जीवन का बलिदान तो प्राय निष्प्रयोजन ही हो गया परन्तु दूसरे सैकडो साहसी युवक अपने जीवन की बाजी

लगा कर जनता मे साहस और आजादी की लगन पैदा कर सकेगे। उसे सतोष था कि उसके साथी बाहर सुरक्षित है और वे कुछ न कुछ करेगे।

अपने बूढे पिता, रोग मे अपाहिज माँ और अविवाहित सयानी बहन का भी खयाल उसे आता। उस खयाल को वह मन से दूर कर देने का यत्न करता। उस विषय मे जो कुछ होना था, हो चुका था। वह अपने परिवार के लिये मर चुका था। उन के लिये वह कुछ कर नही सकता था तो उस विषय मे सोचना व्यर्थ था। उस का जीवन देश और जनता के लिये अर्पण हो चुका था। चार वर्ष बाद वह जेल से छूटेगा भी तो घर के काम का न रह कर, उसे देश का ही काम करना होगा। उसे चिन्ता थी कि उस के साथी क्या कर रहे है? यह जान कर कि खन्ना अपनी पढाई पूरी करने लाहौर लौट गया है, उसे खिन्नता होने लगी। अपने सम्बन्धियो को खन्ना के सात्वना और सहायता देने से उसे कुछ भी सन्तोष न हुआ। वह सोचता कि हमारी मित्रता का कर्त्तव्य व्यक्तिगत नही, उद्देश्य के प्रति है।

शिवनाथ ने कई मास इसी प्रकार कल्पना-विकल्पना मे बिता दिये। गरमी मे आवे की तरह तपने वाली उस की कोठरी जाडे मे खूब ठण्डी हो गई। रात मे कडी सर्दी जेल के बने दो कम्बलो मे से उस के शरीर को छेदने लगती। वह सोठ की गाँठ की तरह सिकुडता जाता। उस समय नीद न आने पर मन सोचे बिना न रहता कि इस से तो कही अच्छा होता वह किसी को मार कर फाँसी पा जाता या चुगी पर पकडे जाते समय, अपना बम फेक दूसरो के साथ स्वयम भी मर जाता। फिर वह मन को धीरज देता कि यही तो कुर्बानी है और तब सोचने लगता कि कुर्बानी क्या है? इस देश मे करोडो आदमी कैदी न होकर भी सर्दी मे इसी प्रकार सिकुड रहे होगे।

शिवनाथ फिर अपने दल की बात सोचने लगता। वह अकेला जो कष्ट सह रहा है सो कुछ भी नही। उद्देश्य के लिये उस जैसे हजारो, लाखो व्यक्तियो की कुर्बानी की आवश्यकता होगी। कुर्बानी का ध्यान आते ही वह सोचने लगता कि क्या अकेला वही कुर्बानी कर रहा है? कोठरी के बाहर पहरा देने वाले जमादार के जूते की आहट सुन कर वह सोचता कि यह जमादार तो उस से भी अधिक सर्दी खा रहा है। नीद आने पर भी वह सो नही सकता। उस का भी एक कर्तव्य है। इस जमादार जैसे हजारो जमादार, लाखो सिपाही और दूसरे लाखो नौकर उस के साथ है। इन लोगो का कर्तव्य है, ब्रिटिश सरकार की शक्ति को इस देश मे कायम रखना। क्या केवल वह और उस के

दल के लोग ही कर्तव्य पर कुर्बान होना जानते है ? इस देश मे पाँच रुपये माहवार से लेकर पाँच हजार रुपये माहवार तक पाने वाले ब्रिटिश सरकार के नौकर, जिनका जीवन इस सरकार से बँधा है, जो इस सरकार को अपनी ही सरकार समझते है, क्या कर्तव्य और कुर्बानी की बात नही जानते ? दूसरो की बात जाने दीजिये, यदि वह अपने देश के लिये अपना कर्तव्य समझ साहस से जान दे सकता है तो क्या ससार भर मे अपना साम्राज्य कायम करने वाले अग्रेज कुछ राजनैतिक हत्याओ से डर कर भारत पर अपना अधिकार छोड देगे ? लाखो अग्रेज भी तो अपना कर्तव्य समझ कर अपने साम्राज्य के लिये साहस से जान देने के लिये तैयार हो सकते है ।

शिवनाथ को प्रति तीसरे मास बीस मिनट के लिये घर के लोगो से मिलने की आज्ञा मिलती थी । घर की चिन्ता मन से हटा देने का प्रयत्न करते रहने पर भी पिता, मा और बहिन से मुलाकात करने का दिन आने से पहले उसके कुछ दिन विशेष उत्सुकता और चिन्ता मे कटते । बीस मिनट का समय माँ और पिता को आँसू सम्भालने मे ही बीत जाता । कुछ बात कर सकने से पहले ही उन्हे एक दूसरे से दूर कर दिया जाता । इतने समय मे जो कुछ वह अपने पिता या बहिन से सुन पाता, उस से उसका मन और दुखी हो जाता । घर की अवस्था दिन पर दिन बिगडती ही जा रही थी । आमदनी का एकमात्र उपाय, उनके घर के किराये पर दिये भाग से मिलने वाला पैसा भी अब न आता था । किरायेदार पुलिस की नाराजगी की आशका से मकान छोड गये थे । ऐसी अवस्था मे सयानी कन्या के विवाह की चिन्ता माँ-बाप को और भी खाये जा रही थी ।

यमुना भाई के जेल जाने से पहले नवी श्रेणी मे पढ रही थी । पिता ने उसके सयानी हो जाने पर, समाज निन्दा के भय से उसे स्कूल जाने से रोक दिया था । शिवनाथ ने बहिन को पिता की सहायता के लिये किसी स्कूल मे पढाने की नौकरी कर लेने और आगे बढते जाने की सलाह दी । यमुना के लिये जिन्दा शहीद भाई का वचन कर्तव्य था। असहाय पिता के पास चुप रह जाने के सिवा चारा न था । लडकी की कमाई खाने की लज्जा से उन का मन ग्लानि से भर गया परन्तु विकट परिस्थिति मे चुप रह गये । लडकी का विवाह करते तो कैसे ? दहेज के बिना योग्य वर मिलता कहाँ ?

शिवनाथ अधिकाश समय कोठरी मे अकेले बद रहने के कारण शरीर पर छा जाने वाली शिथिलता को दूर करने के लिये अपनी पाँच हाथ लम्बी

कोठरी में ही चहलकदमी करने लगता। वह स्वयं अपने आपमें तर्क करता रहता। कुर्बानी और कर्तव्य केवल दिमाग का खयाल और विश्वास है, असल चीज है शक्ति। मौजूदा जमाने में शक्ति एक या सौ-पचास आदमियों के बस की बात नहीं। वह लाखों बल्कि देश भर की जनता के संगठन या एक मत से ही पैदा हो सकती है। ऐसी शक्ति संगठित कैसे हो? क्या देश की जनता को स्वतन्त्रता की आवश्यकता नहीं? क्या वे अपनी अवस्था सुधारना नहीं चाहते? यह कैसे हो सकता है कि अपनी भलाई के लिये आदमी क्या कुछ करने को तैय्यार न हो जाय?

सोचते-सोचते वह परिणाम पर पहुंचता कि देशकी जनता अपने जीवन की समस्या का देश की आजादी से कोई सम्बन्ध नहीं समझती। प्रत्येक व्यक्ति अपना हित दूसरे के विरोध में समझता है। उनके विचार में पेट की समस्या या व्यक्तिगत जीवन एक वस्तु है, राष्ट्रीय जीवन दूसरी। राष्ट्रीयता की समस्या को पेट की ही समस्या बनाना जरूरी है, तभी वह जनता की समस्या हो सकेगी। अपने पेट के प्रश्न पर जनता कैसे एक मत हो कर संगठित न होगी? मजदूरी के प्रश्न पर मजदूर और लगान के प्रश्न पर किसान कैसे एक मत हो जाते हैं? वास्तव में सभी मजदूरों और किसानों की, सभी अधपेट और साधन-हीनों की समस्या एक ही तो है।

शिवनाथ के तर्क की इस धारा पर नई पढ़ी पुस्तकों का भी गहरा प्रभाव पड़ा। उसका मित्र भगवानदास खन्ना अपनी डाक्टरी की पढ़ाई में व्यस्त हो कर प्रकट रूप से राजनैतिक आंदोलन से अलग था परंतु अपने चारों ओर घटने वाली घटनाओं और समस्याओं की ओर एक बार आकर्षित हो चुकने पर वह उन से बेखबर कैसे रह सकता था। जेल में बन्द अपने मित्र के मन-बहलाव के लिये पुस्तकें भेजने का ध्यान उसे सदा बना रहता। वह नई-नई पुस्तकों की खोज में रहता। उन्हें स्वयं पढ़ कर देहली जाने पर शिवनाथ के लिये यमुना को दे आता।

चार वर्ष जेल की सजा काट कर शिवनाथ रिहा हुआ तो छः मास पूर्व उस के पिता का देहान्त, लम्बी बीमारी के कारण हो चुका था। आंसू बहाती हुई यमुना यह समाचार जेल में ही भाई को सुना आई थी। शिवनाथ के जेल से लौटने पर यमुना ही, बीस रुपये माहवार की नौकरी कन्या पाठशाला में करके अपना और मां का पेट पाल रही थी। यमुना से उसने सुना कि भगवानदास खन्ना का विवाह हो गया है। डाक्टरी की परीक्षा विशेष सफलता

से पास कर उसे सेना मे नौकरी भी मिल गयी है।

देशभक्ति के लिये जेल काटने के कारण शिवनाथ के परिचित और कांग्रेस-जन उसे आदर की दृष्टि से देखते थे। सब जगह उस का सम्मान होता था। उस सम्मान के नीचे उस के हृदय मे अपने निर्वाह का उपाय खोजने का और जेल मे सोचे अपने राजनैतिक कार्यक्रम को काम मे लाने की भयकर चिन्ता छिपी थी। वह नौकरी करने के लिये भी तैयार था परन्तु नौकरी के साथ राजनैतिक कार्य के लिये समय कहा मिलता ? इस सकट मे बद्री बाबू ने उस की सहायता की। उन्होने अपने प्रभाव से और शिवनाथ की देशभक्ति के नाम पर अपील कर, उसे कुछ ही समय मे बीमे की एजेसी दिला दी और अनेक ग्राहक भी बटोर दिये। निर्वाह की सुविधा हो जाने पर शिवनाथ जी-जान से कांग्रेस आन्दोलन मे काम करने लगा। बद्री बाबू ने बहुत जल्द ही देखा कि अपने विचारो के कारण शिवनाथ उन का सहायक न बन, प्रतिद्वन्दी बन बैठा है।

कांग्रेस के दक्षिण और वामपक्ष के प्रतिनिधि बद्री बाबू और शिवनाथ एक दूसरे से परे हटने लगे। शहर मे पल्लेदारो की हड़ताल के मामले पर यह मतभेद मनमुटाव ही बन गया। दोनो का आपस मे मिलन-जुलना बन्द हो गया। कांग्रेस के दफ्तर मे अपना काम सुविधा मे न कर सकने के कारण शिवनाथ ने अपने साथियो के साथ मिल कर समाजवादी दल के लिये अलग दफ्तर बना लिया।

भाग्य से उस अवसर पर लेफ्टिनेण्ट डाक्टर भगवानदास खन्ना, किर्की छावनी से बदली होकर उत्तर-पश्चिम सीमान्त की छावनी मे जाने से पहले अपनी पत्नी राज खन्ना को देहली छोड़ने आया हुआ था। पिछले वर्षो मे बद्री बाबू की डाक्टर खन्ना से पर्याप्त घनिष्टता हो चुकी थी। डाक्टर ने शिवनाथ को भी उसकी भाबी से मिलने के लिये बुलाया था। कांग्रेस को आपसी फूट से बचाने के लिये डाक्टर खन्ना की उपस्थिति मे एक समझौता-सा दोनो मे हो गया परन्तु कार्यरूप मे परिणत होने का समय आने पर वह निभ न सका। दोनो को ही शिकायत थी कि दूसरा दल अपनी बात से फिर गया। डाक्टर के सीमान्त पर चले जाने के बाद प्राय दोनो ही जब-तब राज भाभी के यहाँ आते-जाते रहते परन्तु एक दूसरे को टालकर।

×   ×   ×

उधर लगभग पाँच मास तक सीमान्त की छावनी से डाक्टर का कोई भी पत्र नहीं आया था। वहाँ सभी भयों और आपदाओं की आशंका थी। राज ने तार दिये, फिर जवाबी तार दिये पर कोई उत्तर नहीं। कोई भी समाचार न मिलने के कारण डाक्टर के घर में दारुण चिन्ता छा गयी। राज का बुरा हाल था। उसका खाना-पीना नींद और सब कुछ गायब हो गया। केवल एक ही बात उसके ध्यान में थी—कोई समाचार आये। मन में वह जाने क्या-क्या दुष्कल्पना करती परन्तु ओंठ उसके बन्द थे। उस का चेहरा दीर्घ रोगी की भाँति पीला पड़ कर सूख गया।

बद्री बाबू के हृदय में राज के लिये सहानुभूति और करुणा उमड़ पड़ती। वे दूसरे काम में हानि सह कर भी रोज या दूसरे दिन राज की खबर लेने आते। सान्त्वना देकर दुश्चिन्ता दूर करने का यत्न करते। शिवनाथ के लिये, खन्ना के प्रति बचपन से चली आई आत्मीयता के विचार से राज के अन्धकार में समीप न आना, स्वयं दुःख का कारण और अकृतज्ञता थी। वह भी वहाँ जाता परन्तु बद्री बाबू की भाँति समीपी न बन सका। राज और अपनी सामाजिक स्थिति का अन्तर उस के ध्यान में दूर न हो पाता। वह अनुभव करता कि राज पति के अन्तरंग मित्र के नाते उस के प्रति सद्व्यवहार करती है। बद्री बाबू का उस घर से बिरादरी और सवर्णी के नाते, अपना स्थान है।

डाक्टर खन्ना की खोज-खबर के बारे में सब ओर से निराश होकर बद्री बाबू ने एक तार पश्चिमोत्तर-सीमान्त के केन्द्रिय सैनिक-दफ्तर को देने की सलाह राज को दी थी। सप्ताह भर उस तार का भी कोई उत्तर न आया। उस के बाद कुछ समय तक बद्री बाबू चुनाव के झंझट के कारण राज के यहाँ खबर लेने न जा सके। पर्ची पड़ने के समय उन का पोलिंग पर रहना जरूरी था। यों दूसरे विश्वासपात्र साथी भी थे परन्तु बद्री बाबू की बात दूसरी थी। उन की आँखों का लिहाज वह असर रखता था जो दूसरों की महीनों की मेहनत से न होता।

दिन का तीसरा पहर आ गया था पर पर्ची का काम समाप्त न हुआ था। हरदयाल कटरा नील से साइकिल पर आया। बद्री बाबू के समीप आकर उस ने दबे स्वर में डाक्टर की मृत्यु का समाचार आने की सूचना दी। अब पोलिंग पर ठहरना बद्री बाबू के लिये किसी भी प्रकार सम्भव न रहा। वे जमील-हुसैन और गुरुप्रसाद को होशियार रहने की ताकीद कर कटरा नील चले गये। पोलिंग से चलते समय शिवनाथ से उन की आँखें चार हुईं। विचार आया

कि उसे भी समाचार दे दे परन्तु मन की खिन्नता के कारण कुछ भी कहे बिना वे चले गये ।

गली के शुरू से ही स्त्रियो के विलाप और क्रन्दन का स्वर सुनाई दे रहा था । बिरादरी के लोग जमा हो रहे थे । बद्री बाबू के भिजवाये तार के उत्तर मे सेना के केन्द्रीय दफ्तर से सूचना आई थी—'तुत्ती कैम्प हस्पताल पर वजीरियो द्वारा रात के समय मारे गये छापे मे लेफ्टिनेण्ट डाक्टर भगवानदास खन्ना खेत रहे ।' कायदे के अनुसार बद्री बाबू के लिये पहले डाक्टर के भाई लाला ईश्वरदास खन्ना के समीप बैठ कर शोक प्रकट करना आवश्यक था । उन का मन राज भाबी की अवस्था जानने के लिये व्याकुल हो रहा था । पति का कोई समाचार न मिलने के दुःख और आशका से ही जो रोगी और अधमरी हो रही थी, पति की मृत्यु के समाचार से उस का क्या हाल हुआ होगा ?

शोक प्रकट करने आये अनेक लोगो के बीच लाला ईश्वरदास आँखो मे आँसू भरे सिर लटकाये बैठे थे । बद्री बाबू ने डाक्टर की मृत्यु से उस के परिवार और मित्रो की, कभी न पूरी हो सकने वाली हानि का वर्णन किया । उसी बात को अनेक लोगो ने अपने शब्दो मे दोहराया । लाला ईश्वरदास ने पिता की मृत्यु के बाद छोटे भाई की जिस प्रकार चिन्ता की थी, उस की प्रशसा सब ने की । फिर डाक्टर के बचपन से ही होनहार होने और उस की उन्नति की सम्भावनाओ का चर्चा हुआ । लाला ईश्वरदास के दुःख को अपना दुःख बता कर प्रत्येक व्यक्ति उन के दुख का भाग बँटा कर उस दुख को सह्य बनाने का यत्न कर रहा था । इस कर्तव्य को पूरा करते समय बद्री बाबू का मन प्रतिक्षण ऊपर जा कर राज की असह्य अवस्था मे सात्वना दे पाने के लिये व्याकुल हो रहा था । सोच रहे थे राज विलाप और क्रन्दन करती हुई स्त्रियो से घिरी होगी, वे उस के समीप कैसे जा पायेगे ?

ऊपर जाने पर बद्री बाबू को मालूम हुआ कि राज भाबी अलग कमरे मे बेहोश पडी है । महा दुःख के आघात से स्वयम अपने आप को ही सँभाल सकने मे असमर्थ बुआ और जेठानी के लिये राज की उचित चिन्ता करना असम्भव हो रहा था । बद्री बाबू ने देखा कि राज एक पलँग पर पडी थी । उस के सूखे, पीले चेहरे पर एक विचित्र कालिमा-सी छा गई थी । उनके देखते देखते राज ने दोनो हाथो की मुट्ठी बाँध कर, पाँव पटक कर करवट ली, जैसे उस के भीतर आँते ऐंठ रही हो ।

बद्री बाबू के मन मे सन्देह की बिजली कौंद गई । डाक्टर की कोई खबर

न मिलने के कारण राज के चेहरे पर छा जाने वाली दुस्साहस भरी गम्भीरता देख कर ही वे अनुमान करते थे कि यह किसी भयंकर विपत्ति का सामना करने के लिये अपने आपको तैयार कर रही है। वह तैयारी क्या थी ?

बद्री बाबू ने आंसू पोंछती हुई घर की नौकरानी से पूछा—"डाक्टर को बुलाने कोई गया है ?"

उत्तर मिला—मुनीम जी गये थे। डाक्टर अभी आया नहीं। बद्री बाबू झपटते हुये बाहर चले गये।

बद्री बाबू अपने निजी मित्र डाक्टर टण्डन को लेकर तुरन्त लौट आये। उनकी आशंका के आधार पर डाक्टर टण्डन आवश्यक औषधि और उपचार का सामान साथ लेते आये थे। बद्री बाबू का सन्देह ठीक ही था। राज ने अफीम खा ली थी। डाक्टर ने दवाई देकर उलटी कराई और फिर रबड़ की नली से मेदे में जल पहुँचा उसे कई बार धोया। दो घण्टे के निरंतर प्रयत्न से राज की हालत कुछ ठीक हो पाई परन्तु भय दूर न हुआ।

समाचार पाकर शिवनाथ भी आया। राज की आँखें मुंदी हुई थीं। कुछ क्षण के लिये आंखें खुलने पर भी न वह किसी को पहचान सकती थी न कोई शब्द ही उसके मुख से निकल पाता। उसे खूब जोर से ज्वर चढ़ आया था। बद्री बाबू डाक्टर की हिदायत के अनुसार लगातार उसके माथे पर बरफ रख रहे थे। शिवनाथ भीगे तौलिये से उसके पैरों को पोंछता रहा। यमुना भी आई थी। तीनों रात भर राज की पटिया से चिपके रहे।

शोक का आघात एक चीज होती है, उसका अनुष्ठान दूसरी। शोक का आघात वयक्तिक अनुभूति की वस्तु है, उसका अनुष्ठान समाज के प्रति कर्तव्य। खास अवस्थाओं में शोक कम होना या न होना, सामाजिक अपराध हो जाता है और उसका अधिक होना व्यक्ति की निष्ठा और सदाचार का प्रमाण। मृत पति के प्रति राज की भक्ति और अनुराग का अनुमान उस के विलाप से न लगाया जा सका। पति के अनुराग में आत्महत्या कर, सती हो जाने के प्रयत्न का अपराध, बड़े घर की बहू होने और निजी डाक्टर द्वारा उपचार होने के कारण यद्यपि पुलिस और कानून के अड़ंगों से बचा रहा परन्तु दबी जबान से उसकी चर्चा सभी जगह फैल गई। सतीत्व की महिमा के प्रभाव से शोक के सामाजिक अनुष्ठान में राज के उचित योग न देने की निन्दा कुछ दिन दबी रही परन्तु फिर वह पीठ पीछे, दबी जबान में उठने भी लगी। राज को किसी भी बात की कुछ भी चिन्ता न थी। उसके लिये संसार समाप्त हो चुका

था। उसके श्वास की गति अलबत्ता नहीं रुकी थी परन्तु वह मर चुकी थी। दुनिया से उसे मतलब न था।

घर के जवान और होनहार लड़के की मृत्यु का दुख ही परिवार के लिये काफी था। उस पर सदा के लिये खाट पर पड़ गई विधवा बहू की तीमारदारी के झंझट मे किसे उत्साह होता। नये ढग की पढ़ी-लिखी बहू के घर आने से बुआ और जेठानी ने परेशानी अनुभव की थी परन्तु डाक्टर के ऊँची नौकरी पा जाने के उत्साह मे वह भुला दी गई थी। घर मे बहू के आने पर लक्ष्मी के चरण पड़ने के कारण वह लाला ईश्वरदास की दृष्टि मे सुलक्षणा लक्ष्मी और लाड़ली बन गई थी। सास के आसन की अधिकारी बुआ और जेठानी उसे कुछ न कह सकती थी परन्तु कुलक्षणा विधवा बन जाने पर वही वह बोझ बन गई।

अपनी स्थिति मे आ गये परिवर्तन को समझ कर राज बेबस, और चुप थी। निस्सीम निराशा की उस बेबसी मे किसी प्रकार की सहायता की चाह भी उसके मन मे शेष न रही थी। वह क्या सहायता चाहती ? वह चाहती थी मर जाना। उसके लिये उसने यत्न किया था। उसकी भलाई चाहने वालो ने उसकी सहायता कर उसे मरने न दिया। राज निराश और निश्चेष्ट होकर समय की दया पर पड़ गई। समय ही उसे समाप्त कर उसकी सहायता कर सकता था। और समय, दिन, सप्ताह और मास के रूप मे जल की धार की तरह बहता जाता था, राज के दुख की स्थिर विशाल चट्टान को स्पर्श करता हुआ। वह चट्टान अपनी दृढ़ता के कारण समय की धार की रगड़ से गली नही, उस पर मौन की काई जम गई और वह चट्टान और भी अस्पृश्य हो गई।

राज की माँ कम आयु मे ही मर गई थी। उसकी एक बड़ी बहिन थी जो उसके संकट के समय स्वयम् प्रसूत की पीड़ा मे फँसी रहने के कारण सान्त्वना देने न आ सकी थी। आगरे से पिता और दूसरे सम्बन्धी आये थे। कानपुर से जीजा आये। वे लोग उस का दुख बटाने के लिये उसे अपने साथ ले जाना चाहते थे परन्तु राज कुछ भी न चाहती थी, दुख को बँटाना भी नही। जो उस का सब से अधिक असल अपना था, जब वही न रहा तो उसे दूसरे अपनो की जरूरत न थी। वह जानती थी कि अब वह किसी की अपनी नही। पिता और मायके के लोग उसे दे चुके थे। ससुराल मे जिसके कारण उस का अस्तित्व था, वही न रहा, तब फिर वह किस की अपनी थी ? सम्बन्धो के सूत्र निरर्थक हो गये थे। ऐसी अवस्था मे किसी सम्बन्ध की अपेक्षा न कर जो उस की चिन्ता करने, वही उसके समीपी थे। यह लोग थे, यमुना, शिवनाथ

और सब से अधिक बद्री बाबू। उन मे भी वह कुछ न चाहती थी, एक शब्द भी न बोलती।

यमुना आती और कुछ देर पलग पर चुपचाप लेटी राज के समीप बैठ कर चली आती। शिवनाथ आता, सामने कुर्सी पर मौन बैठ कर चला जाता। बद्री बाबू आते, वे राज के मौन रहने पर भी कुछ बात करते और अधिक देर बैठते। बिना उत्तर पाये ही वे बहुत कुछ समझ जाते और सामर्थ्य भर आवश्यकता को पूर्ण करने का यत्न करते। राज के न बोलने पर वे खीझते भी नही। अनेक बेर शरीर के विषय मे पूछ कर सकेत मे पाये उत्तर मे वे सिर-दर्द या किसी दूसरे कष्ट की औषधि लाकर समीप तिपाई पर रख जाते। दवाई न पीने की शिकायत करते। बिजली का पखा चला जाते। सध्या समय बाहर छत पर बैठने के अनुरोध की उपेक्षा करने पर भी वे उसे दोहराते रहते।

राज के इस दुख की प्रतिच्छाया बद्री बाबू के व्यवहार पर भी कम नही पडी। इसके परिणाम स्वरूप उन के जीवन के एकमात्र कार्यक्रम काग्रेस ने भी धक्का खाया। नये चुनाव मे पहले जैसा काम न हुआ। शिवनाथ के दल ने काफी वोट पाकर अपनी स्थिति अधिक दृढ कर ली। नित्य के राजनैतिक सघर्ष मे इसका परिणाम भी सामने आता रहता परन्तु बद्री बाबू साहस न छोड कर उसे निभाये जा रहे थे।



बहिश्त की राह

डाक्टर खन्ना को स्पिन्दा मे पाँच मास से अधिक बीत गये। हर घर बारी-बारी से उसे रोटी देता और उस दिन डाक्टर उस घर का कुछ काम, जो उस के करने लायक होता, करता। उस की रिहाई के लिये रुपया मिलने की आशा वजीरियो को न रही थी। रुपये के लिये डाक्टर को परेशान करने से कुछ लाभ न था। रुपया देना उस के अपने वस का न था। वजीरी अवसर की प्रतीक्षा मे थे कि उसे गजनी पहुँचा कर जो कुछ वसूल किया जा सके, कर लिया जाय। इस काम मे अधिक विलम्ब भी उचित न था। पूस मे बरफ पड जाने पर वीहड पहाडी राह से गजनी का मार्ग कठिन हो जाता है। फिर यह काम चैत-वैसाख तक टल जाता।

डाक्टर पश्तू समझने लगा था। आवश्यकता अनुसार वह बोल भी लेता परन्तु अधिक समय मौन रहता। मौन रह कर उस का मन निरतर विचारो और कल्पनाओ मे उलझा रहता। विचार का विषय था, किसी तरह वज़ीरियो की कैद से छूट कर घर पहुँचने की सम्भावना। चोरी से भाग निकलने का उपाय न था। राह उसे मालूम न थी। राह मालूम न होने पर भी वह जान की बाजी लगा कर कही चल देता, चाहे रूखी चट्टानो पर भूख से तडप कर ही उसे प्राण क्यो न देने पडते। पर ऐसा भी अवसर न था। लाल लोहे से दगे पैरो मे गूदड लपेटे वह कितनी दूर चल सकता था? उपाय एक ही था कि उस की रिहाई का तावान (रेनसम) आ जाय। उसे आश्चर्य होता, यह कैसे सम्भव है कि उस के घर उस का पत्र पहुँचे और वे लोग उस की रिहाई के लिये चार हजार रुपया न दे सकें। मन ही मन वह घर की जायदाद का हिसाब लगाने लगता। दोनो भाइयो के चार मकान और दो दुकाने थी, घर की बजाजी की कोठी थी। चार हजार रकम ही क्या होती है? क्या भाई उस के लिये इतना भी नही कर सकते? वह सोचता कि जाने किस आदमी

के हाथ, कैसे उस की चिट्ठी देहली भेजी गई, वह पहुँची या नही ।

कभी उसे याद आने लगता कि सेना मे नोकरी पा जाने से पहले बडे भाई प्राय उसके खर्च पर एतराज करने लगते थे । इतना खर्च आये कहाँ से ? भाई कहते थे । उस समय उसके मन मे आता था, कह दे कि मेरे हिस्से की आधी जायदाद बाट कर दे दो ! मैं किसी का एहसान नही चाहता परन्तु बात मुह से निकल न पाती । पाच मास तक घर से किसी प्रकार की सुध न ली जाने पर अनेक दुश्चिन्ताये उसे घेरने लगी । उसे निश्चय था, उसका सन्देश घर तक पहुँचा ही नही । कम से कम राज उसके सन्देश की उपेक्षा नही कर सकती थी ।

राज का ध्यान आ जाने पर डाक्टर दर्द भरे स्वप्नो मे खो जाता । वह सोचने लगता, शायद उन लोगो ने समझ लिया कि मै मर गया हूँ । ऐसी अवस्था मे, जब वह कभी साल या छ मास मे, अजीब सी पोशाक और बदले हुये रूप मे सहसा घर जा पहुँचेगा तो राज की क्या अवस्था होगी ? उस समय निराशा से मरणोन्मुख राज कठिनता से आँखे खोलकर उसकी ओर देखेगी । हृदय पर सहसा आघात पाने से उसके हृदय की गति न बन्द हो जाय ! या उसे इतने समय बाद अप्रत्याशित रूप से जिन्दा लौट आया देखकर आनन्द से उच्छवासित और उसकी गैरहाजरी मे हो गई राज की मृत्यु की स्मृति से आँखो मे आसू छलके लोग मुख से कुछ कह ही न सकेंगे । वह स्वय ही परिस्थिति समझ कर चुप रह जायगा । क्या ऐसा भी हो सकता है कि उसका लौटना राज के लिये दुर्भाग्य हो जाय ! ऐसी अवस्था मे अपनी जान पर खेल कर लौट जाने का मूल्य ? ...

निरतर घर की चिन्ता करते-करते उसका मन भाई के प्रति आशकित होने लगा । वह कल्पना मे राज की ओर से भी विरक्त होकर सोचने लगता कि वह एक तरह से अपन पुराने ससार के लिये मर ही चुका । .. उसके मरने से रिक्त स्थान भी भर चुका होगा । उस ससार मे लौटने पर उसके लिये स्थान ही न होगा ?... इस चिन्ता से ऊब कर वह निश्चय करता कि यह सब सोचने से क्या लाभ ? चिन्ता उसे सुख के बजाय दु ख देने लगी परन्तु उस अवस्था मे चिन्ता से छुटकारा भी न था ।

डाक्टर अपने चारो ओर की वस्तुओ की बाबत सोचने लगता । चट्टान की जड मे उगी कटीली झाडी की ओर देख वह सोचने लगता, उसका काटा चुभने से कैसी भयानक और रोमाचक पीडा होगी ? देखते-देखते बकरी उन

सूखे काटो की डाल को सहज सुविधा से अपने होठों मे लेकर चबा लेती। वह सोचता, उस मे भी कोई स्वाद होगा ? इसी तरह मुर्गे-मुर्गियो के व्यवहार और बच्चो के खेल को देखकर वह अद्भुत विचारो मे डूब जाता।

रमज़ान-शरीफ का महीना था। डाक्टर को भी बेबस रोज़ा (उपवास) रखना पडा। पौ फटने से पूर्व घाटी के पार 'स्पिन' की मसजिद की मीनार से नगाडे का शब्द सुनाई देता। उसी समय सब लोग रात के खाने से बचाया भाग खाकर दिन भर के लिये यथेप्ट पानी पी लेते। बच्चो के लिये रोटी बचा कर रख ली जाती। दिन भर घरो मे चूल्हे न जलते, न कही धुये का गुब्बार दिखाई देता। मर्द और औरते पानी की बूद या हुक्का कुछ न पीते। सध्या समय जब सूर्य ऊँचे नगे पहाडो की ओट हो जाता, फिर नगाडा बजता और सब लोग रोजा खोलते और नमाज अदा कर देर तक खाने-पीने मे लगे रहते।

एक रोज डाक्टर खेत मे देर तक खुदाई करने के कारण प्यास से तडप उठा। घर लौट वह पानी का घूट पिया ही चाहता था कि रहीमगुल का घूसा उसकी गर्दन पर आ पडा—"खरबदोग (गधे का बच्चा) काफिर !" धमका-कर रहीम ने लोटा उसके हाथ से छीनकर घडे पर धर दिया। डाक्टर की आखो मे आसू भर आये। चुप रहने के सिवा चारा न था। क्रोध प्रकट करने का अवसर न था। वह बैठकर सोचने लगा। उसे अपने धर्म की बाते याद आने लगी। बुआ का निर्जला एकादशी का व्रत, भाबी का उपासे रहने के दिन केवल दूध की मिठाई और फल खाना। किसी समय उसने एक हिन्दू रियासत के धर्म-राज्य पर गर्व किया था कि वहा गौ-हत्या के अपराध मे फाँसी का दण्ड मिल जाता है। अब उसे जबरन धर्मात्मा बनाकर स्वर्ग पहुँचाने की जिद्द की जा रही थी।

रमजान-शरीफ मे वजीरी लोग, भूख अनुभव न करने के लिये दिन मे बहुत-सा समय सो कर बिता देते थे। सध्या की नमाज के बाद खा-पी कर देर तक गप्पबाजी चलती थी। अनेक विषयो का चर्चा चलता, किस के कत्ल के बदले मे किसका कत्ल हुआ। फलाँ व्यक्ति की औरत भगा ले जाने पर अपराधी को कितना हर्जाना देना पडा। बन्दूक से कत्ल करने के बदले तलवार से कत्ल किया जाना अपमानजनक है या नही ? वजीरियो के यहाँ ओर्कजई की लडकी नही ब्याही गई तो वजीरियो की लडकी उनके यहा कैसे ब्याही जा सकती है ?

जब्बीर ने अपनी बीबी फितिया कौसीखाँ के हाथ बेच दी थी। उस पर

कई दिन पचायत हुई । जमान को एतराज था कि कौसीखा का फितिया से पहले ही मेल था । जव्वीर को चाहिये कि कौसीखाँ की रकम वापिस करके फितिया का कत्ल करे । जव्वीर ने जवाब दिया—"जव उसने फितिया को वेच डाला तो अब वह वेइज्जती का वदला क्यो ले ?" जमान को गुस्सा आ गया । उसने कहा, "सौदा वाद मे हुआ वेइज्जती पहले थी ! वेइज्जती का हर्जाना भरो फिर सौदा करो ! यह भी कोई तरीका है ? " जो चाहे कर लिया, शरह कुछ भी नही ?"

करीमगुल ने शरह से फैसला किया कि जव्वीर कौसीखाँ से अपनी वेइज्जती का हर्जाना आठ रुपया, औरत की कीमत चालीस रुपये के इलावा और ले ले ।

कौसीखा ने उज्र किया, यह उस पर जुल्म है । फितिया से उस का पहले कोई ताल्लुक न था । आठ रुपये वह नही देगा । पचायत चाहे तो फितिया जव्वीर को लौटा दे और उसकी रकम चालीस रुपये उसे मिल जाय । जव्वीर औरत फेर लेने के लिये तैयार न हुआ । चालीस रुपये उसने गोमल दर्रे से एक देसी वन्दूक खरीदने मे खर्च कर दिये थे ।

जमान ने क्रोध मे खाँस-खाँस कर कहा—"औरत कभी लौटाई नही जा सकती । औरत है, गाय-भैंस तो नही है । कौसीखाँ के पास हर्जाने के रुपये नही तो फितिया को किसी दूसरे के हाथ भले ही वेच दे लेकिन जव्वीर को नही लौटा सकता । ऐसा कभी नही हुआ कि औरत को वेच कर लौटा लिया जाय । ऐसा होगा तो ईमान, शरह और शरम कैसे रहेगी ? जव्वीर को आठ रुपया हर्जाना मिलने का फैसला मिरली (पचायत) ने कर दिया इसलिये कौसीखा मजबूर हो गया । हम्जा फितिया के लिये तीस रुपये देने को तैयार हुआ । बुढापे मे उसकी औरत मर गई थी । घर मे काम-काज करने वाला कोई न था ।

फितिया बुड्ढे के हाथ न विकने की जिद्द करने लगी । करीमगुल ने फैसला किया कि औरत को इस वात से क्या मतलव ? हमीद और जमान को वहुत गुस्सा आ गया । हमीद छुरा निकाल कर वोला—"वेशर्म हरामजादी का सर काट लो । औरत को क्या मतलव कि बुड्ढा शौहर कीमत देता है कि जवान ? कीमत क्या वह दे रही है जो जवान और वुड्ढा देखेगी ? शौहर वुड्ढा तो क्या, जवान तो क्या ? वुड्ढा मर्द अगर गधा खरीदेगा तो क्या गधा भी सवारी देने से इनकार कर देगा ? औरत को जवान हिलाने की क्या मज़ाल ?"

जमान ने बहुत देर तक खाँस कर आँखे लाल कर कहा—"तो बुड्ढे क्या करे ? बुड्ढे आदमी नही है ? बुड्ढे मर जाय क्या ?"

हमजा फितिया को ले गया पर मामला तय नही हुआ। पंचायत के पास शिकायत आई कि फितिया बदचलनी से बाज नही आती। ठोढी तक मुह उघाडा रखती है। हमीद और कई आदमियो ने उसे दूसरे मर्दो की ओर मुस्कराते देखा है। फैसला हुआ कि हम्जा औरत को काबू मे न रखने का पाँच रुपया जुर्माना भरे।

हम्जा ने कहा—"पाँच रुपये वह नही दे सकता। पचायत कहे तो फितिया का नाक काट सकता है।" आखिर फितिया की नाक काटने का फैसला हो गया।

रमजान-शरीफ कार्तिक के महीने में पडा था। कबीले के लोग दोपहर से पहले या चौथे पहर खेत मे फसल की जमीन तैयार करने, ईंट बटोरने, चरने के लिये छोडे माल की देखभाल करने या जरा बदन की सुस्ती झाडने इधर-उधर चले जाते थे। चलने-फिरने के काम का न रहने से डाक्टर आँगन मे बैठा, भारी चक्की मे घर-घर कर, नई फसल की मक्का पीसा करता। आस-पास के घरो की औरते रोज़ा के लिये खाना पकाने की तैयारी मे आग, मिर्च, लहसुन, प्याज माँगने इधर-उधर भागती फिरती।

इव्वा कुछ चुलबुली थी। आते-जाते अपनी सुरमा भरी बडी-बडी आँखो से डाक्टर की ओर कटाक्ष कर जाती। कभी कोई समीप देखने-सुनाने वाला न होता तो धीमे से कह जाती—'हिश्त बोटा !' जिस रोज डाक्टर को रोटी देने की उसकी बारी होती, सालन मे दो तीन बोटिया भी होती और कच्चे प्याज का छोटा-सा टुकडा भी। आती-जाती वह अपने कानो मे लटके चादी के भारी-भारी झुमके भी दिखा जाती। इव्वा की तेल या चर्बी से चिकनी, माथे पर चिपकी पट्टिया, चिकने चमकते गुलाबी चेहरे और साहस भरी आखे देखकर डाक्टर के शरीर मे भी सिहरन सी दौड जाती परन्तु भय से आख न उठा पाता। उसे इव्वा से भय लगता था। वह निश्चय कर लेता कि उसकी ओर न देखेगा परन्तु बडी कठिनता से वह अपने को वस कर पाता और कभी आख उठकर मुस्कराहट भी आ जाती। एक चिनगारी सी मन मे उठकर रह जाती। फितिया और दूसरी स्त्रियो के भयानक काण्ड की बात स्मरण कर वह काप उठता।

इव्वा की सहेली थी नूरन। वे एक दूसरी को दिखा डाक्टर से मजाक करती और हाथ का अगूठा चूम कर संकेत करती। एक दिन डाक्टर की बारी

नूरन के घर मक्का पीसने की थी। नूरन ने भीतर से पुकारा—"गठरी धरी है, उठा कर लेजा।" डाक्टर शंकित चित्त से भीतर गया। नूरन गठरी के पास सिर उघारे खडी थी। डाक्टर की बाह थाम कर उसने पूछा, "अब ?"

भय से डाक्टर का हृदय धक-धक करने लगा। नूरन ने डाक्टर को बाहो मे लेकर गाल पर दात मार दिया। नूरन के गले की चादी की भारी हमेल डाक्टर की हँसली मे चुभ गई। डाक्टर का चेहरा पुराने कागज की तरह पीला पड गया और शरीर पसीना-पसीना हो गया। उसे कापते देखकर नूरन शिथिल हो पीछे हट गई। डाँट कर उसने कहा—"उठा लेजा गठरी ! क्या देखता है ?"

गठरी ले जाते हुये डाक्टर की कमर पर आ पडी नूरन की लात। जिसने उसे और जल्दी बाहर ढकेल दिया।

इसके बाद नूरन डाक्टर को देखती तो घृणा से थूक देती—"नामर्द, बोद्दा !"

इब्बा मुस्करा कर कहती—"ढेर डराँ सडई" ! (डरपोक आदमी)

डाक्टर सोचता कि कैसी चुडेले है ? इन्हे जान का भी भय नही ? वाहरे हिम्मत। उनके प्रणय के प्रति उसे कुछ उत्साह न होता और परिणाम में दिखाई देती, छुरे की पैनी धार सगसार होकर (पत्थरो से कूटा जाकर) अपना क्षत-विक्षत शरीर ?

डाक्टर के मन मे इब्बा की चुपके से कही बात भी प्राय सिर उठाती रहती—तू मुझे सुलेमान खेल मे मामाजई के शहर ले चल। तू तो इलमदार है। मेरा मर्द मुझे बहुत मारता है। उसे औरत से क्या मतलब ? वह तो मुझे भी लौडा ही समझता है। मै तो औरत हूँ ? ...नही क्या ? इब्बा कहती—सच कहती हूँ, मुझे गजनी की राह भी मालूम है !

जब सब ओर से निराशा का अन्धकार घना हो जाता, डाक्टर इब्बा की बात सोचने लगता परन्तु एक फूहड औरत के सहारे जोखिम का इतना बडा खेल खेलने का साहस न होता।

सध्या समय हुक्का गुडगुडाते हुये वजीरियो के गिरोह मे राजनीति की चर्चा भी चलती। वे डाक्टर से पूछते—दुनिया मे सबसे बडी और ताकतवर बादशाहत कौन है ? विलायत और रूस मे क्या होना है ? फिर डाक्टर के अज्ञान पर हँसकर करीमगुल समझाता—अब चौदहवी सदी का अत आ रहा है। विलायत और रूस खत्म हो जायँगे। रूस मे आदमी खुदा से मुनकिर होकर आदमी को खाने लगा है और बहुत जल्दी सब खत्म हो जायगा। इब्लिस

(शैतान) ने इन सब लोगो को जल्दी खत्म कर देने के लिये उन्हे बहका दिया। उनकी औरतो को खूबसूरत बना दिया है और वे मुह उघाडा रखती है। काबुल और कधार मे औरतें जैसे बुरका पहनकर रहती हैं ऐसी बात शरह के खिलाफ है। औरत को बुरका ओढा कर घर मे बैठा रखने से वह बदचलन हो जाती है। शरह का तरीका वह है जैसे वजीरियो की औरते रहती हैं।

करीमगुल समझाता—इब्लिस ने विलायत वालो को अपने आप चलने वाली बन्दूकें और हवाई जहाज बनाने सिखा दिये हैं ताकि वे आपस मे लड-कर खत्म हो जायँ। खुदा को सब से अधिक प्रेम वजीरियो की कोम से हैं इसीलिये उनके पहाडो मे इब्लिस का जादू, रेल-तार वगैरह नही चल सकता। खुदा ने वजीरियो को गरीब बनाया है कि वे खुदा को याद करते रहे। हिन्दुस्तान मे रुपया ह इसीलिये वहाँ का आदमी बोद्दा और डरपोक होता है। अल्लाह जिसे चाहता है, उस के घूरे मे टपका डाल देता है ताकि वह अल्ला-अल्ला पुकारता रहे।

ईद से कुछ दिन पूर्व करीमगुल ने प्रस्ताव किया कि ईद के दिन डाक्टर को कलमा पढा कर मुसलमान बना लिया जाय, इस से कबीले का सवाब होगा और गजनी मे सौदा भी आसानी से हो जायगा। करीमगुल के इस प्रस्ताव से डाक्टर को एक विचित्र मानसिक आघात लगा। इनकार करने की गुजाइश न थी। यह कोई ऐसी बात भी न थी, जिसकी आशा वजीरियो से न की जानी चाहिये थी परन्तु उसे मुसलमान बनाने का अर्थ क्या? पाँच मास से उस का जीवन मुसलमान जेसा ही था। बिलकुल उन के जैसा खाना-पीना, उन के ही ढग से रहना। अलबत्ता एक निमाज नही पढता था। हिन्दुस्तान मे लाखो मुसलमान निमाज नही पढते और मुसलमान बने रहते हैं। वह सोचता रहा कि अब तक वह हिन्दू था तो उस मे हिन्दूपन ही क्या था। फिर भी जो कुछ वह नही था, जोर-जबरदस्ती से बना दिया जाना, उसे बुरा मालूम हो रहा था।

हिन्दू घर मे जन्म लेने से ही यदि वह हिन्दू था तो अब उसे कैसे बदल दिया जा सकता है? जब अल्लाह ने उसे खुद हिन्दू बनाया है तो अब उसे मुसलमान बना देने से अल्लाह वजीरियो से कैसे खुश हो जायगा? यदि अल्लाह को दुनिया भर के लोगो को मुसलमान होना ही मजूर है तो उसने हिन्दू, बौद्ध, ईसाई और दूसरे मजहब के लोग बनाये ही क्यो? शायद इसलिये कि वजीरी उन्हे मुसलमान बना कर सवाब हासिल किया करे? खुदा की अपेक्षा वजीरियो

को ही अधिक चिंता है कि लोगों को मुसलमान होना चाहिये या कुछ और ? या खुदा की बात केवल वजीरी या उन जैसी बुद्धि के लोग ही समझ सकते हैं ?

वज़ीरियों के हाथ पड़ कर निस्सहाय हो जाने से पहले डाक्टर को जीवन में कभी भगवान की राय और इच्छा जानने की आवश्यकता नही हुई। जब निस्सहाय होने के कारण भगवान की सहायता की जरूरत आ पडी, तब पता लगाना कठिन हो गया कि भगवान उसकी सुनेगे या वजीरियों की ? शायद यह दुख उसे पूर्व जन्म के किसी पाप के फलस्वरूप मिल रहा है ? परन्तु वह कौन पाप था ? जब तक पता न लगे, वह उस पाप से कैसे बच सकता है ? उसे जान पड़ने लगा कि मनुष्य का अपना विश्वास ही भगवान है और भगवान की प्रेरणा उसे अपनी बुद्धि के अनुसार समझ आती है। उसके विचार मे उसे ज़बरदस्ती मुसलमान बना देना घोर अन्याय और मूर्खता थी परन्तु वज़ीरियों की दृष्टि मे भारी सवाब, जिससे उन्हे बहिश्त की हूरो की आशा थी।

ईद के दिन डाक्टर का सिर मूडा गया, मूछे और दाढी भी शरई ढग से तराश दी गई। करीमगुल ने उसे कलमा पाक पढाया। उसका नया नाम रखा गया—अन्सारगुल। उसे नये कपडे दिये गये, आधे थान का कुर्त्ता जिसमे पूरे बर की चौडी आस्तीन थी। आधे थान की पडदूक (सिलवार)। एक हरे रग की पटकी (वास्कट)। एक थान पगडी के लिये और दूसरा थान पगडी के ऊपर से या कमर पर लपेट लेने के लिये दिया गया।

करीमगुल ने समझाया—पक्के मुसलमान को हमेशा एक थान कपडा कफन के लिये साथ रखना चाहिये। मौत का ठिकाना क्या ? कब और कहाँ आ जाय ? बेकफन दफनाये जाने से जब्राईल के सामने नगे पेश होना पडेगा। नगे आदमी को जब्राईल दोजख मे ढकेल देगा। करीमगुल ने डाक्टर को हिदायत की कि अब मुसलमान हो जाने के बाद अगर कही उस का दाँत या शरीर का कोई हिस्सा कट जाये तो उसे सम्भाल कर रखे। वह उसके बदन के साथ ही कब्र मे दफनाया जाना चाहिये नही तो बहिश्त मे उस के जिस्म का वह हिस्सा कम रह जायगा। जिस्म खुदा की अमानत है। उसे जैसा का तैसा खुदावन्द करीम को वापिस करना चाहिए।

यह उपदेश सुनने के बाद अन्सारगुल ने समझा कि रहीम अपनी कटी हुई उँगली धागे में पिरोकर क्यो गले में लटकाये हुये है और जनान अपने सब टूटे हुए दांत एक थैली मे तावीज की तरह गले मे क्यो लटकाये रहता है ?

मुसलमान हो जाने के बाद अन्सार को अपने मन, मस्तिष्क और शरीर

मे कोई अन्तर अनुभव न हुआ। इस सब मजाक को उसने बेबसी की अवस्था मे, मन ही मन हस कर, सह लिया। मन मे उसने सोचा, इस जिन्दगी मे तो उस का जो कुछ बने या बिगडे, वहिश्त मे उसके सुखी होने का प्रबन्ध करीमगुल ने कर दिया। धर्म और सप्रदाय मृत्यु के बाद मनुष्य को भगवान तक पहुँचाने की एजेन्सियाँ है। परन्तु जब इस जीवन के सकट मे ही भगवान ने उस की सुध न ली तो वह भविष्य मे उन का क्या विश्वास करे''' ?

अन्सार के पॉव के जख्म भर आये थे। जमान ने उन्हे पहले की तरह फिर से नही दागा। शायद इसलिये कि उस के मुसलमान हो जाने से उस के भागने की आशका कम हो गई थी या इसलिये कि उस के आगे चल देने का समय निकट आ रहा था।

×   ×   ×

हमीद, रहमान और करीमगुल अन्सारगुल को गजनी ले गये। उस का प्रबन्ध अब्दुल्ला सौदागर के यहाँ हो गया। अब्दुल्ला पोस्तीनो का व्यापारी था। उसका व्यापार काबुल, कधार, हेरात और मशद तक था। करीमगुल ने अब्दुल्ला को समझाया—अन्सारगुल इलमदार आदमी है, कई जुबाने जानता है, जवान है। वह घर का अमीर और खानदानी है, देर-सवेर उस का रुपया जरूर आजायगा। हमे जल्दी है इसलिये यह सोदा कर रहे है। वह फिरगी हकीमी जानता है, काम का आदमी है। कागज पर मकडी की-सी तेज चाल से चिट्ठी लिख सकता है। स्वभाव का नेक, फर्माबरदार और मुन्शी तबियत है। अब्दुल्ला उस से हजारो पैदा कर सकता है।"

अब्दुल्ला ने कहा—"होगा, लेकिन अपने को क्या ? हमे और जरूरत ही क्या। काम चल रहा है। काम है ही कौन बहुत। बनज तो सारा काबुल के मिल्ली-बैंक के हाथ चला गया। हमारा अपना लडका पढ-लिख कर सब सीख गया है। इतना रुपया वह इस जमाने मे कहाँ से दे ? और फिर इस आदमी का भरोसा क्या ? पढे-लिखे आदमी से हमेशा खतरा ही मानिये।"

बहुत देर तक दोनो तरफ से युक्ति-प्रत्युक्ति होने के बाद तय हुआ कि अन्सार अब्दुल्ला को पॉच हजार नादरी अफगानी का तमस्सुक लिख दे। अब्दुल्ला वजीरियो को एक हजार कलदार (हिन्दुस्तानी रुपया) दे देगा लेकिन असल कर्जा अन्सार पर दो हजार छ सौ रुपये का होगा।

अन्सार को विश्वास था कि गजनी जैसे शहर मे जहाँ डाक और तार

चलती है, देश से रुपया मँगा सकने में कठिनाई न होगी। गजनी लाये जाने से पूर्व अन्सार को गजनी जाने की कल्पना से भय मालूम होता था परन्तु वहाँ पहुँच कर उसे भय होने लगा कि सौदा ठीक से न पटने के कारण कहीं उसे सिन्दा न लौट जाना पड़े। सौदा न पटने का कारण हो सकता था, अब्दुल्ला के मन में रुपया वसूल न होने का सन्देह। यह विश्वास दिलाने के लिये कि रुपया वह वास्तव में मँगा सकता है और अदा करना चाहता है, उसने लेन-देन के ढंग से टोक कर कहा—"अपना कर्जा तो वह अदा करेगा ही परन्तु यदि वह जल्द ही रुपया मँगा दे तो सूद में कुछ छूट मिलनी चाहिए।"

अब्दुल्ला शहर का रहने वाला मजा हुआ सौदागर था। मुस्कराकर उस ने कहा—"तुम हिन्दुस्तान के मुसलमान हो इसीलिये सूद की बातें करते हो। हम क्या 'सुलेमान-खेल' के सूदखोर गिलजई हैं? तुम नहीं जानते, शरह में सूद ऐसे हराम है जैसे सुअर का गोश्त। हम सूद की बात नहीं करते। हम तो जेब से हजार रुपया रोकड़ दे रहे हैं। अब तुम्हारा रुपया जाने कब आवे? न आये तो तुम नौकरी कर उसे बीस बरस में पूरा करोगे। फिर आदमी की जान का क्या, गोश्त का लोथड़ा है, एक चोट से, बीमारी की झपट से, रहे न रहे। नकद रुपया तो फिर रुपया ही है। यह सब तो खुदा की रजा से है। इन्शा-अल्ला तुम पढ़े-लिखे आदमी हो, विलायती जुबान जानते हो। हम व्यापारी आदमी हैं, काम अच्छा करोगे, आराम से रखेंगे, इनाम भी देंगे। नहीं तो अफगानिस्तान का कानून सख्त है। कर्जा न देकर भागने की कोशिश करोगे तो संगसार कर दिये जाओगे।

जब अब्दुल्ला की गद्दी पर अन्सार के कर्जे की लिखा-पढ़ी हो रही थी, अब्दुल्ला का नौजवान बेटा नासिर, मसनद के एक कोने में दीवार से पीठ लगाये चुपचाप इस सब व्यापार को असंतोष की दृष्टि से देख रहा था। यह जान कर कि अन्सार पढ़ा-लिखा आदमी है और मजबूरी में उससे रुपये वसूले जा रहे हैं, नासिर की सहानुभूति अन्सार की ओर हो गई। सूद की समस्या पर चुप रह जाना जैसे उसके लिये सम्भव न रहा। वह बोल उठा—"सूद नहीं तो क्या है?"

अब्दुल्ला ने गम्भीर दृष्टि से बेटे की ओर देखकर चुप रह जाने के लिये कहा और करीमगुल को सुनाने के अभिप्राय से वह बोला—"मौलाना, यह लड़का काफिर अमानुल्ला के खोले मदरसे में दो बरस क्या पढ़ आया, इसका दिमाग बिगड़ गया है। शुक्र है अल्लाह परवरदिगार का, वह कुफ्र दूर हुआ

और कावुल मे ईमान कायम हुआ । अब अमीर नादिरशाह गाजी है । इन सव लडको की अक्ल ठीक हो जायगी । कहते है, हम विलायती जुबान सीखेगे और विलायत देखेगे । अरे भाई, विलायत के कुफ्र से तुम्हे मतलब ? तुम सौदागर के बेटे हो, सौदागरी करो । चार पुश्त से हमारी पोस्तीने दुनिया के कोने-कोने मे विकती है । अग्रेज, फारसी ओर रूसी का इल्म ज्यादा है तो ऐसी पोस्तीन बनाकर दिखाये ?"

अब्दुल्ला ने अन्सार को मुशीगिरी का काम दिया, भेडो की खाले गिनना, सूत और कढाई का हिसाव करना । इसके इलावा दुकान की सफाई या जो छोटा-मोटा काम हो । नासिर भी दुकान का काम लिखने उसके साथ वैठता था । दोपहर के समय, अब्दुल्ला के सोये रहने पर या घर के भीतर हरम मे चले जाने पर, नासिर अन्सार से उसकी कहानी सुनता । सिपन्दा के छ मास के जीवन के वाद अन्सार को अब्दुल्ला की दुकान की नौकरी स्वर्ग जान पड रही थी । विश्राम की अवस्था मे कल्पना अधिक उग्र होने लगी । घर का मार्ग सरल दिखाई पडने पर वहाँ पहुचने की छटपटाहट भी वढने लगी । मसनद पर नासिर की वगल मे लेटे, हुक्का गुडगुडाते हुये वह अपनी कपडे की कोठी, राज और फिर नये सिरे डाक्टरी की प्रैक्टिस चलाने के स्वप्न देखने लगता ।

वह हिसाव लगाता, मगलवार की डाक से उसकी चिट्ठी कावुल पहुँचेगी । कावुल से दूसरे तीसरे दिन पेशावर, ओर फिर दो दिन मे देहली । पत्र पाते ही भाई अब्दुल्ला सौदागर को रुपये भेज देगे और वह अपने घर के लिये रवाना हो जायगा । सप्ताह के वाद सप्ताह वीतने लगे परन्तु देहली से कोई उत्तर न आया । अन्सार विचारो मे खोया रहता ।

नासिर टोक वैठता, हिन्दुस्तान मे क्या सब जगह रेल से सफर होता हैं ? एक-एक घण्टे मे चालीस-पचास मील चले जाते है ? हवाई जहाज मे कैसा लगता है ? तुम्हारे मुल्क मे दूसरे का राज होने से कैसे लगता हे ? सुना है, रूस मे छोटे-वडे सव एक हो गये है । कोई खुदा को नही मानता । मुल्ला और मसजिद सब खत्म हो गये है । वहाँ कोई भूखा नही मरता । मजदूर भी अमीरो की तरह महलो मे रहते है । कोई किसी का नौकर नही है । हमारे मुल्ला लोग रूस से बहुत जलते है । इन्हे विलायत की वाते पसन्द नही क्योकि उससे इनका राज नही रहेगा ।

नासिर पूछता—"सुनते है, रूस की सल्तनत बहुत ताकतवर है । रूस अपनी सल्तनत क्यो नही वढाता जैसे अग्रेजो ने वढाई है ? उनके पास भी तो

सब फौज-फाटा और हथियार हैं। सुनते हैं कि दरिया आमू से परे ताजिकिस्तान का सब मुसलमान मुल्क बदल गया है। ईरान और तुर्किस्तान में अब कोई अरबी नहीं पढता, न अरबी पोशाक पहनता है। हमारे मुल्ला अपना जोर कायम रखने के लिये यहाँ अरब की तहजीब लादे हैं। अरबी खुद गुलाम-बद्दू है, उनकी नकल से फायदा ?”

नासिर कहता—“अमानुल्ला ने तो काबुल को बदल दिया था। सब लोग नये ढंग पर आने लगे थे। औरतें मेमों की तरह बाजारों में आती-जाती थीं। इस काफिर बच्चा-सक्का ने गरीब बेगुनाह औरतों को बाजारों में गोली से उड़वा दिया। ईरान और तुर्किस्तान में औरतें बिना नकाब के रहती हैं वहाँ भी तो इस्लाम है ? हमें ये मुल्ला जबरदस्ती नमाज पढाते हैं। हमें बहिश्त जायें या दोजख, इन्हें मतलब ? मैं तो नमाज के वक्त ख्वाब देखा करता हूँ। सिनेमा देखना मुझे बहुत अच्छा लगता है। काबुल में हम खूब सिनेमा देखते थे। ऐसा जान पडता था, विलायत पहुँच गये। हिन्दुस्तानी सिनेमा में बहुत लुत्फ आता है। उसका गाना बहुत अच्छा मालूम देता है। भाई, सिनेमा में बहुत मजा आता है, ऐसे-ऐसे नजारे ! खुदा के बनाये नजारों से भी बेहतर !”

उन्नीस-बीस बरस के नासिर की बातों का उत्तर देना अन्सार के लिये कठिन हो जाता। कभी वह बिलकुल अनजान बच्चों की सी बातें करता और कभी गम्भीर चर्चा करने लगता, जैसे वह अपने चारों ओर फैले अज्ञान और संकुचित जीवन से छटपटा रहा हो। डाक्टर ने जीवन के पिछले एक वर्ष में जो कुछ देखा, उससे जीवन की निश्चित धारणाओं के प्रति उसका विश्वास उखड चुका था। उसका मन अन्तर्मुख और चिन्तामग्न रहता। किसी भी बात को पूर्ण रूप से शाश्वत सत्य स्वीकार कर लेने की प्रवृत्ति पहले भी न थी। उसके लिये अब कुछ भी अप्रत्याशित न था। रुपया भेजने में भाई की उदासीनता ने उसके मन में सम्पत्ति के प्रति एक वैराग्य का भाव उत्पन्न कर दिया। देहली में भाई को अपनी अवस्था लिखने के अतिरिक्त उसने अपने एक मित्र और सहपाठी को पंजाब में भी एक पत्र लिखा था। उस मित्र के यहाँ से उत्तर आ गया। मित्र ने लिखा था—तुम्हारा पत्र हमने देहली में लाला ईश्वरदास खन्ना को रजिस्टरी से भेज दिया है। यह पत्र मिलने के बाद से डाक्टर का विश्वास हो गया कि बडे भाई की उदासीनता का कारण पारिवारिक सम्पत्ति का लोभ ही है।

डाक्टर को बीती बातें याद आने लगतीं, उसके फौज में नौकरी पा जाने

के वाद घर जाने पर वडे भाई प्राय चर्चा छेड देते थे, आधी जायदाद की कीमत भगवान की पढाई पर खर्च हो गई तो क्या, उसकी जिन्दगी तो वन गई। उसे आठ सौ रुपया माहवार मिलता है। आजकल नौकरी मे ही भलाई है। वाजार की तेजी-मदी से मतलव नही, न हुण्डी भरने की चिन्ता, न हुण्डी डूवने की फिक्र, फिर भी तरक्की होती जायगी। उन्हो ने मुसीवते उठाई, कर्जा तक हो गया पर कोई चिन्ता नही, सव सफल हो गया। अव भगवान की चिन्ता करने की जरूरत नही। वह ढग से खर्च करे तो जल्दी ही अपने लिये मकान वंगला वना ले सकता है। अव तो उन्हे अपने वच्चो की चिन्ता है। उन वेचारो के लिये भी तो कुछ करना होगा। वे कह देते, अपनी कमाई से भगवान जो जायदाद मकान वनायेगा, वह उसी की होगी। इस वारे मे वे लिखा-पढी करके वात पक्की कर देगे।

इन वातो से राज कुछ खिन्न-सी हो जाती थी। डाक्टर उसे समझाता था—"इन वातो से अपने को क्या लेना है ? सोचता हूँ, एक दिन इस सब से दस्तवरदारी लिखकर झगडा समाप्त कर दूँ।" अव वे वाते याद कर डाक्टर का मन सम्पत्ति के लोभ के प्रति घृणा से भर जाता। सम्पत्ति है, मनुष्य के जीवन मे सहायता का साधन परन्तु जव उसके लिये मनुष्य मनुष्य को वलिदान कर देने को तैयार हो जाय तो वह मनुष्य-जीवन की सहायक नही, शत्रु हो जाती है। वजीरी लोग जो इतनी क्रूरता करते है, वह भी इसी सम्पत्ति को पाने के लिये ही। उनकी सम्पत्तिहीन प्रकट क्रूरता और वर्वरता मे सम्पत्ति और कानून के मोहक आवरण मे लिपटी यह क्रूरता क्या अच्छी है ? वह सोचने लगता, भैया आखिर मेरी रिहाई के लिये अपने हाथ का धन क्यो दे दे ? उन्हे इससे लाभ ? एक माँ-वाप की सन्तान होने से ही क्या होता है ? हमारे पिता छ भाई-वहन थे परन्तु उनका परस्पर क्या सम्वन्ध रह गया ? भाई मेरे लौट आने से अपनी आर्थिक हानि के अतिरिक्त और क्या आशा कर सकते है ? तभी तो वजीरियो मे चचेरे भाई का अर्थ 'तर्वूर' यानी शत्रु होता है। जव भाई को भाई से सहायता मिलने की आशा नही, वल्कि हानि की ही आशा है तो फिर प्रेम और आकर्षण कैसा ?

डाक्टर सोचने लगता—परन्तु राज ? वह मेरी उपेक्षा कैसे कर सकती है ? जीवन मे उसके लिये मेरे सिवा और कौन है ? तव उसे वजीरी स्त्रियो की वाते याद आने लगती। वह सोचता जैसे हमारे यहाँ की स्त्रियाँ अपने पति के लिये प्राण निछावर करने के लिये व्याकुल रही है, वजीरी स्त्रियाँ वैसे नही।

क्या हमारे यहाँ और तरह की स्त्रियाँ होती हैं और वजीरिस्तान में दूसरे किस्म की ? देहली, आगरे की गलियों में जन्म ले लेने से स्त्री त्यागमयी, पतिव्रता और बंजर पहाड़ों में पैदा हो जाने से स्वार्थी, क्रूर और कुलटा हो जाती है ? अनेक बातें उस के ध्यान में आने लगतीं, रब्बा उसे प्यार करती थी या नहीं ? नहीं करती थी तो स्पिन्दा में उस के साथ भागने के लिये, जान की बाजी लगाने को क्यों तैयार हो गई थी ? और नूरन ? नूरन से उसे भय लगता था—घृणा होती थी। यदि नूरन पसीने और चरबी से गंधाती लहीम-शहीम औरत न होकर राज जैसी होती और उसे प्यार करने में प्राणों का भय न होता या वह अब्दुल्ला के परिवार की उस लड़की जैसी होती जिसकी छवि उसे कभी-कभी दायें ओर की दो मंजिल की खिड़की से दिखाई दे जाती है, जो उमरखैयाम के साकी से अधिक सुन्दर है और उस से कहीं अधिक कमनीय, क्योंकि वह मदिरा का प्याला हाथ में लेकर निर्लज्जता से इतराती नहीं बल्कि सकुचित पुष्प की भाँति सौम्य है। भय और संकोच के कारण वह उसकी ओर देख भी नहीं पाता। भय उसे स्पिन्दा में भी था और गजनी में भी है। किन्तु उस भय और इस भय में अन्तर है। स्पिन्दा में अनुभव होने वाला भय था हिंस्र पशु से लगने वाले भय की तरह जिसमें तर्क के लिये गुंजाइश नहीं और गजनी का भय था, अचित, सम्मान और व्यवस्था का रंग लिये हुए।

कभी-कभी वह दायीं ओर की दोमंजिला पर खिड़की से दिखाई देने वाली नवयुवती की कल्पना में सब चिन्ता भूल जाता। अपनी बर्फानी चोटियाँ आकाश में उठाये, लाल हिरमिजी रंग के पहाड़ों से घिरी गजनी की उपत्यका में, जहाँ तीन मास तक प्राण सुन्न कर देने वाली सर्दी ने दो हाथ गहरी बरफ बिछा कर जीवन के सब चिह्न छिपा कर, रौद्र निस्तब्धता फैला दी थी, जहाँ केवल पहाड़ी कौओं का रूखा शब्द ही सुनाई देता था, फागुन के आगमन से मखमली हरियावल छा गई। पतझड़ में नंगे हो गये अनार, बादाम अखरोट, खुमानी और सेब के वृक्षों पर श्वेत, गुलाबी और हलके बैंगनी फूल चिकनी टहनियों पर यों फूट आये कि प्रत्येक वृक्ष एक तारों भरा आकाश जान पड़ने लगा।

सूखे और रूखे दिखाई देने वाले वृक्षों के शरीर में अवरुद्ध रस ने जीवन की व्याकुलता के कारण पत्ते निकलने की भी प्रतीक्षा न की, उतावली में असंख्य फूल फूट आये। इन वृक्षों के कुंजों में, श्वेत-गुलाबी पखुरियों से छिटकी हरियाली पर यदि वह अब्दुल्ला के घर की कल्पना की भाँति सूक्ष्म, सुन्दरी

युवती रंगीन रेशमी रूमाल मे लिपटे सिर से काली नागिन सी दो वेणियाँ कमर से नीचे लटकाये, चौडी आस्तीन का घुटनो तक रेशमी कुरता और घेरदार सिलवार की तग मोहरी से छुई जाती गुलाबी एडियाँ जरीदार सलीपरो पर रख कर अपने प्रतीक्षा-सुपुप्त उरोज काली मखमल की सदरी मे दबाये, यौवन भार से श्रान्त शरीर लिये उस के कधे का सहारा लेती हुई, यात्रा से थक कर अपनी भारी पलको को धीमे से खोल कर फैली हुई नीली आँखो से उस की आँखो मे देख कर यदि किसी दिन कहे, 'क्या मुझे छोड जाओगे ?' तो भी क्या डाक्टर अपने जीवन का उद्देश्य देहली जाना ही समझेगा ?

इस प्रकार की कल्पनाओ के बाद असार का ध्यान राज की ओर पलट जाता जैसे उसे व्याकुल कर चुकने के बाद वह सहसा उस के पास लौट आई हो। उस के शरीर मे खिचाव और ऐठन अनुभव होने लगती, हाथ की मुट्ठियाँ बल पूर्वक बँध जाती जैसे राज को उन मे पकड पाया हो। रक्त के वेग से शरीर मे समा न सकने वाली शक्ति की व्याकुलता अनुभव होने लगती। वह कल्पना मे खो जाता, यदि उस समय राज उसकी बाहो मे होती, क्या वह सब कुछ न भूल जाता ? वह आवेग कितना दुर्दमनीय था ! उस आवेग मे सुख और सफलता का कितना प्रबल उद्वेग था। इस निष्फल आवेग के परिणाम-स्वरूप शिथिल हो कर व्यर्थता और अभाव की अप्रिय अनुभूति उसे खिन्न कर देती। राज के प्रति उसे विरक्ति होने लगती।

असार मन ही मन तर्क करने लगता, आखिर राज मे ही ऐसी क्या बात है ? यदि मै राज से वैसे ही व्यवहार करता जैसा सैदगुल इव्वा से करता था तो भी क्या वह मुझ से प्रेम करती ? यदि सैदगुल इव्वा से वैसा ही व्यवहार करता, जैसा मै राज से करता था, तो इव्वा क्यो न पतिप्राणा बन जाती ? राज मुझे नही, मुझ से मिलने वाले सतोष से प्रेम करती थी या वह उस एक मात्र पुरुष को प्रेम करती थी जिस पर वह जीवन की प्रत्येक बात के लिये निर्भर थी, जिसके बिना जीवन सम्भव न था। मै जैसे राज से प्रेम करता था, वैसे ही किसी दूसरी स्त्री से भी कर सकता हूँ। राज भी, जो कोई भी उसका पति होता उसी से प्रेम करती। मुझ मे ही क्या विशेषता है ? निष्फल होती हुई उत्तेजना से अँगडाई ले वह कहता, यह सब व्यर्थ है, इन बातो मे क्या रखा है ? ससार मे सब को जीना है। राज ही केवल एक मात्र स्त्री नही, न देहली जाना ही जीवन के लिये एक मात्र मार्ग है।

अब्दुल्ला सौदागर ने देखा, दुकान की सब जिम्मेवारी डाक्टर पर छोड

देने से लाभ ही हुआ। इससे अधिक संतोष उसे यह देख कर हुआ कि सदा काबुल की ओर उड़ जाने के लिये छटपटाता, उद्धत और बेपरवाह नासिर डाक्टर की संगति में सौम्य बनने लगा है। अब्दुल्ला ने बुढ़ापे के सुख के लिये नई जवान बीबी ब्याही थी। वे घर के बाग में, पानी के हौज के किनारे, हरी घास पर बिछे कालीन पर जवान बीबी के साथ दोपहर बिताते। अब्दुल्ला को फारसी शायरी में शौक था। नई बीबी फारसी जानती थी। पति तकिये का सहारा लिये, अधमुंदी आँखों से चरस मिले नश्कं तम्बाकू की फर्शी गुड़-गुड़ाते रहते और बीबी उनके सामने घुटनों के बल बैठ कर सुरीले स्वर में शाहनामा सुनाती रहती। वहीं वे हौज से वजू कर निमाज अदा करते। फिर बीबी को हरम में भेज कर कुरानशरीफ की तलावत करने लगते।

अब्दुल्ला का दिन बाग में ही बीत जाता। आड़ू और खुर्मानी के पेड़ों के नीचे हलके बैंगनी, गुलाबी, श्वेत फूलों की झड़ती पत्तियों में वे आराम करते रहते। उनके लिये दो-दो, तीन-तीन घंटे में सुगन्ध की महक लिये, हरी चाय रोगनी बर्तनों में पहुँच जाती। स्वयं एक छोटा प्याला चाय का लेकर शेष हरम में या असार और नासिर के लिये दुकान पर भेज देते। गोदाम और दुकान को कभी सप्ताह में एक बार देख लेना काफी था। उन्हें विश्वास था कि उम्र भर ईमानदारी पर कायम रहने और खुदा की इबादत करते रहने के बाद अल्लाह के फजल से ही बुढ़ापे में उन्हें असार जैसा मददगार मिल पाया है।

एक दिन पोस्तीन बनाने के लिये खरीदी गई भेड़ की खालों की जाँच-पड़ताल करते समय अब्दुल्ला के हाथ की पीठ पर एक खोंचा लग गया। जैसे कि रिवाज था, थोड़ा बारूद थूक से मसलकर घाव पर बाँध दिया गया। अगले दिन उन्हें बुखार आ गया। हकीम ने जोशान्दा काढ़कर पीने की हिदायत की। मुल्ला ने एक तावीज बाँधने को दिया। तीसरे दिन बुखार बढ़ा और मूर्छा आने लगी। हकीम ने जुलाब देने और बदन में फस्त खोलने की राय दी।

असार नासिर के साथ मालिक को सलाम करने गया था। उसने नासिर को समझाया—बुखार हाथ के घाव की वजह से है। इस बीमारी को अंग्रेजी में सेप्टीसीमिया (जहरबाद) कहते हैं। घाव की राह खून में जहर फैल गया है। जिस्म की ताकत उस जहर को दबा नहीं पाई। जुलाब देने और फस्त खोलने से बदन और कमजोर होकर बीमारी का मुकाबिला करने लायक नहीं रहेगा। बीमारी का इलाज तुरन्त करना चाहिये वर्ना जहर जोर पकड़ जायगा।

नासिर ने असार की बात पिता के सामने कही । मिलने आने वालो ने समर्थन किया कि चमडा काटने के औजार से लगा घाव बहुत जल्द पक जाता है । एक कारीगर को भी ऐसा घाव लगने से तकलीफ हो गई थी । हकीमो के जुलाब देने और फस्त खोलने से कुछ न हुआ, मुल्ला का तावीज भी वँधा रह गया । वह हफ्ते भर मे मर गया । हालत उसकी ठीक वैसी ही हुई थी, जैसी कि असार ने बताई थी । अब्दुल्ला का बुखार और वेहोशी वढ रही थी । असार ने जरूरी दवाइयो और सामान की सूची बना दी । नासिर डाक की मोटर से काबुल जा कर एक जर्मन डाक्टर की दूकान से सब सामान ले आया।

डाक्टर असार ने बडे विचित्र ढग से इलाज शुरू किया । सुई लगी पिच-कारी मे दवाई भर उसने अब्दुल्ला के बदन मे दी । कृत्रिम उपायो से उसने बीमार के मूछित शरीर मे दूध और जल पहुँचाया । तीन दिन तक विकट ज्वर मे मूछित रहने के बाद अब्दुल्ला सचेत होने लगे । एक मास से अधिक वह बिस्तर पर पडा रहा । इस बीच असार ने मालिक के पलग की पटिया नही छोडी । हरम से औरते आती तो वह कुछ मिनट के लिये हट जाता, फिर वह भी नही ।

अब्दुल्ला ने कहा—"यह हमारा अजीज है इससे क्या पर्दा ?" कृतज्ञता और भावानुराग से अब्दुल्ला असार को बेटा कह कर सम्बोधन करने लगे । हरम से आने वाली स्त्रियो मे दो मजिल की खिडकी से दिखाई पडने वाली वह युवती, अब्दुल्ला की लडकी नासिर की बहिन भी थी । अदब और नजाकत से उसका हाथ उठाकर सलाम करना । डाक्टर घटो उसी की बात सोचता रहता ।

अब्दुल्ला के बीमारी से उठने के बाद असार की स्थिति मे परिवर्तन हो गया । 'गुस्ले-सेहत' (बीमारी से उठकर पहला स्नान) के दिन दावत हुई तो असार के लिये नये कपडे बनवाये गये । एक रेशमी लुगी और जरीदार कुल्हा उसे मिला जैसा कि शरीफ आदमी पहनते है । इससे पहले भी दुकान का सर्वेसर्वा असार था परन्तु मालिक के नोकर के रूप मे । अब उस से नौकर का सा व्यवहार न किया जाता । पहले अब्दुल्ला डाक्टर को असार कह कर पुकारते थे । बीमारी के बाद वे उसे शरीफजादा कहने लगे और फिर असार लेकिन इस दफे असार पुकारने मे आत्मीयता का भाव था जो आरम्भ के हुकूमत के भाव से भिन्न था । दूसरे लोग उसे 'डाक्टर साहब' कहने लगे । उसके कहीं आने-जाने पर, पहले की तरह नजर रखने की जरूरत न समझी जाती । घर

के भीतर आने पर उसे अब्दुल्ला की बगल मे मसनद पर बैठने के लिये जगह दी जाती। असार और नासिर मे कोई अन्तर न रह गया। वह दस्तरखान पर भी साथ बैठता।

एक दिन हिसाब-किताब और दस्तावेज देखते समय डाक्टर का तमस्सुख हाथ में आ जाने पर अब्दुल्ला ने उसे फाड कर फेंक दिया और गम्भीरता से कहा—"अजीज, इस जिन्दगी मे तो मैं तुम्हारा कर्जा बेबाक कर नहीं सकूंगा। मेरी नस्ल भी तुम्हारी कर्जदार रहेगी। बेटा, तुम्हारे लिये मैं क्या कर सकता हूँ ?"

अब्दुल्ला के मुख से वही बात निकली जो डाक्टर के मन में थी। उसने कहा—"अजीज अपने वतन जाना चाहो तो हम तुम्हारी मदद करने के लिये तैयार है। हम अपना आदमी तुम्हारे साथ भेज देंगे। कहोगे नासिर को साथ भेज दें। यह लोग तुम्हे अंग्रेजी हिन्दुस्तान की हद मे पहुँचा देंगे लेकिन अजीज, फिर भी खतरा है और तुम्हे खतरे मे जाने देने के लिये तबीयत नही मानती।"

डाक्टर ने कहा—"बीहड इलाकों मे से पैदल जाने के बजाय वह डाक की मोटर मे काबुल की राह पेशावर क्यो न जाय ?"

अब्दुल्ला ने समझाया—"उसमे और खतरा है। अंग्रेजी सरकार से राह-दारी का परवाना न होने से उसमे बहुत मुश्किल पड़ेगी। काबुल से पेशावर जाने मे या तो अमीर काबुल की राहदारी हो या अंग्रेजी सरकार की। राह-दारी के बिना काबुल जाने मे भी खतरा है। नये अमीर को दुश्मनो का अंदेशा है। बात-बात पर शक किया जाता है। एक दफे शक हो गया तो काबुल की पुलिस गिरफ्तार कर जेल में डाल देगी। उस मुसीबत मे बचाव की राह नही। बेटा, यह तुम्हारा ही घर और रोजगार है। नासिर तुम्हारा छोटा भाई है। एक बहिन है नासिर की। उससे तुम्हारा निकाह हो जाय। हमारी लड़की घर बनी रहेगी। तुम गुलाम मुल्क छोडकर आजाद मुल्क को ही अपना वतन समझो। जब तुम हिन्दू से मुसलमान, अफगान बन गये तो बेटा अफगानिस्तान ही तुम्हारा वतन है।"



त्याग की राह

१९३७ मे देश के अधिकाश प्रातो मे काग्रेस मत्री-मण्डल स्थापित हो जाने से जनता का उत्साह वढ गया था। उन्होने समझा कि स्वराज्य मिल गया। स्वराज्य की लडाई जीत लेने के विश्वास से वे उसका फल पाने के लिये व्याकुल होने लगे। वे चाहते थे कि उनके रोजमर्रा जीवन की कठिनाइया दूर हो, बेरोजगारी न रहे, नौकरी पेशा और मजदूरो का वेतन बढे। किसान चाहते थे कि उनका लगान कम हो, वेमुनाफे की जमीन पर लगान बिलकुल न हो और हो सके तो उन्हे कही से और जमीन मिल जाय। सरकार व्यवस्था मे परिवर्तन करे।

मत्री-मण्डलो की बागडोर थामे नेता समझाते थे—"अभी स्वराज्य मिला कहाँ है? यह तो स्वराज्य की लडाई का केवल आरम्भ है। पहले हमे विदेशी सरकार से शासन का पूर्ण अधिकार पाना है। उस समय तक देश की सम्पूर्ण शक्ति रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा विदेशी सरकार को निशक्त कर देने मे लगी रहनी चाहिये।"

काग्रेस के दक्षिण-पक्ष और वाम-पक्ष का यह मतभेद भावनाओ मे गहरा होता गया। जनता मचल कर सरकार से अपना अधिकार माँगने लगी। जीवन की सकीर्णता से छटपटाते लोगो को उनकी असुविधाये दूर करने की आशा देने वाली समाजवादी विचारधारा आकर्षित करने लगी। उन्हे अपनी हीन अवस्था मे सम्बद्ध सभी विश्वासो और तरीको के प्रति असतोष और अरुचि होने लगी। वे सामाजिक और साम्प्रदायिक विश्वासो और रूढि का मजाक उडाने लगे। साम्प्रदायिक समस्या का हल उनकी दृष्टि मे था, साम्प्रदायिकता को मिटा देना। अमूल क्रान्ति के समर्थक होने के नाते यह लोग अनेक ऐसी बाते करते और कहते जिनसे पुराने विचारो के समर्थको को ठेस पहुँचती।

काग्रेस के कार्यक्रम पर त्याग, परोपकार का रग चढा रहने से उस के

विदेशी सरकार से मोर्चा लेने से भद्र श्रेणी के लोगो मे देशभक्ति की भावना के कारण काग्रेस के प्रति श्रद्धा और सहानुभूति थी। वे काग्रेस का आदर करते थे क्योंकि काग्रेस उनके लिये प्राण दे रही थी। काग्रेस मे रोटी और मजदूरी का चर्चा शुरू हो जाने से उन्हे इससे विरक्ति होने लगी। वे अपना पेट भरने के लिये चिल्लाने वालो की क्या इज्जत करते? उन्हे दिखाई देता था कि जिन लोगो को कोई आगा-पीछा, ठोर ठिकाना नही, वे आराम पाने के लिये, वडा वन जाने के लिये यह सब उपद्रव कर रहे है। साम्प्रदायिक विश्वासो और सामाजिक प्रथाओ का विरोध उच्छृङ्खलता का बहाना है। कौवो की तरह छीन-झपट कर पेट भर लेना इन लोगो का उद्देश्य है। भद्र जनता विरक्ति के कारण इन लोगो को समाजवादी न कह रोटीवादी, कामरेड न कह कमरेढ[१] पुकारती।

देहली मे काग्रेस की सम्भ्रान्त, भद्र जनता के नेता वद्री बाबू थे। वे अथक परिश्रम से काग्रेस के खद्दर और अछूतोद्धार के रचनात्मक कार्यक्रम के प्रचार मे लगे थे। ज्यो-ज्यो उग्र कार्यक्रम के पक्षपाती, समाजवादी लोग परिवर्तन की पुकार को ऊँचा करने लगे, भद्रता और शान्ति के रूप मे प्राचीनता के समर्थक उनके विरुद्ध होने लगे। काग्रेस के किसी भी काम या कार्यक्रम को पूरा करने के समय यह प्रश्न अनिवार्य रूप से उठ खडा होता कि वह कार्य उग्रदल के नेतृत्व मे होगा या दक्षिण पक्ष के?

उग्र दल शिवनाथ, शेरखा और मराठे के नेतृत्व मे जनता की आर्थिक समस्याओ को काग्रेस के कार्य-क्रम मे जोडने का यत्न कर रहा था। ये लोग देहली की कपडा मिलो मे मजदूरी के प्रश्न पर मजदूरो को सगठित कर राजनैतिक कार्य-क्रम की ओर लाने का यत्न कर रहे थे। असन्तोप दिन-प्रतिदिन वढता जा रहा था। उग्र दल की नीति थी कि मजदूरी पेशा और कम वेतन पाने वाले लोगो को उनकी श्रेणी की अवस्था सुधारने की समस्या पर सगठित कर राजनैतिक क्षेत्र मे लाना। वे जानते थे कि मजदूरो की माँग सहज मे पूरी न होगी, परिणाम होगा हडताल। हडताल युद्ध है और वर्ग-युद्ध के लिये आरम्भिक शिक्षा।

वद्री बाबू मजदूरो और गरीब जनता मे उग्र दल के फैलते प्रभाव को देख रहे थे। मजदूरो और मालिको मे सदभाव बनाये रखने के लिये मालिको ने वद्री बाबू की सलाह से मिलो के आस-पास मुफ्त दवा बाँटने के लिये

---

१ काम को रेढ देने, बिगाड देने वाले।

औषधालय और मजदूरो के बच्चो की मुफ्त शिक्षा के लिये दो छोटी-छोटी पाठशालाये खोल दी। मजदूरो को व्यसनो और बुरी आदतो से दूर रहने का उपदेश दिया जाने लगा। मजदूरो की आध्यात्मिक उन्नति के लिये उनके मुहल्ले मे रामायण की कथा का प्रबन्ध किया गया। इन सुधारो के बावजूद मजदूरो मे मजदूरी के प्रश्न पर असतोष बढता ही जा रहा था। सकट आने से पहले ही उसका उपाय कर देने के लिये बद्री बाबू ने मालिको को अनाज के बढते भाव के अनुसार मजदूरी मे भी कुछ बढती करने की राय दी परन्तु मजदूरो की धमकी के सामने दब जाना मालिको को उचित न जॅचा।

राज की बड़ी बहिन चदा, मई की गरमी से व्याकुल होकर मसूरी जा रही थी। वह राह मे छोटी बहिन से मिल लेने के लिये देहली मे ठहर गई। चाहती थी कि राज को साथ ले जाय। राज ने कहा—"क्या होगा मसूरी जाने से, यही ठीक हूँ।" उसे किसी भी काम मे उत्साह न था। बहिन की अवस्था देख कर चदा का हृदय करुणा से मुह को आने लगता। शोक तो जन्म भर को है, वह सोचती, परन्तु शरीर मे जब तक प्राण है, उसकी चिन्ता करनी ही होगी। मन को सदैव उदास और शरीर को रोगी बनाये रखने से जीवन का सकट और अधिक असह्य होगा। लडकी के मसूरी चलने से उसका स्वास्थ्य कुछ सुधरेगा और मन भी बहलेगा ही।

वर्ष भर पहले जब चन्दा राज को देखने आई थी, उस समय दुर्घटना का समाचार मिले कुछ ही महीने हुए थे। उस समय चोट ताजी थी। इस एक वर्ष से अधिक समय मे राज की अवस्था सुधरी नही और भी गिर गई। अपने स्वास्थ्य या दूसरी कठिनाइयो की बाबत वह जुबान न हिलाती। ससुराल के लोगो से उसकी वास्तविक स्थिति जानी ही क्या जा सकती थी? बद्री बाबू ही एक थे, जो राज के हितचितक के रूप मे सच्ची बात चदा को बता सकते। चदा पहली बार जब आई थी, बद्री बाबू ने शिकायत की थी कि राज अपने स्वास्थ्य की परवाह नही करती। इस उपेक्षा के लिये बहिन को प्यार से धमका कर चन्दा ने बद्री बाबू से कह दिया था—"आप इसका ध्यान रखियेगा। यदि यह ठीक से कहना न माने, स्वास्थ्य बिगाडे, मुझे लिखियेगा। मै इसे यहाँ रहने ही नही दूगी।"

बद्री बाबू दो दिन राज के यहाँ आ ही न पाये। शिवनाथ के दल के भडकाने से कपडा मिलो के मजदूरो ने हडताल का नोटिस दे दिया था और उसमे केवल दो ही दिन शेष थे। किसी भी सार्वजनिक कार्य की उपेक्षा करना काग्रेस

के लिये सम्भव न था। देहली मे कांग्रेस का अर्थ 'बद्री बाबू' था। राज यह समझती थी और चिन्तित थी कि इस भयकर गर्मी और लू में बद्री बाबू शायद भोजन के लिये भी समय न पाकर निरतर घूम रहे होगे कि किसी प्रकार हजारो मजदूरो की रक्षा हड़ताल के सकट मे हो सके। साधारणत वे नित्य ही राज की सुध लेने आते थे। उसके समीप बैठ कर तकली से सूत कातते हुए गीता के श्लोको की व्याख्या करते या किसी दूसरे प्रसग से उसके चिर-शोक को दूर कर कर्तव्यपथ की ओर लाने का यत्न करते। दो दिन उनके न आ सकने से और उस विषय मे चन्दा के बार-बार पूछने के कारण राज चिंतित थी कि वे क्यो नही आये ? अपने विषय मे बहिन की स्नेह-चिन्ता को आश्वासन देने के लिये राज सुनाती रही कि किस प्रकार कांग्रेस कार्य का इतना अधिक बोझ सिर पर होते हुए भी बद्री बाबू उसकी खोज खबर लेते रहते हैं।

जेठ मास मे तीसरे पहर देहली मे पठार से आने वाली लू का वेग खूब तीव्र होता है। राजकीय विशाल नगर की सब व्यग्रता, आतप के ताप से दीवारो की आड ले आबाने लगती है। दोनो बहनें राज के कमरे मे, एक ही पलग पर लेटी, अपना सुख-दुख कह रही थीं। राज गर्मी की चिन्ता नहीं करती थी परन्तु बहिन के आराम के खयाल से उसने कमरे मे काफी पानी छिड़क लिया था। पच्छिम की खिड़की पर बद्री बाबू के यत्न से लग गई खस की टट्टी पर भी पानी डालना वह न भूली थी। बहने अपनी बातचीत में व्यस्त थीं। बाहर से आने वाली आहट भी उन्हे सुनाई न दी। कमरे मे कदम आ पड़ने पर राज ने चोंक कर उठते हुए कहा—"आ तो गये भैया ?"

चदा ने बद्री बाबू को पहचाना। सम्भ्रम से बैठ कर नमस्ते की। उस अभ्यर्थना के उत्तर मे बद्री बाबू ने आत्मीयता के विस्मय से पूछा—"कब आई आप ?"

"जीजी तो दो दिन से आपकी प्रतीक्षा कर रही है, आपको तो फुर्सत ही नही !" राज ने अभिमान से कहा और फिर बहिन को सम्बोधन कर बद्री बाबू को सुनाने के लिये कहती गई, "और देखिये, सुबह से इस तरह लूह मे यो ही फिर रहे होगे। अपनी तो इन्हे जरा भी चिन्ता नहीं रहती। दूसरो को बहुत समझायेगे !'

बद्री बाबू की ओर से बहिन के उपालम्भ की सफाई देने के लिये चदा ने करुणा और आत्मीयता के स्वर मे कहा—'बेचारो को काम भी कितना करना पड़ता है !"

बद्री बाबू समीप पड़ी कुर्सी खींच बैठ गये। उनके कुर्ते, धोती और चादर पर जमी धूल, कनपटियो और गर्दन पर खड़ा पसीना साक्षी दे रहे थे कि दिन भर उन्होने परिश्रम और परेशानी मे बिताया है। सम्भवत खाने-पीने का भी समय उन्हे नही मिला। उनकी थकावट दोनो बहिनो की आत्मीयता भरी चिन्ता की शीतल वायु के झोके से दूर हो गई। सब से बढ कर था, अपना मौन छोड राज का इतनी बात उनसे कह जाना।

तुत्ती कैम्प से डाक्टर खन्ना के पत्र आने बद हो जाने के बाद से इतनी सजीवता उन्होने राज के व्यवहार मे नही देखी थी। चदा की उपस्थिति से दो ही दिन मे जीवन के प्रति राज की उपेक्षा मे इतना अन्तर आ गया। वे थी भी ऐसी ही। इस से पहले दुख से बेसुध राज को जब उन्होने आकर गोद मे ले लिया था तो ऐसा अनुभव होता था कि बहिन के दुख से वे स्वयप गल जाना चाहती थी।

चदा पलग पर सम्मुख बैठ कर हाथ के पखे से बद्री बाबू को हवा करने लगी। बद्री ने सकोच से, पखे के लिये हाथ बढा कर उन्हे मना किया।

चदा ने मुस्कराकर उत्तर दिया—"इसमे क्या है!" हाथ पीछे हटा, पखा देने से इनकार कर दिया। अपना यह अधिकार सहज मे छोड देने के लिये वह तैयार न हुई। एक सतत मुस्कान, बिना किसी प्रयत्न के उसके उजले-सलोने चेहरे और बडे-बडे नेत्रो से फूटी पडती थी। हृदय का स्नेह लावण्य बन कर त्वचा पर छलक पडा था। मुस्कान मे आत्मतुष्टि की अपेक्षा दूसरे के लिये अनुभूति का भाव ही अधिक था।

राज बिना कुछ कहे कमरे से बाहर चली गई। चदा ने कृतज्ञता के स्वर मे कहा—"आपने राज का बहुत ख्याल किया वर्ना यह पागल तो मर जाती। देखिये, इसका क्या हाल हो रहा है? "मै डर रही हूँ इसे कुछ हो न जाय। सोचती हूँ, इसे अपने साथ मसूरी ले जाऊँ। कुछ स्वास्थ्य ठीक होगा जरा दिल भी बहलेगा।"

राज एक गिलास मे शर्बत लेकर लौट आई। उस की ओर देखे बिना ही चदा कहती गई—"हाँ, भाई साहब, आप कहिये आप की क्या राय है? मेरा विचार है इसे मसूरी ले जाऊँ।"

बद्री बाबू ने राज के हाथ से शर्बत का गिलास लिया ही था कि भारी कदमो की आहट सुन कर उन्होने घूम कर पीछे देखा, चदा के पति राजाराम आ रहे थे।

बहुत दिन बाद परिचित को मिलने के उत्साह मे राजाराम ने स्वयम ही हाथ बढाकर पुकारा—"ओहो बद्री बाबू, अरे भाई कहा छिपे रहे ? दो दिन से दिखाई ही नही दिये ? क्या हड़ताल-वड़ताल के चक्कर मे है ?"

बद्री बाबू से हाथ मिला कर राजाराम समीप पडी कुर्सी खींच कर बैठ कर कहते गये—"भाई तुम्हारा यह कांग्रेस वालो का हड़ताल का चक्कर हमारी समझ मे नही आता। इससे तो बडी मुसीबत होती है।" हाथ मे थमा गिलास स्वय न पी, राजाराम की ओर बढा कर बद्री बाबू ने कहा, "लीजिये!"

चदा ने टोक दिया—"नही आप पीजिये! जरा पसीना सूख जाय। इनके लिये और आ जायगा।" हाथ के पखे से वे दोनो को हवा करने लगी।

शरीर दोहरा होने के कारण राजाराम गर्मी अधिक अनुभव कर रहे थे। पखा चदा के हाथ से लेकर अपने शरीर पर जोर-जोर से हवा करते हुये उन्होने कमीज के बटन खोल दिये। पति को गर्मी से व्याकुल होते देख कर चदा ने राज को समीप खींच कर कुछ कहा। राज दूसरे कमरे से मेज पर रखने का बिजली का पखा लिये लौटी। बद्री बाबू हाथ का गिलास एक ओर रख सहसा खडे हो गये—"आपने मुझ से कहा होता!" उन्होने आगे बढ पखा राज से ले लिया और कोने मे पडी तिपाई पर रख कर राजाराम की ओर लगा दिया। तेज हवा से सान्त्वना पाकर राजाराम ने हाथ का पखा पत्नी के उपयोग के लिये लौटा दिया।

हड़ताल के सम्बन्ध मे अपनी बात का कोई उत्तर बद्री से देते न देख कर राजाराम ने फिर छेडा—"तुम्हारी इस हड़ताल की वजह से कानपुर मे इतना चोपट हो गया और अब यहा भी वही बीमारी फैल रही है।"

शरबत के गिलास से मुख हटाकर बद्री बाबू ने उत्तर दिया—"कांग्रेस का तो हड़ताल से कोई सम्बन्ध नही!"

"है कैसे नही ?" राजाराम ने आग्रह किया, "यही सब लोग तो मजदूरो को भडकाते फिरते है। यही कांग्रेस वाले ही तो मजदूरो की हिमायत मे खडे हो जाते है, वर्ना इतना झगडा ही क्यो हो।"

उत्तर देना बद्री बाबू के लिये आवश्यक हो गया। अपनी बात दोहराकर उन्होने कहा—"कांग्रेस तो हड़ताल नही कराती। कांग्रेस तो सभी लोगो के लिये स्वराज्य की लडाई लड रही है। कांग्रेस न केवल मजदूरो की है, न किसानो की और न मालिको की ही। श्रेणी द्वेष के लिये उस मे स्थान नही। श्रेणी द्वेष को दूर रख कर स्वराज्य की लडाई कांग्रेस का काम है।"

बद्री बाबू के उत्तर से राजाराम का समाधान न हुआ, बोले—"तो फिर काग्रेस मजदूरो की ओर से खडी क्यो होती है ? कानपुर मे हड़ताल हुई तो काग्रेस वाले मजदूरो के लिये जुलूस निकालने लगे। लोग काग्रेस को चन्दा इसलिये थोड़े देते है कि मजदूर हड़ताल करे तो काग्रेस उन्हे उस चदे से खाना बॉटने लगे ? चदा तो आप मालिको से ले और मदद करे उन के खिलाफ मजदूरो की। यह अच्छी रही !" राजाराम का स्वर ऊँचा हो गया।

खाली गिलास एक ओर रख कर बद्री बाबू ने उत्तर दिया—"काग्रेस यदि सकट के समय मजदूरो की सहायता करती है तो वह वास्तव मे देश भर की सहायता है, मिल मालिको की भी सहायता है। मजदूर और मालिक एक-दूसरे के विना नही रह सकते। इन दोनो मे मेल बनाये रखना काग्रेस का कर्तव्य है। मालिको का धन मजदूरो के सहयोग के विना नही पैदा हो सकता। मालिक उस धन के सरक्षक है ।"

बद्री बाबू की वात समाप्त होने से पहले ही राजाराम ने उन्हे टोक दिया—"धन मालिको का कैसे नही ? मालिक क्या उसके लिये मेहनत नही करते ? मालिक उस मे अपनी लाखो रुपये की पूजी नही लगाते ? क्या सोशलिस्टो के कहने से ही सब कुछ हो जायगा ?"

बद्री बाबू ने जेब से तकली और रुई निकालकर सूत कातते हुये उत्तर दिया—"मालिक पूजी लगाते है, इसमे सन्देह नही परन्तु पूजी के रूप मे लगाया हुआ धन भी तो मजदूरो की सहायता से ही कमाया जाता है। इसीलिये मालिक उस धन के सरक्षक ही है। मजदूरो के हित की चिन्ता करना भी उन का कर्तव्य है क्योकि मजदूरो के विना मालिको का निर्वाह नही हो सकता, समाज के लिये दोनो ही आवश्यक है ।"

राजाराम ने फिर टोका—"समाज के लिये दोनो आवश्यक है तो क्या मालिक मजदूरो के दबैल होकर रहे ? मालिक तो मजदूरो को काम दे और काग्रेस उल्टे उन्ही के पैसे से मालिको की मुखालफत करे ?"

इस लाछन से विचलित न होकर बद्री बाबू ने उत्तर दिया—"काग्रेस यदि मजदूरो की सहायता करती है तो उसमे मालिको का भी उतना ही हित है। मजदूरो को मालिको का शत्रु न बनने देकर दोनो मे मेल बनाये रखना काग्रेस का कर्तव्य है। विरोध होने से दोनो की ही हानि है। दोनो मे परस्पर प्रेम और सेवाभाव होना चाहिये !

"जी हा, अच्छा प्रेम और सेवाभाव है कि आप मालिको से छीन-छीन

कर मजदूरो को वाटिये । यह कांग्रेस न हुई, सोशलिज्म हो गया ।" उत्तेजना से राजाराम कहते गये, "कल मजदूर ही मालिक बन बैठेंगे, बस हो गया प्रेमभाव ।"

इस उत्तेजना के प्रभाव से बद्री बाबू का तकली चलाना रुक गया—"आपस मे प्रेमभाव न होने से, मजदूरो के हित की चिन्ता जब मालिक नही करते तभी द्वेषपूर्ण सोशलिज्म और हिंसा पैदा होती है । मालिक अपने को मजदूरो का सरक्षक समझकर उनकी आवश्यकता पूरी करने का ध्यान रखें तो मजदूरो के दिल मे उनमे द्वेष न हो । झगडे और छीनने का सवाल ही न हो जैसा कि हमारे देश मे पहले समय मे होता था । मालिक एक प्रकार से सेवक का दास होता था ।" बद्री बाबू ने चन्दा, राज और राजाराम की ओर देख कर गम्भीरता से कहा । दोनो बहिनो ने श्रद्धा से बद्री बाबू की बात पर सिर हिलाया परन्तु राजाराम नही माने ।

"हाँ हो लिया" हाथ हिला कर राजाराम ने कहा, "हमे दान बनाना नही आता । हम तो सीधी बात जानते है । कमा-कमा कर मजदूरो को ही बाँटना हो तो तरद्दुद मे पडने की जरूरत ? आदमी आराम से अपने घर मे बैठे । उतना ही कमाये जितने से बाँटने की जरूरत ही न पडे, क्यो जी ?" उन्होने पत्नी की ओर देखा ।

राजाराम को अपनी गम्भीर बात की उपेक्षा करते देख कर बद्री बाबू ने सूत कातना छोड, तकली बाये हाथ मे ले, दायाँ हाथ उठा कर समझाया—"इस बात को आप यो नही उडा सकते । हडताल हो जाना मजाक नही । हजारो मजदूर बेकार हो जायेगे । उन सब के स्त्री-बच्चे भूखे मरेंगे । मई की इस गरमी मे उनके भूखे मरने का परिणाम क्या होगा, इस बात का आप खयाल कीजिये । आदमी को भूख लगने पर कुछ घंटे खाना नही मिलता तो क्या हाल होता है ? यहाँ यह भूख हफ्तो, महीनो चलेगी । ऐसी अवस्था मे उनमे बीमारी फैलेगी । किस तरह वे लोग बिलबिलायेंगे ? सैकडो दूध पीते बच्चे मर जायेंगे । ऐसी अवस्था मे कांग्रेस उनकी सहायता कैसे न करे ?'

बद्री बाबू के इस करुणापूर्ण वर्णन को सुन चन्दा सिहिर उठी—"नही ऐसी अवस्था मे तो गरीबो की सहायता अवश्य करनी चाहिए ।" उस ने करुण स्वर मे बद्री बाबू का अनुमोदन किया । चदा को अपना समर्थन करते देख बद्री बाबू चुप रह राजाराम की ओर देखते रहे ।

"सहायता का क्या मतलब हुआ ? तो फिर मजदूर मालिको का मुकाबिला

किस बात पर करते हैं ?" राजाराम ने बद्री को सुनाने के लिये चन्दा को उत्तर दिया।

पति का उत्तर पाकर भी चदा ने कहा—"वे बेचारे इतने गरीब है। क्या उनके बाल-बच्चे भूखे मर जाँय ? गरीबो की मदद तो करनी ही चाहिये।"

अपनी स्त्री की इस जिद् से बिगड कर राजाराम ने कहा—"तो गरीबो को कौन कहता है कि उठ कर लडने जाओ ? और लडना हे तो भुगत ले। अपने बूते पर लडे। मजदूर भूखे मरने के लिये खुद ही हडताल करे तो उनकी सहायता की क्या जरूरत ?"

"तो ऐसे तो" चदा ने पति की ओर देख कर पूछा, "सत्याग्रही भी स्वय जेल जाते है फिर उनसे सहानुभूति क्यो दिखाई जाती है ? ऐसे ही मजदूर भी ।"

राजाराम और भी चिढ गये—"क्या बेमतलब बात कहती हो ? सत्याग्रही ओर हडताली एक से हो गये ? वे देश के लिये लडते है ये अपने पेट के लिए · ··· ।"

इस धमकी का चन्दा के पास कोई उत्तर न था। मजदूरो के प्रति हृदय मे भर आई करुणा से बेबस हो कर उसने बद्री बाबू की ओर उत्तर की आशा से देखा। वे प्रतीक्षा ही मे थे, बोले—"मजदूरो को लडने के लिये भी मालिक ही विवश करते है, कैसे ? स्वय ही उन्होने चदा और राज की ओर देख कर प्रश्न किया और फिर राजाराम को उत्तर दिया, "जब मालिक मजदूरो के सहयोग से कमाये धन मे से मजदूरो की आवश्यकता अनुसार भाग नही देते। माना कि मजदूरो को प्रेम और अहिसा से काम लेना चाहिए परन्तु वे सकट मे है, इस बात से इनकार नही किया जा सकता। इतनी कम मजदूरी मे उनका निर्वाह नही हो सकता ।"

राजाराम ने बद्री बाबू की बात काट कर पूछा—"तो जब मालिको का निर्वाह नही चलता, या उन्हे नुकसान हो जाता है तो क्या मजदूर भर देते है ?"

"सुनिये" बद्री बाबू ने अपनी बात पूरी करने के लिए आग्रह किया, "मजदूर ही देते है क्योकि मालिक लोभ के कारण आवश्यकता से अधिक धन अपने पास रख लेते है और मजदूरो को उनकी जरूरत से कम देते है। यदि मालिको मे मजदूरो के प्रति प्रेमभाव हो तो वे ऐसा न करे और द्वेष की नौबत न आये।"

"हाँ ठीक तो है" चन्दा ने उत्साह से फिर बद्री का समर्थन किया। चन्दा

को अपने विरुद्ध समर्थन करते देख, खीझ कर राजाराम बोले, "कुछ समझती तो हो नहीं बेमतलब बीच में बोलती जाओगी। मालिक अपना मुनाफा नहीं लेगा ? वह अपनी पूँजी नहीं लगाता ? और फिर मालिक मजदूर का मामला है तो बीच में कांग्रेस क्यों पक्ष बने ? निबट लेने दे दोनों को आपस में।"

"परन्तु झगड़ा यों चलने का परिणाम क्या होगा ?" बद्री बाबू ने पूछा और उत्तर दिया, "इसका परिणाम होगा, मालिक और मजदूरों में निरन्तर द्वेष बढ़ना और समाजवाद की हिंसा। मजदूर अपने प्राण बचते न देख कर मिल, कारखाने और सम्पत्ति मालिकों से छीन कर अपने हाथ में लेना चाहेंगे। समाजवादी लोग तो चाहते ही हैं कि दोनों श्रेणियों में विरोध बढ़े और श्रेणी हिंसा का भाव पैदा हो।"

"हाँ वह तो समझ लिया।" बात समाप्त करने के भाव से हाथ उठा कर राजाराम बोले, "पर जब मजदूर मालिकों पर जोर डाल कर जो चाहे करायेंगे तो समाजवाद ही हो गया, मजदूर ही मालिक बन गये। उसमें और समाजवाद में अन्तर ही क्या रह गया ?" अन्त में अपनी ही बात रखने के लिए बद्री बाबू के मुँह खोलने से पहले ही राजाराम ने चन्दा की ओर देखकर कहा, "यह तो नहीं कि एक गिलास शर्बत या पानी देती, बस बहस करने लगी।" चन्दा लज्जित हो कर उठा ही चाहती थी कि राज ने उसका हाथ थाम कर कहा, "जीजी तुम बैठो, मैं अभी लाई और कमरे से बाहर चली गई।

अपनी बात कहना आवश्यक समझ कर बद्री बाबू बोले—"मालिक मजदूर में श्रेणी-हिंसा न हो कर यदि उनमें प्रेमभाव हो, मालिक अपने को मजदूर का रक्षक और पिता समझे तो उनमें द्वेष न होकर प्रेम होगा। उनमें समाजवाद के झगड़े की गुंजाइश नहीं। यही तो रामराज्य का आदर्श है।"

पति को आगे बहस से बचाने के लिये चन्दा ने बद्री बाबू की ओर संकेत कर कहा—"भाई साहब से मैं कह रही थी, राज को मसूरी ले जाऊँगी। बेचारी की क्या हालत हो रही है ?"

हाथ में थमी तकली को फिर से चलाते हुए बद्री ने अनुमोदन किया—"हाँ, ले जाइये अच्छा रहेगा।"

"तुम ऐसे ही ले जाओगी ? लालाजी से, उसकी जेठानी से भी पूछ लिया है कि अपनी मर्जी से ले जाओगी ?" राजाराम ने चन्दा के भाव की उपेक्षा कर कहा।

"मैं सबसे पूछ लूगी।" चन्दा ने भरोसे से उत्तर दिया, "ले क्यो नही जाऊंगी ? मेरी वहिन नही है ? और उस का है कौन ?"

"ओ हो !" राजाराम ने परेशानी प्रकट की, "हम कब कहते है कि तुम्हारी बहिन नही है। पर उसके ससुराल वाले भी तो हैं। उनकी इच्छा के बिना तुम क्या कर सकती हो, या वही खुद क्या कर सकती है ? आखिर स्त्री है, क्या जो चाहे अपनी मर्जी से कर सकती है ?"

राज शर्बत का गिलास ले आई थी। पति की कठोर बात अपनी सहानुभूति से पोछ डालने के लिये वहिन की पीठ पर हाथ रख कर चन्दा ने अपना आग्रह दोहराया—"मैं इसे जरूर ले जाऊँगी। जिस से पूछना होगा, पूछ लूगी, देखा जायगा। वहिन तो मेरी है। दूसरे किसी का क्या है ?" स्नेह से राज की ठोढी छूकर उस ने पूछा, "चलेगी न तू मेरे साथ ? रात मे मैं तेरा सामान बँधवा दूगी।"

अधीनता के से स्वर मे राज ने उत्तर दिया—"मेरा क्या है, जैसे सब लोग कहे ...।"

राजाराम को चन्दा की यह मनमानी अच्छी न लग रही थी। शर्वत पीते-पीते दूसरी ओर देख कर अपने सतोष के लिये उन्होने कह दिया—"जैसा तुम चाहो, हमे क्या ?"

बद्री बाबू ने तकली चलाते हुये राय दी—"मेरा तो विचार है, ऐसे इन का जीवन बोझ हो रहा है। इन्हे इस कोठरी से बाहर निकलना चाहिये। पहले बात दूसरी थी। खन्ना भाई की सरकारी नौकरी के कारण यह सार्वजनिक कार्य मे भाग न ले सकती थी, अब वह अडचन नही।" शरबत पीते हुये राजाराम की ओर देख वे बोले, "भगवान ने जब पारिवारिक चिन्ता से इन्हे मुक्त कर दिया, सकीर्ण परिवार की सीमा से निकल कर बडे परिवार, समाज और देश की चिन्ता यह क्यो न करे ? मनुष्य के जीवन का कुछ तो उपयोग होना चाहिये !"

राज सिर झुकाये चुपचाप सुनती रही। चदा ने समर्थन मे सिर हिलाया परन्तु पति की सम्मति की प्रतीक्षा मे चुप रही। प्रस्ताव की स्वीकृति का उत्तरदायित्व अपने ऊपर आता देख कर राजाराम ने दृष्टि बाहर की ओर कर, रूमाल से मुख पोछते हुये, किसी को भी न सुना कर कहा—"हाँ ठीक ही है।"

× × ×

कपड़ा मिलों की हड़ताल को एक महीना पूरा हो गया। मजदूरों की स्थिति इस बीच बहुत कठिन हो गई थी परन्तु वे डटे हुये थे। मिलों के फाटकों पर हड़तालियों के धरना देने के कारण झगड़े होने लगे। मालिकों की सम्पति पर आ सकने वाली आशंका से और शान्ति की रक्षा के लिये सरकार को पुलिस तैनात कर देनी पड़ी। जाबरों, बुनाई-मास्टरों, फिटरों और हड़ताली मजदूरों में झगड़े होने से पुलिस ने लाठी चार्ज किये। कुछ लोग जेल गये। हड़ताल के उत्तर में मालिकों ने भी मिलों के फाटक बन्द कर दिये; लाक-आउट हो गया।

मजदूरों के संकट का विचार कर, उन की मांगों पर सहानुभूति से विचार करने की अपीलों का प्रभाव मालिकों पर और मालिकों के न्याय और सद्‌भावना पर विश्वास करने की अपीलों का प्रभाव मजदूरों पर कुछ न होता। अनेक बड़े-बड़े जलसों में बद्री बाबू ने भावपूर्ण व्याख्यान दिये। हड़ताल का तमाशा देखने वाली जनता ने यह सब सुना, नहीं सुना तो मालिकों और मजदूरों ने।

मजदूर सुनते थे शिवनाथ, शेरखाँ और मराठे की सीधी-सादी बातें। मजदूरों पर सब से अधिक प्रभाव पड़ता था उन की छोटी-छोटी टोलियों में होने वाले प्रचार का—मजदूरों के पेट का सवाल है। मजदूरों के ही परिश्रम से यह सब मिलें बनी हैं। उन्हीं के परिश्रम से सब कमाई हो रही है तो उनके पेट भरने और तन ढाँपने की आवश्यकतायें उस से पूरी क्यों न हों? आयु भर अपनी कमाई से दूसरों के ऐश का सामान तैयार कर स्वयम् कंगाली में सड़ते रहने की अपेक्षा मजदूर एक दफे संकट झेलकर, भर पेट खाने का अधिकार क्यों न प्राप्त करें? सभी कपड़ा मिलें एक साथ बन्द हो गईं। मजदूर सोचने लगे, जब उन के किये बिना कुछ भी नहीं हो सकता तो मालिकों को उन की शर्तें मानने के लिये मजबूर होना ही पड़ेगा। और वे अपनी कमाई का ही एक हिस्सा तो मांग रहे हैं।'

मनुष्य विचारों और इरादे से साहस बटोर सकता है परन्तु इन उपायों से पेट नहीं भर सकता। पेट का खाली रहना मनुष्य की सब से बड़ी निर्बलता है जो उस के साहस और इरादे की ऊँची दीवार की नींव खिसका देती है। महीना भर भूख का संकट झेलकर अपने अधिकारों के लिये लड़ने वाले मजदूरों में हड़ताल तोड़ देने की पुकार उठने लगी। हड़ताल करा कर मजदूरों को संकट में डालने वाले मजदूर-लीडरों की निन्दा होने लगी। शिवनाथ,

शेरखा और मराठे के विरुद्ध आक्षेप भरे पर्चे निकलने लगे। इन पर्चो मे उन से पूछा जाता कि वे अपने निर्वाह का जायज तरीका वताये ? उन्हे बेरोजगार मजदूरो के टुकडो पर जीने वाला बताया जाता, अपनी नेतागिरी कायम करने के लिये मजदूरो को सकट मे डालने का लाछन और गरीब मजदूरो से इकट्ठे किये धन को होटलो और वेश्याओं के घरो मे वर्वाद करने का दोष उन पर लगाया जाता।

इन सब लाछनो के उत्तर मे मजदूर नेता अपनी सभाओ मे ऐसे पर्चे वॉटने वालो को पू जीपति मिल-मालिको के दलाल कहते। इसे मजदूरो मे फूट डालने का यत्न वताते और मजदूरो से अपीले करते कि इतने सकट सहकर उन्होने जिस लडाई को इतने दिन तक लडा है, अपने पेट के लिये अपने वच्चो के पेट के लिये उसे आखीर तक लडते जॉय, वर्ना अपनी निर्वलता के लिये उन्हे पछताना पडेगा। अपने सकट और सैकडो तरह के व्याख्यानो से घबराये हुए मजदूरो के लिये तर्क और युक्ति की वारीकियाँ समझना सम्भव न था। वे सिद्धान्तो के रूप मे नही वल्कि व्यक्तियो के रूप मे वात समझना चाहते थे। वे सोचते थे, वद्री वाबू की वात माने या मजदूर सभा की ? सकट मे उनकी सहायता कौन कर सकता है ?

मजदूर सभा के कार्यकर्ता अपनी वातो से मजदूरो का साहस वढने के इलावा वेरोजगार, अन्नहीन मजदूरो के परिवारो की सहायता रसद द्वारा करने की भी चेष्टा करते। वे जुलूस निकाल कर मध्यम श्रेणी के लोगो से तडपते मजदूरो की सहायता के लिये रुपया-पैसा और रसद इकट्ठी करते। हडताली मजदूरो को उनके परिवार के लोगो की सख्या के अनुसार सहायता दी जाती। यह काम उनके लिये वहुत कठिन था। पर्याप्त मात्रा मे सहायता न मिलती और न मजदूरो को दी जा सकती।

बेकारी और भूख से परेशान मजदूरो मे फूट पडने लगी। मजदूर सभा मे मालिको से शीघ्र समझौता करने के पत्र आने लगे। मजदूरो मे शिथिलता के यह चिन्ह प्रकट होने के साथ ही भूख से मरते मजदूरो को रसद वॉटने वाली टोलियॉ मजदूर बस्ती मे फिरने लगी। यह लोग लारियो मे रसद भर कर लाते और लाउडस्पीकर से मजदूरो को सलाह देते कि स्वयम नेता वनने के लिये मजदूरो को धोका देकर उन्हे सकट मे डालने वाले, टुकडाखोर कामरेड मजदूर नेताओ के जाल से निकल कर, द्वेष और हिसा के भाव को छोड कर मालिको से समझौते से चलना चाहिये। मजदूरो के नेता वे लोग नही जो

मजदूरो के पैसे से मौज उडाते है बल्कि वे लोग है जो त्याग से जनता की सेवा करते है । यह व्याख्यान देकर नारे लगाये जाते—मजदूरो के सच्चे नेता बद्री बाबू जिन्दाबाद !

इसके उत्तर मे मजदूर सभा के समाजवादी कार्यकर्ता मजदूरो के झुण्डो मे कनस्तर पर खडे हो कर अपने हक की लडाई मे साहस से डटे रहने के लिये मजदूरो को ललकारते । पूँजीपति मालिको द्वारा मजदूरो मे फूट डालने के लिये बाँटे जाने वाली रसद को हराम का अन्न बताते । पूंजीपतियो के सहायक बनकर मजदूरो के हित की रक्षा का दम भरने वालो को धोकेबाज बताकर उनके कपट से बचने, अपनी लडाई लडकर अपने भाग्य का निपटारा स्वय करने की अपील करते । इन झगडो मे दोनो दलो के मजदूरो में कई बार मारपीट हो जाती और पुलिस को हस्तक्षेप करना पडता । मजदूर सभा ने अपनी शर्ते कम करके समझौता करने की तजवीजो को प्रत्यक्ष मे ठुकरा दिया परन्तु भीतर ही भीतर वे मजदूरो से घबरा रहे थे । लक्षणो से उन्हे दिखाई दे रहा था कि मजदूर अब टिक न सकेंगे । मजदूरो का साहस बढाने के लिये इस समय किसी खास प्रोत्साहन की आवश्यकता थी ।

कपडा-मिलो के हजारो मजदूरो के ढीले-ढाले सगठन की अपेक्षा बिजली घर और पानी-कल (वाटरवर्क्स) के गिने-चुने मजदूरो के सगठन शिवनाथ, मराठे और शेरखाँ के प्रयत्न से अधिक दृढ बन चुके थे । हडताल मे कमजोरी आते देख कर इन मजदूरो की सहानुभूति मे, बिजली घर और पानी-कल मे भी हडताल की घोषणा हो गई ।

इस एलान से नगर भर मे खलबली मच गई । बिजली घर और पानी-कल बन्द हो जाने का अर्थ था, एक प्रकार से विशाल दिल्ली के नागरिक जीवन का गला घोंट देना । इस सनसनी से कपडा मिल के मजदूरो की शिथिलता दूर हो गई । उन्होने अनुभव किया कि शत्रु के विरुद्ध उनकी सहायता के लिये एक जबरदस्त सेना आ पहुँची । उन के उखडते कदम जमने लगे । मजदूर नेताओ को विश्वास हो गया कि सकट की आशका दूर करने के लिये सरकार को मामले में हस्तक्षेप करना ही पडेगा । वह मिल मालिको पर समझौता करने के लिये जोर डालेगी ।

इस से भी बढ कर चौका देने वाला समाचार, अगले ही दिन समाचार पत्रो मे छपा—'हजारो मजदूरो का असह्य दुःख दूर करने के लिये बद्री बाबू का आमरण अनशन !' विवरण था—मिल मालिको और मजदूरो मे बढते

वैमनस्य और विरोध को अपने बलिदान से दूर करने के लिये जनता के नेता बद्री बाबू ने कांग्रेस दफ्तर मे अनशन व्रत आरम्भ कर दिया है। जब तक दोनो दल परस्पर विरोध को छोड कर विश्वास और प्रेम से समझौता करने के लिये तैयार न होंगे, बद्री बाबू का अनशन जारी रहेगा।

दूसरे ही दिन नगर कांग्रेस-कमेटी की ओर से एक बहुत बडी सार्वजनिक सभा मालिको और मजदूरो मे विरोध और वैमनस्य मिटा कर समझौते की अपील के लिये हुई। समाचार पत्रो में देश के बडे-बडे नेताओ के सदेश बद्री बाबू के त्याग और साहस की प्रशसा मे छपने लगे। जनमत हडताल समाप्त कर देने के लिये व्याकुल हो उठा। मजदूरो की मॉगो और कष्टो का प्रश्न पीछे पड गया, सामने आ गया बद्री बाबू के अनशन का और उन की प्राण रक्षा का प्रश्न। जनता सैकडो की सख्या मे बद्री बाबू के दर्शनो के लिये कांग्रेस दफ्तर मे आने लगी। इस के लिये स्वयसेवको का प्रबन्ध किया गया। नगर के प्रभावशाली लोग समझौते के लिये मजदूर नेताओ पर दबाव डालने लगे। मिल मालिको से भी इस विषय मे प्रार्थना की गई। उन का उत्तर सीधा और स्पष्ट था, हडताल हमने नही मजदूर सभा ने की है। सभा अपनी शर्ते हटा दे, हडताल समाप्त हो जायगी।

×   ×   ×

राजाराम मसूरी मे दो मास रहने के विचार से गये थे। राज उन के साथ गई थी। उसे भी उतना ही समय वहाँ रहना था परन्तु हडताल के प्रश्न पर बद्री बाबू के अनशन का समाचार पाकर वह देहली लौट आने के लिये बेचैन हो उठी। यह स्वेच्छाचारिता राजाराम को उचित न जँचा। चदा ने राज को समझाया कि उस का ऐसे जाना ठीक न होगा। दो-तीन सप्ताह की बात है, वे लोग भी लौट चलेगे। राज ने कोई उत्तर न दिया परन्तु बहिन के बहुत समझाने पर भी जिद्द न छोडी।

राज को याद आ रहा था—जब वह डेढ वर्ष तक शोक और रोग से असहाय पडी थी, बद्री बाबू का निरन्तर उस के पलग की पटिया पकड कर सभी प्रकार की सहायता, सात्वना और सहानुभूति के लिये तत्पर रहना। जब ससार उस की उपेक्षा कर रहा था, बहिन भी कानपुर मे थी, उस समय बद्री बाबू ही उस के दुख-दर्द को अनुभव करने वाले थे। आज वही बद्री बाबू सप्ताह भर से देहली की लू और गर्मी मे अनशन व्रत किये बैठे है और वह

मसूरी की शीतल वायु और फुहारों में आनन्द ले रही थी। देश सेवा और परोपकार में बद्री बाबू के सहे कष्ट उसे याद आने लगे। उन के प्रति अकृतज्ञता की घृणा से उस का मन भर गया। उसे बद्री बाबू का उपदेश याद आने लगा—'भगवान ने संकीर्ण पारिवारिक ममार से तुम्हें मुक्त कर दिया है। अब देश और समाज तुम्हारा परिवार है। उस की सेवा में ही तुम जीवन पा सकती हो!' उस ने निश्चय किया, वह देहली चली जायगी।

बीच में आ पड़ने वाली इस असुविधा से राजाराम को झुंझलाहट होने लगी। राज ने न उन से कुछ कहा, न उन की किसी बात का उत्तर दिया। राजाराम चंदा से नाराज हो गये—"भली एक मुसीबत तुम साथ ले आई। अब मैं इसे छोड़ने जाऊँ? अकेले भेज दें तो नाम धराये। ईश्वरदास क्या कहेंगे। उन को क्या है। वे तो चाहते ही हैं कि मुसीबत किसी दूसरे के गले पड़ जाय। भगवानदास के बीमे की रकम तो मजे में खा गये। मसूरी में एक काम शुरू किया है। सम्पतराम-बस्पाराम की चीनी मिल की कुछ पत्ती बेच लेते। दो-चार आदमियों से बात की है। यहाँ यह मुसीबत पड़ गई। छोड़ने जाऊँ तो कम से कम तीन दिन लगेंगे, खर्च होगा सो अलग। यहाँ पीछे आसामी हाथ से निकल जाय। गजवा के राजा साहब से परसों के लिये बात है। कम से कम पचास-साठ हजार का सौदा है। उसे छोड़ देहली जायें। हम तभी कह रहे थे, बेमतलब यह मुसीबत साथ ले आई। इसे वहाँ करना क्या है? वहाँ इतने बड़े-बड़े पड़े हैं। जाकर लीडरी करेगी! ऊँट दग रहे थे मेंढकी को भी शौक चर्राया, हमारे भी दाग लगा दो।"

चंदा राज को समझाकर हार गई थी। पति उल्टे उस पर ही बरस पड़े तो उस ने भी जवाब दिया—"वह बच्चा तो है नहीं जो मैं उस का हाथ पकड़ लूँ? कोई बुरा काम करने नहीं जा रही? हम कौन हैं जो उसे बाँध रखेंगे? पढ़ी-लिखी है, खुद समझती है। वासियों स्त्रियाँ कांग्रेस में काम करती हैं, तो क्या बुरा करती हैं? बेचारी लड़की है, इसी से सब मुसीबत है। मर्द होती तो कोई रोक लेता? राजाराम और उत्तेजित हो गये; तुम भी पढ़ी-लिखी हो न, तुम भी चली जाओ। हर बात में बराबरी का दावा ।"

राजाराम कहते रहे, राज दो-तीन दिन और ठहर जाय, जा कर छोड़ आयेंगे पर राज ने न सुना। इतनी बड़ी जिन्दगी उसे अकेले ही रहना है। देहली अकेली चली जायगी तो क्या। जिनके यहाँ साथ जाकर छोड़ आने वाले नहीं होते, वे क्या कहीं आती-जाती नहीं।

बीबी राजदुलारी खन्ना के काम करने के लिये तैयार हो जाने के कारण देहली के कांग्रेस कार्यकर्ताओ को विशेष सहायता मिली। उनके व्याख्यान देने के लिये खडे होने पर पाच सौ के वजाय सात सौ जनता इकट्ठी हो जाती। राज को अनुभव हुआ, जनता उस के मैदान मे आने की प्रतीक्षा कर रही थी। सार्वजनिक कार्य मे आते ही मार्ग खुला मिला। इतना ही नही, जन्ता की सहानुभूति का रथ तैयार था, राज के इस रथ पर वैठते ही वह वेग से चल पड़ा। समझौता करने की अपील के लिये नित्य जुलूस निकलने लगे। बीबी राजदुलारी जुलूस के आगे-आगे चलती। सभा मे खडी होकर लाउडस्पीकर से व्याख्यान देती। मिल मालिको और मजदूरो से वे परस्पर वैमनस्य और हिंसा के भाव मिटा कर समझौता करने की प्रार्थना करती। कुछ ही दिन मे वद्री वावू की जय के साथ ही 'राज बीबी जिन्दावाद!' के भी नारे लगने लगे। राज बीवी के उदाहरण से दूसरी अनेक भद्र महिलाओ ने भी कांग्रेस कार्य मे सहयोग देना आरम्भ किया। वैरिस्टर कुरावत की स्त्री नई-देहली से जुलूस मे भाग लेने मोटर पर आती। इस के अलावा और भी अनेक स्त्रियो ने उन का साथ दे सुयश प्राप्त किया।

राज बीवी ने मजदूरो की सभा मे व्याख्यान दिये। उन्होने मजदूरो को हृदय से हिंसा-द्वेष दूर कर, मालिको का हृदय प्रेम और त्याग से जीतने के उपदेश दिये। मजदूरो को विश्वास दिलाया कि वे वद्री बाबू को अपना नेता मान कर मिल मालिको से समझौता करने का अवसर दे। जो व्यक्ति मजदूरो के दुख से दुखी हो कर तीन सप्ताह से अनशन कर रहा है, जो व्यक्ति मजदूरो के दुख दूर करने के लिये अपने प्राण न्योछावर करने को तैयार है, उस से बढ कर मजदूरो का हितचिन्तक दूसरा कौन हो सकता है? जन्म से कंगाली भोगने वाले, डेढ मास से भूखे मजदूर, उन के दुख से दुखी हो कर तीन सप्ताह तक अनशन करने वाले वद्री वावू के कष्ट पर आँसू वहाने लगे। सब ओर से मजदूर नेताओ पर समझौता करने के लिये दबाव डाला जाने लगा। पानीकल और बिजलीघर की हडताल यो ही दब गई। मजदूर नेता अपनी शर्तो पर डटे रहने की अपील करते रहे परन्तु त्याग और बलिदान से द्रवित मजदूरो की भावना के प्रवाह के सामने उनकी अपील टिक न पाती।

समझौते द्वारा हडताल समाप्त करने के प्रयत्न मे राजवीवी ने कुछ उठा न रक्खा। वे डेपुटेशन ले कर दया की भिक्षा मागने मिल मालिको के यहाँ पहुँची। मिल कमेटी के प्रधान लाला भानुमल तबीयत ठीक न होने के कारण

बिस्तर पर पड़े थे। राज बीबी के आने का समाचार पाकर घर की स्त्रियों ने उन्हे सत्कार से बैठाया। लाला जी स्वय बैठक मे उपस्थित हुए। राज बीबी को प्रतीक्षा करने का कष्ट होने के लिये उन्होंने क्षमा मागी।

राज बीबी की बात सुन कर लाला भानुमल ने उनकी निस्वार्थ और परोपकार भावना की प्रशसा की। लालाजी ने विश्वास दिलाया कि बड़ी बाबू के कष्ट से उन्हे स्वय असह्य दुख हो रहा है परन्तु मजदूर सभा ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है कि मिल कमेटी बाध्य है। अपने सामर्थ्य भर वे सब कुछ करने के लिये तैयार हैं। वे कमेटी के सामने स्थिति रखेंगे। निश्चय तो कमेटी ही करेगी परन्तु वे भी भरसक कुछ उठा न रखेंगे। लालाजी ने राज बीबी को कमेटी के मन्त्री सेठ जीवनलाल-पुरुषोत्तमलाल भाटिया से मिलकर इस विषय मे बात करने के लिये भी सलाह दी। स्वय ही उन्होंने फोन पर सेठ भाटिया से भी कह दिया। लाला जी की मोटर उन्हे सेठ साहब के बगले पर ले गई। सेठजी बाहर जा रहे थे परन्तु राज बीबी की सुविधा के विचार से उनकी प्रतीक्षा मे ठहर गये।

सेठजी के बगले पर पहुचते ही चुस्त सूट पहने एक युवक ने मोटर के समीप आकर आदर पूर्वक कार का दरवाजा खोल दिया। युवक ने दो कदम आगे बढ कर दरवाजे का भारी पर्दा भी इन लोगो के लिये उठा दिया। एक बडे हाल मे चारो ओर सोफे और गद्देदार कुर्सियाँ लगी हुई थी। राजबीबी, मिसेज कुलवन्त और समीलहसन को बैठा कर युवक ने विनय से क्षमा मागी कि सेठ जी बहुत ही व्यस्त है, पाच मिनट मे हाजिर हो जायगे। डेपूटेशन के लिये तुरन्त रेफ्रीजिरेटर मे ठण्डे किये हुये फालसे के शर्बत के गिलास पेश किये गये। पाँच मिनट बाद, खद्दर के साधारण श्वेत वस्त्र पहने सेठ जी ने दूसरे कमरे से आकर विलम्ब के लिये क्षमा मागी। सेठ जी की सज्जनता और सादगी से प्रभावित होकर राज ने समझौते द्वारा हडताल समाप्त करने का प्रस्ताव किया।

सेठ जी ने तत्परता से उत्तर दिया—"बहिन, हडताल समाप्त करने मे हमे क्या एतराज हो सकता है ? हडताल मजदूर सभा ने आरम्भ की है। मिलो को नुकसान से बचाने, हडताल विरोधी और मजदूर सभा के लोगो का झगडा बचाने के लिये हमे मिलो के फाटक बन्द कर देने पडे। मजदूर काम आरम्भ करना चाहे, हम आज मिले चला दें। बाजार में कपडा न पहुँचने से जनता को कष्ट हो रहा है, इस का क्या हमे ध्यान नही। मजदूरो को जो

कष्ट हो रहा है, क्या हमें उस के लिये दुःख नही ? परन्तु मजदूरो को बहका कर अपना महत्व बढाने वाले लोग भी तो बाज आये ।"

धीमे स्वर मे सेठ जी ने कहा—"बहिन आप से क्या पर्दा है ? यह हड-ताल हमारे विरुद्ध हुई हैं परन्तु भूख से मरते मजदूरो की सहायता के लिये बद्री बाबू निजी तौर पर मुझ से ही दो हजार ले गये हैं ! हम क्या चाहते है कि मजदूर कष्ट उठाये ? जैसे हमारे बाल-बच्चे, वैसे उन के । मिलो को कम नुकसान नही हो रहा । तीन मिलें हैं, रोजाना सैंतीस हजार का नुकसान है । यह देश का ही नुकसान है । विदेशी गवर्नमेण्ट का क्या है ? वह तो और खुश है, देशी मिले बन्द रहेगी तो विलायती माल को मौका मिलेगा !"

झिझकते-झिझकते राज ने कहा—"आप यदि मजदूरो की माँगो पर सहा-नुभूति से विचार करे, उन की अवस्था पर दया करे तो मजदूर भी बद्री बाबू की बात नही टालेगे । सब कुछ आपके हाथ मे है ?"

सतर्क भाव से माथे पर त्योरी चढाकर सेठजी बोले—"मजदूरो की माँगे क्या है ? यह तो मजदूर सभा की शरारत है । मजदूर सभा और नये मजदूर नेताओ से पहले मजदूरो की माँगे कहाँ थी ? मजदूर सभा तो मिलो की मालिक बन जाना चाहती है ? हम मिले इन्हे कैसे सौप दे ? मिले तो पत्ती-दार जनता की सम्पत्ति हैं । हम लोग तो जनता की धरोहर सम्भाले है । मजदूर तीन आना रुपया मजदूरी बढाने को कहते है ? आप जानती है कि बाजार भाव गिर रहा है ? जापान छः पैसे गज कपडा दे रहा है ? इस समय देशी व्यापार की रक्षा के लिये बाजार मे सस्ता कपडा देना जरूरी है । कपडा बनाने की मजदूरी बढाने से कपडे का दाम बढेगा या नही ? क्या देश के गरीब महगा कपडा खरीद सकते है ? हमे किसानो का भी तो खयाल करना है ! वे बेचारे क्या करेगे । आधा देश तो नगा पडा है । महँगा कपडा वे कैसे खरी-देगे ? या फिर कपास के दाम घटाये जाय । मजदूरो को तो अपना ही स्वार्थ दिखाई देता है । यह सोशलिस्ट काग्रेस पर कब्जा करने के लिये मजदूरो को भडका देते है, परिणाम भोगना पडता है देश भर को । और फिर यह देखिये कि मजदूरी का वह दर उस जमाने का है जब कपडे का भाव ड्योढा था, सभी चीजे महँगी थी । अब भाव गिर गये है । शिलिंग और येन का भाव गिरता जा रहा है । हमे अपने माल का मूल्य अन्तरराष्ट्रीय बाजार के आधार पर निश्चित करना है । मजदूरो को भडका देना एक बात है ·· · ।"

यह पहेली राज बीबी की समझ मे कुछ न आई परन्तु उन्हे विश्वास हो

गया कि सेठ जी जो कुछ कह रहे हैं, युक्तियुक्त और ठीक है। उन की युक्तियों का उत्तर न देकर राज ने प्रार्थना की कि जिस तरह भी हो हड़ताल समाप्त होना आवश्यक ही है। सेठ जी ने ओर भी अधिक सहानुभूति से कहा—"बद्री बाबू तो देवता हैं। उन के हृदय मे तो मजदूरो के लिये गहरी सहानुभूति है। मजदूर उन्हे अपना प्रतिनिधि स्वीकार कर ले। वे जो न्याय सगत मांग मजदूरो की ओर से रखेंगे, मै आप को विश्वास दिलाता हूँ कि सामर्थ्य भर उन्हे मिल कमेटी से स्वीकार कराने की चेष्टा करूँगा बल्कि यदि मजदूर उन्हे अपना प्रतिनिधि स्वीकार कर ले; समझिये कि हड़ताल समाप्त हो गई और उन्हे अपना अनशन समाप्त कर देना चाहिये।"

राज बीबी को सहारा मिल गया। सतोष से उन्होने कहा—"बद्री बाबू के त्याग और तपस्या को मजदूर भी देख रहे है। उन्ही के लिये तो वे प्राण न्योछावर कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि वे मान जायेंगे।"

राज बीबी ने जमील की ओर समर्थन की आशा से देखा। जमील बोला—"जरूर होना तो ऐसा ही चाहिए परन्तु शिवनाथ और मराठे अड़ियल आदमी हैं। वे मजदूरो को इस हड़ताल से अपनी पार्टी की नीति और शक्ति का विश्वास दिला कर, अपने पीछे लगाये रखना चाहते हैं। उनका वास्तविक उद्देश्य कॉंग्रेस मे अपनी शक्ति बढ़ाना है।"

उँगली उठा कर सेठ जी बोले—"आप ठीक कह रहे हैं परन्तु आप लोगो ने मजदूरो को सगठित करने की ओर ध्यान दिया कब? यह आप लोगो की भूल है। आप जानते हैं कि यह लोग बारूद की भाति है। दूसरी मिलो को छोड कर कपडा मिलो को ही ले लीजिये बीस हजार मजदूर है। इतने लोग सगठित रूप से बिगड उठे तो देहली को फना कर दे। इस बडी शक्ति को सुमार्ग पर रखने के लिये आपको हम लोगो से सहयोग करना चाहिए लेकिन आप लोग हमारा ही विरोध करते है।"

"जनाब, आपका विरोध हमने नही किया।' जमील ने सेठ जी की बात को अस्वीकार कर कहा, "यदि आप आरम्भ मे ही बद्री बाबू की बात मान लिये होते तो हड़ताल हो ही नही पाती।"

बहस बढाने मे लाभ न देख कर राज ने सेठजी का सम्बोधन किया—'तो आपके कहे अनुसार हम मजदूरो से तय करके आपको सूचना दे दे ताकि यह सकट जितनी जल्दी हो, मिट सके।"

मिल मालिको के आश्वासन से उत्साहित हो कर राज बीबी ने मजदूर

नेताओ से मिलने का निश्चय किया। इस डेपुटेशन मे सहयोग देने के लिये जमील तैयार न हुआ। मिसेज कुलवत को भी फुर्सत न थी। राज बीबी एक स्वयसेवक को ले कर अकेली ही टॉगे पर मजदूर सभा के नेताओ से मिलने चली। मराठे और शेरखॉ को वह नही जानती थी परन्तु शिवनाथ से यथेष्ट परिचय था। उसे विश्वास था, शिवनाथ डाक्टर की मित्रता के नाते कुछ तो उसकी बात रखेगा ही।

पिछले दो साल से शिवनाथ अपने घर, कूचा बिल्लीमारॉ मे बहुत कम रहता था। उसकी एक नाते की मौसी हापुड से इलाज कराने के लिये देहली आई हुई थी। यमुना उन्ही के साथ घर पर रहती थी। शिवनाथ मजदूर-बस्तियो मे जहॉ-तहॉ बसेरा लेता फिरता। अपना बीमे का काम छोड कर चौबीसो घण्टे वह मजदूरो की हडताल के झझट में व्यस्त रहता। यमुना से राज बीबी को मालूम हुआ कि शिवनाथ सब्जी मण्डी की नीची गली मे हरदेव के यहॉ रहता है।

सकरी गली मे टॉगा जाने की राह न थी। तीन दिन पहले की वर्षा का जल, कच्ची गली के गडो मे सड कर काला हो गया था। मक्खियो और मच्छरो के बादल मडरा रहे थे। राज बीबी की स्थिति की स्त्री के उस गली मे दिखाई पडने से गली के बच्चे, शरीर के केवल ऊपर के भाग मे फटे चीथडे पहने, नाक बहते, टेढी-सीधी ऑखो से उन्हे देखने लगे। कई घरो के किवाडो के पीछे से स्त्रियो ने झॉका और पीछे हट गई, जैसे कोई अजनबी और ऊँची स्थिति का मर्द आ गया हो। स्त्री के नाते इनमे और राज मे क्या समता थी ? बडी कठिनता से साडी के किनारे को ऊँचा कर गली मे फैली गन्दगी से डरते-डरते राज बीबी ने हरदेव का मकान ढूढ निकाला। किवाडो मे सॉकल नही लगी थी, यो ही उडके हुए थे। स्वयसेवक ने ठेला तो खुल गये। तग, चौरस ऑगन के सामने कोठरी थी। कच्चा ऑगन बहुत दिन से लीपा नही गया था। जगह-जगह फट कर उसमे घास उग आई थी शेष बरसात के कारण काई की हरियाली लिये था। कोठरी से कुछ आदमियो के बातचीत करने का शब्द सुन पड रहा था। धूप से ऑखे चौधियाई रहने के कारण राज-बीबी को कोठरी के भीतर सहसा कुछ दिखाई न पडा। उस गिलाजत और गन्दगी भरे वातावरण मे बगले के परो सी श्वेत साडी पहने, राज बीबी ऐसे जान पड रही थी जैसे कूडे-करकट के ढेर पर बरसात मे दूधिया श्वेत खुम्ब (धरती का फूल) निकल आई हो।

कोठरी के भीतर कदम रखने पर राजबीबी ने सुना—"नमस्ते, आइये!" आवाज पहचानने मे उन्हे उलझन न हुई, शिवनाथ था।

राज को देख कर कोठरी मे मौजूद तीन-चार व्यक्ति आदर के भाव से खडे हो गये। दूसरे तीन-चार व्यक्ति दीवार से पीठ लगाये सहम कर बैठे ही रह गये। आधी कोठरी मे बिछी चटाई पर बीचोबीच बहुत से कागज पडे थे। कोठरी मे धुआँ भरा था। किवाडो की ओट दो ईंटे रख कर बनाये गये चूल्हे पर कालिख मटा, आलमीनियम का एक बडा लोटा रखा था। जूते पहने पाँव के बल बैठा एक व्यक्ति लकडी के कुछ टुकडो को कागजो की सहायता से सुलगाने का यत्न कर रहा था। उसके दाहिने हाथ मे एक बीडी सुलग रही थी। अपने काम को छोड कर अनिच्छा और आलस्य से वह भी खडा हो गया। दीवार से सिमट कर बैठने वाला एक व्यक्ति अपनी अधजली बीडी को अब भी पिये जा रहा था। खडे हुए आदमी ने उसका कधा ठेल कर बीडी बझा देने के लिये सकेत किया।

राज बीबी के अप्रत्याशित रूप से आ जाने के कारण कोठरी में चलने वाला सिलसिला रुक कर एक असमजस सा छा गया था। कोठरी मे मौजूद लोगो की भाँति वह भी यह बात अनुभव कर रही थी। शिवनाथ की ओर देख कर उन्हो ने कहा—"क्षमा कीजियेगा, मै यहाँ इस समय आगई। आपसे कुछ बातचीत करना चाहती थी।"

शिवनाथ ने उन्हे बैठने के लिये न कह कर पूछा—"क्या मुझ से? तो आप मुझे बुला भेजती? चलिये अब चलता हू।" चटाई पर पडे कागजो और साथियो की ओर सकेत कर उसने कहा, "यहा यह थोड़ा काम था, कुछ देर जहा कहे आ जाऊँ?"

शिवनाथ के विनय से सतोष पाकर राजबीबी बोली—"नही इस हडताल के सम्बन्ध मे ही बात करनी थी।" बिना देखे ही उन्होने अनुमान किया कि कोठरी मे उपस्थित लोगो ने उनकी बात सुन कर एक दूसरे की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देख लिया है।

"वह बात तो हम लोग यहाँ ही कर सकते है परन्तु यहा तो आपके बैठने लायक कोई चीज नही।" सकोच की मुस्कराहट मे शिवनाथ ने कहा।

इस सकेत से खडे हुए उस के साथी ने समीप पडा अपना कोट राज के लिये बिछा दिया। चूल्हे के समीप खडे व्यक्ति ने आगे बढ कोट को परे हटा एक नीली चादर कोने से लेकर बिछा दी। इस सब व्यवस्था और चिन्ता की

उपेक्षा कर राज खाली चटाई पर ही निस्संकोच बैठ जाने पर खडे हुए लोग भी शिष्टाचार से बेठ गए।

शिवनाथ ने बात आरम्भ करने से पहले परिचय के लिये चूल्हे के समीप आने वाले साथी की ओर सकेत किया—"आप कामरेड जी० बी० मराठे" अपना कोट देने वाले की ओर सकेत कर उस ने बताया, "आप कामरेड खाँ है। आपको तो सब लोग जानते ही है, श्रीमती राजदुलारी जी खन्ना !"
ाठे ने सिर हिला कर अनुमोदन किया, "हाँ, आपको तो खूब जानता हूं।"

राज की बात सुनने के लिये सब लोग चुपचाप उसकी ओर देखने लगे। राज ने अनुभव किया कि बात उसी को आरम्भ करनी होगी। शिवनाथ ओर देख कर बोली—"मै कहना चाहती हूँ कि यह हडताल अब समाप्त हो ी चाहिये। मजदूरो को इससे असह्य कष्ट हो रहा है। उनकी सहायता लये काग्रेस की ओर से जो प्रबन्ध किया गया है, वह अधिक दिन नही सकता। बद्री बाबू को अनशन किये भी तीन सप्ताह होने को आ रहे उनका शरीर भी सूख कर काँटा हो गया है। वे यह सब कष्ट मजदूरो लये ही सह रहे है। मै लाला भानुमल और सेठ भाटिया से मिली हूँ। भी मजदूरो से सहानुभूति है। मिलो को भी बहुत नुकसान हो रहा है। व देश का ही नुकसान है। यदि आप लोग समझौता कर ले तो वे लोग आउट खोल दे।"

"ह-ह-हम कब चाहते है, मि-मि-मिले बन्द रहे। ह-ह-हमारी माँगे मान ह-ह-हड़ताल खतम हो जायगी। इ-इ-इसमे क्या ?" शेरखाँ ने हकला कर दिया।

राज ने शेरखाँ की ओर देखा और फिर शिवनाथ की ओर मुख कर उत्तर —"मिल वालो की भी कुछ कठिनाइयाँ है। समझौता तो ले-देकर ही है। मिल वालो पर आपको विश्वास न सही परन्तु बद्री बाबू पर तो वश्वास कर सकते है !"

ापनी बाँह की टेक पर आगे बढ कर मराठे बोला—"हमारा शर्तें तो है। बद्री बाबू हमारा शर्तो पर अनशन नही किया। फीर मजदूर के कैसे अनशन किया। मजदूर और मील वाला का मामले की बीच बद्री बाबू तिसरी पार्टी हो गया।"

मराठे की बात राज बीबी को भली न लगी। उन्हो ने उत्तर दिया—"परन्तु बद्री बाबू अनशन तो मजदूरो के दुख से और उनकी सहायता के लिये

ही कर रहे हैं। आप उन्हें अपना प्रतिनिधि मान सकते हैं।"

शेरखाँ ने असंतोष से सिर हिला दिया और मराठे बोला—"हम बद्री बाबू को कैसे मान ले ? वो हमारा शर्त पर अनशन नहीं किया। वो तो मील वाला की तरफ से मजदूर लोग को दबाने के लिये किया।"

शिवनाथ की ओर देख कर निराशा के स्वर में राज ने पूछा—"आप क्या समझते हैं, बद्री बाबू इस विषय में अन्याय करेंगे ? मजदूरों से उन्हें सहानुभूति नहीं ? तो फिर इतना कष्ट उन्होंने क्यों उठाया ? उन्हें इस से क्या लाभ हो सकता है ?"

शिवनाथ ने कहा—"आपका कहना ठीक है कि बद्री बाबू को मजदूरों से सहानुभूति है। उन्हें मिल मालिकों से भी द्वेष नहीं, सहानुभूति ही है। वे चाहते हैं, मिल मालिक मजदूरों से प्रेम करें, उनकी अवस्था पर दया करें। यही बात है न ?"

"जी हाँ" समस्या सुलझाने की आशा से राज ने सिर हिलाया।

"मिल मालिकों का ख्याल है कि वे मजदूरों पर बहुत दया करते हैं।" शिवनाथ बोला "यदि थोड़ी और दया करने लगें तो उसमें क्या फरक पड़ जायगा ? हम दया की भीख नहीं मांगते। हमारा दावा है कि मिल की पैदावार पर हमारे मजदूरों का अधिकार मालिक कहलाने वालों से अधिक है। हमारे मजदूरों की आवश्यकता उससे पूरी होनी चाहिए। मालिक चाहे जितना प्रेम करें, वह पालतू जानवर से किये जाने वाले प्रेम की ही भांति होगा। मजदूर रहेगा तो मालिक का आश्रित ही लेकिन हम चाहते हैं, अपने भाग्य का निर्णय करने का अवसर स्वयं मजदूर को हो। बद्री बाबू इस रूप में समस्या को नहीं सोचते।"

शेरखाँ ने प्रश्नात्मक दृष्टि से शिवनाथ की ओर देखा जैसे वह पूछ रहा हो कि इस अनावश्यक लम्बी-चौड़ी बात में लाभ ? शिवनाथ की बात का उत्तर खोजने के लिये कुछ क्षण चटाई की ओर देख राज बोली—"आखिर समझौता तो एक दूसरे का विश्वास करने से ही होगा। यह समझना भी तो ठीक नहीं कि मालिक अन्याय ही करेंगे।"

मराठे बोलना चाहता था। शिवनाथ ने हाथ उठा उसे चुप रहने का संकेत कर कहा—"तो कांग्रेस प्रेम से अंग्रेज सरकार का विश्वास क्यों नहीं करती ? क्यों वह स्वयं मंत्री-मण्डल बनाकर और कौन्सिलों में अपने नुमाइन्दे भेजकर अपने देश के प्रश्न स्वयं हल करना चाहती है ? इस बात में बद्री बाबू अंग्रेजों

और हिन्दुस्तानियो के प्रेम का भरोसा नही करना चाहते । यह बात उन्हे खूब समझ आती है क्योकि यह प्रश्न उनकी अपनी श्रेणी के अधिकार का है लेकिन जब मजदूर कहते है कि वे मिल मालिको की दया पर क्यो रहे, अपने भाग्य निर्णय का अधिकार क्यो न अपने हाथ मे ले, तो आप लोग कहते है कि मालिको से प्रेम, न्याय और दया का भरोसा करना चाहिये ।"

"देश की बात दूसरी लेकिन मिले तो मालिको की है !" राज ने शिवनाथ की ओर देख कर कहा ।

मराठे आगे खिसक आया । एक हाथ सहारे के लिए शिवनाथ के कधे पर रख कर राज के सामने हो उसने पूछा—"कौन कहता है, मिले मजदूर का नई है ? मजदूर मेहनत नही करेगा तो मालिक मुनाफा किधर से करेगा ? मुनाफा नई होने से मिल किधर से बनेगा ? मजदूर की मेहनत की कमाई को जमा कर मालिक मिल बनायेगा तो मिल मजदूर का होगा कि मालिक का ? आपका यह अग्रेज सरकार हिन्दुस्तान को जब स्वराज देगा तो क्या जितना रेल और सरकारी इमारत हिन्दुस्तान के रुपया से बनाया, वो सब विलायत उठा ले जायगा ?"

शेरखॉ को यह सब बाते निरर्थक जान पड रही थी—"इ-इ इसमे क्या रखा है !" उसने एक हाथ से सकेत कर कहा, "अ-अ आप यह बताइये, ब-ब बद्री बाबू किन शर्तो पर समझौता कराना चाहते है ?"

राज शर्ते तैयार करके नही लाई थी । मजदूरो की शर्तो के बारे मे भी उसे ठीक से मालूम न था । वह केवल इतना जानती थी कि मजदूर रुपये पर तीन आना मजदूरी बढाना चाहते है । भविष्य मे मजदूरी का दर निश्चय करने के लिये एक कमेटी नियत करना चाहते है, जिसमे मालिको के प्रतिनिधियो के साथ मजदूरो के प्रतिनिधि और दो अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ रखे जाने की मॉग है । हडताल मे भाग लेने वाले मजदूरो को कोई दण्ड न दिया जाय । मजदूर-हितकारी-फण्ड, जिसमे प्रति मजदूर महीने मे एक आना कटता है, उसका खर्च मजदूर-सभा के हाथ मे हो । भविष्य मे किसी भी मजदूर का काम छुडाने से पहले उस पर लगाये गये अपराध की जाच हो, जिसमे मजदूर-सभा का प्रतिनिधि रहे ।

मिल मालिको से बातचीत करने के बाद यह मॉगे राज को स्वय भी कठिन जॅच रही थी । इन मॉगो के विषय मे विचार या बहस करना उस के बस की बात न थी । उस का उद्देश्य था, मजदूर सभा बद्री बाबू को अपना

प्रतिनिधि मान ले, शेष स्वय ठीक हो जायगा। बद्री बाबू की बुद्धिमत्ता पर उसे विश्वास था। "शर्तों के बारे मे आप लोग बद्री बाबू से बात कर लीजिये। मिल कमेटी इस बात के लिये तैयार है कि मजदूर सभा बद्री बाबू को अपना प्रतिनिधि स्वीकार कर ले तो कमेटी लाक-आउट खोल देगी" राज ने शेरखाँ की ओर देख कर उत्तर दिया।

मराठे ने हाथ उठा कर आपत्ति की—"ऐसा कैसे होना है ? जब बद्री बाबू हमारी माग को मान ले तभी हम उस को अपना प्रतिनिधि मान सकते, उस के बिना कैसे ?" समीप बैठा एक और व्यक्ति बोला, "मजदूर बद्री बाबू को नेता और पच मानने को तैयार नही।"

"कौन मानता है बद्री बाबू को पच ?" चौथे आदमी ने धमकी के स्वर मे पूछा।

परिस्थिति को सम्हालने के लिये शेरखाँ ने उन लोगो की ओर घूर कर चुप हो जाने के लिये धमकाया।

शिवनाथ ने राज से पूछा—"मिल कमेटी मजदूर सभा को ही मजदूरो का प्रतिनिधि क्यो नही मानती ? बद्री बाबू निष्पक्ष पच बनकर रहे तो ठीक है।" इस प्रस्ताव पर आस-पास बैठे लोगो को समर्थन में सिर हिलाते देख कर राज को अपनी बात कहने मे सकोच अनुभव हुआ। धीमे स्वर मे बोली, "शायद मिल कमेटी को उस में कुछ एतराज हो।" फिर शिवनाथ की ओर देख कर साहस किया, "लेकिन आप लोग तो बद्री बाबू पर विश्वास कर सकते हैं। मजदूरो के लिये ही तो वे बेचारे अनशन कर रहे है।"

मराठे और आगे सरक आया—"मजदूर के लिये क्यो अनशन करते है ? मजदूर-सभा को तो वो इस मे कुछ नई पूछा है। वो तो मोहब्बत में अनशन करता है, मजदूर सभा के खिलाफ। वो तो बोलता, लडो नई। लडो नई तो मालिक का बात है। मजदूर को तो अपना हक के लिये लडना है।"

राज ने निराशा से सिर लटका लिया। शेरखाँ ने कहा—"ख-ख, खैर, इ-इ-इसमे क्या रक्खा है ? ब ब-बद्री बाबू हमारी शर्ते मान ले तो हम उन्हे नेता मान लेगे।"

जिस आदमी ने पहले बद्री बाबू को प्रतिनिधि मान लेने की बात कहने वाले व्यक्ति को धमकाया था, शेरखाँ की बात से भडक उठा—"नही, नही, बद्री बाबू हमारा नेता नही है। हमारे नेता तो कामरेड (शिवनाथ की ओर सकेत कर) और मराठे है।" उस की बात समाप्त होने से पहले ही दूसरे

व्यक्ति ने एतराज किया, "हमे नेत्ता से क्या लेणा है जी ? कोई आदमी मजदूरो के फायदे की बात कहे अपणे को तो मान लेणी है !"

राज की उपस्थिति मे आपस का झगडा प्रकट न होने देने के लिये शिवनाथ ने राज से कहा—"हम इस बारे मे बातचीत कर आपको खबर दे देगे, फिर बद्री बाबू जो उचित समझे कर सकते है !"

उस कोठरी मे अधिक बैठना राज के लिये कठिन हो रहा था—"बहुत अच्छा" कह कर वह तुरन्त उठ खडी हुई। उसी समय मन मे असतोष ने चुटकी ली, जिस उद्देश्य से वह आई थी पूरा न हुआ। वह उठ चुकी थी और जिस ढग की बातचीत हो रही थी, उसमे कुछ कह सकना भी सम्भव न था। चलने से पहले साहस कर बोली, "आशा है आप लोग बद्री बाबू को अपना प्रतिनिधि मान लेगे ! मज़दूरो का दुख दूर करने के लिये वे अपने प्राण न्योछावर कर रहे है। मिल कमेटी पर बद्री बाबू बहुत कुछ प्रभाव डाल सकते है !" इस से अधिक कुछ कह न सकी। नमस्ते कर कोठरी से चली गई। लौटते समय मन उस का उत्साहहीन और विक्षिप्त था। उस बेकली मे गली से कीचड की कई छीटे उस की श्वेत साडी पर पड गई।

कोठरी से राज बीबी के लौट जाने के बाद जोर की बहस आरम्भ हो गई। बहस के जोश मे, दो ईंट के चूल्हे पर चाय का पानी कालिख पुते आलमीनियम के लोटे मे ठण्डा ही रह गया। मराठे किसी भी प्रकार बद्री बाबू को मजदूर सभा का प्रतिनिधि मानने के लिये तैयार न था। शेरखाँ की राय थी कि बद्री बाबू सभा की आधी शर्ते भी मान ले तो उन्हे प्रतिनिधि मान लिया जाय क्योकि मजदूरो मे हडताल जारी रखने का दम नही रहा।

मराठे के उत्तेजित होकर कोठरी से चले जाने के बाद शिवनाथ और शेरखाँ ने परस्पर तय किया कि मजदूरो मे फूट पड जाने और उन के थक जाने के कारण हडताल जारी रखना कठिन है। बद्री बाबू के अनशन ने मजदूरो की दृढता और मजदूरो के प्रति जनता की सहानुभूति नष्ट कर दी है। ऐसी अवस्था मे हडताल तो टूटेगी ही। बेहतर यह है कि हडताल की असफलता या समझौते मे मजदूरो की मागे न मानी जाने की जिम्मेवारी बद्री बाबू पर ही डाल दी जाय। इस से भविष्य मे बद्री बाबू के प्रति मजदूरो की आँखे खुल जायगी। मजदूर सभा काग्रेस कमेटी को पच मान ले। काग्रेस कमेटी चाहे जिसे मजदूरो का प्रतिनिधि नियत कर दे। मजदूरो की मागे ठुकराई जाने की जिम्मेवारी काग्रेस और उस व्यक्ति के कधे पर रहेगी। असतोषजनक

समझौता कराने की जिम्मेवारी कांग्रेस के सिर आ जायगी, इस ने भविष्य में कांग्रेस के मामले में दखल देना जरूरी हो जायगा। कांग्रेस नीति का प्रभाव अपनी अवस्था पर पड़ता देख कर मजदूरों की प्रवृत्ति इस राजनैतिक संगठन की ओर होगी। यही तो हमें चाहिये कि कांग्रेस को बद्री बाबू की संस्था न रहने देकर जनता की संस्था बनाया जाय। यह एक हड़ताल असफल हो गई तो क्या, फिर हड़ताल होगी।

देहली की कपड़ा मिलों की हड़ताल समाप्त हो गई। परिणाम में राज बीबी ने चाँदी के चिम्मच से कंधारी अनार के रस के कुछ घूंट बद्री बाबू को पिलाये और मिल कमेटी ने मजदूरों को एक आना रुपया मजदूरी में बढ़ती कर दी। बद्री बाबू के प्रभाव से मिल कमेटी ने हड़ताल में प्रमुख भाग लेने वाले मजदूरों को 'फिलहाल न निकालने की बात मान ली। मजदूरों की शेष मांगों पर विचार करने के लिये एक कमेटी नियुक्त करने का निश्चय हुआ, जिस में मिल कमेटी के प्रधान और मन्त्री के अतिरिक्त बैरिस्टर कुलवन्त, बद्री बाबू और राज बीबी को भी सदस्य नियत किया गया।

बद्री बाबू ने अपने समय का अधिक भाग मजदूरों का संगठन करने और उन की अवस्था सुधारने में व्यय करने का निश्चय कर लिया। मजदूरों की बस्ती में ही वे कच्ची ईंटों की एक झोपड़ी बनवा कर रहने लगे। झोपड़ी के चारों ओर एक छोटी सी फुलवाड़ी लगाई गई। समीप ही मजदूर बच्चों के लिये एक पाठशाला, एक धर्मार्थ औषधालय और मजदूर-सेवासमिति का कार्यालय खुल गया। इस स्थान का नाम रखा गया, 'सेवाश्रम।' राज बीबी अपने समय का अधिक भाग कांग्रेस के रचनात्मक कार्य में खर्च कर रही थी, कार्यक्रम का मुख्य अंग था, मजदूर बच्चों की शिक्षा और सेवा। अपने घर से उन का सम्बन्ध रह गया केवल रात के बसेरे और भोजन का। दिन का अधिकांश बीत जाता 'सेवाश्रम' में।

जी० बी० मराठे हड़ताल के मामले में कांग्रेस को पंच मान लिये जाने के कारण नाराज होकर अहमदाबाद चला गया। शिवनाथ और शेरखाँ मजदूरों में हँसिये-हथौड़े वाले लाल झण्डे की मजदूर सभा की ओर रुचि होती देख कर शहर की ओर खिसक गये। वे दोनों विद्यार्थियों में अनुशीलन-समितियाँ (स्टडी सर्कल) बनाने तथा बाजार कर्मचारी संघ संगठित करने लगे।

प्रायः चार मास से शिवनाथ अपनी बहिन यमुना की सुध न ले पाया था। यमुना ने दो वर्ष पूर्व मेट्रिक की परीक्षा पास कर ली थी। उस वर्ष वह

एफ० ए० की परीक्षा देना चाहती थी परन्तु कन्या पाठशाला की नौकरी से समय ही न मिलता था और न पर्याप्त सहायता थी। शिवनाथ से वह क्या शिकायत करती ? उस के काम को वह समझ न पाती थी परन्तु अपने त्यागी भाई के प्रति उसे श्रद्धा थी। वह सोचती कि वे बेचारे जो कर रहे हैं, अच्छा कर रहे है। हडताल से छुट्टी पाकर शिवनाथ ने बहिन की सहायता की ओर ध्यान दिया। उस के लिये वर ढूढते फिरने की अपेक्षा शिवनाथ ने आरम्भ से ही बहिन को आत्मनिर्भर बनाने का निश्चय किया था। परीक्षा की तैयारी के लिये उसने यमुना को स्कूल से छुट्टी दिलवा दी। घर के खर्च के लिये उस ने कुछ समय बीमे के काम की ओर ध्यान देना आरम्भ किया। हडताल के सिलसिले मे उस के परिचय और प्रभाव का क्षेत्र बढ गया था। बीमे के काम की ओर ध्यान देते ही उसे कुछ असामी मिल गये।

काग्रेस की पचायत से भी मजदूरो की मागे ठुकराई जाती देखकर शिवनाथ ने काग्रेस को ही समाजवादी नीति को ओर लाना आवश्यक समझा। ऐसा ऐसा कर पाने का अर्थ था, देश की राजनैतिक प्रगति को समाजवादी कार्यक्रम का रूप दे देना। उसने अपनी शक्ति कॉग्रेस के भीतर काग्रेस-समाजवादी दल के सगठन को ओर लगा दी। भावुकता और तर्क की दृष्टि से इस विचार धारा के समर्थक कागेस के प्रभावशाली लोगो से उसे प्रोत्साहन मिला। उसका कार्यक्षेत्र केवल देहली और देहली के मजदूर न रह कर अन्तरप्रान्तीय हो गया। क्षेत्र का फैलाव बढ जाने से वह अपनी सतह से उठ गया। उसका सम्बन्ध स्थानीय कार्यकर्ताओ और समस्याओ से टूट कर विचारो और विचारको से हो गया।

घर की उपेक्षा करने से राज के लिये घर मे स्थान न रहा। देहली की जनता ने जिस कारण उसे सम्मान दिया था उसी कारण घर की दृष्टि मे वह अनादर के योग्य हो गई थी। बुआ और भौजाई उसे सुना कर कहने लगी—भले घर की बहू-बेटियो के यह काम नही कि सिपाहियो की तरह कमर बॉध कर बाजारो मे फिरे ! इस घर की बहुओ ने कभी अकेले गली मे कदम न रखा था। यह अच्छी सुलच्छनी आई है कि दुनिया मे खानदान का नाम रोशन कर दिया। लाला ईश्वरदास की सहनशीलता भी हार मान गई। उन्होने कह दिया—"अगर ऐसी ही आजादी चाहिये तो आगरे मे अपने मॉ-बाप के लिये जस कमाये। हम छोटे आदमी है, बडी बाते हमारे यहा नही निभ सकती।"

राज यह बाते सुनती और अपने कमरे मे पलग पर पड कर रो लेती।

रोने-धोने के बाद कर्तव्य उसे पुकारता और वह आँखें पोंछ कर घर से निकल पड़ती। गली में पहुँचते ही उसके चेहरे पर निस्सहाय क्रन्दन का स्थान साहस भरी मुस्कान ले लेती। मार्ग में आदर से झुकते सिरों का उत्तर विनीत नमस्कार से देती, सेवाश्रम की ओर चली जाती। सेवा और सुयश का फल उस ने चख लिया था। इस रस ने वैधव्य की मरणान्तक पीड़ा को भी सह्य बना एक प्रकार से भुला दिया। इस रस को पाने के लिये घर की चारदीवारी के भीतर का कटूआपन और तिरस्कार भी वह सह जाती।

राजाराम मसूरी गये थे दो मास के लिये। घरेलू भाषा में मसूरी का अर्थ है खर्च। यों पहाड़ अनेक हैं, नैनीताल, शिमला, मरी, अलमोड़ा, डलहौजी पचमढ़ी परन्तु मसूरी, मसूरी है। जिस के लिये शौकीन पंजाब से, काश्मीर छोड़कर, मद्रासी बंगलौर और ऊटी छोड़ कर आते हैं। मसूरी का आनन्द वे ही लोग ले पाते है, जिन्हें खर्च करते समय गिनने की चिन्ता नहीं सताती। राजाराम की पहुँच उस विलास तक न थी। वे मसूरी गये थे, स्त्री का स्वास्थ्य सुधारने के सिलसिले में पहाड़ का शौक पूरा करने। फिर भी मसूरी का खर्च ही था और राजाराम को नित्य ही उसकी चिन्ता करनी पड़ती। अपनी व्यापारिक वृत्ति और साहस से उस चिन्ता का उपाय भी उन्होंने ढूंढ निकाला था, मसूरी की सम्पन्न श्रेणी में 'सन्तराम-चम्पतराम' की चीनी मिलों की पत्ती बेचकर कमीशन कमा लेना।

राजाराम को जितनी आशा नये परिचयों के आधार पर हो गई थी, सफलता उतनी नहीं हुई परन्तु जो हुई वह भी नगण्य न थी। इस व्यापारिक आशा और व्यस्तता के कारण वे साढ़े-चार मास मसूरी में रह गये। कुल मर्यादा का उल्लंघन कर राज के अकेली दिल्ली चले जाने के कारण उन्हें दुख हुआ, क्रोध भी परन्तु बेबस थे। व्यापार की आशा को छोड़कर कैसे चले जाते? राज के यों चले जाने के प्रश्न को लेकर चंदा से उनकी अनेक बार कहा-सुनी हो गई। इस दुर्घटना का अपराध चंदा अपने कंधे पर लेने के लिये तैयार न थी। झगड़े में उसके मुंह से कटु शब्द भी निकल गये, राजाराम बहुत नाराज हुये और चंदा को घण्टों रोना पड़ा।

शीघ्र ही राज के राजनैतिक कार्य का चर्चा दिल्ली से आने वाले अखबारों में होने लगा। अखबार देखते-देखते पत्नी को सुनाकर राजाराम ने कहा—"अब तो तुम्हारी बहिन का चर्चा अखबारों में छपता है?"

छोटी लड़की को कपड़े पहनाते हुए चन्दा ने उत्तर दिया—"कोई निन्दा

तो छुप नही रही, जो उसके अकेले जाने से कलक आया हो।" अपनी सीधी बात यो टेढी समझी जाने से राजाराम का विगडना स्वाभाविक ही था। इसके वाद चन्दा हिन्दी के अखबार मे बहिन के काम का चर्चा स्वय पढकर भी पति से पूछ लेती, "राज की कोई खबर है ?" छोटी बहिन के यो सार्वजनिक सम्मान पाने से उसका सीना गर्व से ऊँचा हो जाता, आखो मे चमक आ जाती।

सितम्बर के मध्य मे मसूरी की रौनक उजड गई। बडे-बडे होटलो के सध्या-कार्यक्रम स्थगित होने लगे। राजाराम भी कानपुर जाने की तैयारी मे थे। राज के दो-तीन पत्र बहिन को पहले भी आये थे, एक और आया। इस पत्र मे उसने कानपुर जाते समय बहिन से दिल्ली मे दो दिन ठहरने का विशेष अनुरोध किया था।

मजदूरो की उन्नति के लिये, बद्री बाबू द्वारा स्थापित सेवाश्रम की एक सरक्षक समिति नियत करके इस कार्य से जनता का सम्बन्ध स्थापित करने के लिये एक छोटे से सम्मेलन की आयोजना की गई थी। समाचार पत्रो मे भी उसका चर्चा छप चुका था। इसी सम्मेलन मे सम्मिलित होने के लिये राज ने बहिन और जीजा जी को आग्रह से निमन्त्रित किया था। सभी बडे-बडे लोग उसमे सहयोग दे रहे थे। इस अवसर पर राज की मार्फत उपयोगी परिचय प्राप्त करने का सुअवसर राजाराम के लिये हो सकता था।

घर मे अपनी वदल गई स्थिति को राज, बहिन और जीजा की दृष्टि से यथाशक्ति वचाये रही। उसके चारो ओर चदा को दिखाई देने वाले अभाव का कारण उसने प्रकट किया, अपनी वेपरवाही। राज केवल शुद्ध खद्दर पहनने लगी थी, चन्दा को उसके कपडे सार्वजनिक कार्य के अवसर के अनुकूल न जान पडे। साडिया कम थी और वे भी उचित रूप से धुली ओर इस्तरी की हुई नही थी। पुरुष की अपेक्षा स्त्री के लिये परिष्कार और प्रसाधन का महत्व कही अधिक है। वह उसके व्यक्तित्व का अग है। राज भी इस अभाव को मन ही मन अनुभव करती थी परन्तु कुछ कहने से जाने उसे कितना और क्या-क्या सुनना पड जाता। मन हो मन उसे रुलाई आ जाती परन्तु वहिन के सामने मुस्कराकर उस ने कहा—"इस सब मे क्या रखा है ? मुझे तो इसका खयाल ही नही आता। जेठानी जी से बडे भाई साहब को कहलवा दूगी, हो जायगा।"

राज का आवश्यक देखभाल के लिये सेवाश्रम मे दोपहर से पहले ही पहुँच जाना आवश्यक था। बहिन और जीजा को समय पर सेवाश्रम पहुँचा देने के लिये, उसने एक कार का प्रवन्ध कर दिया।

सेवाश्रम में श्वेत खद्दर से छाये छोटे शामियाने में संक्षिप्त सम्मेलन की योजना थी। फर्श पर दरिया थी और दरियो पर कुर्सियाँ। शामियाना हरियाली से खूब सजा था। सम्मिलित होने वाले सज्जनो को दो घण्टे तक क्वार की गर्मी से बचाने के लिये बिजली के पखो का प्रबन्ध था। सेठ भाटिया ने चाय का मामूली सा प्रबन्ध किया था। पाठशाला मे पढने वाले मजदूरो के बच्चो के लिये मिठाइयाँ मगाई गई थी।

चन्दा बिरादरी की बीसियो दावतो और अनेक सार्वजनिक सभाओ मे इस से पूर्व सम्मिलित हो चुकी थी जहाँ स्त्रियो के लिये पुरुषो से अलग प्रबन्ध होता था। इस सभा मे स्त्रियो और पुरुषो को एक साथ बैठते देख कर उसे कुछ सकोच अनुभव हो रहा था। प्रत्येक तिपाई पर दो-दो, तीन-तीन पुरुषो के साथ एक-एक दो-दो स्त्रियाँ बैठी थी। हास्य और परिहास के फव्वारे छूट रहे थे। राज ने चन्दा और राजाराम को एक मेज पर बिठाया। बद्री बाबू अत्यन्त सौजन्य से मिले और अभ्यागतो के आतिथ्य के लिये इधर-उधर घूमने लगे। राज ने राजाराम और चदा का परिचय सेठ भाटिया, लाला भानुमल, बैरिस्टर कुलवत, डाक्टर हलीम आदि से कराया।

राजाराम अधिक-से-अधिक व्यक्तियो का परिचय प्राप्त करने के लिये उत्साह से हाथ मिलाते फिर रहे थे। प्रत्येक मिलने वाले से वह फिर दर्शन करने और कानपुर पधारने पर उनका आतिथ्य ग्रहण करने की प्रार्थना करते। चन्दा को इस सबसे सकोच हो रहा था। किसी प्रकार सिमिट कर दोनो हाथ उठा, कुछ सिर झुका कर वह नमस्ते भर कर देती। शेष भद्र महिलायें नये परिचय को अत्यन्त उल्लास और आग्रह से ग्रहण कर रही थी। उनका उत्साह और कौतूहल पुरुषो की अपेक्षा कही अधिक था। राजाराम चन्दा के सकोच से कुण्ठित थे। कई दफे खीझकर उन्होने कहा—"क्या हो रहा है तुम्हे ?" चदा मन ही मन चाहती थी किसी प्रकार राज या बद्री उसके समीप आकर बैठ जायँ परन्तु बीसियो महमानो से उन्हे फुर्सत कहाँ थी ?

चाय के लिये केक-स्टैण्डो पर अनेक प्रकार के केक-बिस्कुट-पेस्ट्री और फल रखे थे। इतने लोगो की नजरो के सामने बैठ कर खाने मे चन्दा को लज्जा अनुभव हो रही थी। यो भी चन्दा का विश्वास था, इन वस्तुओ मे अण्डे होते है। यह कहना कठिन था, वे किस जाति के व्यक्ति के हाथ से बने थे। उन्हे उसने छुआ नही। जिन वस्तुओ को सब लोग निस्सकोच चख रहे थे, चन्दा का उन्हे हाथ न लगाना राजाराम को लज्जाजनक फूहड़पन लग रहा था।

उन्हो ने सकेत किया—"खाती क्यो नही। तुम्हे क्या हो रहा है ?" चदा चुप रह गई। इतने लोगों के सामने उत्तर भी क्या देती ?

पाठशाला के बालको ने ईश्वर-प्रार्थना और देश-स्तुति के भजन सुनाये। बद्री बाबू ने मजदूर और मालिको के एक परिवार का अग होने और सेवाश्रम के उद्देश्यो के बारे मे एक छोटा-सा व्याख्यान दिया। सेठ भाटिया ने मिल-कमेटी की ओर से मजदूर-सेना के लिये किये जाने वाले कामो की व्याख्या की और राज ने सेवाश्रम की रिपोर्ट पढ कर सुनाई।

बाद मे कटरा नील लौटते समय राजाराम ने असतोष प्रकट किया—"यो बढ-बढ कर बहुत बाते बनाओगी। वहाँ तुम्हे क्या हो गया था। यह तो नही कि लोगो से आत्मीयता और परिचय बढाने मे कुछ मदद करो। बिजनेस और व्यापार मे कामयाबी परिचय से ही होती है। दूसरी स्त्रियाँ कैसे अच्छी तरह बोल-चाल रही थी। राज भी तो तुम्हारी ही बहिन है ? तुम से अधिक क्या पढी है ?"

×　　　　　　　　×　　　　　　　　×

घर की उपेक्षा और तिरस्कार सीमा पर पहुँच गया। राज के लिये वहाँ रहना कठिन हो गया। दो-तीन महीने से वह सोच रही थी, घर से तीन मील सब्जी-मण्डी सेवाश्रम मे उसे रोज जाना पडता है। नित्य टाँगे का खर्च, असुविधा और समय की बरबादी तिस पर घर वालो की बाते सुनना। घर मे उसके लिये रखा ही क्या है ? जब उसे सेवा और तपस्या का जीवन बिताना है तो उस के लिये उचित स्थान घर की सकीर्णता मे नही, सेवाश्रम मे ही है। इस विषय मे सोच-सोच कर अन्त मे उस ने साहस कर ही लिया।

घर के लोगो की अपेक्षा जनता ही राज की अपनी थी। जनता मे बद्री बाबू के समीप ही उस के लिये आश्रय था। एक छोटी झोपडी उस के लिये भी सेवाश्रम मे बन गई। वह घर छोड कर वही जा बसी। उसकी ससुराल ने समझ लिया, वह मर गई।



जीवन की चाह

वजीरियो के हाथ पड जाने के समय से डाक्टर खन्ना भयकर और कठोर परिस्थितियो के शिकजे मे जकड गया था। इन रौद्र और वीभत्स परिस्थितियो से त्रस्त होकर उसका मन वास्तविकता के क्षितिज से परे कल्पना और आशा के लोक मे विश्राम ढूंढता फिरता था। उस का जीवन था कष्ट और भय, सुख और विश्राम था केवल कल्पना और आशा मे जो छाया की भाँति न उस का पीछा छोडती न पकड मे आती थी।

स्वप्न की भाँति आरम्भ हो जाने वाले इस जीवन मे सभी कुछ अप्रत्याशित था। जैसे कल्पनातीत कष्ट आया वैसे ही आशातीत सुख भी। दो मंजिल की खिडकी से झलक दिखा कर कल्पना को उन्मत्त कर देने वाली नर्गिस ने जब हस की ग्रीवा के समान कोमल अपनी बाहे डाक्टर की गर्दन मे डाल कर कस्तूरी की भीनी और मादक गध से सुवासित अपना सिर उसके हृदय पर रख आत्म-समर्पण कर दिया, तृप्ति के भँवर में डाक्टर अपने आपको भूल गया। उसकी कल्पना की दूरगामी उडान, बाहो मे सिमटी, रसभीनी वास्तविकता मे सिमट गई। रगीन उपवनो से छिटकी और उत्तुंग, हिरमिजी पहाडो से घिरी गजनी की उपत्यका से परे ससार का अस्तित्व उस के लिये रह ही नही गया।

नर्गिस के ओठो की मधुर उत्तेजनापूर्ण सुवासित मदिरा ने डाक्टर को तृप्ति की आत्मविस्मृति मे डुबो दिया। उस उन्माद मे विक्षिप्त न थी, थी केवल मधुर मूढता। तीखे मद्य का विक्षिप्त कर देने वाला नशा उतारने से जैसे शैथिल्य और ग्लानि उत्पन्न होती है, वैसा इस नशे मे न था। परिस्थितियो की विक्षिप्ति से सान्त्वना पाकर परिणाम मे रह गया, उदबोधन और निष्ठा का जागरण।

अब्दुल्ला का कारोबार सीधा-सादा था। पोस्तीन बनाने के सामान, खाले, कच्चा रेशम दूसरे सौदागरो की अपेक्षा सस्ता खरीदना और तैयार माल अधिक मुनाफा लेकर भी दूसरे सौदागरो की अपेक्षा कुछ सस्ता बेच सकना।

गरीब पठान अब्दुल्ला के यहाँ मे इस शर्त पर रुपया उधार ले जाते कि अपना माल उसी के यहाँ बेचेगे। इस माल का मूल्य निश्चित करना अब्दुल्ला की दुकान के हाथ रहता। कारीगर भी अधिकाँश मे अब्दुल्ला के कर्जदार थे। उनकी मजदूरी भी प्राय कर्ज की रकम और समय के अनुपात मे दूकान से निश्चित की जाती।

गरीब किसान भेड की खाल के मूल्य मे कुछ आने बढा देने के लिये गिड-गिडाते। डाक्टर मोचता, खाल का दाम बढा देने से किसान को अपनी मेहनत का मूल्य अधिक मिल जायगा। बेशक, किसान का अधिकार है, उसकी मेहनत का मूल्य उसके निर्वाह योग्य हो परन्तु ऐसा करने से पोस्तीन का दाम बढाये बिना दूकान के मुनाफे मे कमी आ जायगी। दूसरे सौदागरो से महगी पोस्तीन बेचने का अर्थ है, बाजार मे मार खा जाना। अपनी सम्पत्ति बढाने के लिये किसान के परिश्रम का अधिक से अधिक भाग लेना आवश्यक ह। वह अब्दुल्ला के प्रति वफादारी निभाये या किसान के प्रति ईमानदारी ?

पोस्तीन पहनने वालो और पोस्तीन बनाने वालो के बीच बैठ कर मेहनत करने वाले के भाग को नोच-नोच कर सम्पत्ति इकट्ठा करने का यह व्यापार डाक्टर को आत्माभिमान के अनुकूल न जँचता। मसनद पर बगल मे बैठे नासिर से वह चर्चा छेड देता, पोस्तीन है क्या ? किसान भेडे पाल कर उनकी खाले तैयार करता है और कारीगर अधेरी झोपडियो मे छप्परो के तले घुटनो के बल बैठ कर उन्हे काढते हैं। गाहक से ली गई पोस्तीन की कीमत अगर दोनो मे बाँट दी जाय तो अपने लिये क्या बचे ? हम लोग तो इन किसानो और कारीगरो के कारिन्दे भर है। जब यह दोनो पाले से ठिठुरते, भूखे पेट पोस्तीने बनाते है, हम लोग मसनद पर बैठे हुक्का गुडगुडाते है इसलिये कि उनकी मेहनत का मूल्य देना हमारे हाथ मे है। हम उनकी मेहनत खरीद सकते है। उसमे अपना हिस्सा बचा कर उसे आगे बेच सकते है।

ऐसा प्रसग आ जाने पर नासिर उत्तेजित हो जाता। वह कहने लगता, इस्लाम मे अगर सूद खाना हराम है तो गरीब की मेहनत पर मुनाफा खाना भी तो हराम है। हमारी आढत पर सात सौ घरो की खाले लगती हैं, साठ कारीगर है। इन्ही लोगो की कमाई से हम इनका माल खरीदते है और देखो नतीजा ·· ?

दोनो मे रूस का चर्चा शुरू हो जाता। कुछ कर पाने की इच्छा मानसिक बेचैनी पैदा करने लगती। फिर से डाक्टरी की प्रैक्टिस करने की चाह

भी उसे उत्साहित न करती । कई वर्ष लगा कर उसने अपने जीवन की आवश्यकताये पूरी कर सकने के साधन के लिये डाक्टरी सीखी थी । वह दूसरो के कष्ट और रोग का उपाय इसलिये कर सकता था कि उन से कुछ पा सके । लोगो को रोग और कष्ट होने पर ही उसका मूल्य था । वह सोचता, केवल अपना पेट भर पाना ही जीवन मे काम नही । उसे याद आने लगते जीवन के उत्साह और उन्माद भरे वे दिन, जब अपनी आवश्यकता और निर्वाह की बात न सोच कर, जीवन की एक व्यापक प्रवृत्ति को चरितार्थ करने के लिये, शिवनाथ के हाथ मे हाथ मिलाकर, जीवन की बाजी खेलने के लिये वह तैयार हुआ था । उस खेल का कुछ भी न बना परन्तु खेल फिर खेला जा सकता है । आवेश की अपेक्षा उसमे तर्क से काम लिया जा सकता है । आखिर जीवन को सकीर्ण वैयक्तिक भवर मे समाप्त कर देने मे क्या सतोष ? डाक्टर की दब गई कल्पना फिर सजीव हो कर गजनी के क्षितिज से परे पर फड़फडाने लगी ।

मानसिक बेचैनी से मुक्ति पाने का उपाय था, नर्गिस के ओठो की प्याली से आत्म-विस्मृति की मदिरा के घूट पर घूट भरना परन्तु तृप्ति उसे और भी चिन्ताशील बना देती । नर्गिस को बाहो मे ले कर ससार को भूल जाने के प्रयत्न मे, डाक्टर का मन नर्गिस को भूल कर ससार की ओर भाग चलता । गजनी के नीले आकाश से प्रतिविम्बित नर्गिस की आँखो मे उसकी बेचैनी का न उत्तर था न अनुभूति ।

तीन मास के अन्तरहीन सामीप्य के पश्चात भी नर्गिस की दृष्टि मे परिवर्तन न आया, उसके मुख का भाव भी वही था । सकोच की मात्रा कम हो जाने से वह और अधिक समीप और सुलभ हो गई । उस का शरीर पा लेने के बाद उस से कुछ और पाने के प्रयत्न और आशा के लिये अवसर न था । नर्गिस का रूप अधिक निखर आया । उस का शरीर तनिक गदरा कर सौन्दर्य की पूर्णता पा रहा था परन्तु डाक्टर का कौतूहल समाप्त हो गया था । पत्नी के प्रति आकर्षण की कमी से वह स्वय कुठित और लज्जित होकर कर्तव्य के विचार से नर्गिस को आलिगन मे लेकर उस की आँखो मे देख पुकारता—"मेरी जान नर्गिस !"

पति से आदर पाने के सन्तोष और कृपा की अनुभूति से नर्गिस उत्तर देती—"मै तुम्हारी दौलत हूँ !" इस के अतिरिक्त वह कुछ थी भी नही, केवल दौलत ! विचारो और इच्छा का असीम क्षेत्र लिये व्यक्ति नही, जिसके

एक-एक विचार, एक-एक अनुभूति को विजय करने के लिये निरन्तर प्रयत्न की आवश्यकता होती जो सदा नवीन और कौतूहलपूर्ण होती। जो असीम, चिरनूतन तृष्णा को उत्पन्न करके तृप्ति की इच्छा और चेष्टा को जगाये रखती। नर्गिस को बाहो मे लेकर खन्ना की आँखो के सामने राज की छवि दिखाई दे जाती। राज निर्जीव फूल की भाँति एक ही मुद्रा मे आत्मसमर्पण कर अपनेपन को खोकर समाप्त न हो जाती थी। उस का मचलना, मान करना, चेहरे और नेत्रो मे आने-जाने वाली भावभगी और मुस्कराहट, प्रेम और प्रणय-केलि के युद्ध मे सदा प्रयत्न का अवसर बनाये रखता।

हरम की कोठरी और चारदीवारी से घिरे बाग के बाहर नर्गिस की पहुँच न थी, न वहा उस का कुछ उपयोग था। इस अत्यन्त परिमित ससार की सीमाओ मे डाक्टर के विचार और भावना, स्थान और मार्ग की इच्छा से क्षुब्ध और व्याकुल हो उठते थे।

नर्गिस के समीप बैठा डाक्टर अपने विचारो मे खो जाता। नर्गिस यह सोच कर कि मालिक अपने खयाल मे है, उस की किसी आवश्यकता की पुकार की प्रतीक्षा मे चुप बैठी रहती। अपने विचारो से नितान्त अपरिचित, समीप बैठी नर्गिस की उपस्थिति डाक्टर को बोझल जान पडने लगी। बाग की चारदीवारी से दक्खिन की ओर दिखाई देने वाले गेरुआ रग के टीले पर, ऊँची और चौडी सीढियो पर खडी, पत्थर मे तराशे शेरो का जोडा सिर पर उठाये, मीनार को देख डाक्टर सोचने लगता—दुर्दान्त महमूद गजनवी अपना यह स्मारक छोडकर असीम समय के प्रवाह मे विलीन हो गया, वैसे ही वह स्वय भी विलीन होता आ रहा है। गतिशील ससार से परे वह एक जिन्दा कब्र मे दफन हो गया है।

महमूद की समाधि पर छाये गहरे नीले आकाश से उस की दृष्टि चली जाती नर्गिस की प्रतीक्षा मे खुली आँखो की ओर। वे भी वैसे ही नीली थी और वैसी ही अर्थ और विचारहीन। हो सकता है वे आँखे सुन्दर हो परन्तु वे न उस के भावो को समझती न सहानुभूति प्रकट कर सकती, न प्रोत्साहन दे सकती थी। नर्गिस के समीप बैठे रहना डाक्टर के लिये यन्त्रणा बन जाता। वह झल्लाहट मे उठकर चल देता और फिर, स्वय ही नर्गिस के प्रति अपनी इस निष्ठुरता से लज्जित होकर तर्क करने लगता—इस बेचारी का क्या अपराध ? इसे मै क्यो दुखी करूँ ? परन्तु स्वय यन्त्रणा से बचने की इच्छा इस करुणा से अधिक बलवान थी।

डाक्टर की इस निष्ठुरता के प्रति नर्गिस ने कभी कोई शिकायत न की। मालिक की इच्छा ही उस के लिये सब कुछ थी। नर्गिस की यह सहनशीलता डाक्टर को अत्याचार जान पड़ती। वह सोचता—पशु की भांति यह सब कुछ क्यों सह जाती है? प्रतिकार क्यों नहीं करती? क्या यह मनुष्य नहीं?

गजनी की वह अत्यन्त सुन्दर और रमणीक उपत्यका डाक्टर के लिये जेल का आँगन बन गई। वहाँ से निकल कर भागने के लिये एक दफे फिर छट-पटाने लगा, प्राणों की रक्षा के लिये नहीं, जीवन की चाह के लिये। घर की उपेक्षा ने उसे कुंठित कर दिया था। अब वह घर की ओर नहीं, संसार की ओर जाना चाहता था, व्यक्ति से समाज की ओर। व्यक्तिगत दृष्टि से समस्या को सोचना उसे अरुचिकर जान पड़ता। वह नर्गिस से भागना चाहता था, राज के सम्मुख वह अपराधी और लज्जित था। देहली में भाई से उसे घृणा हो गयी थी और गजनी में अब्दुल्ला के स्नेह और वात्सल्य में वह आँख चुराने लगा था।

× × ×

गजनी में डाक्टर अपने दिल की बात कह सकता था तो केवल नासिर से। वही उस का आत्मीय था। विश्वास और स्नेह का एक अद्भुत आकर्षण दोनों में बढ़ता चला जा रहा था, जैसे एक जुए में जुते हुये दो बैल हों। दोनों एक ही समस्या से व्याकुल थे, दोनों के लिये उपाय भी एक ही था। नासिर के बिना दिन बिताना डाक्टर के लिये दूभर हो जाता। मन कि व्या-कुलता दैनिक व्यवहार के शैथिल्य में प्रकट होने लगी। अब्दुल्ला से यह छिपा न रहा, परन्तु उपाय क्या था? दूकान के काम में मन लगाने को कहते। उसमें कोई कमी दिखाई न देती थी। जो काम अब्दुल्ला दिन भर के सोच-विचार के बाद कर पाते, डाक्टर के लिये वह घण्टे भर को होता।

अब्दुल्ला ने डाक्टर को नासिर के साथ जाकर शिकार खेलने की सलाह दी। गजनी के आस-पास न वैसा शिकार, न शिकार का रिवाज था। शिकार खेलने की बात कभी सुनी गई थी तो काबुल के अमीर या सुलेमान खेल के मामाशाह की बाबत। बन्दूक की मूल्यवान गोली, जिससे शत्रुओं को मारकर कुल के अपमान का बदला लिया जा सकता है, जिसे खरीदने के लिये दो दिन का पेट भर भोजन दे देना पड़े, एक चिड़िया या खरगोश मार लेने के लिये व्यर्थ करते देख कर पठान विस्मय से दाँतों तले उँगली दबा लेते और फिर

आपस मे चर्चा करते, अब्दुल्ला के यहाँ अधेरी कोठरियो मे फर्श के नीचे कारूँ का खजाना दवा है। कधार से सूखे फलो से लदे ऊँट अब्दुल्ला के यहा आते है, उन पर बोरो मे मोहरे और कारतूस भरे रहते है।

डाक्टर ओर नासिर शहर की चारदिवारी के बाहर उपत्यका मे कल-कल करती शीतल जल की कूल्हो के किनारे वैठे दुनिया भर का चर्चा किया करते। उन कूल्हो के किनारे पठान स्त्रियॉ, लकडी के पैने टुकडो से रगड-रगड कर भेडो और वकरियो को खाले धोती रहती जो सब एक दिन अब्दुल्ला की दुकान पर पहुँच जायगी। अफगान किसान उन खेतो मे जी-जान से परिश्रम करते दिखाई देते जिनकी उपज का कुछ हिस्सा पेट भरने के लिये रख कर शेप मालिको को दे देना पडेगा।

शिकार से डाक्टर का मन वहलता न देख कर मनोरजन का दूसरा सामान किया गया। आँखो मे भरपूर सुरमा डाले, सिर पर फूलदार, लाल पगडियो से दोहरे शमले लटकाये, कानो मे बालियाँ पहने, काली सदरी ओर सुफेद सिलवार पहने लखतई (लौण्डे) हाथ ओर आँखे, स्त्रियो के हाव-भाव से मटका कर, नाचते और 'वई-वई' कर ढोल और रुबाब की लय मे सुर मिलाकर घण्टो गाते। रासलीला का सा ढग परन्तु उसमे मथुरा-वृन्दावन की धार्मिकता का विश्वास न था। डाक्टर के लिए उस नृत्य और सगीत मे कला का भाव नही, अलबत्ता कुछ कौतूहल जरूर था। वह दो-चार दफे इसे देख लने पर समाप्त हो गया, वह उससे ऊबने लगा। अफगान-जीवन की भाँति उनका संगीत और साहित्य भी असस्कृत और सीधा था। लखतई लडके एक हाथ कान पर रख, दूसरा आकाश की ओर उठा गाते—

दस्पिन खलुदि प्रशादि मिमद,
पस्ता त्रिसिन्नाशिरि गविन्दा,
स्ये ओर लगाइवे जडमि द्वनिमदा १

डाक्टर सोचता, भारत और दूसरे देशो मे पुरुपो के मनोविनोद के लिये स्त्रियो को वेश्या वना कर नचाया जाता है। पठानो को अपनी धार्मिकता का अभिमान है। इस देश मे स्त्री का बेपर्दा होना अधर्म है परन्तु विनोद की प्रवृत्ति

---

१ तेरा रङ्ग गोरा है, जैसे मेम का चेहरा हो। तेरे वक्ष कोमल है, जैसे कालीन हो, और दिल मीठा है पर मुझे तो तूने जख्मी कर दिया, जला कर खाक कर दिया।

धर्म के भय से भी अधिक प्रबल है। वास्तव मे स्त्री न सही, वह पुरुष को ही स्त्री बना लेता है। धर्म के भय को धोखा दे कर वह स्त्री के भाव और व्यक्तित्व को पुरुष मे ही स्थापित कर लेता है। इस से धर्माचार की रक्षा और जीवन के लिये स्वाभाविक विनोद दोनो ही पूरे हो जाते है। इसीलिये भारत मे भी लीला के समय पुरुष की दाढी-मूँछ मूँड कर उसे सीता और राधा बना लिया जाता है।

डाक्टर चाहता था, कुछ पढने के लिये मिले। यही गजनी में कठिन था, न अखबार, न पुस्तक। पढने के लिये कुछ न मिलना उसे भयकर यत्रणा जान पडती। कागज पर छपे अक्षरो में उस ससार का विछोह उसे व्याकुल कर देता, जिस मे दर्शन शास्त्र के दिमागी दाँव-पेंच, मनुष्य समाज के जीवन की परम्परा का इतिहास, जीवन की समस्याओ और गूढ अनुभूतियो के कथानक और रूप मे, चित्रण, ज्ञान-विज्ञान के करिश्मे, सभी कुछ उसे मिल सकता था। पढने के लिये और कुछ न मिलने पर वह नासिर की, कावुल के स्कूल की पुस्तको को ही कई-कई बार पढ गया। उन मे थक कर वह फारसी मे 'शाहनामा' पढने लगा परन्तु मन तो चाहता था, दुनिया के विषय मे कुछ जानने को। वह व्याकुल हो उठता। डाक्टर उस असंस्कृत और असभ्य देश का प्राणी नही था जो देश मनुष्य-समाज की आयु लाखो वर्ष की हो जाने पर भी ज्ञान के बाल्यकाल मे ही था। उसे याद आने लगती कुछ वयस्क लोगो की निस्सार बाते, जो बाल्यावस्था के अज्ञान को जीवन की सब मे सुखद अवस्था और अपने ज्ञान और अनुभव को दुख का कारण समझते है। वह सोचने लगता कि अज्ञान बन कर अमर हो जाने की अपेक्षा वह ज्ञान रखने के सुख में सहर्ष मृत्यु का आलिंगन करने के लिये तैयार है।

डाक्टर के मन बहलाव के विचार से अब्दुल्ला ने निश्चय किया कि वह नासिर को साथ लेकर कधार और हिरात घूम आये। हवा बदली हो जायगी, मन बहलेगा और उस ओर के कारोबार की देखभाल भी हो जायगी। हिरात में दो बरस की उगाही भी बकाया थी। डाक्टर और नासिर मन ही मन जो षड्यन्त्र इतने समय से रच रहे थे, उस के पूरे होने का अवसर अब्दुल्ला ने स्वयम ही उपस्थित कर दिया।

× × ×

डाक्टर, सत्ता और नासिर गजनी मे जिस स्वप्न को मन मे पाल रहे थे,

हिरात पहुँचकर उसी को चरितार्थ करने की चिन्ता करने लगे। वे हिरात के मेहराबदार बाजारो मे पोस्तीन के व्यापारियो की दूकानो पर बैठे, घण्टो हुक्का गुटगुडाते, बिना शक्कर मिली हरी चाय की चुस्कियाँ लेते हुए बातचीत करते रहते। वे हिरात प्रात की सीमा से छूने वाली रूस की सीमा पार कर सोवियत भूमि मे चले जाने का मार्ग और उपाय जानना चाहते थे।

रूस का ज़िक्र चलने पर उन्हे भिन्न-भिन्न बाते सुनने को मिलती। कोई इन्तजाम की सख्ती, विदेशियो पर कडी दृष्टि और सन्देह मे गोली मार देने की बात सुनाता। कोई बेहद खुशहाली और मशीनो से रोज सौ-सौ मील लम्बे खेत जोतने और हवाई जहाजो की डाक चलने की बाते कहता।

डाक्टर और नासिर को खोज करने पर मालूम हुआ कि हिरात की सीमा पर कुश्क की राह सोवियत भूमि मे प्रवेश कर पाना सम्भव नही था। जो कुछ व्यापार शेष रह गया, वह अफगान सरकार के प्रतिनिधि मिल्ली-बैंक और सोवियत सरकार के कुश्क मे रहने वाले प्रतिनिधि के बीच चलता था। इधर से कच्चा माल ऊँटो पर जाता है और उधर से तैयार कपडा दे दिया जाता था। सीमा पर बहने वाली नदी की पतली धार के इस ओर अफगानिस्तान के अमीर की सरकार और दूसरी ओर रूसी बोल्शेविक सरकार का सख्त पहरा था। आने-जाने का कोई प्रश्न नही था। यदि कोई ऐसा करता पकड़ा जाता तो गोली से उडा दिये जाने के सिवा दूसरी बात न थी। यो नदी मे विशेप जल नही था। उसे पार कर लेना कुछ कठिन न था परन्तु पार करने के बाद सैकड़ो मील उजाड था, न गाँव न शहर। कुश्क से लोहे की सडक पर रेल गाडी ताशकन्द-समरकन्द आती-जाती है। कुछ दिन और हिरात के मेहराबो से छाये बाजारो मे चाय चुसकने और हुक्का गुडगुडाने के बाद उन्हे मालूम हुआ कि उत्तर पूर्व की ओर कई दिन पगडण्डियो की राह चल कर काश्मीर के उत्तर में दुशाम्बे से सोवियत-भूमि मे प्रवेश कर जाना सम्भव है।

कानून द्वारा स्वीकृत व्यवहार के अतिरिक्त एक गैर कानूनी व्यवहार भी सभी देशो मे चलता है। हिरात की सीमा पर नदी के इस पार रहने वाले कुछ लोगो का पुश्तैनी व्यापार, चरस-अफीम आदि मादक वस्तुओ को चोरी से रूस की सीमा मे ले जाकर बेचना था। सोवियत भूमि मे नये विचारो के शिक्षित लोग इस प्रकार के नशो के घोर विरोधी हो गये थे। सोवियत शासन मे कागज का रूबल (रूसी सिक्का) चल जाने के बाद से इस व्यापार मे विशेप बरक्कत भी न रही थी परन्तु पुरानी उम्र के ताजिको और उजबेगी लोगो के लिये

इन नशो को छोड देना कठिन था। वे लोग अपने घर मे चाँदी-सोने की जो कुछ भी मूल्यवान वस्तु पा जाते, मादक द्रव्यो के बदले दे कर अफगानी व्यापारियो से नशा खरीदते ही थे।

डाक्टर और नासिर का परिचय, हिरात का बढिया खुशबूदार चरस लेने आये दुस्साहसी लोगो के एक गिरोह से हो गया। ये लोग डाक्टर और नासिर को सोवियत सीमा के भीतर पहुँचा देने का सौदा करने के लिये तो तैयार थे परन्तु सीमा मे ले जाने के बाद उन्हे जीवित वापिस लौट जाने या वहाँ उनकी रक्षा की जिम्मेवारी के लिये तैयार नही थे। डाक्टर और नासिर इसके लिये भी तैयार हो गये। इस सहायता का मूल्य एक हजार अफगानी रुपया पेशगी दे देना तय हुआ।

डाक्टर और नासिर ने कई दिन तक अनेक छोटी-मोटी पहाड़िया उतरने-चढने के बाद एक अधेरी रात मे चरस के दुस्साहसी व्यापारियो के साथ सोवियत की सीमा पर नदी पार कर ली। उनके शरीर मुह की सास से फुलाई गई मश्को पर टिके हुए थे। शरीर के वस्त्र पगडी के रूप मे सिर पर लिपटे हुए थे और सतर्क दृष्टि नदी के उजाड उत्तरी तट की ओर थी। हाथों में भरी हुई बन्दूके तैयार थी। जल मे तैरते हुये वे कमर से नीचे के भाग से मश्को को नदी के उत्तरी तट की ओर ढकेलते जा रहे थे।

× ×

चरस के गुप्त व्यापारियो ने डाक्टर और नासिर को वायदे के अनुसार पौ फटने से पहले सोवियत की सीमा मे नये बसे स्तालिनाबाद (दुशाम्बे) के कस्बे मे पहुँचा दिया। उनके पास चाँदी के जितने अफगानी सिक्के शेष थे, उनके बदले मे कागज के रूसी सिक्के (रूबल) उन्हे देकर चरस के व्यापारी लापता हो गये।

कस्बे में सब ओर बिजली का प्रकाश फैल रहा था। डाक्टर और नासिर नागरिको के जागने की प्रतीक्षा मे, नई बनी पक्की सडको पर घूम रहे थे। सडक के दोनो ओर नये ढग के तीन-तीन चार-चार मजिल ऊचे मकान आसपास की ग्रामीण परिस्थितियों से भिन्न थे। मकानो के पीछे मसजिद की मीनार से भी बहुत ऊची चिमनिया खडी थी। उन्हे मध्ययुग के प्रतिनिधि हिरात के अनगढ पत्थरो से बने शहर के बाद सोवियत की नई बस्ती स्तालिनाबाद अत्यन्त विचित्र जान पड रही थी। यह बस्ती घटनाक्रम से स्वय, जिस ओर

नाक समायी उस ओर वढती गई नही जान पडती थी बल्कि एक औद्योगिक छावनी की भाँति, प्रत्येक इमारत क्रम और कायदे से वनी हुई थी। मध्ययुग के देश अफगानिस्तान को छोडकर जहाँ मनुष्य परिस्थितियो का दास है, वे मशीन युग की सवसे नवीन सभ्यता के देश में आ पहुँचे जहाँ घटना और परिस्थिति का नही, मनुष्य के तर्क और विचार का राज्य था। नासिर ने बिजली का प्रकाश कावुल मे भी देखा था परन्तु स्तालिनावाद के प्रकाश-बाहुल्य से उसे रोमाच हो आया। सूनी सडको पर घूमते हुये वे नगर के जागने की प्रतीक्षा कर रहे थे। शनै-शनै नगर के करवट लेकर जागने के चिन्ह प्रकट होने लगे। जम्हाई लेते हुए व्यक्ति सडक पर दिखाई देने लगे। दो-एक गाडिया और सामान की लारिया दिखाई दी।

सहसा सडको पर बिजली की सव वत्तियाँ एक साथ बुझ गई। डाक्टर सुध सम्भालने के पहिले से देहली मे प्रतिदिन एक क्षण मे नगर भर की वत्तियो के जलने और बुझने का दृश्य देखता आया था। इसमे कोई चमत्कार उसे दिखाई न पडता था परन्तु लगभग दो वर्ष तक आग लेकर चिराग और शमा जलाये जाने का समारोह देखकर लाखो चिरागो का पलक मारते मे जल जाना और बुझ जाना डाक्टर को दैवी चमत्कार से कम न जान पडा। आमू के उस पार के देश मे इतना उजाला करने के लिये सम्पूर्ण देश की शक्ति भी अपर्याप्त रहती। उसी समय एक ऊचे गम्भीर शब्द ने आकाश को गुंजा दिया।

नासिर ने विस्मय से डाक्टर की आखो मे देखकर पूछा—"यह क्या ?"

"कारखाने का बिगुल मजदूरो को काम पर वुलाने के लिये।" डाक्टर ने अपने अनुमान से उत्तर दिया। नासिर की स्मृति मे गजनी का अपना पोस्तीन का कारखाना दिखाई दे गया, जहा एक लम्बे छप्पर और उसके वराम्दे में लगभग साठ व्यक्ति, दरी या कम्वल के छोटे-छोटे टुकडे पर अपने घुटनो को भिन्न-भिन्न प्रकार से समेटे, पोस्तीनो पर काम करते रहते थे। कारीगरो को बुलाने या छुट्टी देने के लिये वह किसी प्रकार के बिगुल या घण्टे की आवश्यकता न पडती थी। सुवह सूरज निकलने पर एक-एक दो-दो कर के कारीगर आ जाते थे। कभी काम अधिक होने पर चर्वी या किसी तेल का चिराग या शमा जलाकर तीन-तीन, चार-चार कारीगर उसके चारो ओर वैठ कर काम करते रहते थे।

डाक्टर का अभिप्राय न समझकर नासिर ने पूछा—"कारखाने का बिगुल ?"

"हाँ" डाक्टर ने उत्तर दिया। हज़ारो मजदूर एक साथ काम करते है

न मशीनों पर !" नासिर मशीनों पर हजारों मजदूरों के साथ काम करने की कल्पना न कर सका। वह सोचता रह गया, कितनी बड़ी वह मशीनें होंगी और किस प्रकार इतने आदमियों के हाथ उस मशीन ही को छू पाते होंगे। काबुल और गजनी में कपड़ा सीने की ही मशीन उसने देखी थी।

कारखानों की ओर जाते हुए मनुष्यों का प्रवाह बहने लगा। जगह-जगह दुकानें खुलने लगीं। डाक्टर और नासिर आने-जाने वाले मनुष्यों के चेहरों की ओर ध्यान से देख रहे थे। इन लोगों के चेहरे और कद प्राय हिरात या बलख के लोगों की भाँति ही थे। अधिकांश की दाढ़ी-मूँछ सफा थी, कुछ के कपड़े भी पुराने ढंग के रुईदार चोगे और पायजामे थे परन्तु अधिकांश योरूपियन ढंग के, हल्के गरम कपड़े पहने थे। कुछ लोगों की पोशाक पर ऊपर से एक गिलाफ सा चढ़ा था। नींद से जागकर अपने काम की ओर जाने की शीघ्रता का भाव उनकी गति में था। बहुत से लोग सड़क किनारे की बड़ी-बड़ी दूकानों में छोटी-छोटी मेजों के सामने बेंचों पर जल्दी में जलपान कर रहे थे।

डाक्टर और नासिर के विस्मय मुग्ध मस्तिष्क को सावधान किया पेट की पुकार ने। नासिर ने कहा—"कुछ खाने-पीने की फिक्र करो!" डाक्टर ने विज्ञ की भाँति, मेजों, बेंचों और कुर्सियों से सजी एक दूकान में जाकर जहाँ अनेक आदमी बातचीत कर शोर मचाते हुए नाश्ता कर रहे थे, चाय-रोटी लाने का संकेत किया। नाश्ता कर लेने पर डाक्टर ने दाम देने के लिये रूबल के नोट निकाले।

दूकान का आदमी दाम देने वालों की ओर विस्मय से देखता रहा। उसकी बात डाक्टर समझ नहीं पा रहा था। यह देख कर सहायता के लिये उस ने दूसरे व्यक्ति को पुकारा। डाक्टर फारसी भाषा और चरस के गुप्त व्यापारियों से सीखी टूटी-फूटी ताजिकी-फारसी में बात कर रहा था। दोनों ओर से हाथ के संकेतों और मुख की भाषा द्वारा बहुत कुछ कह-सुन लिये जाने के बाद भी जब मामला न सुलझा तो डाक्टर ने अँग्रेजी का सहारा लिया। बहुत से आदमी चारों ओर आ जुटे। जैसे-तैसे कुछ अंग्रेजी बोल सकने वाले एक व्यक्ति के निकट आने से डाक्टर को समझाया गया, तुम जो रूबल दे रहे हो, यह तो पाँच वर्ष पूर्व रद्द हो चुके हैं। डाक्टर परेशान था, वह अब करे तो क्या?

उस सब वाद-विवाद में अंग्रेजी बोलने वाले व्यक्ति ने डाक्टर से पूछा—"तुम हो कौन? क्या करते हो? कब और कहाँ से आये हो?"

डाक्टर का उत्तर सुन कर आस-पास खड़े लोगो का विस्मय बढ़ा। बातचीत का सिलसिला सन्देहपूर्ण स्वरो और सकेतो मे बदल गया। दूकान के लोग न तो मूल्य लेने के लिये और न डाक्टर और नासिर को जाने देने के लिये तैयार थे।

एक मोटर लारी दूकान के सामने आकर रुकी। खाकी वर्दी पहने, कमर मे रिवाल्वर बाँधे छ व्यक्ति उस मे से उतरे। डाक्टर ने अनुमान से समझा, पुलिस है।

वर्दी पहने एक व्यक्ति ने हाथ बढा कर पूछा—"बिलेत ?" डाक्टर के समझ न पाने पर, शब्दो को चबा कर उस ने दोहराया, "पास्सपर्ट !"

डाक्टर ने अँग्रेजी मे उत्तर दिया—"पासपोर्ट उन लोगो के पास नही है।" अधिक बातचीत न कर पुलिस डाक्टर और नासिर को लारी मे बिठा कर ले गये।

जिस भय का सामना करने के लिये डाक्टर ने अपने आपको अनेक दिन सोच-सोच कर तैयार किया था, वह सामने आ गया। सोवियत रूस की क्रूर और रौद्र ओ० जी० पी० यू० (पुलिस) का वृत्तान्त उसने सेना की क्लबो मे, पुस्तकालयो मे, कहानियो और यात्रा करने वालो के बयानो मे पढा था। उसी ओ० जी० पी० यू० के लोग, जो नाखूनो मे पिन गाड कर, शरीर के अवयवो को शिकजो मे ऐंठकर जो चाहते है, अपने फंदे मे फँसे व्यक्ति से कहला लेते है, डाक्टर उनके पाथ मे पड गया था। वह अत्यन्त कठोर और सन्देह भरे अफसरो के सम्मुख पेश होने की कल्पना करने लगा। वह स्वय अफसर रहा था। अफसरो से उसे काम पडा था। सर्वसाधारण जन समाज से ऊँचे समाज के भाग्यविधाता, शक्ति का विश्वास और भावना लिये अफसर साधारण मनुष्य से कितने भिन्न होते है। कल्पना मे वह अग्नि परीक्षा के लिये तैयार होने लगा।

डाक्टर और नासिर को एक नई बनी इमारत के कमरे मे लाया गया। सामने दीवार मे लाल कपडे पर सुनहले रग मे बने हसिया-हथौडे और तारे का झण्डा था। झण्डे के नीचे मेज के सामने कुर्सी पर, खाकी वर्दी पहने गोरे रग और भूरे बालो वाला एक व्यक्ति चश्मा लगाये कागजो पर नजर जमाये बैठा था। डाक्टर और नासिर को पकड कर लाने वाले व्यक्तिओ ने इस प्रौढ के सम्मुख आकर पुकारा—"तावारिश चोखोव ?" और फिर एक ही साथ दो-तीन व्यक्ति तेजी से अपनी बात कहने लगे। इस व्यक्ति ने जरूरी काम मे विघ्न पड़ जाने की परेशानी से, चश्मा हाथ मे ले कर प्रश्न किया। जिराका

गई या बात फिर दोहराई जाय ।

कामरेड चोखोव के सकेत करने पर केवल एक आदमी ने बात कही । बातचीत ताजिकी-फारसी मे हो रही थी । चोखोव के सकेत से डाक्टर और नासिर मेज के समीप बेंच पर बैठ गये । उच्चारण के भेद के कारण डाक्टर और नासिर बातचीत कठिनता से ही समझ पा रहे थे । वे समीप खडे व्यक्तियो चोखोव और इस बात-चीत की ओर कान लगाये दूसरी मेज पर बैठी एक युवती और चोखोव के बाईं ओर तीसरी मेज पर बैठे दो युवको के चेहरो पर दृष्टि दौडा कर बातचीत का भाव समझने का यत्न कर रहे थे ।

पुलिस की कहानी सुन चुकने के बाद चोखोव ने ठोडी पर हाथ रख डाक्टर को सम्बोधन किया—"इस तरह सोवियत मे आने का मतलब ?" डाक्टर ने जो उत्तर दिया चोखोव कुछ समझ न पाया । उसने समीप की मेज पर टाइपराइटर के सामने, होल्डर का पिछला भाग दाँतो मे दबाये, इस बात-चीत को ध्यान से सुनती हुई युवती की ओर देखा । युवती चोखोव के समीप उठ आई । डाक्टर की बात का रूसी भाषा मे अनुवाद कर उसने चोखोव को समझा दिया ।

डाक्टर ने युवती की मार्फत अपनी बात चोखोव और उसके साथियो को समझा दी । युवती कभी कुछ वाक्य चोखोव से रूसी मे कह देती परन्तु अधिकाँश मे ताजिकी बोल रही थी । चोखोव से उसके रूसी मे कुछ कहने पर दूसरे लोग प्रश्नात्मक दृष्टि से उसकी ओर देखने लगते

उन्हे गिरफ्तार कर लाने वालो मे से एक व्यक्ति ने, डाक्टर की ओर देख कर सहानुभूति के स्वर मे कहा—"रेवोल्यूत्सनेई इन्दुस्की तावारिश ।" (भारतीय क्रांतिकारी साथी) अपने प्रति सहानुभूति का भाव देख डाक्टर अभी सन्तोष की साँस नही ले पाया था कि चोखोव के दाईं ओर की मेज पर बैठे दो युवको मे से एक ने समीप आ कर एतराज किया—"अंग्रेजो का जासूस भी हो सकता है ।"

युवती ने चोखोव को सम्बोधन किया—"नही, जासूस होता तो नकली पासपोर्ट लेकर आता । यहाँ की भाषा तक नही जानता, जासूसी क्या करेगा ?

चोखोव ने नासिर से प्रश्न किया—"तुम तो अच्छी स्थिति के व्यक्ति हो । तुम्हे पासपोर्ट लेकर यहाँ आना चाहिए था ।"

नासिर ने उत्तर दिया—"अफगानिस्तान में मुल्ला लोग सोवियत के बहुत खिलाफ हैं । वे नही चाहते, कोई सोवियत जाकर आजादी की बाते सीखे ।"

जिस व्यक्ति ने इन लोगो के जासूस होन का सन्देह किया था, उसने नासिर से सीधे प्रश्न किया—"तुम न किसान हो न मजदूर, तुम बोगेस (बूर्जुआ) हो। तुम्हे अपने देश मे मौज थी। तुम उसे क्यो छोड आये ?"

कोई और उत्तर न होने से नासिर ने कहा—"हमको मुल्ला लोग और अमीर की सरकार तालीम नही लेने देते। हमे कुछ आजादी नही।"

जासूसी का सन्देह करने वाले व्यक्ति ने राय दी, इन लोगो को नदी पार अफगानिस्तान के मुल्क मे छोड देना चाहिए। उसका विरोध कर दूसरे व्यक्ति ने कहा—"नही, जासूस हो तो जरूर गोली मारनी चाहिए।"

युवती बोली—"नही, इन्हे नदी पार नही भेजा जा सकता। ऐसा करना विधान के विरुद्ध होगा। सोवियत विधान की १२९ धारा के अनुसार मेहनत करने वाली श्रेणी के अधिकारो के लिये लडने वालो को सोवियत प्रजातन्त्र मे रक्षा पाने का अधिकार है।"

चोखोव ठोढी हथेली पर रखे सब की सुन रहा था। युवती की बात समाप्त होने पर डाक्टर की ओर देख कर उसने प्रश्न किया—"तुम समाजवादी क्रांति चाहते हो। तुम किस इण्टरनेशनल को मानते हो ?"

डाक्टर ठीक से समझा नही। सोचकर उसने कहा—"हम ससार भर मे मेहनत करने वालो का राज्य चाहते है।"

चोखोव ने तीव्र दृष्टि से देख फिर प्रश्न किया—"विश्व-क्रान्ति मे विश्वास करते हो ?" डाक्टर ने हामी भरी।

जासूसी का सन्देह करने वाले व्यक्ति ने आशका की उत्तेजना से कहा—"त्रात्सकाइस्तकी ?"

डाक्टर उत्तर न दे कर उसकी ओर देख रहा था। युवती ने उससे फिर प्रश्न किया—"तुम स्तालिन के सिद्धात को मानते हो या त्रात्सकी के ?"

"स्तालिन !" डाक्टर ने आश्वासन से उत्तर दिया।

आस-पास खडे लोग फिर आपस मे बहस करने लगे। मेज को थपथपा कर प्रसग समाप्त करने का सकेत कर चोखोव ने कहा—"खैर, यदि तुम लोग नदी पार करते हुए पकडे जाते तो तुम्हे उसी समय गोली मार दी जानी चाहिये थी। यह सीमा के पहरेदारो की बेपरवाही है।" एक युवक की ओर हाथ के चश्मे से सकेत कर उस ने इस बारे मे कुछ कहा और फिर डाक्टर और नासिर को सम्बोधन कर बात जारी की, "तुम नगर मे गिरफ्तार किये गये हो इसलिये कायदे से तहकीकात और मुकद्दमा चलेगा। तुम दोनो को जॉच के लिये

हम दो दिन बाद रेल से समरकन्द भेज देंगे । यदि तुम मेहनत करने वाली श्रेणी के मित्र हो, सोवियत तुम्हारा घर है वर्ना शत्रु के जासूस को जो सजा दी जाती है, वही तुम्हारी होगी ।"

डाक्टर और नासिर को दो अलग-अलग कोठरियो मे बन्द कर दिया गया । अपने जीवन की कहानी और सोवियत आने का प्रयोजन लिख देने के लिये उन्हे कागज और पेन्सिल दे दी गई ।

× × ×

डाक्टर को समरकन्द मे अंग्रेजी बोल सकने वाले अफसर के सामने पेश होना पडा । अनेक प्रकार की जिरह की गई और फिर उसे स्वस्थ्यगृह (Sanatorium) मे काम दे दिया गया । उसे कुछ मालूम न हो सका, नासिर कहाँ गया, उस का क्या हुआ ? समरकन्द के पुलिस दफ्तर मे पहुचने के बाद डाक्टर से जिरह करने से पहले भी उसे अलग स्थान पर रखा गया था । स्वास्थ्यगृह भेजे जाते समय उसने अपने साथी के विषय मे पूछताछ की । उसे उत्तर मिला, वह आराम से है । समय आने पर स्वय पता चल जायगा । दो मास बाद उसे नासिर का फारसी मे लिखा पत्र मिला । यह पत्र लिखे जाने के प्राय एक मास बाद डाक्टर को मिला था । नासिर गुर्जी के तेल के कारखाने मे काम कर रहा था ।

समरकन्द का स्वास्थ्यगृह पुराने शहर से अलग है । पुराने अमीरो के महलो के खण्डरात से बची हुई एक नीली महराब के भीतर चौडी सडक के दोनो ओर घास की पटियो पर मेहदी और छोटी पत्ती की दूसरी झाडियो को तराश कर गोल दायरे, तारे, हँसिया-हथौडे के चिन्ह बना दिये गये है । बीच-बीच मे रगबिरगे फूलो की पटिया सजी है । बीमारो के लिये बडे बडे हवादार हाल नये ढग से बनाये गये है । बीमारो को आयु, रोग की अवस्था और स्त्री-पुरुष के भेद से हालो मे रखा गया है । बीमारो के उपचार, रहन-सहन और शिशुशाला के बालको की शिक्षा की सब जिम्मेवारी सोवियत सरकार पर है ।

बिस्तर पर रहने वाले बीमारो और बच्चो की देखरेख और सेवा के लिये दाइयाँ (नर्सें) बर्फ के समान श्वेत वस्त्र पहने, मुस्कराती हुई चुस्ती से अपना काम करती है । डाक्टर ने देखा, बहुत सफेद चेहरे और नीली आखो वाली पाँच-सात रूसी दाइयो को छोडकर शेष लाल गेहुआँ रग और काली आँखो वाली कज्जाक, उजबेग और ताजिकी लडकियाँ ही थी । इन लडकियो की

माताओ ने चद्दर और बुर्के के बिना कभी घर के बाहर कदम न रखा था। वे अपने घर की चलती-फिरती सम्पत्ति मात्र थी। यही स्त्रियाँ अब चुस्त योरुपियन पोशाक पहने, हाथ मे थरमामीटर लिये हस्पताल मे काम करती-फिरती थी। जिन स्त्रियो की परम्परा मे किसी स्त्री ने प्रकाश्य रूप से पति और पुत्र के शरीर के सिवा किसी दूसरे पुरुष का स्पर्श न किया था, अब युवा रोगी पुरुषो को यो गोद मे सम्भाल लेती जैसे वे उन की अपनी सन्तान या पति हो। अपनी ड्यूटी का काम समाप्त कर वे बिजली की गति से लपक-लपक कर टेनिस या दूसरे खेल खेलती। पुरुष उन के लिये झपट कर निगल जाने वाले हिंस्र पशु न रह कर सहचर जीव बन गये थे। मित्रता और सख्य के भाव से वे उन की बाँह मे बाँह डाल कर घूम फिर सकती थी। इस प्रदेश की दस वर्ष पूर्व की अवस्था स्मरण कर डाक्टर विस्मित रह जाता।

समरकन्द के विश्वविद्यालय मे शिक्षा उजबेग भाषा मे दी जाती है। डाक्टर के उजबेगी या रूसी भाषा न जानने के कारण उसे चिकित्सा विभाग मे खोज का काम दिया गया। चिकित्सा सम्बन्धी खोज के अध्यक्ष जर्मनी मे चिकित्सा की खोज का अनुभव प्राप्त, डाक्टर नूरनबर्गर थे। वे नाजी शासन मे यहूदियो पर होने वाले अत्याचार से घबराकर रूस चले आये थे। सोवियत सरकार ने उन्हे चिकित्सा-खोज विभाग का अध्यक्ष बना कर अपना काम जारी रखने की सुविधा दे दी थी।

डाक्टर नूरनबर्गर कुछ वर्ष अमरीका मे रहने के कारण अंग्रेजी भी बोल लेते थे। सोवियत सरकार के समाजवादी सिद्धातो, राजनीति और इस विषय की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति से उन्हे विशेष प्रयोजन न था। उन्हे इस व्यवस्था मे खोज और आविष्कार के लिये पूर्ण सुविधा पाने से पूर्ण सतोष था। वैज्ञानिक को इस बात की चिन्ता नही करनी थी कि अपना पेट भरने के लिये वह कोई न कोई नयी औषध बाजार मे जरूर पेश करे। जर्मनी मे खोज करते समय उन्होने फेफडो और हड्डी से सम्बन्ध रखने वाली बीमारियो की आशका निवारण के लिये एक दवाई तजवीज की थी। दवाई बनाने वाली कम्पनियो की दृष्टि मे इस खोज का कोई मूल्य न हुआ। सर्वसाधारण के प्रयोग द्वारा ऐसी दवाई की उपयोगिता जानने का अवसर भी न था। दवाई के व्यापारियो ने उन के आविष्कार का मजाक बनाकर कहा—"तुम्हारी इस दवाई को बना हम क्षय रोग के लिये तैयार की गई अपनी सैकडो दवाइयो को निरर्थक कर दे? जिसे अभी रोग नही, वह इसे खरीदेगा क्यो? जो रोगी है, उस के लिये

इस का उपयोग नही ।"

मास्को आने पर उस की दवा का प्रभाव छोटे-छोटे जीवो पर आज़माया गया । बाद मे इसे कमज़ोर बच्चो के लिये उपयोग किया गया । दक्षिण रूस मे इस रोग का आतंक होने के कारण नूरनबर्गर को अपनी खोज और प्रयोग जारी रखने के लिये समरकन्द भेज दिया गया । पाँच वर्ष मे उन की यह निवारक औषध बीसियो हज़ार बच्चो को दी जा चुकी थी । सोवियत शासन मे पर्दे की कुप्रथा दूर होकर दस वर्ष मे स्त्रियो और नयी पीढी के लोगो के स्वास्थ्य मे विशेष उन्नति हो रही थी ।

जाडे के आरम्भ मे स्वास्थ्यगृह की सडको पर और कुजो मे सेव, नाशपाती और आडू के वृक्षो के पत्ते पीले पड कर पछवा हवा के झोको से, पाले से मरती पीली घास पर गिर कर कुडमुडा कर, मैदानो और सडको पर ववडर के रूप मे उडने लगे । रात में पाला वरफ की झीनी चादर की तरह मैदानो ओर छतो पर जम जाता । सूर्योदय की प्रथम गुलाबी किरणो के स्पर्श से, जहाँ तक दृष्टि जाती, छिटकी दानेदार चीनी जैसे पाले से नीला कुहासा उठ-उठ कर आकाश की ओर उडने लगता । खन्ना के दिन सतोष से बीत रहे थे । डा० नूरनबर्गर की रसायनशाला मे खोज का काम करने के अतिरिक्त वह शिशुशाला मे भी काम करता । अपने चारो ओर कार्यकर्ताओ में उसे उत्साह दिखाई देता । केवल निश्चित समय तक या अपना निश्चित काम करने का भाव न था । वे नौकरी नही अपना काम कर रहे थे । चिकित्सा-विभाग के डाक्टर अध्यापक अपने काम के इलावा, रुई और रेशम के कारखानो में स्वास्थ्य की अवस्थाओ की जाँच करने के लिये जाते । विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अपने खाली समय मे योरुपियन भाषा की पुस्तको का अनुवाद करते । विद्यार्थी समय पाकर टोलियाँ बाँध, लारियो पर चढकर सौ-सौ मील दूर के कोलखोज (सयुक्त कृषि के गाँव) या सोवखोज (सरकारी खेती के केन्द्र) मे सहायता करने चले जाते ।

डाक्टर नूरनबर्गर के अतिरिक्त डाक्टर खन्ना का अधिक सम्पर्क था कामरेड खातून से । वे शिशुशाला की अध्यक्ष थी । दाइयो की शिक्षा की देख-रेख करना उनका काम था । आयु थी, चालीस से कुछ ऊपर । डाक्टर नूरनबर्गर की भाँति खातून को केवल चिकित्सा के अनुशीलन और रोगो को निर्मूल कर देने से मतलब न था । उजबेग बच्चो और स्त्रियो का स्वास्थ्य सुधार उनके लिये लक्ष्य नही, साधन मात्र था । वे कम्यूनिस्ट पार्टी की मेम्बर थी । उन का

उद्देश्य संसार भर की मेहनत करने वाली जनता को आत्मनिर्णय का अधिकार देकर उन का निरकुश शासन स्थापित करना था। शोषित जनता पर होने वाले अन्याय को स्मरण कर उन की आँखो से चिनगारियाँ छूटने लगती थी। उन का जीवन श्रेणी-युद्ध की साधना था। श्रेणी प्रतिहिंसा उन का स्वभाव बन गई थी। वर्षो तक एक ही वृत्ति से विचार और यत्न करते रहने के कारण उन के चेहरे पर कठोरता और तत्परता सूचक रेखाये अत्यन्त स्पष्ट हो उठी थी। किसी की बात सुनते समय, तीव्र दृष्टि से उन के देखने के ढग से अविश्वास की भावना झलकती।

कामरेड खातून के कामचलाऊ 'अमरीकन' बोल सकने के कारण डाक्टर का परिचय उन से गूढ होता गया। सेटपीटर्सबर्ग के होटल मे अग्रेजी बोलने वाले लोग प्राय. अमरीकन ही होते थे इसलिये अग्रेजी को वे 'अमरीकन' कहती थी। अनेक प्रश्न कर डाक्टर के बीते जीवन की घटनाओ के सम्बन्ध मे वे उसकी बाते सुनती रहती। बिना हुँकार भरे, अपलक आखो से चुपचाप सुनते रहने का उनका भाव ऐसा था कि डाक्टर सोचने लगता, यह इतनी तन्मय है या सुन ही नहीं रही ? फिर भी वह अपनी बात कहता जाता। पारस्परिक सकोच दूर हो जाने पर डाक्टर कभी पूछ बैठता—"मै क्या कह रहा था ?" तब पलक झपक वे डाक्टर की बात के प्रसग को ठीक से बता देती और कभी कह देती, "मै कुछ सोचने लगी थी। जानते हो हम लोगो पर कितनी बडी जिम्मेवारी है ? हाँ अपनी बात कहो।"

सोवियत शासन के सम्बन्ध मे वे इस प्रकार अधिकार से बात करती जैसे वह उनके निजी जीवन की ही बात है। कभी मार्ग मे या मकान के साझे बराम्दे मे मिल जाने पर वे कुछ न बोलती मानो डाक्टर से कोई प्रयोजन या सम्बन्ध ही नही। डाक्टर के कभी अपने बिस्तर पर लेटे रहने पर समीप बैठकर घण्टे भर बातचीत करती रहती।

× × ×

खातून का पिता लम्बे डील का उज्बेग था। उसकी जवानी जार की सेना की नौकरी मे बीती थी। घोडा रपट जाने से घुटना जख्मी हो गया और वह सिपाहीगिरी के काम का न रहा। सेटपीटर्सबर्ग के सैनिक हस्पताल से छुट्टी पाकर उसने एक होटल मे दर्बान की नौकरी कर ली। काम था, होटल की जर्क-वर्क वरदी पहने ड्योढी पर खडे रहना। अतिथियो के आने पर अदब से

गाड़ी का दरवाजा खोलकर एक ओर खड़े होकर सलाम कर देना। अतिथियों के लौटते समय फिर उनके लिये अदब से गाड़ी का दरवाजा खोल देना। उनके गाड़ी में बैठ जाने पर सलाम कर देना। होटल से मिलने वाली तनखाह नाम मात्र थी, प्राय वर्दी की लागत में कट जाती। निर्वाह चलता था, आने-जाने वालों की बखशीश पर। छः फुट लम्बे, ताकतवर मनुष्य का यह कितना भयंकर अपमान था, वह सम्पन्न लोगों के गुरूर को गुदगुदाने का साधन मात्र बना रहे!—खातून प्राय ही उस प्रसंग को दोहराने लगती और उसकी आँखें लाल हो जाती।

खातून की माँ धर्म भीरु मुसलमान थी। पति जिस समय जार की सेना का सिपाही बनकर मध्य-एशिया और योरप में जार आतंक की स्थापना कर रहा था, खातून की माँ समरकन्द के दिहात में, जरफशा नदी के किनारे, अपने कपास और गेहूँ के खेतों में काम करती। उतने से सन्तान का पेट न भरता तो वह गधों पर आसबाब लादने के लिये ऊन की दुपल्ली बोरी बुनती। सब कष्ट सहकर भी उसने कभी अपना मुख नकाब के बाहर न किया था। सेना की नौकरी की तनखाह से पैसा बचा कर समद्दाख अपने कपास और गेहूँ के खेतों के लगान का बकाया अदा कर देता। वह नौकरी छूट जाने के बाद, उन खेतों को बचाना कठिन हो गया।

मीठे सेब और सर्दे देने वाले समरकन्द के दिहात को छोड़कर समद्दाख बाल-बच्चों सहित पीटर्सबर्ग में जा बसा। तब खातून की आयु केवल सात वर्ष की थी। पीटर्सबर्ग के कोहरे, बादल, धुयें और बरफ से भरे वातावरण में पहुँच कर समरकन्द का बिछुड़ा हुआ दिहात बच्ची के लिये स्वर्गीय स्वप्न की स्मृति मात्र रह गया। जाड़े की अठारह घण्टे लम्बी रात में ठिठुर-ठिठुर कर अपने से छोटे तीन भाइयों को फटी गुदड़ी में समेटे, वह जीवन की ऊष्णता देने वाली सूर्य की किरणों की प्रतीक्षा करती रहती। पीटर्सबर्ग का सूर्य, मध्य-एशिया के चाँद से भी क्षीण, कुहासे में छिपा पश्चिम की ओर सरक जाता, वैसे ही धुन्दला जैसे प्यारे-प्यारे खेतों में खेलने की स्मृति खातून के मन में रह गई थी।

समद्दाख के प्रति दूसरे वर्ष बढ़ते जाते परिवार के पेट की ज्वाला ने खातून को दस-ग्यारह बरस की आयु में ही होटल के फर्श साफ करने के लिये विवश कर दिया था। सोलह-सत्रह बरस की आयु में यौवन के चिन्ह उठने लगे। होटल के मैनेजर ने फर्श साफ कराने की अपेक्षा उसे अधिक उपयोगी

बनाने की ओर ध्यान दिया। उसके उजले बादामी रग के गालो पर फूटती लाली और काली आखो मे, योरुप की सर्वसाधारण श्वेत और आखो की अपेक्षा अधिक आकर्षण था।

ख़ातून को होटल की मैनेजर फ्रेंच लेडी ने अतिथियो की सेवा करने की शिक्षा देनी आरम्भ की। उसकी ही उम्र की दस-ग्यारह लडकियाँ और भी थी। उन्हे फ्रेंच और अमरीकन मे आवश्यक शब्द और वाक्य याद कराये जाते थे। बातचीत करते समय कमर मे कायदे से लचक और होठो पर मुस्कराहट न आने से बेतो से मार भी पडती।

इन लडकियो का काम था—संध्या भोजन के बाद, जब होटल के अतिथि खूब शराब पिये रहते, सिगरेट की पेटियाँ बगल से लटकाये सिगरेट हाजिर करना। सिगरेट का मूल्य अतिथियो की पसन्द से लडकियो के रूप और मुस्कराहट के मूल्य के अनुपात मे हो जाता। सिगरेट होटल की सम्पत्ति थी और इस का मूल्य होटल की आय। भोजन के समय या अपने कमरो मे चले जाने पर मेहमानो को किसी भी प्रकार नाराज करना, उन की किसी भी इच्छा को पूर्ण करने से इनकार करना, घोर अपराध था। लडकियो के शरीर होटल की दूसरी वस्तुओ के समान, मूल्य देने वालो के उपयोग के लिये प्रस्तुत थे। वे लोग इतनी शराब पिये रहते कि उन के पेट मे उस के हिलने का शब्द सुनाई दे जाता। इस उन्मत्त अवस्था मे वे भूल जाते, उन के समीप सजीव मनुष्य की देह है, लकडी का कुदा या तकिया, औरत है या मर्द। कभी कोई बदहवासी मे रोते-रोते या हँसते-हँसते सारी रात बिता देते।

एक रात की भयकर यन्त्रणा से उत्तेजित होकर खातून ने ख़ाली बोतल भरपूर शक्ति से एक मेहमान के सिर पर दे मारी। होटल-मैनेजर की नाराजगी के भय से खातून भाग निकली। कही जगह न पाकर वह नेवा नदी के किनारे फिरती रही। आवारागर्दी की हालत मे उसे गिरफ्तार कर थाने पहुँचा दिया गया। जार की पुलिस को यह ध्यान न आया कि वह थकी, भूखी और परेशान है। उन्होने देखा, वह जवान लडकी है और उन्हे उस के उपयोग का अवसर है।

खातून के घर लौटने पर होटल मे जगह न थी। पिता ने क्रोध मे लाठी से पीट कर घर से निकाल दिया। इतनी उम्र तक बेनकाब रहने के कारण वह किसी उजबेग मुसलमान की बीबी होने लायक न रही थी। समद्दाख मुसलमान होकर अपनी बेटी को किसी ईसाई या यहूदी से ब्याह कर दोजख

जाने के लिये वह तैयार न था। बाजार-बाजार घूमकर फ्रांसीसी और अमरीकन बोल सकने के कारण खातून को एक बडी दूकान पर कुछ काम मिल गया। दूकान मे बीसियों नौकर थे। वहीं दूकान-नौकरो के दल में भरती होकर वह पार्टी की मेम्बर बन गई। क्रांति से पूर्व भी वह हड़ताल और जुलूसों में शामिल होती थी। गिरफ्तार होने पर कोड़े लगा कर उसे छोड़ दिया गया। क्रांति के पश्चात पार्टी ने उसे लाल सेना के हस्पताल मे जख्मी सिपाहियों की सेवा का काम करने के लिये भेज दिया।

उत्तेजित स्वर मे खातून डाक्टर को सोवियत के चार वर्ष के गृह-युद्ध के वर्णन सुनाती। कैसे लाल सेना के पीछे हटने पर, रूस मे फिर से पूंजीवादी व्यवस्था कायम करने का यत्न करने वाले श्वेत सैनिक लाल-सेना के हस्पतालों को जला देते थे। लाल सेनायें भाग कर दुबारा मोर्चा बनाने का यत्न करती थी। हस्पताल न रहने पर खातून राइफल लेकर शत्रुओं से लडती फिरी।

डाक्टर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किये रहने के लिये खातून उत्तेजित हो कर उसकी बाँह अपने हाथ मे थाम लेती। उसका स्वर ऊँचा हो जाता। कहती, जो कुछ मैंने सहा, सब उजबेग औरतें वही सहती रही हैं। वे बेजुबान थी लेकिन अब देखो, वे आदमी बन रही है ? तीन पहर रात गये तक खातून की बगल मे बैठ कर उसकी निरावरण बाँहों और शरीर के कुछ भाग को देखकर भी डाक्टर को खयाल न आता कि वह एक स्त्री के साथ एकान्त में है। खातून को भी खयाल न आता कि एक पूर्ण युवा पुरुष उसके बिस्तर पर बैठा है ? विचार क्या मनुष्य को इस प्रकार बदल दे सकते है ?

× × ×

खातून सप्ताह मे एक बार पुराने समरकन्द शहर का चक्कर लगाने जाती थी। डाक्टर के लिये यह विनोद और सैर का अच्छा अवसर होता था। वह प्राय खातून के साथ जाता। समरकन्द के प्रसिद्ध मकबरो के नीले गुम्बदों को ध्यान से देख कर वह स्तब्ध रह जाता। उसकी तन्मयता देख कर खातून पूछ बैठती—"क्या है ?"

सूर्यास्त के गुलाबी आकाश मे वस्त्रहीन, दया की भीख माँगने के लिये अपने कंकाल हाथ आकाश की ओर फैलाये, वृक्षों के समूह से बहुत ऊपर सिर उठाये, वे नीले विशाल गुम्बद अपनी गम्भीरता लिये यों तटस्थ खड़े थे जैसे

आ गये। घर की तलाशी लेने पर स्त्री या बच्ची का कुछ पता न चला। दूसरे कई घरो की तलाशी ले कर बच्ची को ढूंढ निकाला गया। स्त्री को कहा गया, क्यो कि वह स्कूल जाने लायक उम्र की बच्ची को पढाती नही, बच्ची उसके पास नही रहेगी। स्त्री नकाब के भीतर से पुलिस को धमका रही थी, बच्ची की उम्र अभी केवल तीन बरस है। नकाब मे लिपटी लडकी डाक्टर को आठ बरस से कम की नही जँच रही थी।

खातून स्त्री की बात की उपेक्षा कर पुलिस के साथ रोती लडकी को ले चली। बच्ची की माँ हाथ फैला-फैला कर पीछे दुहाई देती आ रही थी--"मेरी दूध पीती बच्ची को छीने लिये जा रहे हैं।"

खातून पुलिस के शैथिल्य की शिकायत करती जा रही थी--"इस मुहल्ले मे निरक्षर, कट्टर उजबेग लोग स्कूल की आयु की लडकियो को अब तक छिपा कर रखे है और कोई देखने वाला नही!"

माँ से छीनी गई बिलखती-सिसकती, बदबूदार चीथडो मे लिपटी, उज़बेग बच्ची को अपनी कठोर, स्नेहमयी गोद में लिये खातून शिशुगृह के बरामदे के नीचे ही खडी हो गई। उन्हे भय था, उसके रोने के स्वर से सोये हुये बच्चे विक्षिप्त न हो जाय। डाक्टर को उन्होने ड्यूटी की दाई को पुकार कर, गुलशा को बुलाने के लिये कहा।

गुलशा अपना काम समाप्त कर आराम करने चली गई थी परन्तु उसका आराम का समय कोई भी न था। खातून को जब भी आवश्यकता होती, बेचारी को, जैसी-तैसी अवस्था मे बिस्तर से भी बुला लेती। चार मास पूर्व डाक्टर के समरकन्द आने के समय बच्चो मे इनफ्लुएन्जा फैला हुआ था। उस समय डाक्टर कम थे। गुलशा सात दिन तक, बिस्तर से पीठ छुआये बिना, लगातार ड्यूटी पर रही। इस तत्परता के परिणाम स्वरूप उसे कामरेड स्तालिन के हस्ताक्षरो का प्रशसा-पत्र मिला था।

रात के कपडो (नाइटड्रेस) पर कधे से एक ढीला चोगा लटकाये और सिर के बालो को रूमाल मे समेटती हुई गुलशा चली आई। गुलशा ने बच्ची को खातून की गोद से ले कर उसकी ठोढी अपनी उँगलियो से ऊपर उठा, ऐसे स्नेह-आग्रह से पुकारा कि लडकी का रोना बन्द हो गया। आपरेशन के समय जैसे सब काम सधे हुये निश्चित ढग से किये जाते है वैसे ही बच्ची के कपडे उतार कर फेक दिये गये। मैल से गुथे बाल एक कैंची से गर्दन तक छाँटे गये। गरम पानी की एक नाँद मे बैठा कर उसका शरीर साबुन की झाग से धोया

गया। उसे तौलिये मे लपेट कर ड्यूटी की दाई ने गरम दूध का प्याला उसके होठो से लगा दिया।

गुलशा बच्चो को पृथक कमरे मे ले जाकर वहलाने का यत्न करने लगी। एक आलमारी से खिलौने का हवाई जहाज बच्ची के समीप ला कर उसने कहा—"यह देखो, तुम इस पर वैठोगी कि तुम्हारे लिये काला घोडा मगा दे ?""इतने-इतने वडे सर्दे हमारे पास हे ! तुम सो जाओगी तो अभी हम ले आयेग।"

डाक्टर और खातून चुपचाप देख रहे थे। गुलशा को बच्ची को वहलाते छोड कर खातून डाक्टर की वॉह थामे उसे ले चली। बच्चो के दोनो हालो मे प्रत्येक छोटे पलने पर झुक कर उसने बच्चो को देखा। खटका न होने के लिये वह सावधानी से पजो के वल चल रही थी।

शिशुगृह के हाल से वाहर आकर, जूते की आहट की फिक्र न रहने से ऐड़ी फर्श पर रखते ही, खातून का भाव वदल गया। स्वर की कोमलता असतोष और कर्कशता मे वदल गई। "यह हमारी कितनी बडी कमजोरी है" वह बोली, "इस प्रान्त को सोवियत शासन मे सम्मिलित हुए दस वर्ष हो गये और यह जहालत अभी तक दूर नही हुई। योरुप के लोगो की आलोचना से घबराकर मास्को मे वैठे लोग प्रजातन्त्र और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की वाते करते है। यहॉ उज्बेगिस्तान के कल्याण के लिए सख्ती की आवश्यकता है। जो लोग सत्य को देखना पाप समझे उनसे सहनशीलता का व्यवहार कैसे सम्भव है ? प्रत्येक जाहिल और निकम्मा व्यक्ति समाज के लिये बोझ है। तुम बताओ, यह गुलशा, स्लोवा, हरनो यदि सब अपनी मॉ की गोद से चिपटी रहती तो क्या होता ?"

अपने कमरे मे पहुँच कर खातून निढाल हो कर बिस्तर पर गिर पड़ी। अपने पलग की पटिया पर डाक्टर को वैठा कर उसने रुकते हुये स्वर मे सिर चकराने और दिल डूवने की शिकायत की। सोवियत के शैथिल्य के प्रति खातून के असतोष से डाक्टर का ध्यान चला गया था दूर अपने देश की ओर। खातून के स्वर के परिवर्तन से सजग हो कर उसने उसकी नाडी-परीक्षा की, हृदय की गति देखी। कुछ क्षण सोच कर डाक्टर ने सलाह दी—"तुम सो जाओ। विश्राम करो। तुम्हारे लिये एक खुराक दवा मै अभी ला देता हूँ।"

अपने हृदय पर रखा डाक्टर का हाथ थाम कर खातून ने उसे उठने न दिया। नही, तुम वैठो ! औषधि मै बहुत दिन पी चुकी हू। तुम इस विषय मे

डाक्टर नूरनबर्गर और स्चेविन्स्की से कुछ न कहना, समझे ! तुम कहोगे, मेरा हृदय कमजोर हो गया है। नूरनबर्गर और स्चेविन्स्की भी कहते हैं, मैं कुछ दिन छुट्टी ले कर काले समुद्र के विश्राम-गृह मे रह आऊँ ! तुम नही जानते, स्चेविन्स्की चाहता है, मैं छुट्टी पर चली जाऊँ। यहाँ पार्टी के काम की देख-रेख का काम पोपोलोफ को मिल जाय। पार्टी मे पोपोलोफ की स्थिति दृढाना चाहते हैं। पोपोलोफ बुद्धिजीवी है। वह बुखारिन के दल का आदमी है। उसने राइफल से शत्रु का सामना नही किया। वह बिना फ्रेम का चश्मा लगा कर क्रेमलिन मे बैठ कर गोरे-गोरे हाथो से केवल विधान बनाना चाहता है ? वह चाहता है, मेहनत करने वालो पर बुद्धिजीवियो का शासन अधिकार बना रहे। हम इसे कभी स्वीकार नही कर सकते ? मै यदि एक दफे छुट्टी लेकर चली गई तो पोपोलोफ सुन्दर भाषा में ऐसी रिपोर्ट लिख देगा कि पार्टी मेरी जगह उसी को नियत कर देगी।

खातून को ज्यो-त्यो आश्वासन देकर, नीद आने की दवा पिला कर डाक्टर अपने बिस्तर पर जा लेटा। उसे स्वयम नीद नही आ रही थी। उस का जीवन उपयोगी ढग से, सतोष से बीत रहा था। इस व्यक्तिगत सतोष के नीचे स उठ आती थी, सामाजिक कर्तव्य की पुकार। वह यहाँ सुखी और सतुष्ट है परन्तु उस का भी अपना देश है, जहाँ खातून जैसे व्यक्ति की आवश्यकता है उस से भी अधिक उत्साह और कर्मठता की जरूरत है ?"

× × ×

डाक्टर की आँख सूर्योदय से पूर्व ही खुल जाती थी। पलग के सिरहाने बिजली का बटन दबाने से कमरे मे प्रकाश भी हो जाता परन्तु बाहर बर्फीली सर्दी की कल्पना कर वह भीतर बाशास्त्रुआ के बिजली घर से आये तार से फैली सुखद ऊष्णता मे सुख की अँगड़ाई लेकर शेष सुस्ती दूर करने के लिये वह एक सिगरेट सुलगा लेता। सिगरेट समाप्त होने तक उस का ध्यान दूर भारत की ओर चला जाता। देहली मे वह अपने घर की बात नही सोचता। राज का ध्यान प्राय आ जाता परन्तु घर का नही। वह सोचता था, एक अस्पष्ट सी बात, लम्बे-चौडे, करोडो दुखी मनुष्यो से बसे देश की बात। वह वहाँ लौट जाय। जार के अत्याचार से कुचली, अज्ञान, कुसस्कारो मे फँसी मध्य एशिया की जनता मनुष्य बन सकती है तो उस के देश की जनता ’। सन १९३२ की गरमी की छुट्टियो मे लाहौर मेडिकल कालेज से देहली आकर

अपने घर की छत पर बैठ कर शिवनाथ के साथ देशोद्धार करने के मनसूबे उसे याद आने लगते ।

विस्तर मे करवट से लेटे यह सब सोचते हुये, वह लेनिन की पुस्तक 'प्रयोगिक-अनुशीलन' (Emperio Criticism) दो घण्टे पढता रहता । इस के बाद लिखने-पढने की मेज पर रखे बिजली के चूल्हे पर चाय बना कर हल्का नाश्ता कर के हाथ मे स्टैथिसकोप लटकाये, शिशुशाला का चक्कर लगाता हुआ विश्वविद्यालय की ओर रसायनशाला मे चला जाता ।

डाक्टर के लिये यह मनोनीत, सुविधाजनक कार्यक्रम था । इस मे व्याघात उसे न सुहाता परन्तु जब बिस्तर पर लेट कर पढते समय या चाय का पानी खौलाते समय खातून की पुकार आ जाती—तावारीश खाना ! डाक्टर खिन्नता अनुभव होने पर भी उपेक्षा न कर सकता । उसे खातून के कमरे मे जाना ही पडता । खातून कभी गर्दन तक छँटे बालो को कघी से झाडती हुई और कभी नाश्ते के लिये रोटी काटती हुई, डाक्टर के कदमो की आहट पा कर अपने काम से दृष्टि हटाये बिना ही प्रश्न कर देती, "तुम आजकल मध्य एशिया मे फैलने वाले ज्वर के कीटाणुओ की खोज कर रहे हो न ? अश्काबाद से रोगियो के खून का नमूना आया था, उस का क्या हुआ ? अश्काबाद और बुखारा मे फैलने वाले ज्वरो मे क्या भेद है ?"

विज्ञान की शिक्षा से हीन, चिकित्सा के काम को केवल राजनैतिक दृष्टि से महत्व देने वाली इस स्त्री से विज्ञान की गहरी बातचीत करने मे डाक्टर को कुछ उत्साह न होता परन्तु खातून के स्वर मे आग्रह और चिन्ता का ऐसा भाव रहता कि उपेक्षा नही की जा सकती थी । वह प्रश्न का उत्तर 'हाँ' या 'न' मे देकर चल देने के लिये तैयार होता कि खातून फिर बोल उठती—"इन ज्वरो के कारण पिछले वर्षो मे प्रति वर्ष छ लाख व्यक्ति हफ्तो बीमार रहे । इतने दिनो तक आठ घण्टे प्रतिदिन के हिसाब से छ लाख व्यक्तियो के परिश्रम की शक्ति का नुकसान मजदूर-प्रजातन्त्र को हुआ । इन की दवादारू ओर सेवा मे जो श्रमशक्ति व्यय हुई, उस से भी सोवियत की शक्ति नही बढी । यह सब समाज की कितनी भयकर हानि है ? इस सब हानि को रोकना तुम लोगो का उत्तरदायित्व है ।

खातून की शिक्षा और बुद्धि के विचार से यह बाते कुछ अधिक ही थी । डाक्टर कल्पना करने लगता, यह सब बाते अवश्य उसने लालसेना के हस्पताल और सेना मे सिपाहीगीरी करते समय रात्रि पाठशालाओ मे व्याख्यान सुनकर

सीखी होगी। इस स्त्री के लिये जीवन का प्रत्येक कार्य शोषक पूंजीवादी व्यवस्था के विरुद्ध निरंतर युद्ध की शृंखला है। बच्चों की सी बुद्धि, सिपाही की सी दृढ़ता से उसे राजनीतिज्ञों जैसी बातें करते देख कर डाक्टर की कल्पना अपने देश की समस्याओं की ओर दौड़ जाती। उस की बात सुनते-सुनते वह सोचने लगता, यह स्त्री हृदय रोग से चाहे कल ही मर जाय परन्तु उस का उत्साह इतना है कि पलने के बच्चों को इस विचार से पालने बैठी है कि वे संसार व्यापी समाजवादी क्रान्ति की लड़ाई लड़ सकेंगे।

× × ×

भिन्न-भिन्न प्रान्तों से आये रोगियों के रक्त के नमूनों को कांच की महीन पट्टियों में रख कर कई दिन तक अणुवीक्षण यंत्र (Microscope) में जांचने के बाद डाक्टर खन्ना को निश्चय हो गया कि उन के कीटाणु एक ही नस्ल के हैं। इन कीटाणुओं की वृद्धि अनेक औषधियों में करने के बाद डाक्टर खन्ना ने इन्हें सुई से खरगोशों के शरीर में प्रविष्ट कर दिया। खरगोशों के भी ज्वर पीड़ित हो जाने पर, इन जीवों के रक्त से कीटाणु लेकर ज्वर-विरोधी क्षार तैयार करने का प्रयोग आरम्भ किया गया। इस कार्य में सफलता देख कर डाक्टर नूरनबर्गर खन्ना की ओर विशेष अनुराग से झुक पड़े। वे प्रायः उनकी प्रयोगशाला में आकर अपनी गंजी चाँद को नाखूनों से सहलाते हुये, उस के प्रयोगों का परिणाम देख कर उस के कार्य की सराहना करते।

डा० नूरनबर्गर ने खन्ना को बहुत जल्दी अपने कार्य की एक रिपोर्ट तैयार करके मास्को भेजने के लिये उत्साहित किया। उन का अभिप्राय था, मास्को से मंजूरी आ जाने पर अगले वर्ष सर्दी की ऋतु से पहले ही वे इस ज्वर के इंजेक्शन तैयार कर सकें। सम्भवतः इस काम के लिये डाक्टर को ही मास्को जाना पड़े।

समरकन्द में एक वर्ष से अधिक समय सुख से बिता लेने पर खन्ना के मन में डाक्टर बना रह कर रोगों का उपचार करते रहने की अपेक्षा क्रान्तिकारी कार्यकर्ता बन कर अपने देश लौट जाने की इच्छा प्रबल होने लगी। नूरनबर्गर को खन्ना की यह प्रवृति बिलकुल नापसन्द थी। उन का कहना था कि वैज्ञानिक का जीवन विज्ञान की उन्नति के लिये होना चाहिये। विज्ञान के बिना मनुष्य-समाज पंगु है इसलिये मनुष्य का सब से पहला कर्तव्य विज्ञान के प्रति है।

डाक्टर नूरनबर्गर से भी अधिक यह बात नापसन्द थी, खातून को। भारत लौट कर समाजवादी क्रांति करने का प्रयत्न उन्हे ट्राटस्की की विश्व-क्रांति की भ्रमपूर्ण नीति जान पडती थी। उन का विचार था कि डाक्टर को अपना समय और शक्ति पहले सोवियत मे समाजवादी व्यवस्था को पूर्णत सफल बनाने की सहायता मे लगानी चाहिये। एक देश मे समाजवाद की पूर्ण सफलता ही दूसरे देशो मे उसकी सफलता का मार्ग सहल बना सकती है। डाक्टर से तर्क करते समय वे खिन्न हो जाती। प्रकट तर्क से अधिक प्रबल थी उन के हृदय की अनुभूति।

खातून के हृदय मे डाक्टर के लिये एक वात्सल्यपूर्ण ममता उमड आई थी। सामाजिक जीवन मे व्यक्तिगत दृष्टिकोण को वे निर्बलता समझती थी इसलिये सोवियत भूमि छोड कर डाक्टर का अपने देश मे क्रातिकारी कार्यक्रम के लिये जाने की बात सोचना उन्हे पार्टी और सोवियत भूमि की ही हानि जान पडती थी।

डाक्टर के विचार को यदि प्रोत्साहन मिला तो पोपोलोफ से। वह विश्व-विद्यालय मे अर्थशास्त्र का अध्यापक था। उस का कहना था कि समाज के लिये विज्ञान की उन्नति आवश्यक है सही परन्तु विज्ञान की उन्नति को मनुष्य समाज के लिये उपयोगी बना सकना तभी सम्भव है जब सर्वसाधारण समाज के हाथ मे साधन और आत्मनिर्णय का अधिकार हो, वर्ना विज्ञान का विकास उसी श्रेणी की सम्पत्ति हो जायगा जो समाज की स्वामी है और उत्पत्ति के साधनो की मालिक है। योरुप मे विज्ञान की इतनी उन्नति के बावजूद सर्व-साधारण का जीवन क्या है ? मेहनत करने वाली जनता के आत्मनिर्णय का अधिकार पाने का आन्दोलन सार्वदेशीय है। मेहनत करने वाली श्रेणी के हितो के प्रश्न को हम देशो की भौगोलिक सीमा मे बाँध कर नही रख सकते। यह समाजवाद के सिद्धात के विरुद्ध होगा। पोपोलोफ के प्रोत्साहन से डाक्टर ने पार्टी के पास अन्तरराष्ट्रीय कार्यकर्ता के तौर पर भारत भेजे जाने का आवे-दन, खातून के अनजाने मे ही भेज दिया। वह मास्को से उत्तर आने की प्रतीक्षा कर रहा था।

एक वर्ष से अधिक समय तक समरकन्द मे रहते समय डाक्टर निरन्तर रूसी भाषा का अभ्यास करता रहा था। वह बहुत कुछ बोल लेता, पढ लेना उस से सहज था परन्तु लिखते समय अडचन अनुभव होती थी। गुलशा और स्लोवा को दाई के काम की परीक्षा विशेष सफलतापूर्वक पास करने के कारण

डाक्टरी पढ़ने के लिये विश्वविद्यालय की ओर से छात्रवृत्ति मिल गई थी। खातून के कहने से गुलशा प्रतिदिन कुछ समय डाक्टर को रूसी भाषा सीखने मे सहायता देती थी।

गुलशा के चेहरे की विचारपूर्ण मुद्रा और उस की मार्मिक दृष्टि डाक्टर को आरम्भ से ही विश्वासोत्पादक जान पड़ी थी। खातून के साथ उस उजबेग लड़की को छीन लाने की घटना ने डाक्टर की दृष्टि मे गुलशा के लिये विशेष आदर पैदा कर दिया था। घटना के अगले सुबह, शिशुशाला का निरीक्षण करके, हाथ मे स्टेथिसकोप थामे डाक्टर प्रयोगशाला की ओर जा रहा था। उस ने गृह के बरामदे से सड़क पर कदम रखा ही था कि सड़क किनारे लगे एल्म वृक्षो की दाहिनी पंक्ति के नीचे, फाटक के समीप, काले नकाब मे लिपटी एक स्त्री पर दृष्टि पड़ी। श्वेत वर्दी पहने एक दाई स्त्री के कंधे पर हाथ रखे खड़ी थी। डाक्टर ने पहचाना काली नकाब पहने स्त्री रात मे लाई गई बच्ची की माँ थी और समीप खड़ी दाई, गुलशा!।

लड़की की माँ अपनी बच्ची लौटा दिये जाने के लिये रो रही थी और गुलशा आंखो मे आंसू भरे उसे सान्त्वना देने का यत्न कर रही थी। गुलशा से नजर मिलने पर डाक्टर के लिये भी उपेक्षा से अपने काम पर चले जाना सम्भव न रहा। कातरभाव से गुलशा ने कहा—"बेचारी अपनी बच्ची के लिये पागल है, पर किया क्या जाय? कामरेड खातून के आने से पहले ही यह किसी तरह चली जाय वर्ना वे नाराज़ हो जायगी। वे किसी कम्पाउण्डर, चौकीदार या दूसरे आदमी को कह कर बेचारी को निकलवा देगी। वह इन के लिये और भी असह्य होगा।"

नकाबपोश स्त्री की सहायता कर पाना असम्भव था। सन्तान के लिये तड़पती माँ का दृश्य डाक्टर के लिये असह्य हो रहा था। वह अपनी राह चल दिया परन्तु मन मे दुविधा लगी रही। फर्लांग भर सीधी राह जाने के बाद, विश्वविद्यालय की सड़क पर कदम रखते समय डाक्टर ने घूमकर देखा, गुलशा नकाबपोश स्त्री को सहारा दिये, स्वास्थ्यगृह के फाटक से बाहर लिये आ रही है। डाक्टर बहुत समय तक गुलशा के हृदय की कोमलता और धैर्य की बाबत सोचता रहा। वह खातून की दृढ निष्ठा और गुलशा के कोमल धैर्य की तुलना करता रहा।

दिन के काम के बाद डाक्टर रात मे मास्को के लिये ज्वरो का विवरण लिखने के लिये बैठता तो गुलशा सहायता के लिये आ जाती। भाषा रचना

और मुहावरे मे गुलशा से सहायता मिलती थी । एक के बजाय दोनो विवरण की दो प्रतियाँ अलग-अलग लिखते जाते । डाक्टर कभी लिखना भूलकर लैम्प के अत्यन्त समीप झुकी हुई गुलशा की लम्बी पलको की ओर देखता रह जाता । अपना वाक्य लिख कर गुलशा दृष्टि उठा कर अगले वाक्य के लिये 'हाँ' सकेत करती, तो डाक्टर उस से वाक्य दोहराने के लिये कह कर आँखे झुका लेता । शीघ्र न लिख पाने का प्रत्यक्ष कारण रूसी भाषा मे उस की गति न होना था परन्तु खन्ना जानता था, इस का कारण विचारो का विशृङ्खल हो जाना भी था ।

सध्या भोजन के बाद गुलशा के साथ रुपहली चाँदनी मे, एल्म के वृक्षो की छाया से चित्रित सडक पर टहलते हुये या हरी घास पर टैनिस खेलते समय भी वह मन ही मन गुलशा के स्वस्थ और छरहरे शरीर की रूप-रेखा की सराहना करने लगता । अपने सुविचार के सम्मुख डाक्टर को यह उचित न जान पडता । विशेष कर, नीद आने से पहले कुछ देर गुलशा की बात मन मे आ ही जाती । यह खन्ना की प्रवृत्ति और सुविचार मे सघर्ष था । गुण-ग्राहकता और जीवन मे पूर्णता की इच्छा उसे गुलशा की ओर खीच रही थी । परिस्थितियाँ इस आकर्षण मे बाधक न थी । स्वास्थ्यगृह की आचार्य-विधायक खातून गुलशा को डाक्टर की ओर ढकेलने का यत्न करती परन्तु डाक्टर का विवेक कह रहा था—नही !

अपने मन मे वह भारत लौट कर जीवन को क्राति के अर्पण कर देने का ध्येय निश्चित कर चुका था । भारत का ध्यान आते ही राज चिरसाथी और सहचर के रूप मे अनिवार्य रूप से उस की बगल मे आ खडी होती । मनुष्यत्व और क्राति के प्रयत्न के बाद यदि उस पर किसी का अधिकार था तो राज का । उस ने स्नेह मे राज को आत्मसमर्पण किया था और राज से परिवर्तन मे सब कुछ पाया था । उस प्रतिज्ञा की रक्षा उसे करनी थी । गुलशा राज से श्रेष्ठ हो सकती है परन्तु व्यक्ति के प्रति व्यक्ति के सौजन्य और कर्तव्य का भी एक आदर्श है, उस मे एक सीमा है । स्व-तृप्ति ही जीवन मे औचित्य की कसौटी न होनी चाहिये । स्वार्थ का यह भाव असामाजिक भावना है ।

विवेक और चिन्ता के इस प्रवाह मे डाक्टर को नर्गिस की बात भी याद आ जाती । उस स्मृति से वह अपने आप को क्रूरता और निर्दयता का अप-राधी पाता । नर्गिस के प्रति अपनी सहानुभूति का विश्लेषण करने पर वह पाता, नर्गिस एक भूल थी । निस्सन्देह वह नर्गिस के रूप पर मोहित हो गया

था परन्तु मनुष्य केवल रूप पर जीवित नहीं रह सकता। नर्गिस मनुष्यत्वहीन नारी थी। वह व्यक्तित्वहीन, भोग का साधनमात्र थी। भोग की कोई भी वस्तु सदा एक सी रुचिकर नहीं रह सकती। नर्गिस के प्रति न्याय करने के लिये उसे स्वयं अन्याय सहना पड़ता। एक की त्रुटि के लिये अन्याय या अत्याचार दूसरा क्यों सहे? उस के स्थान पर यदि कोई दूसरा व्यक्ति होता तो मानसिक चेतनाहीन नर्गिस की ओर आकर्षित हो जाने का दण्ड उस व्यक्ति के लिये क्या जन्म भर की यंत्रणा होना चाहिये था? नर्गिस जिसे तृप्ति नहीं दे सकती, उस से तृप्ति पाने का अधिकार नर्गिस को नहीं परन्तु यह तर्क राज के विषय में लागू नहीं हो सकता था।

डाक्टर स्वयम अपनी प्रतारणा करता, गुलशा यदि मुझे बहुत भली जान पड़ती है तो आवश्यक नहीं कि वह भी मेरे प्रति उतनी ही आकर्षित हो। गुलशा के जीवन में एक से एक अच्छे साथी मिल सकेंगे। विवरण लिखने का काम समाप्त हो चुका था। वह गुलशा से शिष्ट और संयत अन्तर बनाये रखने का ध्यान रखता। वह प्रतीक्षा में था कि किसी भी दिन उसे मास्को से बुलावा आ सकता है। समरकन्द का यह उद्यान, एक दफे छूट जाने पर जीवन में शायद वह कभी गुलशा से न मिल सकेगा।

गुलशा से अन्तर बनाये रखने का विचार खन्ना के लिये अनुविग्न बन गया। गुलशा ने अनुभव किया, डाक्टर किसी कारण से खिन्न है। कई दिन तक सैर या टैनिस के लिये डाक्टर द्वारा न पुकारे जाने पर एक सन्ध्या वह स्वयम उपस्थित हुई। आँखों में आँखें डालकर उस ने पूछा—"मुझ से कुछ भूल हुई है या किसी चिन्ता से खिन्न हो?"

डाक्टर मुस्कराकर बात टाल न सका। ठीक बात कह देना ही उस ने उचित समझा। गुलशा उस के और भी निकट आ गई। डाक्टर के कंधे पर हाथ रख कर उस ने कहा—"परन्तु मैं तुम्हें कहीं अधिक स्नेह करती हूँ!.... यदि स्नेह के माधुर्य को जीवन भर नहीं पाया जा सकता तो जितने क्षण भी पाया जा सके ।"

गुलशा के स्वर का कम्पन और चेहरे पर छा गई गहरी लाली देख कर डाक्टर को जान पड़ा, इस संघर्ष में वह टिक न सकेगा। उसे अनुभव हुआ, गुलशा उस के प्रति अन्याय कर रही है, जीवन के लिये निश्चित उस के ध्येय पर चोट कर रही है। अपनी कुर्सी से सहसा उठ कर खन्ना ने कहा—"एक जरूरी काम से मुझे डाक्टर नूरनबर्गर ने बुलाया है। मैं जा रहा हूँ।" गुलशा

के कुछ कह सकने की प्रतीक्षा किये बिना वह उठ खडा हुआ ।

गुलशा ने हतप्रतिभ हो आँखे झुकाये कहा—"तुम्हारा समय नष्ट करने के लिये मुझे खेद है !" अपना बटुआ ले कुर्सी से उठ कर डाक्टर से पहले ही वह कोठरी से बाहर निकल आई ।

डाक्टर कुछ दूर यूनिवर्सिटी की दिशा की ओर गया और जब गुलशा की दृष्टि के अनुसरण करने का भय न रहा, जाफशा नदी की ओर जाकर वहुत देर तक निर्जन तट पर घूमता रहा । गुलशा के प्रति उसे खिन्नता अनुभव हो रही थी । क्यो वह उस के मार्ग मे बाधा बनना चाहती है ? कल्पना मे दिखाई देने वाली गुलशा की छवि के पीछे-पीछे उसे राज की मूर्ति अनेक रूपो मे दिखाई दे रही थी, अदृष्ट के गर्भ मे खो गये पति के कभी लौट आने की प्रतीक्षा मे उदास, घर की दीवारो से घिरे एकान्त मे अपने पति के लिये तृप्ति का उन्मुक्त स्रोत, प्रणय के प्रथम दिनो मे सकोच मे उस का अवगुण्ठित रह जाना । वह राज से गुलशा की तुलना करने लगा, कहाँ वह शील और सकोच का माधुर्य जिसे शरीर से पाकर भी हृदय से प्राप्त करने मे प्रणय का मैदान जीतना आवश्यक था और कहाँ यह जबरन प्रेम का बोझ लादते फिरना ! उस का मन गुलशा के प्रति वितृष्णा से भर गया ।

× × ×

डाक्टर और पोपोलोफ मे अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति के सम्बन्ध मे बातचीत होती रहती थी । विश्वविद्यालय के क्लब मे भी इस विषय पर अनेक वाद-विवाद होते थे । सन १९३८ के अन्त और १९३९ के आरम्भ मे सोवियत के इगलैंड से मिल कर अन्तरराष्ट्रीय-फैसिस्ट विरोधी मोर्चा बनाने के प्रयत्न मे असफल रह जाने के कारण सोवियत के लिये निकट भविष्य मे भयकर युद्ध मे फँसने के लक्षण दिखाई देने लगे थे । जर्मनी योरुप के पूर्वीय देशो को अपने नाज़ी साम्राज्य मे समेट-समेट कर, विश्वव्यापी युद्ध के कैम्प का विस्तार करता चला जा रहा था । इगलैंड और फ्रास इस विषय मे चुप थे । ससार से समाजवाद को निर्मूल कर, जर्मनी के नेतृत्व मे ससार-व्यापी साम्राज्य स्थापित करने का हिटलर का एलान, जर्मनी की बढती हुई शक्ति, इगलैंड और फ्रास की उदासीनता, यह सब सोवियत को अपने विरुद्ध अन्तरराष्ट्रीय षड्यन्त्र दिखाई पड रहा था ।

समाजवाद के विरुद्ध पूँजीवादी और साम्राज्यवादी षडयन्त्र का सामना

करने की तैयारी के लिये सोवियत प्रजातन्त्र की जनता हुंकार भरने लगी। सोवियत की सैन्य और शस्त्र-शक्ति के अतिरिक्त उन्हे ससार के सभी देशो मे मेहनत करने वाली जागृत श्रेणियो के सगठनो का भी भरोसा था जो अपने-अपने देशो की साम्राज्यवादी शक्तियो की नीव को धक्का पहुचा सकती थी। ऐसे समय उन देशो में सचेत क्रान्तिकारी कार्यकर्त्ताओ के पहुँचने की अत्यन्त आवश्यकता थी। इस परिस्थिति मे उपयोगी होने के लिये खन्ना का मन और भी व्याकुल होने लगा। गुलशा और उसके बीच घटने वाली घटना ने उसकी कार्य-क्षेत्र मे आने की व्याकुलता को और भी उग्र कर दिया। वह नही चाहता था, गुलशा से फिर सामना होने का अवसर आये।

उसी समय सोवियत और जर्मनी मे परस्पर आक्रमण न करने की सधि (Non-Aggression Pact) और उसके बाद तुरत ही जर्मनी के पोलैंड पर आक्रमण करने और इगलैंड, फ्रास और जर्मनी मे युद्ध आरम्भ हो जाने की खबरे आई। डाक्टर ने समझा, सोवियन से बाहर जाकर काम करने का यही समय है। जब साम्राज्यवादी देश परस्पर युद्ध में भिड कर एक दूसरे देश की पूजीपति शासक श्रेणियो की व्यवस्था को निर्बल कर रहे हो, मेहनत करने वाली श्रेणी के लिये अपने देश मे शासन-शक्ति हथियाने का स्वर्ण सयोग है। साम्राज्यवादी युद्ध भिन्न-भिन्न देशो की पूजीपति श्रेणी के परस्पर हितो का सघर्ष है और मेहनत करने वाली श्रेणी के लिये अपनी शक्ति बढाने और अधिकार पाने का अवसर है। ऐसे समय समाजवादी क्राति की तैयारी के लिये जहाँ भी उसे अवसर मिले, वह काम करने के लिये तैयार है। ससार से मनुष्य का शोषण समाप्त हो जाने पर ज्वर के कीटाणुओ की खोज और उपाय करने वाले बीसियो पैदा होते रहेगे।

डाक्टर खन्ना के व्यवहार मे आ जाने वाली गम्भीरता और चिन्ता का भाव खातून की दृष्टि से छिपा नही रहा। उस के चिन्तित दिखाई देने के कारण खातून ने अनेक बार उलाहना दिया। चिन्तित रह कर स्वास्थ्य की उपेक्षा करने के लिये उस की प्रतारणा की। उसने डाक्टर को समझाया, स्वस्थ और प्रसन्न रहना प्रत्येक समाजवादी नागरिक का कर्तव्य है। डाक्टर को गुलशा से खिचा देख कर खातून ने आपत्ति की और उपालम्भ से कहा—"बुद्धिजीवी लोगो मे व्यक्तित्व सिमटते जाने का भाव अनुचित रूप से बढ जाता है। समाजवादी नागरिक को सदगृहस्थ होना चाहिये। आधुनिक युवक और युवतियाँ माता-पिता बनने के उत्तरदायित्व से जाने क्यो डरते है? यह

तो पूजीवादी समाज का रोग है, जहाँ अधिकाश जनता सब प्रकार के साधनो से हीन अवस्था मे पैदा होकर दु ख पाती है। समाजवादी सोवियत मे जन्म लेने वाली सन्तानो के लिये ससार का छटा भाग, यह महान प्रजातन्त्र सब प्रकार की सम्भव सुविधाये देने के लिये तैयार है। इस महान देश के साधनो को उपयोग मे लाने के लिये, ससार भर के शोषितो के हित के सरक्षक इस समाजवादी सोवियत प्रजातन्त्र को सबल बनाने के लिये, हमे स्वस्थ सन्तानो की आवश्यकता है।"

डाक्टर इस सकेत को समझता था परन्तु उत्तर देकर प्रसग की गहराई मे न जाने के लिये वह चुप रह जाता। गुलशा के विषय मे वह सोचना नही चाहता था। न सोचने की चेतना के कारण, गुलशा का ध्यान उस के मन मे बना ही रहता। वह एक प्रकार की विरोध आसक्ति थी। वह समझ बैठा, गुलशा उस पर फदा डालना चाहती थी, वह बच गया। इस धारणा से गुलशा के प्रति उस के मन मे अनादर का भाव जाग उठा। गुलशा का शारीरिक सौन्दर्य, व्यवहार की शालीनता, उसे एक प्रवचना जान पडने लगी। डाक्टर सोचता, गुलशा सहिष्णु और परिश्रमी है परन्तु विश्वास और मित्रता के योग्य नही।

डाक्टर की, समरकन्द छोड कर कार्यक्षेत्र मे कदम रखने की व्यग्रता की आग मे नासिर के पत्र ने तेल डाल दिया। उन दोनो के पत्र-व्यवहार मे कुछ कठिनाई आरम्भ मे हुई थी परन्तु वह क्रम सहज भाव से चलने लगा था। वे परस्पर अपने काम और जीवनचर्या के विषय मे एक-दूसरे को लिखते रहते थे। अपने उस पत्र मे नासिर ने लिखा था, वह एक मास के भीतर ही राज-नैतिक कार्यकर्ता की शिक्षा पाने के लिये मास्को जा रहा है और आशा है कुछ मास बाद अन्तरराष्ट्रीय कम्यूनिस्ट दल की ओर से एशिया के किसी देश मे काम करने चला जायगा।

नासिर का पत्र पाते ही डाक्टर ने एक तार मास्को अपने आवेदन-पत्र पर शीघ्र विचार किये जाने के लिये दे दिया। सप्ताह भर के भीतर उसके मास्को जाने की स्वीकृति आ गयी।

× × ×

पहाडो, उपत्यकाओ और मैदानो को चीरती हुई ट्रेन मास्को की ओर चली जा रही थी। पहाडो के बीच से गुजरते समय खन्ना को अपने देश के शिमला

पहाड और बम्बई के रास्ते मे भूपाल से इटारसी और आगे का मार्ग याद आने लगा। मैदानो मे लहलहाती, सुनहली फसल देखकर पंजाब और गङ्गा-यमुना के मैदानो की याद से उसका मन गुदगुदाने लगा, वह फिर अपने देश की ओर जा रहा है।

रेल-लाइन के किनारे तार के खम्बे, वृक्ष और खेत उसकी निरुद्देश्य दृष्टि के सामने उडते जा रहे थे और वह देख रहा था, गत संध्या पीछे छूट गये समरकंद को। वृद्ध नूरनवर्गर को एक उद्योगी और चतुर सहयोगी के चले जाने का दुख था। खातून उसके अविचार से नाराज हो गई थी। उसे विश्वास था, खन्ना को अन्तर्राष्ट्रीय कार्य के लिये भडकाना पोपोलोफ की गलती है। उनके विचार मे अन्तर्राष्ट्रीय कार्य के लिये पोपोलोफ जैसे प्रचारक व्यक्ति को सोवियत से बाहर भेजा जाने चाहिये था और डाक्टर को रचनात्मक कार्य के लिये समरकन्द या सोवियत के किसी दूसरे प्रान्त मे रहना चाहिये था। खन्ना जानता था, खातून की खिन्नता और उद्वेग का कारण उसका वात्सल्य ही था। खातून की इस नाराजगी के लिये उसे गर्व था। यही बात नूरनवर्गर के दुख के सम्बन्ध मे थी खातून और नूरनवर्गर के स्नेह-वात्सल्य की स्मृति गुलशा की याद के सम्मुख फीकी पड जाती। वह विचित्र लडकी थी। खन्ना से रुखाई का व्यवहार पाकर उसने मिलना या बोलना छोड दिया परन्तु दूसरे व्यक्तियो की उपस्थिति में, वह निसकोच मुस्कराहट से नमस्कार कर देती या नमस्कार के उत्तर में धन्यवाद देती मानो उनके बीच कोई दुराव नहीं था।

पिछले दिन जब डाक्टर मास्को जाने के उत्साह मे सभी परिचितो से विदा लेता फिर रहा था और बार-बार सोच रहा था कि गुलशा से भी वह मिले या नही, तभी वह स्वय आ उपस्थित हुई थी। उसके व्यवहार मे एक प्रकार का सयम था जिसे उदासी समझा जा सकता था।"

"आप मास्को जा रहे है। और शायद फिर लौटकर न आये।" गुलशा के इस वाक्य ने खन्ना के हृदय की रुखाई दूर कर दी।

डाक्टर ने समीप बैठकर उत्तर दिया—"सम्भव तो यही है।"

खन्ना को निस्सकोच देख कर गुलशा ने कहा—"कुछ दिन हम दोनो ने मित्रता के भाव से बिताये है। वे अत्यन्त मधुर थे। हम लोगो के स्वभाव मे समानता न थी इसलिये वह अधिक दिन न रही परन्तु जितने दिन भी वह निभी, उसकी स्मृति मेरे लिये मधुर रहेगी। चाहती हूँ तुम्हारी महत्वाकाक्षा सफल हो।"

डाक्टर का मन गल गया। वह क्या उत्तर देता। हाथ की उँगलियो को तोडता हुआ चुप रह गया। गुलशा ने फिर कहा—"अपने सतोप के लिये मिलने आ गई हूँ। इससे शायद आपको कुछ असुविधा हुई हो तो क्षमा करना।" खन्ना के लिये और कुछ कह सकना कठिन था।

वहुत यत्न कर वह केवल इतना कह पाया—"उस वात के लिये मुझे खेद है। तुम्हारे आने से मै वास्तव मे अनुगृहीत आया हू। भूल हो ही जाती है।"

खन्ना ने गुलशा की ओर देखा। उसकी वडी-वडी आँखे भर-सी आई थी। उन्हे यत्न से सम्भाल कर गुलशाँ ने पूछा—"पत्र लिखोगे ?"

"अवश्य" डाक्टर ने उत्तर दिया। कुछ देर वे दोनो खन्ना के मास्को से भारत चले जाने के विज्य मे वातचीत करते रहे। खन्ना के भारत जाने के उत्साह मे जैसे एक जवरदस्त ठेस लग गई। उसके अन्तरतम मे एक प्रवल इच्छा उठने लगी, यदि किसी प्रकार और कुछ दिन समरकन्द मे ठहरना सम्भव हो सकता ? यदि फिर समरकद लौट आने की सम्भावना हो सकती ?

गाडी की खिडकी मे अपलक और निरुद्देश्य दृष्टि, तेजी से सम्मुख फिसलते जाते दृश्यो की ओर लगाये उसे निरन्तर गुलशा का ही चेहरा दिखाई दे रहा था। उसकी वडी-वडी आँखे !·· और कानो मे, गाडी के पहियो की ताल पर एक ही शव्द भिन्न स्वरो मे गूज रहा था—"शशलिवापुती !"

विश्वविद्यालय से उसे स्टेशन तक छोडने वहुत से लोग आये थे। लातून खिन्नता मे मौन थी। डाक्टर का विस्तर वेच पर लगा कर एक दफे—"प्रोशाइते" कह कर वह चली गई। गुलशाँ भीड मे सवसे पीछे खडी थी, सवसे वाद मे हाथ मिलाने के अभिप्राय से। सव के वाद खन्ना ने उससे हाथ मिलाया। मुस्कराने का यत्न कर गुलशा ने कहा—"शशलिवा पुती !" (यात्रा शुभ हो) वह स्वर कितना मधुर था, कितना गहरा, उस मे कितनी वेवसी और कितन साहस भरा था।

खन्ना की खिडकी से वाहर लगी आँखो के सामने ग्रामो के वाद ग्राम गुजरते चले जा रहे थे। दृश्य वदलते जा रहे थे परन्तु उसे दिखाई पड रही थी गुलशा और सुनाई पड रहा था, शशलिवा पुती। कितने ही स्वरो से यह शव्द उसने सुना था परन्तु उसे सुनाई पड रहा था, अन्त मे सुना गुलशा का स्वर। मन मे विचार उठने लगता, समरकन्द लौट आना सम्भव क्यो नही ? चाहे तो वह सोवियत मे रह सकता है, उसका समरकन्द लौट आना या गुलशा का मास्को आ सकना हो सकता है परन्तु भारत न जाने के विचार को किसी

भी प्रकार प्रश्रय देने के लिए वह तैयार न हो सका।

डाक्टर खन्ना समरकन्द मे की हुई ज्वर सम्बन्धी खोज का कार्य रोग के कीटाणुओ और स्वस्थ जीवो के शरीर मे प्रविष्ट करने के परिणामो के उदाहरण शीशियो और काच की पट्टियो मे रख कर मास्को ले आया था। मास्को के चिकित्सा-खोज-विभाग मे विशेषज्ञो के सम्मुख उस मत्र का व्योरा देने और उसके आधार पर प्रतिरोधक कीटाणु तैयार करने की व्यवस्था के सम्बन्ध में विचार करते उसे सप्ताह से अधिक समय न लगा।

चिकित्सा सम्बन्धी कार्य समाप्त कर देने पर अपनी इच्छानुसार राजनैतिक कार्य की शिक्षा पाने का हो काम उसके लिये शेष था। योरुप मे युद्ध की प्रगति बहुत तेजी से हो रही थी। योरुप में जर्मनी की सफलता से आशकित हो कर अन्तर्राष्टीय कम्युनिस्ट दल फैसिज्म के विरोध के लिये सभी सम्भव प्रयत्न करने मे तनिक भी विलम्ब न करना चाहता था। योरुप में जर्मनी और इटली की साम्राज्यशाही नीति आतक फैला रही थी, एशिया मे जापान यही काम कर रहा था। सोवियत के राजनीतिज्ञो को विश्वास था कि योरुप मे फ्रास और इगलेड के जर्मनी और इटली से उलझे रहने पर जापान न केवल चीन मे बल्कि दक्षिणी एशिया मे भी पैर फैलायेगा। एशिया मे जापान की साम्राज्यवादी फैसिस्ट नीति के सफल होने का अर्थ था, ससार भर मे साम्राज्यवादी गुट्ट का अधिक शक्ति पकड जाना।

योरुप और उसके एशियाई उपनिवेशो मे प्रजातन्त्र का रूप धरे, बोसीदा हो चुकी पूजीवादी शासन व्यवस्थाये, अपने देशो की जनता का सहयोग न पा सकती थी। वे नाजी और फैसिस्ट शक्तियो के युद्ध के लिये सगठित और अपने देशो के सम्पूर्ण साधनो से दूसरे देशो को रौंद देने के लिये जान की बाजी लगा देने वाले सगठन के सामने ठहरने मे असमर्थ थी। फैसिज्म के विरोध को अपने प्राणो और मनुष्यत्व की रक्षा का प्रश्न समझ कर केवल सम्पूर्ण जनता की शक्ति इन शक्तियो का सामना कर सकती थी। जापान प्रशात महासागर और चीन मे बढता जा रहा था। शीघ्र ही उसके हिन्द चीन और बर्मा की भूमि पर आक्रमण करने की आशका थी। डाक्टर खन्ना के लिये केवल तीन मास का समय मास्को मे रहने के लिये निश्चित किया गया।

डाक्टर दिन भर मे तीन-चार जगह व्याख्यान सुनने जाता। पर्याप्त समय उसे आवश्यक पुस्तके, विवरण और कागज देखने मे देना पड़ता। फिर भी मन को अपनी बात सोचने का अवसर मिल ही जाता। अध्ययन और राजनैतिक

चिन्तन से मस्तिष्क थक जाने पर मन कल्पना मे विश्राम और उत्साह पाता था। आँखे मूदे कल्पना मे वह राज की गोद मे सिर रखे विश्राम करना चाहता परन्तु उससे पहले आ जाती, गुलशा। उसका विवेक तर्क करने लगता, क्या गुलशा से उसका अनुराग उचित है ?

डाक्टर तर्क करता, गुलशा मित्र है, उसकी पत्नी राज है। किसी दूसरे व्यक्ति के सम्मुख यह तर्क उपयुक्त हो सकता था परन्तु अपने आपको धोखा देने से क्या लाभ था ? उसे स्वीकार करना पडता, यदि वह समरकन्द मे कुछ मास और रह पाता, निश्चय ही गुलशा के प्रेम और उदारता के सम्मुख उसे आत्म-समर्पण कर देना पडता, इसे वह अपने लिये गौरव की ही बात समझता परन्तु राज के प्रति उसका कर्तव्य ? उससे वह इनकार न कर सकता था। गुलशा ने उस पर जो विजय प्राप्त कर ली थी, उससे इनकार की गुजाइश न थी। गुलशा के सम्मुख अपराध स्वीकार करने का अर्थ था, गुलशा के प्रति कर्तव्य स्वीकार करना।

डाक्टर खन्ना के मन की यह उधेडबुन सहज समाप्त न होती। वह तर्क करता—गुलशा मुझसे चाहती क्या थी, केवल प्रेम। जीवन का समीपतम साथ इसके अतिरिक्त और कुछ नही। वह आत्म-निर्भर व्यक्ति है ? उसे पेट पालने या तन ढाँपने के लिये आश्रय दे सकने वाले प्रेमी की आवश्यकता नही। वह चाहती है, मित्र और साथी। नर-नारीके जीवन मे चरमपूर्णता देने वाला साथी। शायद उसे राज से ईर्षा भी न हो। क्या वह वास्तव मे ही दोनो से प्रेम कर अपना कर्तव्य नही निभा सकता ?

हो सकता है, गुलशा को राज से ईर्षा न हो परन्तु राज गुलशा के अधिकार को कभी स्वीकार न कर सकेगी। वह मुझे (पति को) केवल मित्र या साथी के रूप मे ही नही वल्कि जीवन निर्वाह के साधन के रूप मे भी आवश्यक समझती है। मेरे विना (पति के विना) उसका जीवन कुछ है ही नही। पति पर उसका अधिकार ही उसकी श्रद्धा, भक्ति और सेवा का मूल्य है।

गुलशा केवल उतना चाहती है, जितना वह देने के लिये तैयार है। इसी लिये वह समानता का दावा करती है। जीवन के सहचर को मालिक और स्वामी न समझकर मित्र, साथी कहना चाहती है। वह पुरुष के सम्मुख तृप्ति और उपयोग की वस्तु बन कर पुरुष की इच्छा की प्रतीक्षा के लिये विवश नही। वह स्वय इच्छा कर सकती है। लजा कर सकुचित और भयभीत हो कर पुरुष के पौरुष को स्वीकार करने का, पुरुष को अपना पौरुष दिखाने का अवसर दे

कर सतुष्ट करने की आवश्यकता उसे नही ।

मास्को पहुँचने के बाद एक पत्र में उसने गुलशा से अपनी पहली रुखाई के लिये क्षमा माँगी थी । इतने दिन राज की तुलना मे गुलशा की बात सोचते रहने के बाद उसे समझ आया, गुलशा के जिस व्यवहार को उसने निर्लज्जता और फंदा डालना समझा था, वह वास्तव में उसकी आत्मनिर्भरता और सरलता थी । इस विचार से वह और भी खिन्न और लज्जित हुआ । इच्छा हुई एक विस्तृत पत्र लिख कर गुलशा को समझा दे कि उसकी वह रुखाई उसके सम्पूर्ण गत जीवन मे स्त्री के गुणो के सम्बन्ध मे ऐसी धारणाओ का परिणाम थी, जिसके अनुसार नारी का गुण पुरुष के प्रति आधीनता प्रकट करना है । ''तुम वास्तविक स्वतन्त्र समाज की प्राणी हो, वास्तव मे महान हो । तुच्छ मै स्वयं था । अपनी तुच्छता से नाप कर मैने तुम्हे तुच्छ समझा, यही मेरी भूल थी । नारी के प्रति तुच्छता के संस्कार से मुक्त हो कर आज मै तुम्हारी महानता को समझ सका हूँ और अब वास्तव मे क्षमा का अधिकारी हूँ ।

इच्छा और विचार करने पर भी खन्ना गुलशा को ऐसा पत्र न लिख सका । तर्क ने समझाया, दबी हुई चोट को उभारने से क्या लाभ ? सम्भवत उससे गुलशा को और भी दुख हो । इस प्रसंग को ताजा करने का क्या प्रयोजन ? वह समरकन्द नहीं लौट रहा । वह अपने कार्यक्षेत्र में अपने व्यक्तित्व का बलिदान कर देने के लिये जा रहा है । किसी व्यक्ति के रोष प्रसन्नता, मानापमान से उसे क्या मतलब ? किसी की आँखो मे भले या बुरे जँचने की चिन्ता करने से लाभ क्या ?

गुलशा को उसने पत्र लिखा जरूर परन्तु मास्को से आगे समुद्र की ओर चल देने से केवल एक दिन पूर्व । उसने लिखा—'अपने विचार में जो ठीक समझा, उसके लिये प्रयत्न करने जा रहा हूँ । तुम्हारा समाज अपने प्रयत्न से मनुष्यत्व को प्राप्त कर रहा है । मै चाहता हूँ कि जिस देश मे मैने जन्म लिया है, उस देश के लिये भी मनुष्यत्व का अवसर प्राप्त हो । अदृष्ट की बात कौन कह सकता है, क्या होगा ? परन्तु आशा है, जब तक जीवन रहेगा, तुम्हें मित्र रूप मे स्मरण रखूंगा और तुम्हे एक बार देखने की इच्छा बनी रहेगी ।'

दिसम्बर का अन्त आ रहा था । दिन और रात की रेल-यात्रा मे जहाँ तक दृष्टि जाती सब ओर बरफ ही बरफ थी । उस बरफ की ओर लगी खन्ना की दृष्टि देख रही थी, भारत के हरे-भरे खेतो को ... नग्नप्राय क्षुधित कंकालो को ।

ग्राम की राह

मजदूरो और मिल-मालिक मे हिसा के भाव और वैमनस्य के कारण हो जाने वाली कपडा-मिलो की हड़ताल को बद्री बाबू ने अपने बलिदान से, दोनो दलो के हृदय-परिवर्तन कर समाप्त किया था। तेईस दिन के इस अनशन व्रत और आत्म-शुद्धि से उन्होने अनुभव किया कि भूखे और पराधीन देश का वास्तविक रूप देश की कगाल जनता है। उन्होने इस कगाल जनता, दरिद्र-नारायण की सेवा करना ही जीवन का एक मात्र उद्देश्य अपना लिया। बद्री बाबू ने जनता की सेवा कर सकने के लिये, उन का विश्वास प्राप्त करने के लिये, उन की भाँति रहना और जीवन विताना उचित समझ कर सम्पन्न कुल मे जन्म लेकर भी कष्ट और दरिद्रता को अपना लिया। उन्होने अपने व्यवहार से धनाढ्य व्यक्तियो के सम्मुख त्याग का आदर्श उपस्थित करने का निश्चय किया। एक मजदूर की आमदनी से अधिक खर्च वे अपने लिये न करते।

बद्री बाबू सेवाश्रम मे ही रहते थे। अपनी आवश्यकताओ को उन्होने कम कर दिया था, मोटा खाना, मोटा पहरना और यथासभव पैदल चलना। सेवाश्रम के काम के लिये चाँदनी-चौक जाना होता तो सवारी पर व्यय न कर पैदल ही जाते। यह देख कर उन के समय और सुविधा के विचार से सेठ शाटिया ने एक मोटर उन के व्यवहार के लिये दे दी थी।

मोटर और दूसरे यन्त्रो से बद्री बाबू को घृणा थी। जीवन की सादगी को नष्ट कर, उस मे विषमता लाने वाली मशीनरी को भी वे अच्छा न समझते थे परन्तु उन का समय जनता का समय था। काग्रेस के कार्यकर्ताओ के बहुत कुछ कहने-सुनने, समझाने पर समय की बचत करने के लिये उन्होने मोटर का व्यवहार स्वीकार कर लिया था। अपने आवश्यक काम वे अपने हाथो ही करते थे। उन का विचार था कि साधन होने पर भी गरीबो की भाँति ही रहना चाहिये। अपने आराम और शौक के लिये ऐसी वस्तुये जिन्हे हमारे

गरीब भाई नही पा सकते। उपयोग नही करनी चाहिये।

बद्री बाबू को अपने हाथ से कोठरी मे झाड़ू लगाते या कपड़े धोते देखना राज के लिये सह्य न था। उन के ऐसे सब काम वह अपने हाथो करती थी। पैसा देकर सेवक से यह काम कराने मे बद्री बाबू को आपत्ति थी। राज का ऐसे काम करना, दूसरी बात थी। उस मे दीनता या गरीबी का नही, प्रेम का भाव था। प्रेम के लिये व्यक्ति जो कुछ करता है, उस मे विवशता या मजबूरी नही रहती। उस से उसे स्वय को सतोष होता है। बद्री बाबू के व्यक्तिगत काम करने से राज को संतोष होता। आश्रम मे आ जाने पर कठिन परिश्रम के घरेलू कामो, कपड़े धोने, खाना पकाने या बर्तन मलने मे राज को असुविधा अनुभव होती थी परन्तु बद्री बाबू के लिये यह काम करने मे या इन कामो मे उन की प्रसन्नता देख कर वह बेचारी सब कुछ करती थी।

राज घर भर के सभी काम, बद्री बाबू के और अपने लिये, स्वय ही करती तो अनेक काम हो न पाते। उस का स्वास्थ्य भी इतने कठिन परिश्रम के योग्य न था। वह कुछ समय बचा कर चरखा कातना भी आवश्यक समझती थी। यह सब देखकर बद्री बाबू की अनुमति से घर के ऊपरी काम-काज के लिये एक चमारी 'बहिन' रख ली गई। इस मे अछूतोद्धार की भावना को भी प्रोत्साहन मिला। अपना काम या घर का काम नौकरानी से करा कर भी राज बद्री बाबू का व्यक्तिगत काम, उन के कमरे की सफाई आदि स्वय ही करती थी। सेवाश्रम की फुलवाडी से फूल लेकर वह उन की खिडकी और बैठने के स्थान पर सजा देती। भोजन अपने हाथो तैयार कर के उनके लिये परोसती। कभी उनके दूर शहर जाने के कारण भोजन के लिये समय पर न लौटने से उसे बहुत दुःख होता। वह समझाती, इतना परिश्रम करते हो यदि यह रूखा-सूखा भोजन भी समय पर पेट मे न पहुँचे तो शरीर का क्या होगा? जरा अपने स्वास्थ्य की ओर तो देखो, क्या हो रहा है? यदि बद्री बाबू इस स्नेह उपालम्भ की अवहेलना कर देते तो उसे रोना आ जाता।

जनता की सेवा के बोझ से दबे हुये बद्री बाबू के जीवन मे यदि कुछ अपना था तो राज की भक्ति और सेवा। राज भी ससार मे सब कुछ छोड कर केवल उन के ही सहारे जीवित थी। अनेक सहारे न होने से वह थोडा-थोडा बोझ अनेक जगह न बाँट सकती थी। सहारा एक था, इसलिये बुद्धि और विश्वास से, श्रद्धा और प्रेम से, विनय और अधिकार से वह बद्री बाबू पर ही आश्रित हो गई।

बद्री बाबू सेवा, अहिंसा, प्रेम के उपदेशो और अपने त्याग के उदाहरण से मजदूरो और मालिको मे वैमनस्य को दूर रखने का यत्न कर रहे थे। उन के उपदेशो और दृष्टान्तो से मजदूरो को कुछ समय के लिये आत्मिक शाति प्राप्त होती परन्तु उस से नित्य के जीवन मे अनुभव होने वाले कष्टो का उपाय न होता। कुछ ही महीने मे फिर मजदूर-सभा की पुकार सुनाई देने लगी और मजदूरो मे मजदूरी बढती की माँग उठने लगी। जी० वी० मराठे फिर से बीडी पीता सब्जी मण्डी और बाडा-हिन्दूराव की मजदूर बस्तियो मे चक्कर काटने लगा। शेरखाँ और शिवनाथ के भी व्याख्यान मजदूरो मे होने लगे। इन के अलावा कुरेशी बम्बई से और टण्डन कानपुर से आ पहुचे थे।

बद्री बाबू ने मजदूरो पर दूसरे सगठनो का प्रभाव पडता देख कर पुन उन के सगठन की आवश्यकता अनुभव की। कपडा मिलो मे काम करने वाले मजदूरो को उन्होने उन के काम, धुनाई, कताई, मँडाई, बुनाई आदि के भागो मे सगठित करना उचित समझा। इस के विरुद्ध मजदूर सभा ने मिल के तमाम मजदूरो को एक ही सगठन मे बाँधने पर ज़ोर दिया। सभा ने मज़दूरो को समझाया कि उन्हे पेशेवार बाँटने से टुकडियाँ बँट कर उन की शक्ति कम हो जायगी। मुख्य मतभेद मजदूरो की तनखाह से कटने वाले एक पैसा फी मजदूर, मजदूर-हितकारी फण्ड के विषय मे था। मजदूर-सभा की माँग थी कि फण्ड मजदूरो की स्वय चुनी हुई पचायत 'मजदूर-सभा' के हाथ रहे। बद्री बाबू को इस विषय मे आशका थी। वे समझते थे कि मजदूरो को मालिको के विरुद्ध भडकाने वाले लोगो के हाथ यह रकम चली जाने से उन की शक्ति बढ जायगी। इस का परिणाम शान्ति के लिये घातक होगा।

उन्होने देखा कि उन के निरन्तर मजदूरो मे रहने और मजदूरो की भाँति कष्ट का जीवन व्यतीत कर त्याग और सन्तोष का उदाहरण पेश करने पर भी मजदूरो पर अधिक प्रभाव मालिको के प्रति श्रेणी विरोध का भाव फैलाने वाली मज़दूर सभा का ही हो रहा है। उन के विचारो के अनुसार मिल-मालिक समाज के धन के सरक्षक मात्र थे। मजदूर और मालिक एक ही परिवार के अग थे। इस नाते मालिको से जैसे व्यवहार की आशा की जानी चाहिये थी वैसा वे नही देखते थे। उन्होने इन विषमताओ और झगडो की तह मे जाने पर अनुभव किया कि मिले और मशीनरी ही सब सकट की जड है। मशीनरी से ही धन का बहुत बडा भाग कुछ थोडे से लोगो के हाथ मे इकट्ठा हो जाता है और शेष जनता साधनहीन और निर्धन हो जाती है। समाज मे सुख, शाति

और समानता लाने के लिये फिर से हाथ की दस्तकारी और घरेलू धन्धो का प्रचार करना चाहिये। मशीन विनाश की सभ्यता है। कांग्रेस के कार्यक्रम मे खद्दर से उन्हे पहले भी विशेष प्रेम था और अब वे उसका प्रचार और भी अधिक तन्मयता से करने लगे। रहते वे अब भी सेवाश्रम में ही थे परन्तु समय उन का कांग्रेस के रचनात्मक कार्यक्रम तथा दूसरे सार्वजनिक कार्यों में व्यय होता।

राज के आ जाने के कारण सेवाश्रम बद्री बाबू के लिये शांति और विश्राम का स्थान बन गया था। सेवाश्रम की देख-भाल और बद्री बाबू के निजी कामो की चिन्ता मे राज का इतना अधिक समय लग जाता कि कांग्रेस के सार्वजनिक काम के लिये बाहर जाने का अवकाश ही न रहता। लगभग दो वर्ष तक प्राय सभी समय सार्वजनिक काम मे लगे रहने के कारण वह उससे थक भी गई थी। उस का मन चाहता था कि वह घर के भीतर बैठे और घर को सम्भाले। प्राय एक प्रकार की उदासी और थकावट उसे घेर लेती, मन विश्राम चाहता था। बद्री बाबू दिन भर बाहर न जाते तो उसे सतोष होता, वह उन के समीप ही बनी रहती।

विश्राम और चैन की आवश्यकता बद्री बाबू भी अनुभव कर रहे थे। मन न चाहने या शरीर शिथिल अनुभव होने पर वे अपनी झोपडी मे ही रहते। राज आवश्यक कार्य या सहायता के लिये उन के समीप बनी रहती। बाहर न जाने पर भी बद्री बाबू किसी जरूरी काम का चर्चा और उस की चिन्ता प्रकट करते तो राज खिन्न स्वर मे कहती—"अपना शरीर है तो सब कुछ है। स्वास्थ्य की भी तो कुछ चिन्ता मनुष्य को करनी ही चाहिये।"

कभी बद्री बाबू राज के अस्वस्थ अनुभव करने पर वे सेवाश्रम से बाहर न जा सकते। राज के समीप बैठकर वे शहर के कोलाहल से दूर, ग्रामीण परिस्थितियो मे शान्तिमय जीवन का चर्चा करने लगते, जहाँ आवश्यकतायें कम हो, जिन्हे व्यक्ति या उसके परिवार के लोग दूसरो पर बोझ डाले बिना अपनी मेहनत से पूरा कर सकें।

इस प्रकार का प्रसग चलाने पर बद्री बाबू राज को समझाते कि भारत नगरो का नही, ग्रामो का देश है। देश की हालत ग्रामो की अवस्था सुधारने से ही सुधर सकती है। नगरो के कृत्रिम और विकृत जीवन की अपेक्षा ग्रामीणो का सरल जीवन सरलता से सुधर सकता है। मै इस प्रकार का एक प्रयोग करना चाहता हूँ। यदि भारत के ग्रामीण आत्म-निर्भर और स्वतन्त्र हो जाय

तो देश की सभी समस्याये स्वय हल होकर देश स्वतत्र हो सकता है ।

राज के लिये वद्री वावू के विचार और इच्छा ही सव कुछ थी । उसके जीवन मे कामना और साध थी तो उनकी आज्ञा मानने और सेवा करने की । अनुगत के भाव से वह उत्तर देती—"जैसे भी उचित समझो ! जहाँ कहो, मै चलने के लिये तैयार हूँ ।" राज ने परिजन और परिवार से पृथक होकर समाज को पाया था । समाज से सेवा और सम्मान का सम्बन्ध केवल भावना-मय था । व्यक्तिगत जीवन के लिये अत्यन्त आवश्यक व्यक्तिगत सहारे के रूप मे उसे वद्री वावू ही मिले थे । अव उन्हे पृथक कर अपने जीवन की कल्पना कर सकना राज के लिये सम्भव न रहा । सामीप्य के अधिकार से वद्री वावू के प्रति उसकी श्रद्धा प्रेम मे वदल गई थी । उनके लिये सव कुछ कर सकने की साध ने राज को उन पर भी अधिकार दे दिया था । वद्री वावू राज के लिये केवल पूजा और अर्चना की वस्तु न रह आवश्यक हो गये और 'आप' से 'तुम' वन गये । उसी अनुपात मे राज भी वद्री की सहयोगी मात्र न रही, 'अपनी चीज' हो गई ।

वद्री वावू जिस समय इस मानसिक उथल-पुथल मे व्यस्त थे, मजदूर-सभा कपडा-मिलो मे नये सिरे से हडताल की तैयारी कर रही थी । पिछले वर्ष कुरेशी और टण्डन के आ जाने से मजदूरो का सगठन अधिक गहरे ढग मे चल रहा था । मिलो के प्रत्येक कार्य मे उन्होने अपने कुछ आदमी चुन लिये थे और उनकी कमेटियाँ वना दी थीं । इन सवको मिला कर मिल-कमेटियाँ वनाई गईं । मजदूर बाहर से आये नेताओ की वात मान लेने के स्थान पर प्रत्येक समस्या का चर्चा इन कमेटियो मे करते । वे जो कुछ करते, अपने निर्णय और अपनी जिम्मेवारी से । मजदूरी वढाने, मजदूर-हितकारी फण्ड के खर्च और मालिको द्वारा मनमाने तौर पर वरखास्त न किये जा सकने के प्रश्न पर हडताल की तैयारी भीतर ही भीतर हो रही थी ।

टण्डन, कुरेशी और मराठे का काग्रेस-सम्वधी नीति मे शिवनाथ और शेरखाँ से मतभेद था । शिवनाथ का विचार था, मजदूरी का प्रश्न काग्रेस द्वारा ही लडा जाना चाहिए । किसान, मजदूर के हित के लिये उनका काग्रेस के भीतर सगठित होना ही उचित है । टण्डन, कुरेशी और मराठे किसानो-मजदूरो को, उनकी श्रेणी की ओर उनकी आर्थिक समस्याओ को लेकर स्वतत्र रूप से सगठित कर पृथक परन्तु काग्रेस की सहयोगी शक्ति वनाना चाहते थे । हडताल की सम्भावना निकट भविष्य मे देखकर शिवनाथ ने नीति के प्रश्नो को एक

ओर रखकर कम्युनिस्टो का साथ देना स्वीकार कर लिया लेकिन बद्री बाबू को नेता स्वीकार करने के प्रश्न पर उसका कम्युनिस्टो से समझौता न हो सका।

हडताल की तैयारी की भनक मालिको के कान मे पडी। आने वाले सकट का उपाय करने के लिये मिल-कमेटी ने मजदूरो के सगठन में प्रमुख भाग लेने वाले मजदूरो को चुन-चुन बर्खास्तगी के नोटिस दे दिये। मजदूर-सभा ने भी इस अवसर को उपयुक्त समझा। अधिकारो की माग के लिये हडताल करने की अपेक्षा अपने अधिकारो की रक्षा के प्रश्न पर मजदूरो को अधिक सफलता से ललकारा जा सकता था। मजदूरो की बर्खास्तगी के नोटिस जारी होने के अगले ही दिन मजदूर-सभा ने अनुचित बर्खास्तगी के अन्याय का विरोध करने के लिये हड़ताल का नोटिस दे दिया।

इस अवसर पर हडताल के प्रति कांग्रेस की सहानुभूति बनाये रखने के लिये मजदूर-सभा ने हडताल का नेतृत्व बद्री बाबू के कधो पर लादने का यत्न किया। पिछली हडताल के समय बद्री बाबू ने हडताल मे भाग लेने वाले मजदूरो के बर्खास्त न किये जाने का आश्वासन दिया था। इसके साथ कम्यूनिस्ट मजदूरो की दूसरी मॉगे भी हडताल के एलान मे सम्मिलित कर देना चाहते थे। मजदूरी बढाये जाने के लिये उन की दलील थी, जब मिले अपने पत्तीदारो को तीस और पैंतीस फी सैकडा मुनाफा दे रही है तो मजदूरी मे तीन आना रुपया बढती क्यो नही की जा सकती? यह अवसर मजदूरी-बढती की माग के लिये उन्हे और अधिक उपयोगी जँच रहा था। योरुप मे युद्ध आरभ हो जाने के कारण विदेशी कपडे की आमद में कमी होना आवश्यक थी। भारत सरकार के युद्ध मे सम्मिलित हो जाने से मिलो को सरकारी खरीद से लाभ हो रहा था।

बद्री बाबू मजदूरो के प्रति अपने पुराने आश्वासन और मजदूर सभा द्वारा किये गये प्रचार के कारण कठिन परिस्थिति मे थे। हडताल द्वारा विरोध और हिंसा के भावो का प्रचार करना उन के सिद्धान्तो के विरुद्ध था। मालिको के हृदय परिवर्तन द्वारा ही परिस्थिति सम्भालने मे उन का विश्वास था। वे इस के लिये एक मास का समय चाहते थे। बर्खास्त किये गये मजदूरो को नौकरी देने या उन के निर्वाह का प्रबध करने की जिम्मेवारी लेने के लिये वे तैयार हो गये। मजदूर-सभा को यह बात स्वीकार न थी। उन के लिये प्रश्न दस-बीस मजदूरो के निर्वाह का नही, मजदूर-श्रेणी के अधिकार का था। बद्री बाबू की नीति न मान कर भी वे कौशल से इस हडताल मे उन की

महानुभूति बनाये रखने का यत्न कर रहे थे ।

शिवनाथ के लिये यह परिस्थिति असह्य थी । बद्री बाबू का पिछला व्यवहार उस के सामने था । इस अवसर पर वह काग्रेस मे बद्री बाबू के नेतृत्व को धक्का पहुचाना चाहता था । कम्यूनिस्ट हडताल के समय काग्रेस के नेतृत्व का झगडा न उठा कर उस की शक्ति और प्रतिष्ठा को मजदूरो के उपयोग मे लाना चाहते थे । शिवनाथ बद्री बाबू को अनुचित महत्व देना स्वीकार नही करता था । हडताल के समय देहली मे रहने पर उस मे सहयोग न देना भी उस के लिये सम्भव न था । परेशानी मे वह देहली छोड कर कानपुर चला गया ।

बद्री बाबू बहुत दिनो से अपने नये कार्यक्रम मे भगवान की प्रेरणा अनुभव करने और मनन करने के लिये एकान्तवास की इच्छा कर रहे थे । राज मुख से कुछ न कहती थी परन्तु बद्री बाबू देख रहे थे, उसके निर्बल स्वास्थ्य पर देहली की गरमी और लू का प्रभाव बुरा पड रहा था, वह कुम्हलाती जा रही थी । सिर दर्द प्राय बना रहता है । स्वास्थ्य के विचार से उसे पहाड ले जाना आवश्यक था । बद्री बाबू देहली की राजनैतिक परेशानी के कारण मजबूर थे । कम्यूनिस्टो ने मजदूर सभा से हडताल का नोटिस दिला दिया और पिछली हडताल की समाप्ति के लिये बद्री बाबू द्वारा मजदूरो को दिये गये और मालिको द्वारा पूरे न किये गये आश्वासनो को लेकर प्रचार की आँधी उठा दी । हडताल रुक सकने की सम्भावना न रही ।

हडताल द्वारा बढने वाले हिसा-विरोध का उत्तरदायित्व लेने के लिये बद्री बाबू तैयार न थे । उन्होने समाचार-पत्रो मे स्थिति स्पष्ट कर दी —— 'अन्याय, अत्याचार और असमानता पश्चिम से आने वाली मशीनो की सभ्यता के परिणाम है । इस देश और ससार मे सत्य, अहिसा और प्रेम की स्थापना इस चण्डाल सभ्यता से मुक्ति पाये बिना नही हो सकती । असत्य, हिसा और द्वेष को मिटाने का उपाय हाथ की दस्तकारी और ग्राम्य-जीवन ही है । अपना शेप जीवन वे भारत के लिये इसी आदर्श के अनुसार राजनैतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने मे लगाना चाहते है । अपने पूर्व निश्चय के अनुसार एकान्त-चिन्तन और मनन करने के लिये वे तीन मास के लिये देहली से बाहर जा रहे है इसलिये हडताल के सम्बन्ध मे कोई हस्ताक्षेप करना वे उचित नही समझते । इस परिस्थिति मे उनके नाम से किये जाने वाले प्रचार का उत्तरदायित्व उन पर नही है ।'

युक्त प्रान्त के कॉग्रेसी-मत्री मण्डल ने बद्री बाबू को ग्राम सुधार, खद्दर

और हाथ की दस्तकारी की उन्नति का प्रयत्न करने के लिये रानीखेत से दस मील के अन्तर पर भूमि, दूसरी सुविधाये दे दी थी। ठण्डी, स्वस्थ पहाडो हवा, विश्राम और बद्री बाबू की निरन्तर देख-रेख पा कर राज का स्वास्थ्य सुधरने लगा। बद्री बाबू पूर्ण निष्ठा और परिश्रम से ग्रामोद्योग-आश्रम की स्थापना मे लगे हुए थे।

देहली मे कपडा मिलो की हड़ताल ने विकराल रूप धारण किया। मजदूर-सभा मे नेतृत्व की प्रतिद्वन्दिता न रहने के कारण फूट की सम्भावना न रही। हजारो मजदूर बेरोजगार हो कर भूखे मर रहे थे, सैकडों जेल गये परन्तु हडतालियो के दृढ सगठन के विरुद्ध मिलो मे काम करने जाने का साहस हडताल से घबरा जाने वाले मजदूरो को भी न हुआ।

मिले बन्द रहने के कारण मालिको को यों भी नुकसान हो रहा था। युद्ध की अवस्था और सरकारी खरीद के सौदे पूरे न कर सकने से वह हानि और भी अधिक बढ जाती। उससे अधिक भय था कि युद्ध के काम में पडती अडचन से मजबूर हो कर सरकार कही मिलो का प्रबन्ध अपने हाथ मे न ले ले। मिल मालिको ने मजदूर-सभा से हड़ताल खोलने के सम्बन्ध मे बात-चीत आरम्भ की।

मजदूरो के कम्युनिस्ट नेता हडताल को चलाये जा रहे थे परन्तु भीतरी अवस्था उनसे छिपी न थी। सबसे बडी आशका थी, स्वय उन लोगो के कार्य-क्षेत्र में न रहने पर हडताल के सहसा बिखर जाने की। युद्ध आरम्भ हो गया था। रूस की जर्मनी से अनाक्रमण सधि के कारण कम्युनिस्टो की सहानुभूति जर्मनी के प्रति होने का सन्देह था। फैसिस्ट विरोधी होने पर भी युद्ध के प्रति कम्युनिस्टो की असहयोग-नीति होने से चुन-चुन कर गिरफ्तार किया जा रहा था। कम्युनिस्ट प्रकट सामाजिक और राजनैतिक जीवन से ओझल हो कर अपना काम जारी रखने के लिये फरार हो गये।

काग्रेस द्वारा व्यक्तिगत सत्याग्रह का एलान कर दिया जाने के कारण देहली के काग्रेसी क्षेत्रो मे, जेल जाने की तैयारियाँ आरम्भ हो गई थी। मजदूर हडताल की चिन्ता कौन करता। ऐसी परिस्थिति मे बद्री बाबू देहली आये। राजनैतिक नेताओ के अभाव मे मजदूरो का असतोष व्यक्तिगत सत्याग्रह को सार्वजनिक आन्दोलन का रूप न दे दे, इस आशका से उन्होने मालिको और मजदूरो को समझा कर हडताल को जैसे-तैसे मजदूरो की आधी माँगो पर समाप्त करा दिया।

फरार कम्युनिस्ट नेताओं ने बद्री बाबू और कांग्रेस के उस कार्य को मजदूरों के प्रति विश्वासघात बताया। जनता ने उन बातों की घृणा से उपेक्षा कर दी। जनता फरार हो कर राजनैतिक कार्य करने का यत्न करने वाले कायरों का सम्मान करती या व्यक्तिगत सत्याग्रह में वीरता से जेल जा कर बलिदान करने वालों का ? देहली की जनता के लिये वे दिन अत्यन्त सनसनीपूर्ण थे। देश के बड़े-बड़े नेताओं के युद्ध-विरोधी पत्र लिख कर या नारे लगा कर जेल जाने के समाचार अखबारों में छप रहे थे और सर्वसाधारण लोग मुंह बाये, आश्चर्य से देख रहे थे। कांग्रेस की स्वीकृति बिना उन्हें आन्दोलन करने की आज्ञा न थी। केवल नेता बलिदान की रीति पूरी कर रहे थे।

इस सब सनसनी के बीच एक दिन समाचार छपा—"राजनैतिक विवाह—देहली के प्रसिद्ध नेता बद्री बाबू का श्रीमती राजदुलारी से सिविल विवाह!" विवाह बिना धूमधाम के सादगी से हुआ था। समाचार भी पत्रों में नितान्त सादगी से प्रकाशित हुआ। समारोह केवल शुभ-कामनाओं और संदेशों का था परन्तु जनता को इस समाचार से विस्मय हुआ। लोगों ने मुंह पर हाथ रख कर अनेक बातें कहीं। तीसरे ही दिन वह सब चर्चा अखबारों में मोटे अक्षरों में छपे दूसरे समाचार से समाप्त हो गयी। समाचार था—त्याग-मूर्ति, बद्री बाबू, चाँदनी-चौक देहली में युद्ध-विरोधी व्याख्यान देने के कारण गिरफ्तार हो गये!



घर की राह

जहाज के डेक पर यात्रा विचित्र अनुभव है। किसी बडे रेलवे स्टेशन पर तीसरे दर्जे के मुसाफिरखाने मे बीती रात जैसा जीवन कई दिन तक चलता है। यात्रियो के बिस्तर आस-पास लगे रहते है। बिस्तर के सिरहाने-पैताने या चारो ओर असबाब रखा रहता है। बिस्तर भर जगह के लिये प्रत्येक यात्री साथी यात्रियो को अपना प्रतिद्वन्दी समझता है। अपने लिये स्थान पर अधिकार जमा लेने के बाद, कलह समाप्त हो कर सब एक दूसरे के मित्र बन जाते है। तुरन्त ही वह मित्रता गूढता भी ग्रहण कर लेती है। यात्री भूलता नही कि साथ केवल चार-छ या दस-बारह दिन का है। फिर भी सौहार्द्र या मित्रता स्थापित होने लगती है।

बसरे के बन्दर से छूटने वाले जहाज पर डाक्टर खन्ना और नासिर भारत के लिये यात्रा कर रहे थे। अधिकाश यात्री भारतीय थे। पाँच वर्ष बाद अपने देश के लोगो को देख कर डाक्टर के मन में आत्मीयता का ज्वार सा उठने लगता। मन चाहता था कि अपने घर-बार का पता देकर अतरग और आत्मीय भाव से बातचीत करे, पर कर न सकता था। डेक पर साथी यात्रियो से बात न करना भी सम्भव नही। बात करने, ताश खेलने, सोने और कुछ न कर सकने पर चित्त लेटे गुनगुनाते रहने के सिवा चारा न था। आस-पास बिस्तर जमाये यात्रियो ने अपनी बातें बता कर इन लोगो की पूछनी शुरू की। डाक्टर खन्ना और नासिर बसरा की एक हिन्दुस्तानी मोटर कम्पनी के कारीगरो के पासपोर्ट पर सफर कर रहे थे। खन्ना के पासपोर्ट पर जमालदीन नाम था और ठिकाना, जिला रोहतक का बिरमा गाँव। नासिर के पासपोर्ट पर नाम रहमतखाँ और ठिकाना कोहाट शहर था। यात्रियो को अपना नाम और ठिकाना उन लोगो ने पासपोर्ट के अनुसार ही बताया।

डाक्टर और नासिर प्राय आपस मे बातचीत करते रहते। नासिर हिन्दुस्तानी बोलने का अभ्यास कर रहा था। साथी यात्रियो के आपस में ऊँचे स्वर

से बातचीत करने पर वह समझने का यत्न करता और जो शब्द समझ न आते, उन का अर्थ डाक्टर से पूछ लेता। यात्रा के दूसरे दिन से ही भिन्न-भिन्न प्रान्तो के यात्री अपनी-अपनी भाषा के आकर्षण से अपने प्रान्तो के लोगो की ओर खिंच गये। पठान एक कोने मे बैठ कर मिट्टी की गुडगुडी से दम लगाते हुये आपस मे बाते करते रहते। पजाबी दूसरी ओर बैठ कानो मे उँगलियाँ डाल कर लम्बी-लम्बी तानो मे पजाबी गीत गाते। दूसरे कोने मे बम्बई प्रान्त के मुसलमान अपनी भाषा मे अपना गाना गाने लगते।

दृष्टि की पहुँच तक चारो ओर जल ही जल। कही कोई सीमा या ओट न होने पर भी दृष्टि बहुत दूर न जा पाती। जहाज नीले जल को प्रबल शक्ति से काट कर रूपहली लहरें और झाग उत्पन्न करता आगे बढ रहा था। जहाज के आगे बढ जाने पर यह सब निस्सीम नीलिमा मे समा जाता। उस नीलिमा मे खलबली पैदा करने का जहाज का सब प्रयत्न निष्फल रह जाता। चारो ओर गहरा नीला जल गोलाई से सब दिशाओ मे, समान दूरी पर जाकर सहसा गहराई मे उतर जाता। जहाज गति करता जान पडता था। वह हिलता भी था परन्तु उस की गति का अनुमान करने के लिये कही कोई चिन्ह न था। जान पडता था कि समुद्र की नीली थाली जहाज़ को लिये सरकती जा रही हो।

जहाज़ मे बम्बई के लिये माल भरा गया था। मार्ग के बन्दरगाहो की परवाह न कर वह सीधा पूर्व-दक्षिण की ओर, बम्बई की सीध मे चला जा रहा था। बिस्तर पर लेटा डाक्टर नये आरम्भ होने वाले जीवन की बाबत सोचने लगता। जीवन के गत पॉच वर्ष मे उस ने बहुत कुछ देखा था। अज्ञात विदेश मे निस्सहाय होकर उस ने साहस से कदम आगे बढाने का दुस्साहस किया परन्तु अपने देश लौटते समय उसे भय सा अनुभव हो रहा था। अपने देश मे चोरी से, जाली नाम-धाम से आना पडे, यह बात विचित्र थी। वह अपने देश से चोरी या कोई अपराध कर के नही भागा था। विदेश मे भी उस ने ऐसा कोई काम नही किया। अपने विचार मे जिस काम को उचित समझा, निजी सुख-दुख और स्वार्थ की चिन्ता न कर, उस के लिये भय और खतरे की भी परवाह न कर वह उसे करने जा रहा है, ठीक वैसे ही, जैसे ब्रिटिश सेना मे नौकरी करते समय, वह अपना काम करने के लिये तैयार था। उस समय वह सरकार का काम करता था। उस काम का मूल्य सरकार उसे देती थी। आज वह जिन लोगो का काम कर रहा है, वे मूल्य नही दे सकते। यह उस का

अपना ही काम है। उस का यह काम भारत मे सरकारी कानून की दृष्टि से अपराध हे। पकडे जाने पर उसे सजा मिलेगी परन्तु वह अपराध क्या कर रहा है ? विश्वास और विचार के कारण मनुष्य का दृष्टिकोण कितना भिन्न हो जाता है।

वह सोचने लगता, एक वे लोग थे कि जिन्होने मास्को मे उस के लिये जो कुछ वह जानना चाहता था, जानने का ओर उस के देश लौटने का प्रवध कर दिया। तुर्किस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी ने उसे काले समुद्र के किनारे से ले वसरा तक पहुँचा दिया। वसरा मे ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी ने उस के वम्वई तक पहुंचने का प्रवन्ध किया। इन सव लोगो को इस से क्या मिला ? उन्हे किस लाभ की आशा है ? वस एक विश्वास कि वे अपने उन मज़दूर भाईयो की सहायता कर रहे है, जिन्हे जीवन मे कभी देखा नही, न कभी देखने की आशा है। दूसरी ओर जर्मनी के सिपाही है जो अपनी जान जोखिम मे डाल कर दूसरे देशो की जनता पर आक्रमण करते है। उन देशो की जनता से उन्हे क्या शत्रुता है ? उन्होने कभा एक दूसरे को देखा नही। मनुष्य का विचार और विश्वास उस से क्या कुछ नही करा सकता ?

ज्यो-ज्यो वम्वई समीप आता जाता, मन में आशका वढती जाती कि यदि पासपोर्ट पर सन्देह होने से उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया ?...... रूस से इतनी दूर आने का सव प्रयत्न निष्फल हो जायगा और फिर भारत के जेल-खानो मे वीतने वाले जीवन से क्या लाभ होगा ? नासिर को कोई भय या इस प्रकार की आशका न थी। खन्ना मन में सोचता, नासिर क्या मेरी अपेक्षा अधिक साहसी है या उस के निर्भय का कारण भय को न जानना ही है ?

जहाज पर सूचना दे दी गई कि तीन घण्टे मे वम्वई के वन्दर में लगर पड जायगा। पश्चिम क्षितिज पर वम्वई के आकाश मे उठते धुयें को देख कर मुसाफिरो ने अपना वोरिया-विस्तर सम्भालना आरम्भ कर दिया। जहाज के घाट पर लगते ही सभी सव मे पहले उतर जाने के लिये व्याकुल थे। जहाज की सीढी गिराई गई। पासपोर्ट की जॉच करने वाले अफसर जहाज पर चढे। किसी प्रकार की व्यग्रता या भय प्रकट किये विना जमालदीन और रहमतखॉ ने अपने पासपोर्ट दिखाये। अफसर ने पासपोर्ट पर दस्तखत किये ओर वे लोग जहाज से उतर कर चुगी पर अपना असवाव दिखाकर एक घोडागाडी ले मदनपुरा की ओर चल दिये।

× × ×

बम्बई की राह से भारत का वैभव विदेशो की ओर बहता है। विदेश के व्यापारियो और कारखानादारो की इस सेवा के फलस्वरूप बम्बई भारत का सब से सम्पन्न और शानदार नगर है। कही तग और चौडे बाजारो के दोनो ओर ऊँचे प्रसादो की पक्तियाँ, कही सडको पर मोटरो का अटूट ताँता, सभ्य ससार का कोई विलारा वहाँ अप्राप्य नही। वह पैसा जिस के लिये भारत के ककाल किसान-मजदूर दिनो, महीनो परिश्रम कर उस का दर्शन केवल ताँबे और निकिल के रूप मे कर पाते है, जो उन के हाथ मे उन की आवश्यकता को पूरा करने योग्य मात्रा मे कभी नही आ पाता, इस से पहले कि वे उस पैसे को आँख भर देख पाये, उन के हाथो से फिसल कर मण्डियो और बाजारो की राह बम्बई पहुँच जाता है।

भारत का पैसा इस देश के नग्न, ग्रामीण परिवारो और क्षुधा पीडित नागरिको के हाथ से बूद-बूद सचित होकर बम्बई मे पहाडी झरनो के वेग से बहता है। उस के लिये राह और जगह बनाना एक समस्या हो जाती है। बम्बई पहुँच कर इस पैसे मे वह बल पैदा हो जाता है कि यह देश भर के पैसे को अपनी ओर खीचने लगता है। बम्बई को पालने वाले भारत के एक-एक पूरे गाँव से अधिक मूल्य बम्बई के एक-एक मकान का है। देश के किसान परिवारो के वर्ष भर के निर्वाह के योग्य पैसा, अपने व्यापार द्वारा देश की सेवा करने वाले बम्बई के किसी एक सम्पन्न व्यापारी के एक सध्या के मनो-विनोद के लिये भी पर्याप्त न होगा।

बम्बई को यह धन देश की सेवा के मूल्य मे मिलता है। बम्बई निश्चय करता है कि देश के किस भाग को किस पदार्थ की आवश्यकता है। देश का कौन प्रान्त क्या कुछ विदेश भेज सकता है। इस सेवा का मूल्य बम्बई लेगा ही। यह क्रम भारत की पद्धति के अनुकूल है। यहाँ के प्रजा-सेवक (सिविल-सर्वेंट) सम्पन्न राजा है और सेवको को नौकर रखने वाली मालिक प्रजा भूखी मरती है। जिस पैसे के लिये देश के ककाल, किसान-मजदूर हल फावडा और हथौडा चलाते हैं, वह पैसा बम्बई मे बात करने पर, अनुमान (सट्टा) लगाने पर बहने लगता है, क्यो कि इस व्यवस्था मे बम्बई को यह निश्चय करने का अधिकार है कि हल और हथौडा चलाने का मूल्य क्या दिया जायगा ?

पूँजीवादी पद्धति मे नगरो की व्यवस्था ऊँचे फलदार वृक्षो की भाँति होती है। चोटी पर सुशोभित होने वाले फल-फूल और मनोरम पल्लवो के नीचे शाखाएं और तने और नीचे जडे रहती है। फल-फूल और पत्ते धन को बैंको मे

सचित रखने वाले साहूकार हैं, जो किसी भी उद्योग-धन्दे को सफल या असफल कर देने की सामर्थ्य रखते हैं। वे किसी उपयोगी पदार्थ को पैदा करने के लिये हाथ नहीं हिलाते। वे केवल अंकों द्वारा समाज के धन का नियन्त्रण करते हैं। उस के नीचे पदार्थों को खरीद कर बेचने वाले आते हैं यह वृक्ष की शाखायें हैं। इनका काम पदार्थों और धन द्रव्य को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना है। शाखाओं के नीचे तना है। पृथ्वी के भीतर अंधकार में दबी हैं जड़ें हैं जो मिट्टी और गिलाजत में दबी रहकर रस तैयार करतीं। स्वयम् जड़ों के पास कुछ नहीं रह पाता

बम्बई के गगनचुम्बी गर्वित वृक्ष के फल-फूल मालाबारहिल, मैरीनड्राइव और फोर्ट के मुहल्ले हैं। कालबादेवी, गिरगाँव उसकी शाखा और तने हैं, मदनपुरा, परेल, लालबाग और स्यूरी जड़ें हैं। जहां अपनी मेहनत से शोभा और सम्पदा पैदा करने वाले अधपेटे, अधनंगे मजदूर पशुओं की भाँति गंदी कोठरियों में जाते हैं, जहाँ प्रकृति के बिना मोल मिलने वाले पदार्थ-वायु और प्रकाश भी नहीं मिल जाते। पूँजीवादी प्रणाली के अखाड़े बड़े-बड़े नगरों में वायु और प्रकाश का मूल्य कई सौ रुपया माहवार होता है। दिन भर शरीर तोड़ कर मेहनत से दस-बीस आने कमा सकने वाला निर्बल मनुष्य इन्हें नहीं पा सकता*। इन्हें वही सामर्थ्यवान पा सकते हैं जो चार—छः और दस-बीस आने कमा सकने वाले लाखों लोगों के परिश्रम का मूल्य निश्चित कर, उनके परिश्रम से अपने लिये मनमाना हिस्सा काट कर लखपति बन सकते हैं।

बम्बई के सुन्दर वृक्ष का पोषण करने वाली इन अशोभनीय जड़ों के जाल में, मदनपुरा की एक गली में जमालदीन और रहमतखां एक कोठरी में रहने लगे थे। तुर्किस्तान और सीरिया में सफर करते समय उन के नाम खलीकबेग रहमतबेग थे। बसरा में पासपोर्ट की तैयारी के लिये प्रतीक्षा करते समय उन के नाम जमालदीन और रहमतखां हो गये। मदनपुरा में उन्होंने अपनी कोठरी पर साइन-बोर्ड लगा लिया—'हकीम जमालदीन देहली वाले।' रहमत जमाल का शागिर्द बन गया। जमाल और रहमत ने प्रतिष्ठा और सम्मान का दावा नहीं किया। किसी को उनकी वंश की परम्परा की खोज और सम्मान की जाँच करने की जरूरत न थी। जमालदीन को अपने सहयोगियों का विश्वास प्राप्त करने में अड़चन न हुई। उस के बम्बई पहुचने से पहले ही डाक्टर खन्ना

---

* १९४० में मजदूरी के दर लगभग इतने ही थे।

के आने का समाचार पहुच चुका था। उसकी प्रतीक्षा की जा रही थी। उसे भिन्न-भिन्न पेशे के मजदूरो को सगठित कर राजनैतिक सघर्ष मे लाने का काम सौंपा गया।

युद्ध से बाजार मे भाव बढ रहे थे। भाव बढ जाने से मजदूरो को मिलने वाली मज़दूरी के आने-पैसो का मूल्य, उससे मिलने वाले सौदे के रूप मे घटता जा रहा था। उस समय मजदूरो को उनकी कठिनाई दूर करने के लिये सगठित कर उनकी मज़दूरी बढवाना आवश्यक था। अधिक पैदावार की आवश्यकता होने पर जब मजदूरो की मेहनत करने की शक्ति का मूल्य और कद्र बढ रही हो, मजदूर लोग अपनी शक्ति को पहचान कर अपने सामूहिक प्रयत्न से समाज के जीवन की व्यवस्था मे ऐसा परिवर्तन कर सके कि उन्हे उनकी मेहनत के अनुपात मे पैदावार का भाग मिल पाये और राजनैतिक शक्ति उन के हाथ मे आ सके। मजदूर अपनी शक्ति से जिस समाज को पालते है, उसकी व्यवस्था निश्चित करने का अधिकार भी उन्हे हो। पैदावार और व्यापार का नियत्रण करने वाले उन्हे पशुओ की भाँति न हाँकते रहे,। वे स्वयम अपने मालिक बन सके।

इस कार्यक्रम के साथ कम्युनिस्ट-पार्टी का और कम्युनिस्ट पार्टी के साथ अन्तरराष्ट्रीय-कम्युनिस्ट-दल का नाम जुडा हुआ था, जिसका सम्बन्ध रूस से भी था। अन्तरराष्ट्रीय-कम्युनिस्ट-दल और रूस ससार से पूजीवादी और साम्राज्यवादी व्यवस्था को उखाड कर समाजवादी व्यवस्था कायम करने के प्रयत्न मे लगे हुय थे। पूजीवादी व्यवस्था की दृष्टि मे यह आन्दोलन कानून विरोधी अराजकता थी। जर्मनी के पूजीपतियो की साम्राज्य-लिप्सा के सम्मुख उन के साम्राज्यवाद का विरोध सब स भयकर अपराध था। उन्होने पहले अपने देश मे कम्युनिस्टो को चुन-चुन कर समाप्त किया। इस के बाद वे संसार की एकमात्र साम्राज्य-विरोधी शक्ति, सोवियत से लोहा लेना चाहते थे। शोषित जनता और जनता का शोषण करने वाले पूजीवाद और साम्राज्यवाद की शक्तियो मे यह युद्ध ससार के सभी देशो मे चल रहा था।

भारतीय सरकार सिद्धात रूप से विचारो की स्वतत्रता का अधिकार स्वीकार कर के भी साम्राज्यवादी व्यवस्था के विरोध को स्वीकार नही कर सकती थी इसलिये कानून की नजर मे कम्युनिज़्म मे विश्वास अपराध न होने पर भी कम्युनिस्ट सगठन का सदस्य होना अपराध था और कम्युनिस्ट पार्टी गैरकानूनी थी। पुलिस विशेष प्रयत्न से कम्युनिस्ट सगठन की खोज

कर रही थी। गुप्त संगठन का पता ढूंढ निकालने के लिये कम्युनिस्ट विचार के लोगो पर भी दृष्टि रखी जाती थी।

ऽकट मे हकीम जमालदीन का मामूली सा मतब (दवाखाना) चलता था। मरीज आते तो दवाई अक्सर अंग्रेजी (एलोपैथिक) दी जाती। मरीजो की संख्या अधिक न होने पर भी दुकान पर आने-जाने वाले काफी हो जाते। इन मे से अधिकांश का सम्बन्ध मजदूरो के आन्दोलन से या किसी न किसी रूप मे राजनैतिक कार्य से रहता। हकीम साहब यो भी मजदूर सभा और कांग्रेस के लोगो से मिलते-जुलते रहते थे। कुछ ही दिनो मे, हकीमी के कारण न सही, सार्वजनिक कार्यो मे भाग लेने के कारण वे काफी लोगो से परिचित हो गये। यह जान कर भी कि राजनैतिक कार्य से सम्बन्ध रखने वाले लोगो के सम्पर्क मे आने से वह पुलिस की दृष्टि मे संदिग्ध हो जायगा, जमालदीन का कांग्रेस कार्यकर्ताओ और कांग्रेस से सम्बन्ध रखने वाले लोगो से मिलना आवश्यक ही था।

मजदूर-आंदोलन मे काम करने वाले अनेक कार्यकर्ता मजदूरो की कठिनाइयाँ दूर करने के विचार से केवल आर्थिक कार्यक्रम में विश्वास करते थे। उन का कहना था—कांग्रेस के राजनैतिक कार्यक्रम मे पड कर मजदूर संगठनो को अपनी शक्ति नष्ट नही करनी चाहिये। समाजवादी उद्देश्य मे राजनैतिक व्यवस्था कायम करने के लक्ष्य को मान कर भी कांग्रेस के झमेले मे पडना उचित नही। कांग्रेस मध्यवर्ग के लोगो और पूंजीपतियो की संस्था है। जिस स्वराज्य को कांग्रेस अपना लक्ष्य मानती है, उस मे राजनैतिक सत्ता मजदूर श्रेणी के हाथ मे नही बल्कि धनिक लोगो द्वारा नियन्त्रित प्रजातन्त्र के हाथ मे रहेगी। अंग्रेज हाकिम की जगह हिन्दुस्तानी हाकिम हो गया तो क्या? व्यवस्था तो मेहनत करने वालो के शोषण की ही रहेगी।

जमालदीन और कम्युनिस्ट दल के कार्यकर्ता राजनीति से सम्बन्ध न रखने की नीति मे विश्वास नही करते थे। उन्हे राजनैतिक शक्ति के बिना मेहनत करने वाली श्रेणी की आर्थिक स्वतन्त्रता असम्भव जान पडती थी इसलिये वे राजनैतिक संघर्ष से पृथक नही रह सकते थे। उन का कहना था कि देश की स्वतन्त्रता की राजनैतिक लड़ाई मे सभी लोगो का भाग लेना आवश्यक है। कांग्रेस द्वारा चलाई राजनैतिक सुधारो की लड़ाई को, किसान-मजदूर ही सुधारो की मांग से आगे बढा कर, व्यवस्था के परिवर्तन की ओर ले जा सकते है। देश की राजनैतिक स्वतन्त्रता की लडाई मे जहाँ तक कांग्रेस और हमारी

राह एक हो सकती है, हम उस से प्रतिद्वन्द्विता क्यो करे ? काग्रेस द्वारा राजनैतिक सुधारो के लिये प्रयत्न हमारे उद्देश्य की प्राप्ति मे सहायक है। वह हमारे कार्य के लिये सुविधा और अवसर पैदा करता है। यह हमारा काम है कि हम काग्रेस के कार्यक्रम मे सर्वसाधारण जनता के रोजमर्रा जीवन की भी समस्याओ को सम्मिलित करने का यत्न करे।

समरकन्द ओर मास्को मे विताये दिनो के मुकाविले मे जमालदीन के दिन मदनपुरा की उस गली मे अत्यन्त असुविधा से वीत रहे थे। दिन उस का प्राय अच्छी स्थिति के राजनैतिक कार्यकर्ताओ की सगति मे वीत जाता। उन लोगो से जुदा होकर अपने व्यक्तिगत जीवन की सीमा मे आ जाने पर पेट की ज्वाला शात करने के लिये उसे किसी नानवाई की दूकान पर जा कर दो रोटी और एक रकेवी दाल कच्चे प्याज के लच्छे के साथ निगलनी पडती। यह भोजन उसे स्पिन्दा की याद दिला देता और कभी रूस के मजदूरो के भोजनालयो का खयाल आ जाता जहाँ गोभी के दूध मिले शोरवे, मास और दही की तश्तरियाँ खाने को मिलती थी।

सवसे कठिन समस्या गर्मी के मौसम मे रात विताने की थी। पडोस मे रहने वाले मज़दूर गली मे खटिया डाल कर सो जाते। विना रोशनदान की कोठरी की अपेक्षा गली मे गरमी की उमस कम अनुभव होती थी परन्तु मच्छर अधिक हो जाते और दुर्गंध भी आती। रात ड्यूटी के मजदूरो के आने-जाने से नीद टूट जाने पर फिर सो जाना कठिन हो जाता। कोठरी के भीतर लेटने से शरीर पसीने से भीग जाता। छ रुपया माहवार किराये की कोठरी, तीस चालीस रुपया माहवार कमाने वाले मजदूर के लिये अकेले किराये पर लेना कठिन था। पाँच-छ. मजदूर मिलकर कोठरी लेते थे। कोठरी मे उतनी खाटे विछा सकना भी सम्भव न था। पचास-साठ रुपया पगार पाने वाले कुछ मजदूर देश से अपने वाल वच्चे और स्त्री को भी साथ ले आये थे। स्त्री के विना रहने वाले उजड्ड मजदूरो की इस वस्ती मे स्त्रियाँ भयभीत रहती थी। उनके लिये कोठरी के भीतर पसीजते रहने के सिवा उपाय न था।

जमालदीन यह सव सहे जा रहा था। कभी यह सव उस के शरीर की शक्ति के लिये असह्य हो जाता। वह अपने चारो ओर रहने वालो की ओर देखता, जो जन्म से यह सब कुछ सहते आये थे और आयु भर यही सहना था। अपने मन मे वह तर्क करने लगता कि अपने प्राणो की रक्षा के लिये यह लोग इस हालत मे रह कर भी शक्ति भर परिश्रम करते है। यदि जीवन ऐसी ही

अवस्था में बीतना है तो प्राणों की रक्षा के लिये परेशान होने की आवश्यकता क्या ? यह जीवन नहीं, दण्ड है ।

गली में खटिया बिछाकर सोते समय वर्षात का छींटा आ जाने से भीतर भागना पड़ता, वह और भी बड़ा संकट होता । जमालदीन और रहमत प्राय कोठरी का दरवाजा हवा के लिये खुला छोड़ कर पसीजते शरीरों से कोठरी में ही लेटे रहते । जमाल को कभी यह खयाल आ जाने पर कि वह अपने घर देहली जा सकता है, जहाँ यह सब कष्ट उसे न सहने पड़ेंगे, मदनपुरा की बस्ती के कष्ट असह्य जान पड़ने लगते । वह सोचता, देहली में मनुष्यों का सा जीवन बिता कर भी तो वह जनता का काम कर सकता है परन्तु दूरदर्शिता देहली जा कर सुख से दिन बिता सकने की सम्भावना का अंकुर कुचल देती । यदि सेना की नौकरी से मेरे इतने बरस गायब रहकर भारत लौटने के बारे मे कोई तहकीकात उठी तो क्या होगा ? प्रत्यक्ष कोई अपराध न करने पर भी जाली पासपोर्ट से देश लौटना भी तो अपराध ही है । शेष जीवन जेल की कोठरी मे निष्प्रयोजन बिताने से क्या यह बुरा है ?

कर्त्तव्य और दूरदर्शिता के विचार से सुख और सुविधापूर्ण जीवन बिताने की इच्छा को दबा देना तो सम्भव था पर इस इच्छा को दबा देने पर भी राज का ध्यान आ जाता और मन बेचैन होने लगता । शारीरिक कष्ट और मानसिक उलझन का मेल हो जाने पर मदनपुरा की उस कोठरी मे पसीजते हुए खाट पर लेटे रहना सम्भव न रहता । नींद न आने पर जमाल उठकर चल देता । बिजली से रोशन सड़को पर चार-पाँच मील पैदल चल कर वह चौपाटी और कभी दादर बीच की शीतल रेत पर जा बैठता । समुद्र की फर-फर करती हवा से शरीर को शान्ति मिलती और कल्पना अधिक दूरगामी हो जाती ।

जमाल को समरकन्द मे एल्म के वृक्षो से छनती चांदनी से चित्रित सड़कें दिखाई देने लगती । गजनी मे अब्दुल्ला के हरम के बाग मे आड़ू के पेड़ो के नीचे, उसके संकेत की प्रतीक्षा मे बैठी नर्गिस दिखाई देने लगती और कभी मास्को का आँखो को चौंधिया देने वाला विद्युत प्रकाश । इस सबके ऊपर दिखाई पड़ जाती, गरमी की चाँदनी रातो मे तीसरी मंजिल की मुंडेर से घिरी छत पर, दूध सी श्वेत साड़ी मे राज । जीवन मे और सब कुछ छोड़कर भी मन राज को पाने के लिये व्याकुल हो उठता । अधिक नहीं तो एक बार उस से मिल तो ले, उसे देख ही ले और कुछ न सही, उसका कुछ हाल तो जाने ।

वह बेचारी किस प्रकार जीवन की घड़ियाँ बिता रही होगी ? उसने स्वय बहुत कुछ सहा है, बहुत कुछ देखा है, परन्तु वह भी एक जीवन था। राज अपने दिन कैसे बिता रही होगी ? गतिहीन, स्फूर्तिहीन हिन्दू-विधवा का जीवन कम से कम वह उसका हाल तो जाने।

जमाल और आगे चल पड़ता। मैरीन ड्राइव की प्रशस्त सड़को से होता हुआ वह समुद्र किनारे के अंतिम बाँध पर जा बैठता। कभी कल्पना ही कल्पना में मन की व्यग्रता बढने मे वह सोचने लगता, क्यो न वह रेलवे स्टे-शन जा कर डाक या एक्सप्रेस मे बैठ कर सीधा देहली पहुँच राज के सामने जा खड़ा हो ? वह कैसा अनुपम, अनिवर्चनीय सुख होगा। रेल के अट्ठाइस घण्टे के सफर से एक दूसरा ही जीवन पाया जा सकता है।

जमाल आवेश का ज्वार उतरने पर सोचता—क्यो न पहले पत्र लिख-कर देहली की स्थिति जानने का यत्न करे ? पत्र के विचार ने वजीरिस्तान और गजनी से भाई को लिखे पत्र की याद दिला दी। निश्चय किया, पत्र वह राज को लिखेगा भाई को नही। राज यदि जीविन है तो उस के पत्र की उपेक्षा नही कर सकती।

जमाल ने राज के नाम पत्र लिखा। पाँच वर्ष बाद अपनी भाषा मे प्यारी राज को पत्र लिखते समय कल्पनातीत माधुर्य अनुभव हुआ, जेसे नवयौवन के अल्हड़पने का वसन्त फिर लौट आया हो। पहले एक छोटा-सा उन्माद भरा पत्र अपने लौट आने की सूचना मात्र के लिये लिखा—"दुख सन्ताप और वियोग की रात बीत गई। मेरी चकवी, तुम्हारा चकवा समुद्रो और पहाड़ो को लाँघ कर तुम्हे अपने परो मे समेट लेने के लिये आ गया ।"

जमाल दो दिन पत्र को जेब में डाले घूमता रहा, आखिर पत्र जला देना पड़ा। सोचा—ऐसा पत्र केवल राज को विक्षिप्त कर देगा। इस का परिणाम जाने क्या हो ? जब तक वास्तविक स्थिति मालूम न हो, राज जाने क्या कर बैठे ? आठ पृष्ठ के एक दूसरे पत्र मे उस ने अपने प्रवास के कारण का संक्षिप्त वृत्तान्त लिखा। पत्र मे राज को हिदायत दी कि उस के लौट आने का समा-चार अभी किसी को न दे और देहली की स्थिति से उसे सूचित करे। इस पत्र को भी वह तीन दिन जेब मे डाले फिरा। मन मे शका हुई, कि पत्र यदि सीधा राज के हाथ मे न पड़ कर भाई के हाथ मे पड़ गया ? यदि भाई सदेह करे कि राज को इतना बड़ा पत्र बम्बई से लिखा किसने ? राज को पत्र आ सकता है तो आगरे मे उस के मायके से या कानपुर से उस की बहिन चन्दा

का। भाई से बचा कर वह राज को पत्र नही लिख सकता।

जमाल अनेक बार मन को समझाता—जिस समाज और जीवन को वह छोड़ चुका है, उस की मौजूदा परिस्थिति जिस जीवन के साथ सम नही बैठ सकती, बारम्बार उस की बात सोचने से लाभ क्या ? परन्तु मन राज की खबर के लिये बेचैन हो ही जाता। मन तर्क करने लगता, आखिर मेरा व्यक्तिगत जीवन भी तो कोई चीज है। बहुत उधेड़बुन के पश्चात उस ने निश्चय किया कि पत्र लिखा जा सकता है तो राज की बहिन चन्दा को या पुराने मित्र शिवनाथ को। शिवनाथ को पत्र लिखने में अड़चन थी। एक समय आतंकवादी रह चुकने के कारण वह पुलिस की नजरों मे होगा। उसे बम्बई के अपने सहयोगियो से समाचार मिला था कि शिवनाथ अब देहली में नही, कानपुर मे कांग्रेस-समाजवादी कार्यकर्ता बन कर रहता है। कम्युनिस्ट पार्टी से उस का घोर विरोध हो गया है। जमाल ने निश्चय किया, पत्र राज की बहिन चन्दा को या उन के पति राजाराम को ही लिखा जा सकता है।

जमाल चन्दा से तीन-चार बार से अधिक नही मिला था। वह संक्षिप्त परिचय, इतने वर्ष बाद भी, गहरी छाप लिये था। चन्दा का आत्मीयता के भाव का बड़प्पन और स्नेह की उदारता राज की स्मृति के साथ ही सजीव थी। राज ने कितनी ही बार कितने ही प्रसंग से चन्दा की कितनी ही चर्चा कर के पति के मन मे अपनी बड़ी बहिन के प्रति आदर और विश्वास के भाव बैठा दिये थे। बम्बई मे नये बनाये एक विश्वस्त मित्र के पते पर चन्दा से पत्र-व्यवहार करने का निश्चय कर जमालदीन ने एक पत्र लिखा। पत्र जेब मे ही रह गया। अकस्मात पुलिस ने भिण्डी-बाजार के एक मकान मे कम्युनिस्ट पार्टी के दफ्तर का पता लगा कर छापा मारा। दो साथी बेखबरी मे गिरफ्तार हो गये। रहमत कुछ दिन से जमालदीन की कोठरी छोड़ भिण्डी-बाजार में ही रहता था पर पुलिस के छापा मारने के समय मकान में न रहने के कारण वह गिरफ्तार तो न हुआ परन्तु बम्बई मे उस का रहना भय से खाली न था। उसे कानपुर भेज दिया गया।

भिण्डी-बाजार के मकान मे गिरफ्तार हो जाने वाले साथी कम्युनिस्टो की आम गिरफ्तारी के समय से फरार होकर दल का काम कर रहे थे। उन साथियो के अनुभवी होने और प्रकट रूप से जनता मे काम न कर सकने के कारण इनका काम परिस्थिति के अनुसार नीति निश्चित करना और भिन्न-भिन्न प्रान्तो में काम करने वालो का परस्पर सम्बन्ध बनाये रखना था। जमालदीन

की ओर भी पुलिस का ध्यान आकर्षित हो चुका था। किसी प्रकार गिरफ्तारी से बच रहे अपने व्यक्तियो को बचाने की दल को बहुत चिन्ता थी। निश्चय हुआ कि जमालदीन अपनी कोठरी और मजदूरो मे काम छोड कर नीति सचालन और सम्बन्धो को कायम रखने का काम करे। जमाल स्थिति समझने के लिये अहमदाबाद, नागपुर, मद्रास और कलकत्ता के लिये निकल पडा।

×   ×   ×

अपने प्रति कौतूहल न होने देने के लिये वर्मा साधारण मध्यम श्रेणी के गुजराती सज्जन के वेश मे, लम्बा कोट, धोती और काली टोपी पहने मुसाफिरो से बातचीत करता चला जा रहा था। वह किसी भी प्रकार का असाधारण व्यवहार न करता था। न असाधारण ढग से बोलना, न असाधारण विषय पर बात करना, न बिलकुल चुप ही रहना। प्रकट मे साधारण व्यवहार होने पर भी उस के मस्तिष्क मे कितनी ही उलझने भरी थी। जर्मनी के रूस पर आक्रमण कर देने के कारण कम्युनिस्ट-दल की नीति मे परिवर्तन करना आवश्यक था। कम्युनिस्ट अब तक दो साम्राज्यवादी शक्तियो के युद्ध मे अपने देश के साधनो और जनता की शक्ति का उपयोग किये जाने का विरोध करते आये थे। उन का युद्ध-विरोध काग्रेस की भाँति केवल नारे लगाने या निजी तौर पर युद्ध-विरोधी पत्र लिखने तक ही सीमित न था। वे लोग साम्राज्यशाही सरकार को निष्प्राण कर देने के लिये, वे देश के सभी उद्योग-धन्दो और सामाजिक जीवन के कामो में हडताल करा देने की तैयारियाँ कर रहे थे। वे लोग जनता की शक्ति का उपयोग नाजीवाद और फैसिस्टवाद के विरुद्ध जनता के हित मे करना चाहते थे, साम्राज्यवाद की रक्षा के लिये नही। वे अवसर की प्रतीक्षा मे थे।

रूस पर आक्रमण हो जाने से एक देश मे समाजवाद और वहा मेहनत करने वाली श्रेणी के शासन अधिकार की रक्षा का प्रश्न सामने आगया। अब रूस के सहायक मित्र राष्ट्रो की सहायता, रूस मे स्थापित समाजवाद की रक्षा के लिये आवश्यक हो गई। नयी नीति को अपने दल के लोगो और जनता के सम्मुख रखना साहस का काम था, साथ ही आवश्यक भी था। कम्युनिस्ट-पार्टी के गैरकानूनी होने के कारण बहुत अधिक इस काम मे कठिनाई थी। वर्मा भिन्न-भिन्न स्थानो पर जाकर साथियो को नयी परिस्थिति मे अपनी नीति परिवर्तन करने की आवश्यकता समझाता। उसका कहना था कि समाजवाद का

आन्दोलन अन्तर्राष्ट्रीय है, उसकी विरोधी और समर्थक शक्तियाँ भी अन्तर्राष्ट्रीय हैं। भारत के समाजवादी समाजवाद के विरुद्ध या पक्ष मे अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष की उपेक्षा नहीं कर सकते। भारत शोषित, पीड़ित और पराधीन है। संसार के शोषितो-पीड़ितो और पराधीनो की विजय मे उसकी मुक्ति है। इस समय संसार की शोषित जनता का हित मित्र राष्ट्रो के साथ मिल कर जर्मनी और जापान के नाजीवाद का विरोध करने मे है। यह भारत के लिये आत्म-रक्षा का प्रश्न है। नाजीवाद की सफलता भारत को सदा के लिये साम्राज्यवादियो का शिकार बना देगी।

वर्मा की बात सिद्धान्त रूप से स्वीकार करके भी उसके साथी युद्ध-विरोध की नीति बदलने के लिये तैयार न थे। उनका विचार था कि युद्ध की परिस्थिति मे उन के लिये सब से महत्वपूर्ण काम इस देश की स्वतन्त्रता पाना है। डाक्टर वर्मा का कहना था कि भारत का हित जीर्ण होते हुए ब्रिटिश साम्राज्य के हाथ से निकल कर खूंखार और बर्बर जापानी और नाज़ी साम्राज्यवाद के हाथो पड जाने मे नही है। यह युद्ध हमारे लिये आत्म-रक्षा का प्रश्न है। उस के साथियो ने निश्चय किया कि जेल मे बन्द पुराने अनुभवी साथियो की राय लिये बिना इस विषय मे कुछ न किया जाय परन्तु समाजवादी रूस के प्रति जनता की सहानुभूति आकर्षित करने के कार्यक्रम पर वे वे सहमत हो गये। प्रकट मे साधारण व्यवहार और साधारण बातचीत करते हुए डाक्टर का मन इन परेशानियो मे उलझा हुआ था। इनके साथ ही ध्यान आ जाता कि पश्चिम की ओर ट्रेन की गति से वह प्रतिक्षण देहली की ओर बढ रहा है। कानपुर से देहली हो आना कठिन न होगा। वह एक बार राज से मिल सकेगा।

दक्षिण भारत और बंगाल की अपेक्षा उत्तर भारत में कम्युनिस्ट दल की स्थिति बहुत कमजोर देख कर डाक्टर वर्मा ने कानपुर में रहने का निश्चय किया। बम्बई से चलने के साथ ही वह हकीम जमालदीन न रहकर डाक्टर बी० डी० वर्मा बन गया था। कानपुर मे महँगाई भत्ते के प्रश्न पर हडताल हो जाने की आशंका थी। कम्युनिस्ट दल के पुराने कार्यकर्ता और मज़दूर सभा मे भाग लेने वाले कांग्रेस समाजवादी भी गिरफ्तार हो चुके थे। जो शेष थे, उन मे कांग्रेस के व्यक्तिगत सत्याग्रह मे भाग लेने और मजदूर सभा के चुनाव के प्रश्न पर मतभेद हो रहा था।

अपने साथियो को डाक्टर की हिदायत थी कि अपनी नीति पर दृढ रहते हुए भी दूसरे राजनैतिक दलो से किसी प्रकार की प्रतिद्वन्द्विता न की जाय।

नासिर ने उसे उत्तर दिया, काँग्रेस समाजवादियो की फूट डालने की नीति के कारण वह किसी प्रकार उनके साथ मिलकर काम नही कर सकता। नासिर ने अपने-अपने साथियो को कॉग्रेस समाजवादियो के व्यक्तिगत सत्याग्रह का प्रचार करने की नीति का विरोध करने के लिये कहा। यह सुन कर डाक्टर वर्मा स्वय कानपुर दौडा आ रहा था।

कानपुर मे राज की वहिन चन्दा से मिलने की भी आशा थी, वह अपने काम और उत्तरदायित्व के अतिरिक्त अपने व्यक्तिगत रूप मे भी किसी अपने से मिल सकेगा। वह ऐसे स्थान मे जा सकेगा जहा उसका मूल्य उसके अपने ही व्यक्तित्व के कारण होगा। वह अपने रोमाचकारी अनुभवो को, सुख-दुख को उत्सुक कानो और सहानुभूति पूर्ण दृष्टि के सामने कह सकेगा। उसे सूझा, चन्दा से कह कर वह देहली मे अपना कोई समाचार भेजे बिना, राज को भी बुलवा सकेगा। मन एक मधुर आशा से भर गया, मानो वह राज के ही समीप जा रहा हो। राज किस अवस्था मे होगी ? उसे देख कर राज को कितना विस्मय और आनन्द होगा ?

वर्मा सावधानी के विचार से कानपुर मे साथियो से मिलने के लिये गाँधी नगर और ग्वालटोली की मजदूर बस्तियो मे नही गया। एक साथी ने उसे स्टेशन से ले जाकर एक भले आदमी के यहाँ टिका दिया। साथी वही आकर उससे मिल जाते। नासिर कानपुर मे सुजानसिह के नाम से रहता था। वह भी मिलने आया। दोनो मे घण्टो तक बहस हुई। डाक्टर वर्मा ने अपने लिये सुरक्षित और स्वतन्त्र स्थान और स्थिति बनाने के लिये 'रामनारायन के बाजार' मे एक दुकान ले कर 'वर्मा मैडिकल हाल' का बोर्ड लगा दिया। नियमित रूप से मेज पर दवाइयाँ और स्टेथिसकोप रख कर वह नित्य सुबह दुकान मे बैठता। एक दफ्ती पर उसने लिखा—सुबह सात से नौ बजे तक गरीबो को मुफ्त देखा जाता है और दुकान के किवाट पर लटका दिया। साहस कर उसने नुस्खा लिखने के लिये अपने नाम के कागज भी छपवा लिये। बी० डी० वर्मा, एम० बी०बी०एस०। उसे इच्छा हुई कि बाकायदा प्रेक्टिस करे परन्तु उद्देश्य प्रेक्टिस न था और न एलोपैथी की दवाइयो का दवाखाना खोलने लायक पैसा ही था।

उसे याद था कि देहली से राज के बहिन को लिखे पत्रो पर या स्वय राजाराम को कभी पत्र लिखते समय वह पता लिखा करता था, मि० राजाराम मेहरोत्रा, परमट, कानपुर। वह एक दिन समय निकाल कर चौथे पहर परमट गया। परमट के इतने बडे मुहल्ले मे सहसा राजाराम का पता न

मिला। सन्ध्या के समय उसे काम था। राजाराम का घर ढूंढने का काम किसी और दिन के लिये स्थगित कर वह लौट आया।

१९४२ जनवरी के आरम्भ मे भारत की कम्युनिस्ट-पार्टी ने रूस और मित्र राष्ट्रो के सहयोग मे, जर्मनी और जापान के नाजी आतक के विरुद्ध आत्म-रक्षा के लिये, कौमी जग की नीति का एलान कर दिया था। भारतीय सर-कार की जेलो मे बन्द कम्युनिस्ट अपने देश पर फैसिज़्म के बढते आतक का सामना करने के लिये छटपटा रहे थे। उन की पुकार जेल की दीवारो को कठिनता से पार कर पाती थी। इस सफलता से डा० वर्मा की कठिनाई दूर हो गई परन्तु उत्तरदायित्व भी बढ गया। इस उलझन मे चन्दा और राजाराम को मिलने जाने और उन की मार्फत राज का पता पाने की इच्छा दबी ही रह गयी।

काग्रेस का व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन अपनी सीमा तक पहुँच चुका था। सार्वजनिक अपीलो से भी सत्याग्रही न मिलते थे। काग्रेस के उत्तर-दायी नेता और कार्यकर्ता स्वास्थ्य तथा पारिवारिक कारणो के आधार पर सत्याग्रह न करने की इजाजत लेकर काग्रेस के दिन फिरने की प्रतीक्षा कर रहे थे। सत्याग्रह के आरम्भिक उत्साह मे जनता जेल जाने की इजाजत माँगती थी और वह न मिलती थी। जब आन्दोलन का जोश शिथिल हो गया तो काग्रेस अपने कार्यकर्ताओ के सत्याग्रह से कतराने पर आश्वासन की कारवाई करने लगी परन्तु आन्दोलन आगे न बढ रहा था। देश भर मे राजनैतिक निराशा और शैथिल्य छा गया था। भारत सरकार सम्पूर्ण शक्ति नौकरशाही के हाथ मे समेट कर कठोर शासन से युद्ध के लिये आवश्यक कार्यक्रम और व्यवस्था जारी किये थी। इस परिस्थिति को सुधारने के लिये ऊँची स्थिति के लोगो ने, जिनकी पहुँच वायसराय और काग्रेस की नीति संचालन करने वालो तक हो सकती थी, काग्रेस और सरकार मे सुलह की बात उठाई।

सत्याग्रह समाप्त हो जाने और बरमा मे जापान के आक्रमण के समय जनता के विद्रोही हो जाने के अनुभव से, सरकार युद्ध मे देश की जनता के सहयोग के लिये इच्छुक थी। काग्रेस के नेताओ और वायसराय मे पत्र-व्यवहार हो रहा था। सरकार सत्याग्रह आन्दोलन मे भाग लेने वाले बड़े-बडे नेताओ को जेल से छोड रही थी कि काग्रेस सरकार से सहयोग की नीति अपना सके। शिवनाथ सत्याग्रह आन्दोलन के समय गिरफ्तार हो जाने के कारण जेल मे था। पुराना आतकवादी होने के कारण उसकी रिहाई मे विलम्ब हुआ पर

वह भी छूट आया।

डाक्टर वर्मा की इच्छा थी कि समाजवाद से सहानुभूति रखने वाले लोगो का एक संयुक्त मोर्चा, जनता को फेसिस्ट आक्रमण के विरुद्ध सजग और सगठित करने के लिये तैयार किया जाये। काग्रेस-समाजवादी दल में शिवनाथ का स्थान महत्वपूर्ण था। राजनैतिक मतभेद के कारण वर्मा के साथियो और शिवनाथ का सम्बन्ध अच्छा न था। वर्मा को भरोसा था कि शिवनाथ न्याय और तर्क की बात मान लेगा। अब दल की नीति इस विषय मे स्पष्ट हो जाने से वह इस विषय मे शिवनाथ से निस्सकोच बात कर सकता था। शिवनाथ के समाजवादी होने के कारण, फैसिज्म के विरुद्ध सयुक्त मोर्चे पर उसके सहयोग के लिये प्रयत्न करना भी आवश्यक था। इतने वर्ष तक किसी आत्मीय को समीप न पा सकने से शिवनाथ से पुराने परिचय की स्फूर्ति और उससे मिलने के अवसर ने उसे व्याकुल कर दिया।

शिवनाथ अपनी बहिन यमुना सहित आर्य नगर मे रहता था। उसे बीमे के काम से अच्छी आमदनी हो रही थी और यमुना एम० ए० पास करके स्थानीय कन्या विद्यालय मे अध्यापिका का काम करके दो-सौ रुपया वेतन पा रही थी।

वर्मा ने सध्या समय शिवनाथ के मकान की साँकल खटखटाई। नौकर ने दरवाजा खोला। वर्मा के पूछने पर नौकर ने बताया, बाबू जी नही है। वर्मा ने बीबी जी को बुलाने के लिये कहा। यमुना चली नही आई, पुछवा भेजा कौन है, कहाँ से आये है, क्या काम है ?

वर्मा ने कहला दिया—"बाबू जी के दोस्त देहली से आये है।"

वर्मा उत्सुकता से यमुना के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। दो मिनिट की प्रतीक्षा भी उसे बहुत जान पडी। सोचा, यमुना उसे शायद ही पहचान सके। वह भी सहसा अपना परिचय न देकर दिल्लगी करेगा। सिर पर साडी का आँचल सम्भालते हुये, चश्मा लगाये यमुना ने बैठक मे प्रवेश किया। वर्मा उसे घर से बाहर देख कर स्वय ही पहचान न पाता। आदर के भाव से वह उठ खडा हुआ। वर्मा दिवाल के साथ बिछे तखत के समीप कुर्सी पर बैठा था।

यमुना नमस्ते का उत्तर देकर तखत पर बैठ गई और पूछा—"कहिये!"

"आप से मिलने चला आया!"

"कहिये" यमुना ने अपनी बात दोहराई, "आप भाई साहब से मिलना चाहते है। वे इस समय घर पर नही है।"

"जी हाँ, मालूम हुआ। सोचा, आप से ही मिल लू। आपका हालचाल पूछ लू !"

इस निरर्थक बात को न समझ कर सरसरी नजर वर्मा की ओर डाल कर यमुना ने पूछा—"क्षमा कीजियेगा, आप को पहचान नही सकी !"

"कोई हरज नही !" गम्भीरता से वर्मा ने उत्तर दिया, "मै आप को पहचानता हूँ। आप मुझे पहले से नही पहचानतीं या नही जानती ता नया परिचय करने मे आप को कुछ एतराज है ?"

यमुना देखती रह गई। वर्मा भी चुप था। यमुना ने फिर पूछा—"आप भाई साहब के मित्र है। उन से मिलना चाहते है तो फिर किसी समय तशरीफ लाइये। इस समय वे बाहर गये है, देर से आयेंगे।"

"फिलहाल तो मै आप से ही बात करने आया हूँ ?" वर्मा उसी प्रकार गम्भीर बना रहा।

उस के ढग से यमुना को कुछ असुविधा अनुभव हुई। अतिथि के प्रति सज्जनता के विचार से उस ने आँखें झुका फिर पूछा—"मेरे योग्य कोई सेवा हो तो फर्माइये ?"

अपना परिचय न देकर वर्मा बोला—"मुझे मालूम नही आप किस प्रकार की सेवा कर सकती है ?"

इस अभद्रता से यमुना को क्रोध आ गया। स्वर कठोर कर उस ने कहा—"आप को मालूम है, भाई साहब घर पर नही है। आप को मुझ से कुछ काम नही तो आप तशरीफ क्यो लाये है ?"

इतने पर भी परिचय न देकर मुस्कराकर वर्मा बोला—"अर्ज किया न आप से बातचीत करना चाहता हूँ !"

यह मुस्कराहट यमुना को और भी बुरी लगी। "बातचीत का क्या मतलब ?" उस ने रुखाई से पूछा।

वर्मा हँस दिया—"और कुछ मतलब न सही, दिल बहलाना ही समझ लीजिये।"

यमुना क्रोध मे खडी हो गई—"बडे बत्तमीज है आप। यह दिल बहलाने की जगह नही। ... तशरीफ ले जाइये !"

डाक्टर कुर्सी पर वैसे ही निश्चल बैठा रहा। पहले से अधिक मुस्कराकर उस ने पूछा—"आप के विचार मे मिलने आने वालो का अपमान करना तमीज है ?"

क्रोध और दुविधा मे यमुना ने उत्तर दिया—"जिस प्रकार का व्यवहार आप करेंगे, वैसा ही आप के साथ किया जायगा। आप बेमतलब यहाँ आये ही क्यो ?"

कुर्सी से उठे बिना, यमुना को बैठने के लिये हाथ से सकेत कर वर्मा फिर बोला—"अनुचित व्यवहार मैंने कुछ नही किया। आप के खयाल में बातचीत कर दिल बहलाना क्या ऐसा पाप है कि उस के लिये अपमान किया जाय ?"

यमुना बैठी नही—"क्षमा कीजिये मुझे भीतर काम है" उसने उत्तर दिया और दरवाजे की ओर बढ चली।

आग्रह से उसे बैठाने के लिये डाक्टर स्वय खडा हो गया—"आप ज़रा बैठिये तो सही।"

यमुना को बैठते न देख कर उस ने फिर कहा—"आप बैठेंगी नही तो आप को फिर क्षमा माँगनी पडेगी।"

मन ही मन डाक्टर को विस्मय हो रहा था, इतनी बात हो जाने पर भी यमुना उसे पहचान न सकी। उस ने यमुना को जाते देख कर पुकारा—"अच्छा एक बात सुनती जाइये।"

"क्या ?" यमुना ने घूम कर देखा।

"आप राजदुलारी खन्ना को तो नही भूली होगी ?" यमुना को विस्मय से आँखे फैलाते देख कर डाक्टर ने याद दिलाया, "आप के भाई के मित्र डाक्टर भगवानदास खन्ना की स्त्री !"

"हाँ" यमुना आँखे फैलाये स्तब्ध खडी रह गई। कठिनता से उस के मुख से निकला, "खन्ना भाई साहब !"

"हाँ !" डाक्टर ने कहा, "तुम ने तो पहचाना ही नही !"

यमुना की विमूढता दूर करने के लिये डाक्टर बोला—"अच्छा बैठो तो !"

अप्रत्याशित घटना के आघात से यमुना कुछ बोल न सकी।

डाक्टर को पाँच वर्ष पूर्व तुत्ती कैम्प मे ड्यूटी पर जाने से पहले देखा यमुना का चेहरा याद आ रहा था। तब शिवनाथ को जेल से छूटे अधिक समय नही हुआ था। यमुना भाई के जेल मे रहने के समय एन्ट्रेस की परीक्षा पास कर आगे परीक्षा देने की तैयारी कर रही थी। गरीबी मे किये कठिन परिश्रम की उदासी चेहरे पर छाई रहने पर भी एक कोमलता थी। अब कठिन परिश्रम और गरीब का भाव चेहरे पर न था परन्तु कोमलता भी उड गई थी। उस की जगह पक्केपन, अविश्वास और निष्फलता की सी भावना थी। डाक्टर

समझ नहीं पा रहा था कि हुआ क्या ? आयु इस की अट्ठाइस से अधिक न होनी चाहिये परन्तु जान पडता है जैसे ढल गई हो ।

कुछ देर दोनो चुप रहे । यमुना ने पूछा—"आप थे कहां ?"

प्रश्न को टालने के लिये मुस्कराकर डाक्टर ने उत्तर दिया—"वह तो लम्बी कहानी है । आप पहले अपनी सुनाइये । देहली क्यों छोड दी ?"

"कम्पनी वालो ने भैया को यहाँ आने के लिये कहा । वे भी चाहते थे । मैं भी यहाँ आ गई कन्या-विद्यालय मे ..." । आप यहाँ कब आये "....?"

"जब आप ने देख लिया । अधिक दिन नही हुये । बहुत ही व्यस्त था और आप लोगो का पता भी तो मालूम न था !"

उत्सुकता से यमुना ने पूछा—"ठहरे कहाँ है ? चन्दा बहिन के यहाँ ?"

"नही" डाक्टर ने उत्तर दिया, "अभी उधर भी नही जा पाया । उन लोगो के मकान का ठीक से पता भी नही है । इतने दिन बहुत व्यस्त रहा । आप के मकान का ही पता बडी कठिनाई से लगा पाया । आप तो उन लोगो से मिलती-जुलती रहती होगी ? क्या हाल है उन लोगो का ?"

'ऐसे ही अधिक तो क्या मिलती हूँ ? स्कूल से ही फुर्सत नही मिलती । यो समाचार मिलता ही रहता है ! कुसुम, उनकी लडकी, हमारे ही स्कूल में पढती है ।"

जो बात सबमे पहले डाक्टर की जिह्वा पर आना चाहती थी, जिसे व्यवहारिकता के नाते रोक वह दूसरी बाते कर रहा था, आखिर उस ने पूछा—"राज कहाँ है ? देहली मे या आगरे मे ?"

यमुना चुप रह गई । कुछ पल नेत्र झुकाये सोच कर उसने कहा—"आप क्या देहली नही गये ?"

"नही, अभी नहीं !" डाक्टर ने शीघ्र उत्तर पाने की उत्सुकता मे नये प्रश्न न किये जाने की पेशबन्दी कर कहा, "मैं सेना से सुदूर रूस चला गया था । बम्बई की राह लोट रहा हूं !"

यमुना फिर सिर झुकाये चुप रह गई । उत्सुकता डाक्टर को बेचैन कर रही थी—"क्या कुछ खास घटना हो गई ?" यमुना को उत्साहित करने के लिये उस ने पूछा ?

"नही ..." लडखड़ाते से स्वर मे यमुना ने कहा, "पर उस बेचारी को क्या मालूम था ? ..... सेना से जैसा समाचार आया, इस से वह बेचारी और समझती क्या ?"

"कैसा समाचार ?" व्याकुलता से डाक्टर ने पूछा ।

भूमिका बाँधने के ढग से यमुना बोली—"बडे आश्चर्य की बात है । सरकार के यहाँ ऐसी बेईमानी है ? समझ नही आता कैसे वह खबर आई ? हम सभी लोगो को बहुत दुख हुआ ... बेचारी राज ने तो आत्महत्या का प्रयत्न किया परन्तु भाग्य मे यही लिखा था बेचारी के ? . . ." आगे वह कह न सकी ।

आशका से डाक्टर ने पूछा—"कैसा समाचार ?"

दृष्टि दीवार की ओर कर यमुना ने उत्तर दिया—"कुछ समझ नही आता   महीनो आपकी खबर न आई । फिर बडी बुरी खबर आप के बारे मे आई । हम सभी को बहुत दुख हुआ । राज ने अफीम खा ली थी । बडी कठिनाई से उस के प्राण बचे । भैय्या, बद्री बाबू और मैं महीनो सेवा करते रहे । तब कही जाकर वह ठीक हुई . "

उसे चुप होते देख डाक्टर ने पूछा—"फिर क्या हुआ ?"

"दो वर्ष वह घर मे ही रही । बद्री बाबू के साथ वह कांग्रेस का काम करने लगी । घर के लोगो को यह सुहाता न था । झगडा होने लगा । बेचारी कटरानील से सब्जीमण्डी, बद्री बाबू के सेवाश्रम मे चली गई ।"

यमुना को फिर चुप होते देख डाक्टर ने कहा—"बद्री बाबू तो जेल मे थे ...।"

साहस कर यमुना ने कह डाला—"नही पहले, अब तो राज 'रानीखेत' के ग्रामोद्योग-आश्रम मे होगी । बद्री बाबू ने उससे विवाह कर लिया है ।"

कहने को तो यमुना कह गई परन्तु दृष्टि उठा कर डाक्टर की ओर देखने का साहस न हुआ । परिस्थिति की कठिनता और डाक्टर के हृदय पर लगने वाले आघात से वह स्वयम विचलित हो उठी ।

अपनी परिस्थितियो के कारण डाक्टर भयकर से भयकर कष्ट और मानसिक आघात सहने के लिये अपने आपको तैयार करता आया था परन्तु इस आघात ने उसे जड कर दिया । दृष्टि सम्मुख फर्श पर लगाये वह कुर्सी पर बैठा रहा । जैसे घर पहुँचने की आस मे चलता मनुष्य सहसा कुएँ मे गिर कर कुछ समझ न पाये, वैसे ही वह जड मूढावस्था मे रह गया । लगभग पन्द्रह मिनट कमरे मे सन्नाटा रहा । दोनो मे से कोई भी न बोल पाया ।

नौकर ने किसी काम से बैठक मे आकर पुकारा । यमुना को कुछ सहारा मिला । वह खड़ी हो गई । डाक्टर की ओर देख कर उस ने कहा—"आप के लिये जल लाऊँ," नही चाय पीजिये ?"

डाक्टर ने केवल सिर हिला दिया, उसे कुछ नही चाहिये। यमुना भीतर चली गई। कुछ देर वाद जल का गिलास और एक तश्तरी में जलपान लिये वह वैठक मे लौट आई। डाक्टर अव भी वैसे ही वैठा था। यमुना की ओर आँख उठा उस ने एक नज़र देख भर लिया।

डाक्टर के सामने छोटी तिपाई पर जल-पान रख कर यमुना ने आग्रह किया। जल का गिलास डाक्टर ने पी लिया शेष कुछ छूने की उसे इच्छा न हुई। कुछ और कहने को ना पा कर यमुना ने पूछा—"सिगरेट मंगाऊँ ' आप पीते हैं ?"

"है मेरे पास" डाक्टर ने उत्तर दिया, "इस समय इच्छा नही है।"

डाक्टर को वुला सकने के यत्न मे असफल होकर यमुना सोच रही थी, यह समाचार सुनाकर भूल की। पहले खयाल आ जाता तो फिलहाल वात वचा जाती। पता तो लग ही जाता परन्तु मेरे सामने तो यह सव न होता। कितनी ही देर वह सोचती रही, किस प्रकार डाक्टर का ध्यान इस दुखदायी चिन्ता से वँटाये ? भैया को भी गये कितनी देर हो गई। वे ही लौट आते तो वात करते। डाक्टर वैसे ही निश्चल वैठा था। कोई उपाय न देख कर यमुना ने पूछा—"देहली के विपय में आपका क्या विचार है ? आप उधर कव तक जा रहे है ?"

"अभी जल्दी तो विचार नही।" डाक्टर ने सक्षिप्त सा उत्तर दिया।

डाक्टर को किसी प्रकरण से वोलते न देख यमुना ने सीधे शव्दो मे सान्त्वना देने का यत्न किया—"जाने दीजिये ' जो हो गया। उसे क्या मालूम था। अव उस में क्या हो सकता है ? हमे तो यही देखकर वडी प्रसन्नता हुई कि आप लौट आये।"

डाक्टर ने यमुना की ओर दृष्टि उठा उत्तर दिया—"ठीक है, तुम्हारा कहना ! ' उस में होने की क्या वात है ?" कुछ मिनिट और चुप वैठे रहने के वाद वह चलने को तैयार हुआ, "अव आज्ञा दीजिये, चलू। फिर आने का यत्न करूगा !"

"अभी कुछ तो वैठिये भैया आते होगे।" यमुना ने आग्रह किया। "हाँ, चन्दा वहिन से नही मिलेगे आप ? उनका मकान वता दू आपको, परमट पर मन्दिर से जरा आगे, वही है। कुछ नया हिस्सा भी उन लोगो ने वनवा लिया है।"

"हाँ, किसी दिन जाऊँगा" डाक्टर वोला और फिर चुप वैठा रहा।

बाहर दरवाजे की साँकल खटकने की आहट पा कर यमुना की जान मे जान आ गई। "भैया आ गये" उसने कहा और किवाड खोलने चली गई। खन्ना भीतर बैठा समझ रहा था कि यमुना शिवनाथ को बाहर रोककर स्थिति समझाने का यत्न कर रही है। वह प्रबल मानसिक आघात से निश्चेष्ट बना रहा।

अत्यन्त विस्मय से शिवनाथ के 'है' कहने का स्वर सुनाई दिया और फिर बहिन की बात समाप्त होने की प्रतीक्षा किये बिना वह भीतर झपटता चला आया। खन्ना के चेहरे पर दृष्टि गढाकर उसने पहचानने का यत्न किया। पुराने मित्र की चाव और विस्मय भरी दृष्टि का स्वागत करने के लिये खन्ना मन पर पत्थर रखकर मुस्करा दिया। शिवनाथ उससे लिपट गया। यमुना एक ओर खडी दोनो की मित्रता सतोप से देखती रही। शिवनाथ खन्ना के गले मे डाली बाहो के बन्धन को ढीला न करना चाहता था। शिवनाथ के प्यार के अत्याचार ने खन्ना का ध्यान राज की ओर से कुछ बटा दिया। अपनी कहते और उसकी सुनते हुए आघात की उत्कटता धीमी पड रही थी।

अवसर पा कर यमुना ने शिवनाथ को समझा दिया कि भूल से राज की बात उसने खन्ना से कह दी है इसी से वह इतना शिथिल है। आने पर तो पहचान न पाने के कारण उसे खूब मूर्ख बनाया था। शिवनाथ ने बिना किसी सकोच के खन्ना को सम्बोधन किया—"राज के मामले मे खिन्न होने की बात क्या, इसमे उस बेचारी का दोप ही क्या ?"

"कुछ नही ? . . . मुझे कोई शिकायत नही है !" खन्ना ने उत्तर दिया। शिकायत न होने का प्रमाण देने के लिये उसने कहा, "मै ही कौन उसके लिये प्रतीक्षा मे तपस्या करता रहा हूँ ?"

दोनो मित्र तखत पर एक साथ बैठे रात दो बजे तक बातचीत करते रहे। शिवनाथ खन्ना को रात भर अपनी जगह जाने देने के लिये तैयार न हुआ। ऐसे ही रात बीत गई। सुबह बिदा होने से पहले खन्ना ने कहा—"मै तुमसे कुछ और बात करना चाहता था परन्तु कर नही पाया। फिर किसी दिन सुविधा से आऊँगा।"

× × ×

खन्ना ने मन को समझाया, यह सब चिन्ता और सोच व्यर्थ है। पाँच वर्ष से राज उसकी कल्पना और आशा मे अपना स्थान बनाये थी। एक तर्क से

उसका प्रभाव मिटा देना सम्भव न था। वह तर्क करता—मैं कल्पना और आशा करता रहूँ तो उसके लिये राज उत्तरदायी नही। जब उसके ससार मे मेरा जीवन ही समाप्त हो गया था, वह किसके प्रति वफादारी दिखाती? जाने कैसी परिस्थिति थी? स्त्री पति को खोकर उसकी स्मृति के प्रति भी वफादार बनी रहे, यह पुरुष का गरूर है। मर जाने के बाद पुरुष को गरूर से सतोष भी नही मिलता परन्तु स्त्री का जीवन और सर्वस्व भस्म हो जाता है। स्त्री के जीवन और सर्वस्व का मूल्य पुरुष के निरर्थक गरूर से भी गया बीता है? राज ने ऐसा कौन काम किया जो मैं नही कर आया? नर्गिस और गुलशा क्या मेरे जीवन मे नही आई?

इस तर्क से वह राज के प्रति क्रोध न कर सकता परन्तु चिरपोषित आशा के एक ही ठेस से बिखर जाने की पीडा शान्त न हो पाई। आशा कट चुकी थी। बार-बार काट देने पर भी बरसाती दूब के अकुर की भाँति वह फूट पडती थी। बावली कल्पना ने कहा—राज ने मेरे प्रति विश्वासघात नही किया। मुझे पाने की सम्भावना और आशा न रहने से ही उसने दूसरी ओर आँख उठाई। अब मै लौट आया हूँ। क्या वह मेरी ओर नही लौट आ सकती? मेरी कल्पना मे वह सदा ही मेरे जीवन की एकमात्र सगिनी रही है। मेरे जीवन मे घटनाये हुईं पर मेरा प्रेम उसके प्रति अक्षुण्ण है, वैसे ही उसके जीवन मे भी कोई घटना हो गई तो क्या? तर्क ने पीछा न छोडा—क्या मौजूदा समाज मे राज के लिये यह सम्भव है? यदि इस बीच उस के कोई सन्तान हो गई हो तो? उस सतान का क्या होगा? उसका काल्पनिक उत्साह ठण्डा पड गया। राज के प्रति अनुराग ने दूसरा मार्ग ग्रहण किया, जिसे इतना स्नेह करता हूँ, उसके जीवन को बरबाद क्यो करूँ? वह जहाँ है, सुखी रहे? उसने मुझ पर चोट नही की। मै उस पर चोट करने की नीचता क्यो करूँ?

विचार और तर्क की धारा मे दूसरी चिन्ता आ मिलती। कौमी जग के मोर्चे पर शिवनाथ और उसके दल का सहयोग पाने की आशा। अभी एक मास पूर्व २६ जनवरी को स्वतन्त्रता दिवस के दिन कम्युनिस्टो ने कॉंग्रेस द्वारा युद्ध-विरोधी हडताल और जुलूस मे सहयोग न देने की नीति की कटु आलोचना की थी। शिवनाथ ने उस समय कॉंग्रेस का साथ दिया था कम्युनिस्टो उसके दल पर भी आक्षेप किये थे। अब वह स्वय शिवनाथ के सामने कौमी जग के मोर्चे और युद्ध मे सहयोग का प्रस्ताव रखेगा परन्तु स्थिति बदल जाने

पर वह नीति कैसे न बदले ? दुकान पर बैठ कर अपने साथियों को हिदायतें देते और शहर के इस कोने से उस कोने तक साइकिल पर भागते समय या अपने चौबारे में खटिया पर लेटे हुये, अथवा फरवरी के अन्त में कम होती सर्दी के कारण प्रकट हो गये मच्छरों को हाथ से हांकते समय, डाक्टर के मस्तिष्क में यही विचार चक्कर लगाते रहते ।



अपने की चाह

चन्दा, कुसुम और रवि के स्कूल से लौटने की प्रतीक्षा कर रही थी। नाश्ता तैयार था। रवि आकर स्कूल के कपड़े बदलेगा। धोबी के यहाँ से आई उसकी निकर में वह टूट गये बटन टाँक रही थी। ड्योढ़ी में आहट सुनाई दी। समझा, बच्चे आ गये। साथ के कमरे में तख्त पर कुसुम के बस्ता पटकने का शब्द सुनाई दिया और फिर उसकी पुकार—"अम्माजी, अम्माजी! देखिये हम क्या लाये ?"

चन्दा ने कमरे से आँगन में जा कर पूछा—"क्या है ?"

लड़की ने दोनों हाथ पीठ पीछे छिपाये, लाड़ से कहा—'आप बताइये क्या है ?"

पीछे से रवि चिल्ला उठा—"अम्मा जी चिट्ठी है।"

अपना रहस्य यों खुल जाना कुसुम को अच्छा न लगा—"हाँ बताओ, कहाँ से आई ?"

चन्दा ने हाथ बढ़ाया—"ला दे ?" कुसुम मचल रही थी, "पहले बताइये, कहाँ से आई ?" छोटे भाई के साथ स्कूल से लौटते समय चिट्ठी दिखाकर उसने अभिमान प्रकट किया था, "देखो, बड़ी जमातों को पढ़ाने वाली यमुना दीदी ने अम्मा जी के लिये चिट्ठी दी है।" रवि ने रहस्य प्रकट कर दिया।

चन्दा ने उत्सुकता से पत्र के लिये कदम बढ़ाया। कुसुम का चाव अभी पूरा न हुआ था। वह पीछे हटने लगी। प्यार की झुंझलाहट से माँ ने बेटी को डाँटा—"क्यों इतरा रही है। देती क्यों नहीं चिट्ठी ?"

लिफाफे से पत्र निकाल कर चन्दा ने पढ़ा। एक बार पढ़ वह ठीक से समझ न सकी। बच्चों को नाश्ता देने की बात भूल कर फिर पत्र पढ़ा।

"प्यारी बहिन,

मिठाई खाने की आशा से शुभ सम्वाद दे रही हूँ। तुम्हारे बहनोई डाक्टर

खन्ना साहब बम्बई की राह विलायत से सकुशल लौट आये है और कानपुर मे है। एक दो दिन मे आपके यहाँ आ ही जायेगे परन्तु खबर देने का इनाम मिलना चाहिये। कुसुम के हाथ मिठाई भेज देना। नही, मै स्वयम आऊँगी।

अपना समाचार देना। जीजा जी को नमस्ते। बच्चो को प्यार!

तुम्हारी यमुना"

पत्र दो बार पढा। शायद आखो पर विश्वास न हुआ। तीसरी बार पढा। कॉपते हुये हाथो से बच्चो को नाश्ता दिया। उन्हे बाहर खेलने के लिये कह कर पत्र ले कर भीतर तख्त पर जा लेटी। डाक्टर साहब कितने अच्छे थे ? उनकी मृत्यु के समाचार से कितना दुख हुआ था ? परन्तु वे जो कुछ थे, राज के नाते से थे। यदि राज ने विवाह न कर लिया होता, इस समाचार से कितनी प्रसन्नता होती ? अब राज का क्या होगा ? दुनिया के सामने क्या मुह दिखायेगी ?

राजाराम सुबह आठ बजे बाहर चले जाते थे। एक बजे के लगभग लौट कर भोजन और विश्राम करते। चार बजे फिर काम पर चले जाते। सन्ध्या सात-आठ बजे तक लौटना होता। शुभ समाचार के रूप मे आये इस सकट की खबर पति को देने के लिये चन्दा व्याकुल हो रही थी। पति को इसकी सूचना दे कर उनसे इस सम्बन्ध मे कुछ बात करने से ही उसका मन हलका हो सकता था। कमरो से घिरे आगन मे झुट-पुटा सा हो गया था। पति के लौटने मे विलम्ब था। रवि और कुसुम पडोस के बच्चो से खेल रहे थे। दो वर्ष की छोटी लडकी को साथ ले कर नौकर 'भजन' तरकारी लेने गया हुआ था। चन्दा अकेली थी। उसे खयाल आ रहा था, रसोई-चौके मे देर हो रही है, उठ कर उस ओर ध्यान देना चाहिये परन्तु दुश्चिन्ता ने शरीर को निस्सत्व कर दिया। उसका मन व्याकुल हो रहा था, जाने क्या होने को है ?

नौकर के लौटने पर शशि माँ से चिपटने लगी। मानसिक बेचैनी मे चदा को यह अच्छा न लगा। रोती हुई लडकी को बाहर भेज कर वह स्वय चौके मे गई। कल्पना की उधेडबुन मे लगी, जैसे-तैसे खाना बनाने लगी। बच्चो को खिलाते-पिलाते और सो जाने के लिये भजन के साथ ऊपर भेजते समय बार-बार यही खयाल आ रहा था, 'ये' अभी तक आये क्यो नही ? विशेष विलम्ब न होने पर भी उसे जान पड रहा था जैसे बहुत देर हो गई। उसके कान निरन्तर ड्योढी की ओर, पति के कदमो की आहट की प्रतीक्षा मे थे। राजाराम साधारणत समय पर ही आये। नौकर को साइकिल सम्भालने के

लिये कह कर उन्होंने आँगन में कदम रखा ही था कि चन्दा के मन की व्याकुलता उबल-सी पड़ी—"इतनी देर कर देते हो ! इन्तजार में····· !"

"देर क्या कर देते हैं" राजाराम ने उत्तर दिया, "इस कमबख्त मुहम्मद अली के मारे परेशान हैं। रोज-रोज के वायदे ।" आँगन के बीच खड़े होकर वे भट्ठे वाले मुहम्मद अली की दगाबाजी का किस्सा सुनाने लगे। ऊपर के नये कमरे के लिये ईंटों का बयाना उसे दिया था। ईंटें उस ने नहीं दीं। बयाने के बीस रुपये लौटाने में एक बरस होने को आ रहा है। बिजनेस भी अजीब मुसीबत है, या तो यह कि अपने यहाँ कोई मुशी हो, उसे भेज दिया। यहाँ सब मुसीबत अपने ही सिर है। आदमी कहाँ-कहाँ जान दे ·· !"

रसोई से उठ कर चन्दा पति के कपड़े बदलाने चली गई। उस का खयाल था कि पति के खाना खा लेने पर ही यमुना के पत्र का जिक्र करेगी। उस की ओर देख कर राजाराम ने पूछा—"तुम्हें क्या हो रहा है ? क्या तबीयत खराब हो रही है ?"

"नहीं, ऐसे ही !" चन्दा ने बात टालने की कोशिश की।

राजाराम ने फिर पूछा—"ऐसे ही क्या ? बताती क्यों नहीं ? सिरदर्द हो रहा है क्या ? तुम खामुखा चौके में भी तो जा बैठती हो। सौ दफे तो मना किया !"

चन्दा ने पत्र पति को दिखाया। डाक्टर खन्ना के सकुशल लौट आने के समाचार से राजाराम बहुत उत्साहित हुये। विस्मय से भौं चढ़ा कर उन्होंने कहा—"पर आने से पहले पत्र ही लिख देता भला आदमी। हम स्टेशन पर जाते। जाने होटल में ठहरे हैं कि कहीं और ?"

चन्दा इस उत्साह में सहयोग न दे सकी, चुप रही थाली परोस कर पति के सामने रखते हुये उस से न रहा गया, बोली—"पर राज का क्या होगा ?"

मुख के ग्रास को चबाते हुये राजाराम ने उत्तर दिया—"हैं, राज से उसे क्या लेना है ? पर किया उस ने बुरा। ऐसी जल्दी भी क्या पड़ी थी।"

बहिन के प्रति लाछना चदा से न सही गयी। "जल्दी की उस में क्या बात थी ?" चंदा बोली, "डाक्टर साहब की मृत्यु की खबर आ चुकी थी ! उस बेचारी को क्या मालूम था धोका हो रहा है ?" चन्दा ने आँखों में छलक आये बेबसी के आँसू पोछ लिये।

थाली से हाथ खींच कर राजाराम बोले—"तो उस में क्या ? अपनी जिन्दगी खराब कर ली। बद्री के घर वाले भी तो उसे नहीं सहने के। अब

सारी उम्र बस आश्रम में रहे ! कितना अच्छा घर था। अरे घर मे चुप ही बैठी रहती। हाँ और क्या ? इतना बडा घर था ? पर उसे तो कांग्रेस की लीडरी लग रही थी। हमने तो तभी मसूरी से चलते वक्त ही कहा नही था, यह सब ठीक नही !"

चन्दा तड़प उठी—"तुम तो ऐसे कह रहे हो, जैसे उस ने जान-बूझ कर सब किया !" और कुछ कहने मे असमर्थ हो वह रो पड़ी।

राजाराम को चन्दा का रोना अच्छा न लगा, बोले—"तो इस मे हमने कौन लठ्ठ मार दिया ? अरे हमने यही तो कहा कि अब न खन्ना के घर की रही, न बद्री के घर की ? विधवा ही बनी बैठी रहती तो कम से कम खन्ना के घर मे उस के लिये जगह तो थी। और अब खन्ना लौट आया तो उस का सब कुछ था !"

चन्दा का रोना बन्द न हुआ—"करम फूट गये चुडैल के ! इस से तो अच्छा था, कमबख्त मर ही जाती। उस ने अफीम खाई तो किसी ने मरने भी न दिया।"

चन्दा के लिये रसोई मे बैठ सकना सम्भव न रहा। वह उठी और भीतर तखत पर लेट कर रोने लगी। पत्नी के यो रोते रहने पर राजाराम के लिये भोजन करना कठिन हो गया। आधे पेट ही उठ कर क्रोध मे उन्होने कहा—"तो इस में हमने क्या कर दिया ? जो होना है, सो होगा। खामुखा रोने से क्या मतलब ?"

ऊपर के कमरे मे बच्चे अभी सोये नही थे। माँ के रोने और पिता के ऊँचे स्वर मे बोलने का शब्द सुन कर कुसुम और रवि नीचे आ गये। उन्हे सम्भालने के लिये पीछे-पीछे नौकर भी आ गया। चन्दा को चुप न होते देख कर राजाराम क्रोध से आँगन मे आगे-पीछे चहलकदमी करते हुये कहते जा रहे थे—"जो बात हो, रोना ही रोना। जिन्दगी मुसीबत हो गई हमारी तो। दिन भर कोल्हू के बैल की तरह मरो। घर मे भी चैन नही… !" पति के क्रोध से चन्दा को और अधिक रोना आ रहा था। नौकर और बच्चो के विचार से, गले मे भरे क्रन्दन को निगल कर वह मुह धोने गुसलखाने मे चली गई।

पति के ठीक से भोजन न कर पाने की चिन्ता मे उस ने समीप आकर अनुनय के स्वर मे कहा—"तुम ने खाना भी नही खाया। आओ फिर से परोस दू, कुछ तो खा लो !"

यह प्रार्थना राजाराम ने स्वीकार न की—"हमारा क्या है ?" उन्होने

कहा, "तुम पहले अपने बेमतलब रो लो ।" और गुस्से से बैठक मे जाकर अपने कारोबार के कागज-पत्र उलटने लगे । उन के पीछे जाने का साहस चन्दा को न हुआ । उस ने नौकर को पुकारा, उस के लिये परस कर रसोई उठा दी और अपने बिस्तर पर जा लेटी । आँचल मे सिर लपेट कर बहुत देर तक चन्दा चुपचाप रोती रही । रुलाई का वेग समाप्त हो जाने पर बहुत देर तक राज के भविष्य की चिन्ता करती रही । कोई उपाय उसे बहिन की रक्षा का न सूझता था । केवल एक खयाल मन मे आता, यदि डाक्टर साहब लौट न आते तो गरीब की जिन्दगी जैसे-तैसे कट ही जाती । पर वे तो आ गये और देहली भी उन्हे जाना ही है । यदि वे देहली न जायँ ? पर यह कैसे हो सकता है ? सिर उठा कर उस ने अँगीठी की कानस पर रखी छोटी टाइमपीस की ओर देखा, साढे ग्यारह बजने को थे । उस के पलग के समीप राजाराम का पलग अब भी खाली था । सहसा उसे खयाल आया, नाराज होकर सोने नही आये । इतनी देर तक जागेगे; तबीयत खराब हो जायगी । सुबह फिर जल्दी ही उठना पडता है और दिन भर की मेहनत ।

चन्दा जीना उतर कर नीचे गई और पति को मना लाई । उन्हे एक गिलास दूध पिला कर वह चुप लेट गई । नीद आने से पहले राजाराम खन्ना की ही बात करने लगे । बडा आश्चर्य है, आने की खबर उस ने नही दी । मकान का पता लगाने का भी यत्न नही किया होगा । भाई बडे आदमी है । उन्हे अग्रेजी होटल मे ही अच्छा लगता है । यहाँ भी सब कुछ हो सकता था । कल ही पता लगा लूगा । वैसे बम्बई से हम लोगो से मिलने के लिये ही तो कानपुर आया है कि रास्ते मे मिलता जाय, नही तो झाँसी से सीधे दिल्ली न चला जाता ।

चन्दा ने एक दफे कहा—"चिन्ता क्यो करते हो । वे स्वय ही पता लगा कर आजायँगे । ऐसी क्या बात है ?"

राजाराम ने समझाया—"उसका क्या है, न भी आये । देहली और आगरे मे तो सब कोई कहेगे कि हम लोगो ने खबर नही ली । बेचारा होटलो मे ठहरा । लोगो का क्या है ? वे तो बात बनाना चाहते है और यहाँ तो पडोसी भी है कि कोई पता भी पूछे तो ठीक से बता नही सकते ।" पति को नीद आ जाने पर चन्दा फिर लम्बी सासे लेती देर तक राज के भविष्य की ही बात सोचती रही और फिर स्वय भी सो गई ।

× × ×

फैसिज्म के विरुद्ध कौमी जंग का मोर्चा सगठित करने की नीति के कार्य-क्रम मे डाक्टर ऐसा उलझा कि दो-तीन दिन उसे खाने-सोने की भी सुध न रही। उसे सन्तोप था, अब कम्युनिस्ट दल के गैरकानूनी गुप्त सस्था रहने पर भी कौमी-जग के कार्य को वह सरकार से आँखमिचौनी खेले बिना जनता मे कर सकेगा। उत्साह से उस ने अपने कार्यकर्ताओ को नयी नीति पर सब से अधिक ध्यान देने की हिदायत देनी शुरू की। इस उत्साह से राज के विषय मे यमुना से पाई खबर की चोट दब सी गई। चोट तो दब गई परन्तु कसक बनी थी। किसी भी समय राज का ध्यान आ जाता और वह उसे साधारण घटना समझने के लिये गुनगुनाने लगता—बीत गई सो बात गई, अब उस की याद सताये क्यो ? राजाराम और चन्दा का ध्यान आने पर सोचता, उस दिन उन लोगो का मकान सुविधा से न मिल सकने के कारण जा न पाया। एक तरह से अच्छा ही हुआ। उन लोगो को मुझ से मतलब भी क्या ?

अपने आपको वह समझाता, पति के नाते अधिकार की भावना को छोड कर राज से वह केवल सौहार्द्य और मित्रता की ही आशा रख सकता था। राज का बद्री से विवाह हो जाने के बाद मित्रता का नाता भी उस से सम्भव नही ? एक दफे राज से मिलकर बात करने की इच्छा अब भी थी परन्तु उसे वह राज के हित की दृष्टि से उचित न समझता था। उस का जीवित होना और लौट आना राज के लिये कितना बडा दुर्भाग्य हो गया है। राज के जीवन मे इतना बड़ा सकट पैदा कर देने से राज उसे क्या धन्यवाद देगी और उस से क्या प्रेम करेगी ? ...... और क्या, किसी एक व्यक्ति की मित्रता ऐसी वस्तु है कि बिना उस के जीवन को असफल समझ लिया जाय ? मन ही मन वह सोचने लगता, राज की अपेक्षा गुलशा की मित्रता कही अधिक सतोषजनक हो सकती थी। उसे खोकर यदि सतोष किया है तो राज से पुनर्मिलन की आशा टूट जाना ही कौन बडी बात है ? कितने ही नये व्यक्तियो से मिलना होता है, कितनो से ही और होगा। परस्पर समझने वाले क्या और नही मिल सकते ?

इधर-उधर चक्कर लगाकर वह सध्या के पाँच बजे कुछ देर के लिये, दुकान पर प्रतीक्षा करते मरीजो को दवा देने के लिये लौटा। किवाड खोलते ही सामने एक लिफाफा, पुर्जे से नत्थी किया फर्श पर पडा मिला। पुर्जा डा० बी० डी० वर्मा के नाम था और लिफाफे पर पता लिखा था, कैप्टेन डा० बी० डी० खन्ना, आई. एम एस। लिफाफे का पता देख कर वर्मा का माथा ठनका परन्तु साथ का पुर्जा पढने से समाधान हो गया। पुर्जा अग्रेज़ी मे था —

"प्रिय डाक्टर वर्मा, कृपया साथ का लिफाफा कैप्टेन खन्ना को पहुँचा दीजिये। वे मेरे निकट के सम्बन्धी हैं। उन से जरूरी काम है। उन के कहे अनुसार यह पत्र आपकी मार्फत उन्हे मिल जायगा। भवदीय, राजाराम महरोत्रा परमट, कानपुर।"

वर्मा समझ गया—शिवनाथ से इन लोगों को उस के कानपुर में होने का समाचार मिल गया है। लिफाफे के भीतर भी अंग्रेजी में पत्र था—"प्रिय भाई खन्ना, आपके सकुशल लौट आने से जो प्रसन्नता हुई, उसे शब्दों में प्रकट करना सम्भव नहीं। अत्यन्त आश्चर्य इस बात से हुआ कि आने की सूचना आपने नहीं दी। मैं स्टेशन पर ही आपसे मिलता और किसी प्रकार का कष्ट न होने देता। यमुना से मालूम होने पर कि आप कानपुर में है, आज सुबह मैंने यहाँ के सभी बडे होटलो मे दरयाफ्त किया परन्तु कुछ पता न चला। शिवनाथ से डा० वर्मा का पता चला। बिना मिले यदि आप दिल्ली चले गये तो हमें बहुत दुख होगा। शायद आप छावनी मे ठहरे है? हम लोग आप की प्रतीक्षा कर रहे है। आप से कुछ बहुत ही आवश्यक बातचीत भी करनी है। चन्दा की ओर से नमस्ते, बच्चों का प्रणाम। सस्नेह, आर० आर० महरोत्रा।"

पत्र पढ कर खन्ना सोचने लगा, वह राजाराम के यहाँ जाये या नहीं। चन्दा के पुराने स्नेहमय व्यवहार के कारण मन चाहता था, जाये परन्तु साथ ही विचार आता, अब शायद वह मुझे देख कर कुण्ठित हो? पर ऐसी बात होती तो राजाराम यह पत्र ही क्यो लिखते? वह दुविधा में था। विचार आया—मेरे उन के यहाँ न जाने से कही राजाराम शिकायत भरा पत्र देहली मे बडे भाई को लिख दे तो अच्छा बखेडा खडा हो जायगा। निश्चय किया, जितनी जल्दी हो, उधर जाकर स्थिति सम्भाल ली जाये।

× × ×

खन्ना के कानपुर मे रहते हुये भी मिलने न आने के कारण राजाराम खिन्न थे। चन्दा खन्ना की आँखो से बचना चाहती थी। उसे बुला कर मिलने का उत्साह चन्दा को न था। इस विषय में बात चलने पर वह कुछ खिची रहती। चन्दा के इस व्यवहार से राजाराम उत्तेजित हो जाते। वह चाहती थी, इस विषय मे चर्चा न हो तभी अच्छा। उस के मन मे निरन्तर एक ही विचार चक्कर काट रहा था, खन्ना को शायद मालूम हो ही गया होगा!....वह क्या करेगा? राज का क्या बनेगा?... आदमी तो भला था परतु करेगा क्या?

दोपहर मे छोटी लड़की को सुला कर चन्दा ने उसे देखते रहने का काम नौकर को सौप दिया। दोपहर का भोजन कर राजाराम विश्राम के लिये लेटते तो चन्दा को समीप बुला कर नीद आने से पहले बातचीत करते रहते। पति के सो जाने पर चन्दा उठ कर कोई काम करने या कुछ पढने लगती। नीद उसे दोपहर मे आती न थी। भोजन और नीद की मात्रा उस की स्वभाव से ही कम थी। उसे व्यसन था पुस्तके पढने का।

राजाराम स्त्री से कह रहे थे—"खन्ना की कानपुर छावनी मे बदली हो गई होगी। सोचता होगा, किसी दिन जाकर मिल आऊँगा। यदि सीधा दिल्ली जाता तो जरूर मिल के ही जाता। शिवनाथ से पता लिया था कि ठहरा कहाँ है, उसे भी मालूम नही। उसे रामनारायन के बाजार मे वर्मा मैडिकल हाल का पता दे गया था। हमने तो कभी यह नाम भी न सुना था। जाकर देखा, ऐसी मामूली सी ही जगह है। कभी का कोई परिचित होगा। दुकान बन्द थी। खन्ना के नाम पत्र छोड आया हूँ।"

चन्दा ने परेशानी प्रकट कर कहा—"यही समझ नही आता, सेना के दफ्तर से वह खबर आई कैसे ? सेना मे ज़िन्दा होते तो वह खबर कैसे आती ? और फिर अच्छे भले थे तो पत्र क्यो नही लिखा ? आख़िर बात क्या है ?"

"भई यह उस से मिले बिना कैसे कहा जाय ? कुछ तो बात होगी ही। इसी से तो मिलना जरूरी है" राजाराम ने उत्तर दिया।

चन्दा ने चिन्ता से दोहराया—"मुझे तो यही समझ नही आता कि राज बेचारी का होगा क्या ?"

"अब राज से उसे क्या लेना-देना है ?" राजाराम ने उत्तर दिया, "हाँ बीमा कम्पनी वाले ज़रूर बात उठावेंगे। कम्पनी ने बीमे की रकम राज को दी है। उस पर जालसाजी का मुकद्दमा चल सकता है।"

चन्दा तड़प उठी—"राज का इस मे क्या कसूर है। उस ने तो सरकारी चिट्ठी दाखिल की थी और रुपया तो लिया उस के जेठ ने।"

राजाराम लेटे से उठ बैठे—"बीमा था तो राज के ही नाम। रकम के लिये कम्पनी को दरखास्त तो राज के दस्तखत से ही दी गई थी। रसीद पर भी उसी ने दस्खत किये है।" उन्होने हाथ बढा कर समझाया।

बेबसी मे चन्दा निरुत्तर हो गई। कुछ देर चिन्ता मे डूबे रहकर उस ने पूछा—"ऐसे तो बद्री बाबू से विवाह के बारे मे भी झगडा उठ सकता है ?"

"हाँ" राजाराम ने हामी भरी, "कानूनन तो वह अब भी खन्ना की स्त्री है।"

"क्यों" चन्दा ने खिन्न स्वर में पूछा, "बद्री बाबू से उस की सिविल-मैरेज अदालत में नहीं हुई ?"

"हुई तो क्या ?" राजाराम ने हाथ उठा कर विरोध किया, "हिन्दू-विवाह टूट थोड़े ही सकता है। सिविल-मैरेज तो गलती से हुई। उसमें तलाक भी हो सकता है। हिन्दू-विवाह का तलाक थोड़े ही हो सकता है। अदालत से सिविल-मैरेज रद्द हो जायगी।"

"हाय-हाय अब वही बद्री बाबू को कैसे छोड़ सकती है!" रोकर चन्दा बोली, "इससे तो अच्छा है, कम्बख्त इनके दिल्ली पहुँचने से पहले मर जाय। मुसीबत को एक लड़का और हो गया है! जाने किन कर्मों का फल पा रही है।"

राजाराम राज की भूल साबित कर संतोष से पलंग पर लेट गये। उन्हे नींद आ गई।

पति को सोया देख कर चन्दा नीचे कमरे में तख्त पर जा बैठी। विक्षिप्त मन किसी काम मे न लगता था। मन की बेचैनी के कारण उपन्यास पढने मे भी जी न लगा। रो-रो कर सिर दर्द हो गया। सिर दर्द मे लेटे-लेटे नींद आ गई। पति के बार-बार पुकारने से नींद खुली। वे बाहर जाने के लिये कपडे माँग रहे थे। ज़रूरी काम से उन्हे एक जगह जाना था। हाथ-मुह धोने के लिये पानी देने वाला कोई नही था। कितनी बार नौकर और चन्दा को पुकारने के बाद वे खिन्न हो रहे थे।

चन्दा ने पुकार सुन उठ कर जल और तौलिया दिया, पहनने के कपडे निकाले। पति के बाहर चले जाने के बाद सोच रही थी, क्या करे! बच्चो के स्कूल से लौटने मे अभी समय था। शरच्चन्द्र का 'चरित्रहीन' उसे बहुत पसन्द आया था। बहुत पहले पढा था। दुबारा पढने पर भी वह वैसा ही रोचक जान पडा। पुस्तक उठा कर पढने का यत्न किया पर मन न लगा। पुस्तक एक ओर रख कर वह सोचने लगी, क्या होगा ? ड्योढी मे आहट सुनाई दी। चन्दा लेटी रही कि नौकर जाकर देख लेगा।

राजाराम पर्दे के समर्थक नही थे। उन्होंने युनिवर्सिटी मे बी० ए० तक शिक्षा पाई थी। अधिकाश मे नये ढग के शिक्षितो की ही सगति पसन्द करते। सामर्थ्य भर वे नये तौर-तरीके से चलते भी थे। चन्दा के व्यवहार और रूप मे व्यक्तित्व झलकता था। उसे साथ लेकर कही आने-जाने में या परिचितो मे उस का परिचय कराने मे उन्हे गौरव अनुभव होता था। उन के अन्तरग, परिचित और बिरादरी के सभी लोग जानते है कि चन्दा एन्ट्रेंस पास थी और

हिन्दी की कई परीक्षाये भी दे चुकी थी, आगरे के कपूर परिवार की लडकी थी। उस के सम्बन्धी प्राय. अच्छे सरकारी पदो पर थे। राजाराम की अनुपस्थिति मे भले आदमियो के आने पर चदा बैठक मे जा जरूरी बातचीत भी कर लेती थी। उस समय विक्षिप्त होने के कारण उस का मन उठने को न हुआ। नौकर लडकी को ऊपर बहला रहा था, आहट न सुन सका। चन्दा ने उसे पुकार कर ड्योढी मे देखने को कहा। नौकर ने आकर खबर दी, कोई डाक्टर खन्ना साहब है।

"खन्ना साहब ?" चौक कर चन्दा ने पूछा।

"जी, बाबू जी को पूछते है। हमने कहा, घर पर नही है। आप से मिलने को कहते है !"

"बैठक मे बिठाओ !" चन्दा ने माथे पर हाथ रख कर कहा। साडी मुस गई थी। भीतर जा कर दूसरी पहनी। सहमते-सहमते बैठक मे गई। बैठक मे पाँव रखते ही एक बार सन्देह हुआ क्या यह डाक्टर साहब है ? खन्ना की आत्मीयता भरी मुस्कान ने सन्देह दूर कर दिया। विस्मय अवश्य हुआ। खन्ना को उसने देखा था, सदा सुथरा सूट पहने या घर के भीतर भी अच्छे कीमती कपडे ढंग से पहने हुए। उस समय खन्ना पहने था मामूली धोती-कमीज और टोपी, साधारण स्थिति के लोगो जैसी ? चेहरे और व्यवहार का वह रोब जैसे गायब था।

"भाई साहब को मेरा पता लगाने मे बहुत कष्ट हुआ। मै ऐसे ही कुछ उलझन मे फँसा था। आने को ही था, जरा देर हो गई।" खन्ना ने क्षमा-सी माँगी।

"मै तो आपको पहचान ही न सकी। यह आपने क्या ढग बनाया है ?" चन्दा ने पूछा।

"ऐसी कोई खास बात तो नही है।"

"आप ठहरे कहाँ है ? यहाँ क्यो नही आये ? क्या उलझन लगा रखी है आपने ?" चन्दा ने खन्ना के कपडो की ओर ध्यान दिया।

"क्या कहूँ ? · यही समझ लीजिये कि जिस कारण आपको पहचानने मे अडचन हुई ?" अर्थपूर्ण मुस्कराहट से खन्ना चन्दा की ओर देखता रहा।

खन्ना के उत्तर से चन्दा स्थिति को कुछ समझ न सकी परतु उसके व्यवहार से मन मे बैठी आशंका मिटने लगी। मन ने चुटकी ली, यमुना ने शायद अभी कुछ बताया नही ? पूछा—"क्या सीधे बम्बई से आ रहे है ?"

कुछ झिझकते हुए खन्ना ने उत्तर दिया—"नही, पर अभी देहली नही गया हूँ।" अपनी वास्तविक स्थिति छिपा रखने की सावधानी चन्दा की आग्रह-पूर्ण दृष्टि के सम्मुख शिथिल होने लगी। आत्मीयता के प्रोत्साहन से सचाई होठो पर आ जाना चाहती थी परन्तु अनावश्यक बात क्यो कही जाय। सक्षेप मे ही उसने उत्तर दिया।

"आने की खबर नही दी आपने ? इतने दिन पत्र क्यो नही लिखा ?" खन्ना के पत्र न लिखने के भयकर परिणाम की स्मृति ने सहसा चन्दा के हृदय को दहला दिया, कण्ठ रुध गया। अपने को सभाल उस ने कहा—"आइये यहाँ बाहर के आदमियो की तरह क्यो बैठे है, भीतर आइये।" अपने चेहरे का भाव खन्ना की आँखो से छिपाये रखने के लिये वह ओठ दबाये आगे-आगे चली।

छोटी आराम कुर्सी, खन्ना के लिये खीच कर वह तखत पर बैठ गई। बठते ही हृदय का उद्वेग रुलाई के रूप मे आँखो से वह गया। आवेग की मूढता मे वह समझ न सकी, वह क्यो रो पडी ? खन्ना के प्रति करुणा से या राज के प्रति आशका से ?

चन्दा की आत्मीयता से खन्ना का आत्मरक्षा, तटस्थता और सावधानी का भाव अस्थिर हो गया था। उसे आँचल मे मुख छिपाये, सिसकते देख कर वह वह गया। अपनी कठिन परिस्थिति भूल कर चन्दा की व्याकुलता मे सान्त्वना दे पाने के लिये उस का हृदय बेचैन होने लगा। सहसा वह समझ न सका, क्या कहे ?

हृदय का आवेग सँभाल न सकने के कारण चन्दा के आँसू वह आये थे। बाँध की दीवार मे एक बार छिद्र बना लेने पर जल का प्रवाह बाँध की मिट्टी को बहा कर छिद्र को चौडा करता जाता है और प्रवाह को रोकना प्रतिक्षण कठिन हो जाता है, वैसे ही चन्दा की रुलाई का प्रवाह हो गया। खन्ना के सम्मुख रुलाई न रोक सकने की लज्जा के कारण वह मरी जा रही थी। अपनी निर्बलता का यह प्रमाण उसे और भी अधिक निर्बल और असहाय बनाये दे रहा था। रुलाई रोकने का प्रयत्न छोड कर वह कुछ देर रोती रही।

खन्ना के लिये परिस्थिति असह्य हो रही थी। अन्याय स्वय उस पर होने के बावजूद उसे अनुभव हो रहा था, चन्दा को दुखी कर यो रुला देने का कारण वही है। उसका हृदय मुँह को आने लगा। साहस कर उस ने कहा—"मुझे अत्यन्त खेद है, मेरे आने से आपको इतना दुख हुआ।"

चन्दा आँचल मे मुख छिपाये उठ कर आँगन मे चली गई। खन्ना कुर्सी

पर वैठा रह गया। वाहर जल गिरने का शब्द सुन कर समझा, चन्दा मुँह धो रुलाई रोक, सयत होने का यत्न कर रही है। दीर्घ निश्वास ले कर वह उसके लौट आने की प्रतीक्षा में वैठा रहा। चन्दा मुह धो कर लौट आई। उसकी आँखे अव भी खूव लाल थी परन्तु चेहरे पर उसकी संतत मुस्कान लौट आई थी, एक विचित्र मिश्रण !

इससे पहले खन्ना ने उसे सदा मुस्कराते ही देखा था। उसकी मुस्कराहट से ही वह चन्दा को पहचानता था परन्तु इस क्षण की मुस्कराहट मे उसे चन्दा की विनोद-प्रियता और सौजन्य नही दिखाई दिया। दिखाई दिया, उसे खिन्न न करने के लिये चन्दा का अपने हृदय पर जब्र। रोने की वात को भुला देने के लिये, स्वर को साधारण वनाने का यत्न कर चन्दा ने पूछा—"अच्छा कहिये आप क्या पसन्द करेंगे, चाय पियेंगे या शरवत ?"

"जो हो ले लूगा" खन्ना ने उत्तर दिया। चन्दा की तरह अवसाद की अवस्था से सहसा स्फूर्ति के भाव मे आ जाना उसके लिये सम्भव न हुआ।

"अभी एक मिनट मे आई !" चन्दा आँगन मे गई। नौकर को चाय का पानी उवालने के लिये कह कर, खन्ना के समीप लौट कर, स्नेह की दृष्टि से देख कर प्रश्न किया, "डाक्टर साहव, आप रहे कहाँ इतने दिन ?"

खन्ना चन्दा की स्फूर्तिप्रद मुस्कराहट का प्रभाव अनुभव किये विना न रह सका। उत्तर दिया—"वह वडी लम्वी वात है और पुराण की कथा की तरह विचित्र है। आप पहले अपनी सुनाइये।" आँगन मे कपडे की बिल्ली को डोर से खीचती लडकी की ओर सकेत कर उसने पूछा, "यह सवसे छोटी है न ?"

"जी" फूटती हँसी को दवा कर चन्दा ने उत्तर दिया।

"सवसे वडी तो कुसुम है और रवि और उसके वाद ?"

"वस यही !" चन्दा ने हँस दिया।

"अच्छा, भाई साहव मजे मे है ?"

"जी हाँ, सव ठीक चल रहा है ? हम लोगो का क्या है, जैसे तव थे, वैसे अव। विलायत आप कव चले गये थे ? कुछ पता ही न चला। जैसे अन्तर्ध्यान हो गये !"

"कुछ वैसी ही वात समझिये !" खन्ना ने उत्तर दिया, "लम्वी कहानी का सक्षेप यह समझिये कि अव याद करने से स्वप्न सा जान पडता है। अत्यत भीषण, कल्पनातीत रोमाच, कठोर वास्तविकता सभी कुछ देखा। और'''और अव आपके सामने वैठा हूँ और आप पहचान भी न सकी !"

"यह बात तो नही हा आपने खूब कोशिश की है कि पहचाने न जायँ !" चन्दा ने नेत्र झपक कर मुस्करा दिया।

"आपका खयाल ठीक ही है !" डाक्टर ने भी मुस्करा दिया, "परन्तु जो अपने है उन्हे तो पहचानना ही चाहिये !"

"डाक्टर साहब, कहिये न ; हुआ क्या ?" चन्दा के तीव्र आग्रह से खन्ना ने बीस-पच्चीस वाक्यो मे तुत्ती-कैम्प से ले कानपुर तक की रेखा-सी अतीत के नकशे पर खीच दी। कहते-कहते अपनी दृष्टि चन्दा की ओर से हटा कर आगन की ओर देख वह कह गया, "और देहली में जो कुछ हो गया, वह भी मै सुन चुका हूँ।"

खन्ना का यह वाक्य चन्दा के हृदय पर नश्तर की तरह लगा। खन्ना कहता चला गया "उस में दोष किसी का नही। जो हो गया, हो गया !"

खन्ना दृष्टि आँगन की ओर ही किये रहा और चन्दा सिर झुकाये बैठी रही। खन्ना के स्वर की गम्भीरता से चन्दा के लिये समझना शेष न रहा कि 'जो हो गया, हो गया' उपेक्षा से नही, निश्चय से कहा गया है। उदारता का वह शीतल जल कितनी गहराई से निकला था ! सिर उठा कर खन्ना की ओर देख सकना उसके लिये सम्भव न हो सका। हृदय के आवेग को थामे रखने के लिये वह पथराई आखो से फर्श की ओर ही देखती रही। खन्ना के उस वाक्य के पहले भाग ने नश्तर के चुभने की सी पीडा दी और पिछले भाग ने नश्तर के घाव से पीडा का कारण निकल जाने जैसी सान्त्वना दी। उत्कट पीडा शान्त हो कर एक मीठा सा दर्द शेष रह गया। खन्ना ने एक बार चदा की ओर देखा और तुरन्त ही उसकी दृष्टि आँगन की ओर लौट गई। उस अवस्था में देखे जाने के सकोच से वह चन्दा को कुण्ठित नही करना चाहता था।

खन्ना की यह सूक्ष्म सहृदयता चन्दा से छिपी न रही। लज्जा की, अनुभूति ने उसे सचेत कर दिया। नौकर चाय की ट्रे ले आया। चन्दा को शका हुई, शायद उसकी बेखबरी मे नौकर कुछ देर से वैसे ही खडा है। सकोच से उसने कहा—"अरे बोलता क्यो नही।" और ट्रे उसके हाथ से ले ली।

"नही अभी ही आया है" खन्ना ने कहा। और भी सकुचाकर चन्दा ने उसकी ओर देखा। खन्ना मुस्करा रहा था। लज्जा से चन्दा ने सिर झुका लिया परन्तु इस लज्जा मे खेद नही सतोष था। उस समय लज्जा का एक और कारण हो गया। चन्दा को याद आया, चाय ले आने से पहले मिठाई लाने

के लिये नौकर को भेजना वह भूल गई थी, "जरा ठहरिये, दो मिनिट मे यह कुछ ले आता है ।" चन्दा ने कहा ।

सकोच का भाव मिटा देने के लिये खन्ना ने कुर्सी आगे खीच ली—"नही अब नही ठहर सकता । जब चाय आ गई तो मिठाई की प्रतीक्षा कैसे ? उसका मुझे शौक भी नही ।" चन्दा उठी और शशि के लिये लाये डिब्बे से एक तश्तरी मे बिस्कुट ले कर खन्ना के सम्मुख रख दिये ।

चन्दा खन्ना के लिये एक प्याले मे चाय बना रही थी । चन्दा के हाथो की ओर देखता हुआ वह चाय के कषाय रस को मधुर बना सकने वाली ममता अनुभव कर रहा था । प्याला तैयार कर चन्दा ने आगे बढा दिया ।

"और आप ?" खन्ना ने उसकी ओर देख प्रश्न किया ।

"मै चाय कम ही पीती हूँ, आप लीजिये !" चन्दा ने उत्तर दिया ।

"आप भी पीजिये ! . . . इतने दिन बाद पहिली बार मै अपने घर मे अकेला खाऊँ ?" चन्दा की ओर उसने देखा ।

"अभी एक मिनिट मे प्याला लाती हूँ ।" प्याला लाने के लिये नौकर को न पुकार कर वह स्वय उठ गई । शायद मुख से शब्द निकाल कर वह खन्ना की बात से हृदय मे आई मधुरता की अनुभूति को फीका नही हो जाने देना चाहती थी । खन्ना के साथ बैठ कर पिया जाने वाला चाय का प्रत्येक घूट कितना मधुर था । उसे चाय का नही स्नेह का स्वाद आ रहा था ।

स्कूल से लौटे दोनो बच्चे भागते हुये भीतर चले आये । चन्दा ने उन्हे खन्ना को नमस्ते करने के लिये कहा । खन्ना ने कुसुम को साढे पाँच वर्ष पूर्व देखा था, जब वह तुतलाकर बोलती थी और उस का स्टैथिसकोप पा जाने पर गले मे पहन, खुश होकर उसे माला समझती थी । वह बात याद आ जाने पर खन्ना ने उसे समीप बुला कर पूछा—"कुसुम माला पहनोगी ?"

कुसुम अपरिचित व्यक्ति के आत्मीयता दिखाने से सकोच अनुभव कर रही थी और रवि विस्मय मे आँखे फैला कर उस की ओर देख रहा था । चन्दा ने बच्चो को सम्बोधन कर पूछा—"पहचानो !"

खन्ना ने बच्चो की ओर से वकालत कर कहा—"जरूर पहचान लेंगे । आप जो पहचान गई थी ?"

चन्दा ने नौकर को पुकार कर बच्चो को नाश्ता देने के लिये कह दिया । स्वय उठने को उस का मन न हुआ । कुछ बातचीत हो नही रही थी । कहने के लिये दोनो के पास ही कुछ कम न था परन्तु उस पहली मुलाकात में

गहराई को छुये बिना कहने लायक बात न सूझ रही थी। ऐसी ही बातें कि राजाराम को कितना काम करना पड़ता है, युद्ध के कारण खर्च का बढ़ जाना इत्यादि। खन्ना ने कलाई की घड़ी की ओर देख कर कहा—"तो उस समय आज्ञा दीजिये।"

"यह कैसे हो सकता है?" विस्मय से चन्दा ने पूछा, "अब आप कहाँ जायगे? यह आप का घर है और किसी जगह आप नहीं ठहर सकते!"

"घर तो है, पर काम के लिये बाहर भी तो जाना ही होता है। भाई साहब भी तो जाते ही हैं!" खन्ना हँस दिया।

"हाँ तो उन्हें आ लेने दीजिये! उन से मिले बिना आप कैसे जा सकते हैं?"

"फिर आऊँगा?"

"आप जा कहाँ रहे हैं? सामान कहाँ है आप का?"

"सामान कुछ विशेष नहीं। एक जगह ठहरा हूँ उस की आप चिन्ता न कीजिये। मैं आऊँगा!" खन्ना ने आश्वासन दिया।

"यहीं ठहरियेगा न?" उस की आँखों में देख कर चन्दा ने पूछा।

आत्मीयता के इस आग्रह के सम्मुख झूठ बोलने की इच्छा खन्ना को न हुई—"उस बात को जाने दीजिये। मैं कष्ट में नहीं हूँ!" उस ने कहा।

"यहाँ कुछ कष्ट ही सही पर आप का घर है!" चन्दा ने जोर दिया।

"ठीक है, पर कुछ ऐसे ही कारण हैं? विश्वास कीजिये। व्यक्तिगत कारण कोई नहीं है। मुझे कुछ ऐसा ही काम है?"

चन्दा का विस्मय और बढ़ा—"पर क्या कारण है? क्या मैं पूछ नहीं सकती?"

"फिर बात होगी तो कहूँगा। आप से क्या पर्दा। मैं कल आऊँगा किसी समय।"

"खाना यहाँ नहीं खाइयेगा, यह आप की ज्यादती है। आप के भाई साहब क्या कहेंगे?"

"आज कुछ बहुत आवश्यक काम है। भाई साहब को मनाने की जिम्मेवारी आप पर है। आज कुछ मजबूरी ही समझ लीजिये। स्वयं मेरी इच्छा आप के समीप से उठ कर जाने की नहीं है लेकिन काम की मजबूरी भी तो कोई चीज है!" खन्ना चला गया।

राजाराम ने सुना चौथे पहर खन्ना आया था। दो घण्टे से अधिक बैठ

कर उन से मिले बिना चला गया। स्त्री से उन्होंने कहा—"तुम ने जाने क्यो दिया ?" खन्ना से मिलने का अवसर चूक जाने से उन्हे व्याकुलता होने लगी।

चन्दा ने कहा—"बहुत जोर दिया पर उन्हे बहुत ही जरूरी काम था। कल आयेगे। मेने कह दिया है, तुम्हारे घर रहते ही आयेगे।"

भोजन के समय और बाद मे खन्ना का ही जिक्र चलता रहा—"ईश्वरदास मजे मे बीमे की रकम डकार गये है। राज को उस में क्या मिला ? और जायदाद का आधा भाग भी। पीछे था कौन जो कुछ बोलता ? अब पता चलेगा।"

बातचीत मे चन्दा ने सकेत कर दिया कि राज की बात खन्ना को मालूम हो गई है पर उसे कोई शिकायत नही। उस ने कहा—"मै तो विस्मित रह गई, उन का दिल देख कर। कहते थे, राज का उस मे क्या दोष, जो हो गया, हो गया!"

पत्नी की अदूरदर्शिता की याद दिला कर राजाराम ने कहा—"हमने कहा नही था, राज से उसे क्या लेना है ? उसे क्या कमी है ? उस के लिये बीसियो अच्छे से अच्छे घर की लडकियाँ है। पर सवाल तो यह है कि वह दिल्ली जायेगा तो बात फैलेगी या नही ?"

"अगर दिल्ली न जायँ तो कोई बात नही उठ सकती ?" चन्दा बोली। राजाराम ने उत्तेजित होकर विरोध किया, दिमाग फिर गया है तुम्हारा ? अपने घर नही जायगा ? अपनी जायदाद छोड देगा ? मकान और दूकान सब कम-से-कम पचास हजार का हिस्सा होगा ? कैसे छोड देगा सब को ?"

चन्दा निरुत्तर हो गई। उसे कुछ बोलते न देख कर राजाराम बोले—"और क्या, उसे भी तो अपनी जिन्दगी बितानी है। उन महारानी से तो तीन बरस नही कटे। आखिर वह भी तो ब्याह करेगा, घर बसायेगा!"

सिद्धान्त रूप से चन्दा स्त्रियो के लिये पुरुषो के समान व्यवहार और अधिकार की पक्षपाती थी, विधवा-विवाह को भी बुरा न समझती थी परन्तु राज के पुनर्विवाह करने की बात पर वह कभी अभिमान से सिर ऊँचा न कर सकी थी। यदि राज विधवा होकर सम्पूर्ण आयु वैधव्य मे बिता देती तो उसे अभिमान होता लेकिन पति का यह कोंचा वह सह न सकी। "क्यो" उस ने पूछा, "डाक्टर साहब के लिये दिल्ली जाकर विवाह करना और घर बनाना जरूरी है तो राज के ब्याह कर लेने पर कौन ताना है ?"

यह तर्क राजाराम को बेहूदा जान पडा। "वाह" उन्हो ने कहा, "औरत

दूसरा व्याह करके बैठ गई तो भी बेचारा व्याह न करे ? क्यो उसे जिन्दगी नही बितानी ?"

चन्दा चुप नही हुई, उत्तर दिया—व्याह करके बैठ गई या मर ही गई। ऐसे ही अगर मर्द व्याह कर ले या मर जाय तो औरत के व्याह कर लेने मे क्या बुराई है ? राज भी तो उस समय एक तरह विधवा ही थी तो उसे सजा किस बात की ?"

"हाँ-हाँ बहुत अच्छा है, तुम बराबरी का दावा करो। तुम भी ऐसा ही कर लो न।" राजाराम ने क्रोध मे नेत्र लाल कर कहा।

चदा सन्न रह गई। उसे ऐसे उत्तर की आशा न थी। कुछ उत्तर न दे कर वह रो पडी। राजाराम गुस्से मे चुप पडे रहे। चदा के बहुत देर तक रो लेने के बाद उन्होने कहा—"सुनो तो।" पत्नी को चुप होते न देख कर स्वय दुखी और पीडित के स्वर मे उन्होने चन्दा की ज्यादती की शिकायत की। दीर्घ विवाहित जीवन के अनुभव से वे जानते थे कि पत्नी को मना लेने के कौन अव्यर्थ उपाय है।

दूसरे दिन खन्ना दोपहर में आया तो राजाराम अभी लौटे नथे। चन्दा ने उलाहने के स्वर मे शिकायत की—"कल आप से इतना कहा कि ठहर जाइये। ये लौटे तो बहुत नाराज़ हुए कि क्यो जाने दिया।"

"मै तो आप से कह ही गया था कि नाराज़ न होने देने की जिम्मेवारी आप पर है।" खन्ना हँस दिया, "और आप ने नाराज होने भी न दिया होगा।" इस प्रसंग से रात मे बहुत देर तक रोने की याद चन्दा को आ गई। विवाहित जीवन मे वह नयी बात न थी। उपेक्षा से उस ने सिर हिला दिया।

"अभी नही आये ?" खन्ना ने पूछा।

"आते होगे बैठिये।" चन्दा ने उतर दिया, "आप क्या ऐसे ही आये है ?"

"क्यो कैसे ?"

"आप का सामान।"

"मै कल कह तो चुका आप से, इस बात को मन मे न लाइयेगा ?"

"कारण तो आपने नही बताया ?"

"कहूँगा, ऐसी जल्दी क्या है ?"

राजाराम आये ओर खन्ना को बाहो मे लेकर अत्यन्त उत्साह से मिले। पहले खबर न देने का गिला किया। राज के विवाह की रोमाचक खबर सुनाने का अवसर यमुना और चन्दा ने शेष न रहने दिया था। सकेत से उन्हो ने

इतना तो कहा ही—"खैर भाई, जो कुछ हो गया, अब क्या किया जाय।"

एक थाली मे भोजन कर दोनो मे बहुत देर तक बातचीत होती रही। चन्दा समीप बैठी सुन रही थी। राजाराम बार-बार दिल्ली का चर्चा छेडते और खन्ना कतरा जाता। वे बहुत देर तक अपनी ही सुनाते रहे। कैसे 'सम्पतराम चम्पतराम' ने काम बढने पर उन की कमीशन घटा दी और उन्हो ने उन का काम छोड दिया। कपडे का काम पहले ही छोड चुके थे। यदि वह इस समय किया होता तो बडा अच्छा अवसर था। जिनके पास कपडा था, उन्हो ने खूब सोना समेटा। अब वे फौज मे माल देने के ठेके लिये हुये थे। इस समय कुछ और काम तो रह ही नही गया था।

चन्दा को इन बीसो दफे सुनी बातो मे बिलकुल रस नही आ रहा था। वह बार-बार टोक बैठती—"डाक्टर साहब अपनी सुनाइये, गजनी और रूस का कुछ हाल सुनाइये।" उसे वह उपन्यास से अधिक रोचक जान पडता था परन्तु राजाराम देहली के विषय मे आवश्यक बात करने लगते, "कब तक वहाँ जाने का विचार है ?"

"जाऊँगा क्यो नही ? जल्दी ही जाऊँगा" खन्ना ने कहा, "आप से सब सलाह करके निश्चय करूँगा।"

सध्या समय राजाराम को बाहर जाना आवश्यक था। खन्ना को भी चलने के लिये तैयार होते देख कर राजाराम ने चौक कर कहा—"नही, जाना कहाँ है ? यही रहना होगा।"

"हाँ, मै यही हूँ लेकिन दूसरी जगह रखना भी जरूरी है। वजह यह कि मजदूरो-वजदूरो से मिलने-जुलने के लिये यहाँ बुलाना कुछ ठीक नही जँचेगा।" कुछ सोचकर खन्ना ने उत्तर दिया।

दलील राजाराम को जँच गई—"तो तुम वह जगह अपनी रखो लेकिन रहना यही होगा। अपना घर होते हुये तुम दूसरी जगह रहो, यह नही हो सकेगा।" उन्होंने स्वीकृति दी।

राजाराम खन्ना के प्रति अत्यन्त अनुरक्त हो गये। जितनी देर घर पर रहते, खन्ना के समीप होने पर उसी से बात करते रहते। इस प्रकार गिरी हुई अवस्था मे दुकान खोल कर खन्ना का बैठना, उन्हे जँचता न था। बाका-यदा डाक्टरी पास, सेना का कैप्टेन और विदेश मे चिकित्सा की खोज का अनुभव प्राप्त व्यक्ति ढग से डाक्टरी प्रैक्टिस करे तो शहर भर के डाक्टर एक ओर रखे रह जाय। साथ मे एक अच्छी बडी दुकान दवाई की चल सकती है।

बात टालने के लिये खन्ना कह देता—"भाई दुकान मे दवाइयाँ भरने के लिये बहुत पैसा चाहिये। इसी से यह छोटी दुकान शुरू कर दी। इस मे खर्चा ख़ास नही और काम तो चलता ही है।"

राजाराम कहते—"पैसे की कमी क्या है ? तुम लाला ईश्वरदास से कह कर आठ-दस हजार लगा कर अच्छी बडी दुकान मज़े मे सजा सकते हो, चाहे दिल्ली मे चाहे यहाँ। हम तो कहते है, यहाँ ही रहो। अरे, भाई साहब से कहते अच्छा नही मालूम होता। आजकल अपनी रकम ठेको मे फँसी है। चार-छ: महीने मे हमी रकम लगा देगे। प्रैक्टिस तुम्हारी रही दुकान मे भी तुम्हारा हिस्सा रहेगा, क्या हर्ज है ? यह तो बिजनेस है, है, क्यो ?"

एक दिन भी खन्ना के न आने पर राजाराम उस के न आने की शिकायत करने लगते। कम से कम एक समय का भोजन तो उसे उन के यहाँ करना ही पडता। अपने आदमी का इधर-उधर खाना उन्हे खल जाता। रात भी वे उसे अपने यहाँ ही सुलाना चाहते थे। चन्दा भी राजाराम से सहमत थी। खन्ना के लौट आने से राज के दुर्भाग्य की आशका से उस का हृदय ठहरा गया था परन्तु उस ने देखा, खन्ना किसी प्रकार भी राज को कष्ट नही पहुँचाना चाहता बल्कि उस पर आती चोट स्वय सह लेने को तैयार है। उस के हृदय की विशालता से चन्दा मुग्ध रह गई। चन्दा का हृदय खन्ना के लिये आदर से बिछ गया। उस की बातो मे उसे विशेष कौतूहल और रस मिलता। देश-विदेश की रोमाचकारी चर्चा सुनने के इलावा वह उस से समाजवाद के सिद्धान्तो और नैतिकता के प्रश्नो पर भी बात करती। ऐसी बात करना प्राय सुनना होता। बात करने का ढग ही खन्ना का ऐसा था कि तर्क के लिये प्राय गुजाइश न रह जाती। चन्दा की जन्म से बैठी धारणा और सस्कारो के विरुद्ध अनेक बाते खन्ना कह देता। मन सहसा उन्हे स्वीकार न करता परन्तु तर्क की दृष्टि से वह अस्वीकार भी न कर सकती।

पहले दिन मामूली कमीज़ धोती और टोपी में खन्ना चन्दा को बिल्कुल बेरुआब, साधारण सा व्यक्ति जान पडता था। अब उस मे उसे अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तित्व दिखाई देने लगा। चेहरे पर सतर्क और जागृत मस्तिष्क की आभा दिखाई देती। चन्दा की पढने मे विशेष रुचि थी। पारिवारिक अवस्था के कारण वह यथेष्ट न पढ सकी थी। खन्ना के ज्ञान और विद्वता से वह विशेष रूप से प्रभावित हुई। समीप बैठ कर उस की बात सुनते समय उस के चेहरे पर मस्तिष्क की क्रिया की प्रतिच्छाया देख कर चन्दा को सन्तोष

होता । खन्ना को भी चन्दा के समीप आकर अनुभव होता, यदि संसार मे उस का कुछ निज का था, तो वही ।

कौमी-जंग की नीति पर खन्ना की शिवनाथ से कई दिन बात हुई । दोनो मे समझौता न हो सका । अपने-अपने पक्ष का तर्क करते समय दोनो बहुत गम्भीर हो जाते । उत्तेजित होकर शिवनाथ कहता, कम्युनिस्टो को भारत की गुलामी की चिन्ता नही, रूस का बहुत दर्द है । वे भारत की आजादी का अवसर रूस की सहायता पर कुर्बान कर देना चाहते है ।

खन्ना कहता—कम्युनिस्टो को रूस की मिट्टी से कोई प्यार नही । उन्हे रूस की समाजवादी और साम्राज्य विरोधी नीति से सहानुभूति है । उस नीति की सफलता से ही भारत आत्म-निर्णय का अधिकार पा सकता है ? इस समय हमे सबसे अधिक भय जापान का है । जापानी आक्रमण से भारत की रक्षा की जिम्मेवारी अंग्रेजो पर न छोड कर अपने देश की रक्षा हमे स्वय करनी है । हमे फैसिस्ट-आक्रमण के विरुद्ध मित्र राष्ट्रो के सहयोग से मोर्चे पर खडे होकर युद्ध लडने की जिम्मेवारी लेना है । इसी कार्यक्रम से हम आत्म-शासन का अधिकार पायेगे परन्तु मित्र राष्ट्रो को अपनी फैसिस्ट विरोधी नीति का विश्वास दिलाना आवश्यक है । हत्यारे जापान का स्वागत करके बखशीश मे स्वतत्रता पाने का स्वप्न देखना आत्महत्या है ।

दोनो मित्रो की बहस नीति और सिद्धान्त की बात से हट कर दलो के व्यवहार और कार्य प्रणाली पर चली जाती । समाजवाद के सिद्धान्तो के विषय मे कोई विवाद न होने पर भी भारत मे उसकी सफलता के लिये प्रयत्न करने के तरीके मे तीव्र मतभेद था । शिवनाथ को बडी शिकायत थी कि कम्युनिस्ट अपने दल को मजबूत बनाने के लिये कांग्रेस-समाजवादी दल के सदस्यो को फोड लेते है । कम्युनिस्ट कांग्रेस के राष्ट्रीय सगठन की प्रतिद्वन्द्विता मे दूसरा राजनैतिक दल कायम कर के राष्ट्र की शक्ति मे फूट डालते है । उसे सबसे भयकर आपत्ति थी कि कम्युनिस्ट पार्टी शुद्ध भारतीय सगठन नही है । उस की नीति पर अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट-दल का प्रभाव रहता है ।

खन्ना इन आक्षेपो को स्वीकार कर कहता कि देश की जनता के हित के लिये इसके सिवा दूसरी राह नही है । देश की शोषित जनता का अपने आर्थिक दृष्टिकोण से, शोषक वर्ग और उनके सहायको का अपने नेतृत्व मे पृथक सगठित होना आवश्यक है । शोषक वर्ग शोषितो को आत्म-निर्णय का अधिकार देने की बात सोच ही नही सकता । स्वराज्य का अर्थ उनके लिये देश की जनता के

शोषण से विदेशी पूंजीपतियो के साझे में अधिक भाग पाने का यत्न है। स्वतन्त्रता का आन्दोलन जब कभी सफल होगा, गिने-चुने लोगो के नही बल्कि जनता के ९९९/१००० के प्रयत्न से ही होगा। जनता शोषक वर्ग के नेतृत्व में, उन के स्वार्थ को पूरा कर अपने बन्धनो को दृढ क्यो करे ? कांग्रेस के भीतर सगठित हो कर वैधानिक उपायो द्वारा कांग्रेस को समाजवादी शक्ति बना देने का स्वप्न व्यर्थ है। श्रेणी-सघर्ष की चेतना शोषित वर्ग मे उतनी अधिक जागृत नही, जितनी कि शोषक वर्ग और उन के सहायको मे हो चुकी है। कारण यह कि यह वर्ग शिक्षित और साधन सम्पन्न है। कांग्रेस को जनमत से समाजवादी शक्ति बनाने का प्रयत्न कांग्रेस के विधान के अनुसार अवैधानिक बनते जा रहे है। जनमत पैदा करने के सब साधन पूंजीपतियो के हाथ में है। वे शोषित जनता के 'हाय रोटी' पुकारने को सकीर्णता, स्वार्थ और श्रेणी-हिसा कहते है और अपनी श्रेणी के अधिकार बढाने के आन्दोलन को जनता का 'स्वराज्य' और त्याग बताते है। यदि कांग्रेस-आन्दोलन में सहयोग दे पाने की शर्त 'ईश्वर मे विश्वास होना' * हो सकती है तो फिर जनता को मूर्ख बनाया जा सकने की कोई सीमा नही।"

"मुआफ कीजिये" खन्ना ने कहा। आपके दल के नेताओ ने इस आन्दोलन मे भाग लेकर इस मूर्खता और छल को प्रोत्साहन दिया। मै मानता हूँ कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का अन्तरराष्ट्रीय कम्युनिस्ट-दल से सहयोग है। यह शोषितो की ससार-व्यापी शक्ति का प्रमाण है। रूस के समाजवादी शासन के विरुद्ध ससार भर के पूंजीपतियो के सम्मिलित सशस्त्र-आक्रमण के समय मजदूरो के अन्तरराष्ट्रीय प्रयत्न ने ही अपनी सरकारो को रूस से हाथ खींच लेने के लिये विवश कर दिया था।"

बहस ज्यो-ज्यो सिद्धान्तो और नीति के स्तर से छन कर व्यवहार और घटनाओ की ओर आती जाती, उसकी कटुता बढती जाती। व्यवहार और घटनाओ से उनका और उनके साथियो का व्यक्तिगत सम्बन्ध था। दृष्टिकोण को सामाजिक बनाकर भी व्यक्ति अपने आप को भूल नही सकता। कांग्रेस के अमुक प्रस्ताव का वामपक्ष की ओर से सयुक्त विरोध करने का निश्चय कर दूसरे दल को सूचना दिये बिना अपने सदस्यो का मत दूसरी ओर दिला देना,

---

* सन १९४० मे कांग्रेस द्वारा चलाये गये व्यक्तिगत सत्याग्रह मे भाग लेने के लिये यह शर्त थी।

चुनाव के समय गांधीवादियो से समझौता कर लेना, इस प्रकार के अनेक प्रश्न थे, जिन पर उन का सहमत होना सभव न था। इस चख-चख के बावजूद खन्ना का शिवनाथ के यहाँ जाना बढता ही गया। कटुता का कोई कारण हो जाने पर बहस न होती तो भी खन्ना जाता ही। उस के न आने पर शिवनाथ उसे बुला लाता।

यमुना खन्ना के आने के लिये विशेष रूप से उत्सुक रहती थी। वह प्राय पूछ लेती—"आयेगे न आप ?"

खन्ना उत्तर देता—"आऊँगा कैसे नही ? आऊँगा, खाना खाऊँगा ौर गालियाँ सुनाऊँगा !"

खन्ना अपने दल के कार्यक्रम के लिये क्या करता है, यह बात मालूम न होने पर भी शिवनाथ खन्ना की स्थिति खूब समझता था। राजनैतिक कार्य-कर्ता की आर्थिक कठिनाई क्या होती है, यह वह अपने अनुभव से खूब जानता था। यमुना को उस ने समझा दिया था और जो हो, खन्ना के खाने-पीने का खयाल जरूर रखे।

खन्ना चौबीसो घण्टे अपने दल का काम करता था। कुछ कमा सकने के लिये समय ही न था। कमा भी पाता तो वह पार्टी के लिये था। उसे पार्टी फण्ड से अपने लिये पच्चीस रुपये खर्च करने की इजाजत थी। उस का ढग कुछ ऐसा था कि इतना रुपया यो ही उड जाता। भोजन तक के लिये जेब खाली। सफेदपोश लोगो मे उठने-बैठने के लिये सफेदपोश रहना भी जरूरी था। यमुना जानती थी, खन्ना और शिवनाथ की बहस का परिणाम अच्छा नही होता। बहस वे करते है तो समझने-समझाने के लिये नही, अपनी निश्चित धारणाओ को दोहराने के लिये इसलिये वह इस प्रकार की बात दोनो के उपस्थित रहते समय नही करती थी। खन्ना के अकेले रहने पर वह इस प्रकार की बात अवश्य करती, विशेष कर रूसी स्त्रियो के जीवन के विषय मे।

यमुना को अपने जीवन मे एक विफलता दिखाई देती थी। उसे पहले उस ने भाग्य की रेखा समझ लिया था। अब वह उसे सामाजिक व्यवस्था जान पडती थी। उसे अनुभव होता था कि जीवन मे वह कुछ भी न कर पाई, उस का जीवन एक विडम्बना-मात्र है। भाई से इस सम्बन्ध मे कुछ कहना ठीक न जान पडता था। भाई ने तो जो कुछ सम्भव था, किया ही था।

शिवनाथ को प्राय कानपुर से बाहर जाना पडता। कई मास जेल मे रहने से बीमे के काम के लिये घूमना आवश्यक था। इसी सिलसिले मे राजनैतिक

काम की भी कुछ देखभाल हो जाती थी। उस के कानपुर से बाहर गये रहने पर, खन्ना खाने-पीने के लिये यमुना के यहाँ सुजान को भी साथ ही घसीट ले जाता। खन्ना के प्रति आदर के कारण यमुना को यह भी कुछ बुरा न लगा। सुजान के व्यवहार और रूप-रंग मे कुछ विचित्र सी तीव्रता थी। यमुना ने खन्ना से कहा—'आपका साथी कुछ विचित्र जीव है ?"

"हाँ, पर आदमी बुरा नही है।" खन्ना टाल गया।

सुजान यमुना के यहाँ आता। किसी प्रकार के सौजन्य या कृतज्ञता का भाव नही, बिलकुल बेतकल्लुफ। यमुना उस के विषय में अपने भाई के यहाँ आने वाले साथियो से पहले भी कुछ सुन चुकी थी। पहले से ही उस की धारणा थी कि वह झगडालू और मारतेखाँ है। समीप आने पर देखा कि जैसा सुना था वैसा ही है। उस के उद्धतपन और असयम मे जैसे एक अधिकार का भाव है, जिसे सहज ठुकराया भी नही जा सकता। सुजान का व्यवहार खन्ना से बिल्कुल दूसरे ढग का था। खन्ना बातचीत मे सोचने लगता। सुजान के लिये सब कुछ सोचा-सोचाया था। किसी बात को घुमा-फिराकर या पहलू बचा कर कहने की उसे चिन्ता न होती। शिवनाथ और उस के कांग्रेस-समाज-वादी साथियो के विषय मे खन्ना कहता—"उन का दृष्टिकोण अपनी श्रेणी की धारणाओ से प्रभावित है।" सुजान कहता, "वे बेईमान है।"

यमुना को सुजान की बाते भली न लगती। उस ने टोका—"किसी को गाली देने का आप को क्या हक है ?"

सुजान ने प्रत्युत्तर दिया—"क्यो, जान-बूझकर भी अपने नेतृत्व को बनाये रखने के लिये लाग-पट्टी करने वाले बेईमान नही तो क्या है ?"

यमुना भी बहुत शान्त स्वभाव न थी। उस ने कहा—"कम से कम आप को सभ्यता से बोलना चाहिये।"

सुजान तेज़ हो गया—"वाह, आप का मतलब है मै मुह देखी कहूँ ? आप ने दो दिन खाना क्या खिला दिया, मुझे खरीद लिया ?"

खन्ना को यह धृष्टता सह्य न हुई। उसने क्रोध से सुजान को डाँट दिया—"चुप रहो।"

सुजान इस पर भी चुप न हुआ—"क्यो, यह अपने भाई की बेजा तरफ़-दारी करती है ?"

तर्क का उत्तर न दे कर खन्ना ने फिर डाँटा—"मै कहता हूँ चुप रहो ?' और यमुना की ओर देख कर विनय से क्षमा माँगी, "मुझे इस धृष्टता के

लिये खेद है !"

सुजान ने दीवार की ओर मुख कर कह दिया—"मुझे तो नही है।"

खन्ना की क्रोधाग्नि मे और घी पड गया। दाँत पीस कर उसने कहा—"तुम्हे होना चाहिए। भद्रता और सौजन्य भी कोई चीज है।"

यमुना की उपस्थिति की उपेक्षा कर सुजान भिड़ गया—"भद्रता क्या? सच कहने का साहस न होने की बूर्जुआ सभ्यता को मै नही मानता!"

दोनो मित्रो को परस्पर झगडते देख यमुना स्वय उठ कर भीतर चली गई। भीतर जा वह सुनती रही। सुजान शान्त हो रहा था और खन्ना उसे धमका रहा था—"शिक्षा और सस्कृति के साधन न पा सकने के कारण यदि मजदूर लोग उजड्ड है तो इसके लिये अभिमान कैसा? पूजीपति और मध्य-वित्त-श्रेणी समाज के शासन का अधिकार क्या किसान-मजदूर भूखे पेट और दिमागी तौर पर भूखे बने रहने के लिये लेना चाहते है? सस्कृति केवल बूर्जुआ लोगो की विरासत नही है। आर्थिक समृद्धि के साथ-साथ मजदूरो को सस्कृति भी लेनी है। तुम्हे नही मालूम, ल्यूनाचरस्की ने पूजीपतियो को क्या जवाब दिया था—मेहनत करने वाली श्रेणी की सस्कृति और शालीनता पूँजीपति श्रेणी की सस्कृति और शालीनता से कही अधिक ऊँची और मजी हुई होगी क्योकि हमारे साधन और समृद्धि उनसे कही अधिक होगी "

इस कड़ुवेपन के कारण यमुना का मन खिन्न हो गया। बैठक मे आने को मन न हुआ। भीतर अकेले बैठना भी अच्छा न लगा। वह फिर लौटी, बैठक खाली थी। नौकर ने बताया—"दोनो बाबू चले गये।"

दूसरे दिन खन्ना अकेला ही आया। वह सुजान के व्यवहार के लिये लज्जित था। सुजान के प्रति यमुना का क्रोध शान्त करने के लिये उसने कहा—"मनुष्य जब अपने विचारो के लिये बलिदान करता है तो अपनी कट्टरता द्वारा बलि-दान का मूल्य पाने का सन्तोष प्राप्त करना चाहता है। आपसे जिक्र नही आया, इस सुजान का जीवन भी क्या है? क्या लेना है इसे इस देश के मज-दूरो और स्वराज्य से? घर इसका गजनी मे है। अच्छे रईस बाप का लडका है। सब कुछ छोड कर मेरे साथ रूस भाग गया था। इसे यहाँ भेज दिया गया तो यहाँ ऐसे लगा है कि जैसे यही इसका घर है? समाजवाद के सम्मुख इसके लिए माँ-बाप, गजनी, अफगानिस्तान कुछ नही। ससार भर इसका देश है। दूसरी ओर इतनी सकीर्णता कि किसी की बात नही सह सकता? इसके सामने जब यह कहा जाय कि भारतीय कम्युनिस्ट अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट दल के

प्रभाव के कारण अपने देश को बेच रहे हैं तो इसे बुरा लगेगा ही।"

यमुना विस्मय से सुन रही थी। सुजान से अपने झगड़े की बात के संकेत से उसने कहा—"झगड़े की ऐसी तो कोई बात भी न थी।" इसके बाद भी खन्ना के अकेले ही आने पर यमुना सुजान की बाबत पूछती वह मजे में है। खन्ना से इतना सुन यमुना का कौतूहल शान्त न होता। वह उस के सम्बन्ध में कुछ और सुनना चाहती। खन्ना कभी उस के दुस्साहस या लड़ मरने की बात कहने लगता। यमुना केवल कह देती—बड़े बेपरवाह हैं। एक दिन कुछ झिझक कर बोली, "वे मुझ से नाराज हो गये गलती मेरी ही सही। पर वे आते क्यों नहीं ?"

सुजान लगभग रात के नौ बजे खन्ना के साथ यमुना के यहाँ आया।

यमुना ने मान किया—"आप जरा सी बात का बुरा मान गये ? इतने दिन आये नहीं।"

सुजान ने उस भावुकता की ओर ध्यान न दे उत्तर दिया—कुछ काम था।"

यमुना खन्ना से बात कर रही थी परन्तु खन्ना अनुभव कर रहा था कि सुजान के चुप रहने से यमुना असन्तुष्ट है। इस विषय में वह क्या कर सकता था ? और कुछ बात न सूझने से यमुना ने सुजान से पूछा—"खाना क्या आप लोग खा कर आये हैं ?"

"नहीं" सुजान ने इनकार से सिर हिला दिया।

"कुछ बना दूँ ?" यमुना ने पूछा। इससे पहले खन्ना कुछ बोले, सुजान ने कह दिया, "खा लूँगा।"

खन्ना ने बहुत कहा—"नहीं रहने दीजिये! यह कौन वक्त है ? हम लोग बाजार तो जा ही रहे हैं। नौकर को तकलीफ होगी।"

यमुना न मानी—"तकलीफ क्या है ? कुछ तो होगा भी ? पाँच मिनिट में अभी आती हूँ।" वह भीतर चली गई। खन्ना को कहीं जाना जरूरी था। चलने की इजाजत लेने वह भीतर गया। देखा यमुना नौकर से जल्दी-जल्दी सामान मँगाकर स्वयं ही आटा मल रही है। असमय इतना कष्ट देने के लिये क्षमा माँग कर खन्ना चला गया। सुजान बैठा रहा।

खन्ना की बात दूसरी थी। शिवनाथ का उस से राजनैतिक मतभेद था, उस की उपेक्षा कर वह उस से व्यक्तिगत मित्रता बनाये रखना चाहता था। स्कूल और कालेज के जीवन में दस वर्ष से अधिक के साथ की स्मृति उन्हें एक साथ बाँधे थी। दो भाइयों के जीवन की राहें बँट जाने पर भी भाई का

सम्बन्ध टूट नही जाता। वे बीसियो बार लडे और फिर एक हो गये। प्राणो की बाजी लगाने मे उन्हे एक दूसरे का भरोसा था। उस कार्य का महत्व समय के साथ मिट जाने पर भी परस्पर भरोसे का सम्बन्ध शेष था। वे एक दूसरे के लिये बहुत कुछ सहने और गम खाने के लिये तैयार रहते थे। सुजानसिह के लिये वैसा कोई स्थान शिवनाथ के हृदय मे होने का कारण न था। उस का उद्धत स्वभाव राजनैतिक मतभेद के आधार पर शिवनाथ के लिये असह्य था। उसे वह सह जाता था तो केवल खन्ना के लिहाज के कारण।

शिवनाथ के प्रति सुजान को भी कोई अनुराग नही, विरक्ति ही थी। यह विरक्ति छिपाने का भी वह कोई यत्न न करता था। केवल सौजन्य से मुस्करा देने या तबियत पूछने की भी आवश्यकता नही समझता था। शिवनाथ के घर धडधडाते चले जाने मे भी उसे कोई सकोच न होता था। आते ही दाये हाथ का घूसा उठा कर एक संक्षिप्त-सा कम्युनिस्ट अभिवादन। यह सकेत कि मै आ गया हूँ। उसे चाहे शिवनाथ धमकी ही समझ ले पर उसे परवाह न थी। यमुना यदि सामने न हो तो सक्षिप्त प्रश्न—"यमुना जी कहाँ है ?" शिवनाथ चुपचाप सह जाता। वह जानता था कि यमुना सुजान की प्रतीक्षा करती है, उस का आदर करती है।

देहली जेल मे सजा काटते समय शिवनाथ ने अपने जीवन को पारिवारिक चिन्ताओ से मुक्त करके देश के अर्पण कर देने का निश्चय किया था। पिता चल बसे और जराजीर्ण माँ के सदा बने रहने का भरोसा न था। बहिन के लिये उसे केवल एक मार्ग दिखाई देता था कि वह आत्म-निर्भर बने।

यमुना के लिये जीवन का एक ही उपाय था, सम्पूर्ण शक्ति से परीक्षा पास कर के वेतन पाने योग्य बन जाना। कन्या-पाठशालाओ मे नौकरी कर, थकावट से चूर होकर रोग-सन्ताप मे ममता और स्नेह के हाथ अपने शरीर पर न पाकर भी वह श्रम करती रही थी। एम० ए० पास कर वह सवासौ रुपया माहवार कमाने लगी थी। शिवनाथ अपने समय का पर्याप्त भाग राजनैतिक कार्य मे लगा कर भी अपनी स्थिति के प्रभाव से बीमे के काम मे कमीशन से डेढ-दो सौ महीने मे बटोर लेता था। नौकर रख कर अपनी सभी आवश्यकताये पूरी कर अब वे लोग सुख से दिन बिता सकते थे। एम० ए० पास कर लेने के बाद यमुना के जीवन की नीरसता और बढ गई थी। एक निराशा का सा भाव छा गया था। वह जीवित थी इसलिये काम किये जा रही थी। जीवित रहने के लिये काम की साध या इच्छा न थी।

यमुना ने जिस आयु में ठीक से कपडे पहनने की जिम्मेवारी समझी थी तभी से वह देखती आ रही थी कि उस के साथ की उम्र की लडकियो के विवाह होते जाते थे। वह जानती थी कि विवाह जीवन का एक आवश्यक कार्य है परन्तु उस के जीवन मे वह समय अभी नही आया। दूसरी लडकियो के विवाह की घटनाये उसे ऐसे जान पडतो जैसे किसी छोटे स्टेशन के प्लेट-फार्म पर खडा आदमी सामने डाक-गाड़ी को तीव्र गति से जाते देख कर अपने लिये गाडी आने की प्रतीक्षा करता रह जाता है। इस के वाद उस से कम आयु की लडकियो के भी विवाह होने लगे। उस के चारो ओर गृहस्थिया वनने और वसने का समारोह था परन्तु उस के लिये नही था।

यमुना भाई के समाजवादी विचारो के कारण स्त्री के अधिकार और स्थिति के नाते बहुत कुछ स्वतत्र थी। स्त्री की परतन्त्रता उसे स्वीकार न थी परन्तु उस पर अधिकार रखने वाला ही कोई नही, जिस से अपना अधि-कार माँगे। यह कितना बडा अभाव था। अपनी इच्छा और अपने निश्चय से ही सव कुछ करना, कितना कठिन काम था ? कभी पति के नियन्त्रण मे हाथ-पैर बँधी, सहमी-सहमी, प्रत्येक कार्य मे घर के पुरुषो के निर्णय पर निर्भर रहने वाली कुल स्त्रियो की ओर देख कर उस का मन क्षुब्ध हो उठता। उस के अपने लिये ससार मे क्या कोई भी आश्रय नही, रक्षा की आड नहीं। भाई है परन्तु भाई से जीवन की पूर्णता और सन्तोप मे क्या आशा की जाय ? वे स्वय अधूरे है।

जीवन के प्रति उत्साह से हीन यमुना अपने प्रति भी निरपेक्ष थी। उस जीवन का, उस के अपने आप का कुछ भी मूल्य न था। वह शनै-शनै. खाने-पीने से, पहनने-ओढने से विरक्त-सी होती जा रही थी। उसे न किसी पर अधिकार था, न किसी से भय, न किसी से सकोच। स्वास्थ्य खराव हो तो क्या और अच्छा हो तो क्या। इस से किसी को क्या मतलव ? उसे स्वय भी क्या मतलव ? आयु के अट्ठाइस वर्ष वीत गये, वैसे ही एक दो पाच दस और भी वीत जायगे।

खन्ना के आने से उस का समय भला कट जाता था। वह आ जाता तो अच्छा लगता और न आता तो प्रतीक्षा रहती। किसी समय का उस का एहसान भी था। वह उस का आदर करती थी। कभी जरूरत होने पर वह कुछ ले लेता पर अधिकार का कोई भाव नही जैसे जीवन की राह मे चलने-वाला एक परिचित मात्र हो लेकिन मुजान के विगड उठने से उसे खयाल

करना पडता—यह नाराज न हो जाय। वह अपनी बात कहता है तो ऐसे कि माननी ही पडेगी। सुजान के सम्बन्ध मे उसे अनुभव होता कि वह किसी के लिये कुछ कर रही है। इस से उसे सन्तोष होता इसलिये सुजान का ध्यान बना रहता। उस की प्रतीक्षा भी वह करती। उसे किसी प्रकार की शिकायत का अवसर या दुख क्यो हो? सुजान का और कौन है? वह जो कुछ भी, जितना कुछ भी उस के लिये कर सके, करे।

वह जानती थी, शिवनाथ सुजान को पसन्द नही करता पर उस मे बुरा क्या है? शिवनाथ अपना भाव प्रकट करता तो यमुना को यह अन्याय जँचता। भैया के अपने विचार है तो दूसरो के अपने है। सुजान अपने विचारो के लिये कितना बलिदान कर रहा है? जरा स्वभाव मे तेज है तो क्या? उस मे साहस और शक्ति है। आखिर वह किसी से क्यो दबे? और फिर भैया के पास बीसियो आदमी आते है, वह मेरे पास आता है। शिवनाथ के कानपुर से बाहर गये रहने पर सुजान रात भर यमुना के यहाँ बना रहता। किसी दिन उस के न आने पर यमुना घबराने लगती। प्रतीक्षा मे रात आँखो मे ही बीत जाती। सोचती, रात भर बेचारा मजदूरो की बस्तियो मे चक्कर लगाता रहा होगा। मजदूरो के सुबह मिलो मे चले जाने पर जरूर आयेगा। रात मे उसे खाना कहाँ मिला होगा? दिन मे उस के विश्राम के लिये वह उस के आने से पहले ही खाना तैयार कर प्रतीक्षा करने लगती। किसी रोज यदि सुजान यमुना के स्कूल जाने के समय आ जाता तो स्कूल जाना न हो सकता।

सुजान की चिन्ता ने यमुना का अपने प्रति उपेक्षा का भाव बदल दिया। वह यत्न से खद्दर पहनती। उस के कपडो मे सिकुडन न होती और न चेहरे पर बेपरवाही का भाव। सुजान के गोरे-गोरे, लम्बे शरीर और सतेज चेहरे को मैले कपडो मे देख कर उसे बुरा मालूम होता। एक दिन बाजार जाकर उस के लिये छ कुरते-पायजामे सिला लाई। अपने यहाँ ही उस के कपडे बदला देती। सुजान अपने पैर से बडा, कैन्वस का जूता फटफटाता फिरता था। नया जूता ले लेने के लिये उसे यमुना ने रुपये दिये। वे रुपये किसी और काम मे खर्च हो जाने पर यमुना ने पूछा—"जूता नही लिया, रुपये कहाँ गये?"

उत्तर मे सुजान ने डाँट दिया—"तुम्हे क्या मतलब कहाँ गये?"

यमुना रो दी लेकिन जूते के लिये रुपये और निकाल दिये। दुखी और

खिन्न यमुना को देख कर लोग आदर करते थे। उस के सच्चरित का बखान था। अब उस के चेहरे पर स्फूर्ति देख कर चुगली होने लगी। शिवनाथ खुले शब्दो मे कुछ न कह सके परन्तु उन्होंने अपना असन्तोष प्रकट किया। यमुना ने सोचा, यदि ऐसा ही है तो वह दूसरा मकान ले लेगी। सुजान के उद्धत, अक्खडपन के बिना उस का जीवन ही सम्भव न रहा।

× × ×

डाक्टर वर्मा की दुकान और रहन-सहन का ढग रोबदार न होने पर भी लाला राजाराम और शिवनाथ उस के परिचय का क्षेत्र बढा रहे थे। उसे बडे-बड़े घरो मे बुलाया भी जाने लगा। उस के चिकित्साज्ञान और व्यवहार के कारण मरीज़ो का विश्वास भी उस पर जम जाता। दो-तीन महीनो मे केवल फीसो मे ही उसे सौ-सवासौ रुपये महीने में मिलने लगे। राजाराम का विचार था कि डाक्टर यदि इस ओर ध्यान दे, एक डिसपेन्सरी किसी अच्छी जगह खुल जाय तो जल्दी ही काम फैल सकता है। एक बार दिल्ली जाकर भाई से हिसाब कर लेने के लिये उसे उत्साहित करते रहते लेकिन डाक्टर को न तो ठीक से प्रैक्टिस की ओर ध्यान देने की फुर्सत थी और न दिल्ली जाने की। डाक्टर की इस उपेक्षा से राजाराम चिढने लगे। रुपया मिलने पर उस का उपयोग भी वह ठीक से न करता, न कपडो का ढग, न रहने का।

चन्दा चिढती न थी। वह राजाराम के काम पर गये रहते समय डाक्टर से होने वाली बातचीत के सिलसिले में बहुत कुछ समझने लगी थी। वह समझती थी, डाक्टर साहब निजी आवश्यकताओ की अपेक्षा अपनाये हुए काम को अधिक महत्व देते है। डाक्टर के काम से उसे सहानुभूति थी, उस के अल्हडपन से ममता, त्याग पर श्रद्धा, उस के त्याग के बारे में सन्देह ही क्या था? उसे अपने आपको मिटाते देख कर दुख भी होता। वह कहती—"काम अवश्य कीजिये परन्तु यह क्या कि अपना कुछ भी ध्यान न रहे।"

डाक्टर उत्तर देता—"इस मे त्याग कुछ भी नही है। आप लोग भी तो महीने भर मे जितने कमा पाते है, सब तुरन्त ही उडा कर सुख पाने का यत्न नही करते, कुछ आये दिन के लिये बचा रखते है और कुछ आमदनी बढाने के लिये पूँजी के तौर पर काम में लगा देते है। मेरे जैसे विचार के व्यक्ति भी अपने सामर्थ्य से तुरत सुख-चैन पाने का प्रयत्न न कर समाज को अधिक सुखी बना कर सुख पाने की आशा करते है।"

चन्दा ने गदगद होकर कह दिया, "डाक्टर साहब आप से बहस में जीतना कठिन है ?"

"जीत कर आपको बहुत सन्तोष होगा ?" खन्ना ने पूछा ।

"और क्या ?" चन्दा ने उस की आँखो मे देख मुस्करा दिया ।

"बहुत अच्छा । आप जो चाहे कहिये । मै उत्तर न दूँगा ।"

"हाय, यह भी कोई जीतना है !"

"तो फिर आप जीतना नही चाहती !"

"न बाबा ।"

चन्दा के समीप बैठ कर इस प्रकार की निरर्थक बातचीत करने से डाक्टर की थकावट मिट कर स्फूर्ति प्राप्त होती । चन्दा की बेपरवाही की शिकायते और चिन्ता जैसे उसे अपने मन की अदृश्य गोद मे ले लेती । शरीर उस का स्पर्श न पाता परन्तु मन को विश्राम मिल जाता । अपने कामकाज से जब भी उसे समय मिलता, वह कुछ देर के लिये चन्दा के पास आ बैठता । अपनी बीती घटनाये सुनाने मे, राजनीति और सामाजिक समस्या पर उस से बात करने मे उसे संतोष होता । राज, नर्गिस ओर गुलशा को खोकर उन की अशरीरी भावना के समुच्चय के रूप मे चन्दा उस के सामने थी । उस मे माँ की ममता, सखी का सौहार्द और भक्त की श्रद्धा भी थी । कभी बहुत थकावट मे वह उस के समीप ही तखत पर लेट जाता । चन्दा के वस्त्रो में बसी शरीर की बे-मालूम सी गध श्वास मे अनुभव कर वह आश्वासन से बातचीत करता रहता या कभी चुप ही पड़ा रहना चाहता । चन्दा शशि के समीप सोये रहने पर दोनों के लिये बिजली का टेबिल-फेन लगा देती । डाक्टर के उठ कर चलने के लिये तैयार होने पर आग्रह करती—"अभी बैठिये !"

परस्पर 'आप' के व्यवहार पर दोनो को ही असतोष था । चदा ने एतराज किया—"आप मुझे आप आप क्यो पुकारते है ? अच्छा नही लगता । आप मुझ से बड़े है ।"

"जैसे आप सिखा दे !" डाक्टर ने उत्तर दिया, 'रिश्ते से तो आप ही बड़ी है !"

"कहाँ, राज मुझ से केवल दो बरस छोटी है ओर आप तो बड़े ही है, सब तरह से !"

"नही, यह बात नही ! 'आप' कहने से एक अन्तर बना रहता है । आप अपनी ओर से यह अन्तर बनाये रखना चाहती है !"

"वाह मैं अन्तर क्यों बनाये रखना चाहती हूँ ?" चन्दा ने विस्मय से पूछा।

"संस्कारवश !" खन्ना ने हंसी रोक कर उत्तर दिया, "स्त्री आत्म-रक्षा के लिये पुरुष से अन्तर बनाये रखना चाहती हे। संस्कारवश स्त्री समझती है कि पुरुष उसे झपट लेगा परन्तु आपके लिये तो ऐसे भय का कारण नहीं है।"

लज्जा भरी मुस्कान से चन्दा ने उत्तर दिया—"आप जाने कहाँ से बात निकाल लाते हैं ?"

चन्दा की मुस्कान से उत्साहित होकर खन्ना बोला—"और इसका दूसरा प्रयोजन भी हो सकता है ! आप के लिये न सही !"

"क्या ?" चन्दा ने विस्मय प्रकट किया !

"वह नहीं कहूँगा। आप बुरा मान जायगी !" खन्ना हंस दिया।

"नहीं बताइये ज़रूर !"

"नहीं वह आपको अच्छा नहीं लगेगा !"

"मेरे सिर की कसम" चन्दा ने आग्रह किया।

"बुरा तो न मानियेगा ? व्यक्तिगत रूप से नहीं कह रहा हूँ। अपनी समझ की बात भी नहीं, मनोवैज्ञानिकों की राय है। स्त्री पुरुष के प्रति आशंका इसलिये नहीं दिखाती कि वह उस से दूर रहना चाहती है। यह तो प्रकृति के उद्देश्य के विरुद्ध होगा। पुरुष के मन में अपने प्रति कौतूहल पैदा करने के लिये भी स्त्री पुरुष के प्रति आशंका दिखाती है, उसे उत्साहित करने के लिये। स्त्री वास्तव में चाहती है, पुरुष को आकर्षित करना। स्त्री का यह गुप्त स्वाभाविक अभिप्राय उस के प्रत्येक काम में रहता है, आशंका दिखाने में भी है। सभ्यता और विश्वास द्वारा पाये संस्कारों से वह अपने अभिप्राय को दबाती और छिपाती है।"

चन्दा ने हंस दिया। जैसे विरोध न कर सकने पर वह स्वीकार कर लेने के लिये भी तैयार नहीं। खन्ना अपनी बात की सचाई प्रमाणित करने पर तुला था—"कहिये एक छोटा प्रमाण दूँ लेकिन व्यक्तिगत रूप में न समझें, इस शर्त पर !" चेतावनी में उँगली उठा कर उस ने कहा।

लज्जा और मुस्कराहट से खिला चेहरा ऊपर उठा कर चन्दा ने स्वीकार किया—"हाँ कहिये न !"

"देखिये, पुरुष से तुम कहलाने की इच्छा का अर्थ है, वह समीप आये। स्वयं आप कह कर अपनी आशंका भी प्रकट करना स्वाभाविक है। बुरा तो नहीं माना ?"

चन्दा ने लज्जा और हसी से सिर झुका लिया—"आप वड़े वैसे हैं।"

बहुत देर तक चन्दा खन्ना की वात सोचती रही। उसे लज्जा अनुभव होती थी परन्तु मानसिक विश्लेषण और दलील के दाँव-पेच से कौतूहल और सुख भी होता था। मन मे विचार आता, खन्ना कितना गहरा है ? उस दिन के बाद झेप अनुभव होने पर भी साहस कर उस ने खन्ना को तुम सम्वोधन करना आरम्भ कर दिया। मन को समझाया, बराबर के ही तो हैं। आपस मे 'आप' कहने के दुराव की क्या आवश्यकता ? वह कभी आप और कभी तुम कह देती। राजाराम डाक्टर को खन्ना कह कर पुकारते थे। कभी वह बात-चीत मे 'खन्नाजी' पुकार देती।

अधिक देर बैठने के अनुरोध से डाक्टर के चेहरे पर बेवसी की मुस्कराहट आ जाती। चन्दा उस बेवसी को समझती थी। उसकी आँखे करुणा से भीग जाती। इस बिन कहे प्रश्नोत्तर का आधार था, डाक्टर का एक दफे दिया उत्तर—"यदि बैठ सकना और जाना केवल अपनी इच्छा पर ही हो तो शायद आप के समीप से कभी न उठु।"

खन्ना के मुख से अपने प्रति ऐसी भावना जान कर चन्दा के पाँव पृथ्वी से उठ से जाते, वह भी कुछ है ? और जिसकी भावना से वह इतना कुछ बन सकी, वह ? उसे ससार और समाज न जाने, वह तो जानती है। इतना कुछ खन्ना से पाकर कृतज्ञता मे चन्दा क्या करना चाहती थी, उसे वह स्वय ही समझ न सकती थी।

× × ×

बढते बाजार-भावो के कारण मिल-मजदूरो की मजदूरी बढाई जाने के लिये कम्युनिस्ट बहुत दिन से आन्दोलन कर रहे थे। उसी सिलसिले मे मिलो के सामने जलसे करने की तजवीज थी। शिवनाथ के दल के प्रभाव मे रहने वाले मजदूर कार्यकर्ताओ ने आरम्भ मे इस आन्दोलन मे सहयोग न दिया था। शिवनाथ और उस के साथियो का विचार था, इस समय काँग्रेस का युद्धविरोधी कार्यक्रम और प्रदर्शन स्थागित हैं इसीलिये इस प्रकार के आन्दोलन का समय नही। जिस समय काग्रेस अपना कार्यक्रम और प्रदर्शन आरम्भ करे, उसी समय मजदूरी-बढती का आन्दोलन आरम्भ कर काग्रेस के प्रभाव की व्यापकता दिखाई जाय।

बदल चुकी परिस्थिति मे कम्युनिस्ट मजदूरी बढाने की माँग को युद्ध-विरोधी

रूप न देना चाहते थे। उनका विचार था, फैसिस्ट आक्रमण के विरुद्ध सवल मोर्चा तैयार करने के लिये ही मजदूरी बढाने और निम्न श्रेणियो की अवस्था सुधारने की आवश्यकता है। मजदूर अपनी आवश्यकताओ को पूरा कर अधिक परिश्रम से अधिक पैदावार कर सके। उन के जीवन में सन्तोप का भाव हो, उन का जीवन जीने योग्य हो, जिसकी रक्षा के लिये वे शत्रु से लड़ने के लिये तैयार हो। मजदूरो का आर्थिक रूप से कुछ सवल हो सकना आने वाले सघर्प के लिये तैयारी है।

ज्यो-ज्यो यह आन्दोलन वढने लगा, शिवनाथ के सहयोगियो ने अनुभव किया कि आन्दोलन में भाग न लेने से वे मज़दूरो की नजर मे गिर जायेंगे। वे भी उस मे सम्मिलित होने लगे। कम्युनिस्टो से आगे वढ जाने के लिये इनकी माँग प्रदर्शन के वजाय हडताल कर देने की थी। मज़दूरो के सगटन का उत्तरदायित्व मुख्यत सुजान पर था। विरोधियो द्वारा अपने प्रयत्न को यो विफल किया जाते देख कर उस ने अपने साथियो को मज़दूरो के जलसे में शिवनाथ के दल के किसी भी व्यक्ति को न वोलने देने की हिदायत दे दी। उस ने कहा"—यदि वे लोग ज़वरदस्ती करें तो उठा कर ज़लसे से वाहर फेक दिया जाय।" परिणाम मे मज़दूरो मे झगडा और मारपीट हो गई।

डाक्टर वर्मा इसी झमेले में दो दिन तक राजाराम के यहा विलकुल न जा सका था। तीसरे दिन भी वह पुलिस द्वारा गिरफ्तार मजदूरो की जमानतें दिलाकर उन्हे छुडाने और आपस के झगडे मिटाने के झझट मे उलझा रहने के कारण दोपहर से पहले अपनी दुकान पर न लौट सका।

दुकान के किवाड खोलते ही एक पुर्जा फर्श पर दिखाई दिया। लिखावट राजाराम के हाथ की थी। दो पक्तियो मे सन्देश था—"शशि को कल से वुखार आ रहा है। तुम ने सुध भी न ली। आज सुवह भी १०२ डिग्री वुखार था। तुम्हारे यहाँ आदमी भेजा, तुम मिले नही। वहुत जरूरी काम से लखनऊ जा रहा हूँ। रात के साढे ग्यारह वजे की गाडी से लौटूगा। तुम पुर्जा मिलते ही जाकर देख लेना।"

मई का महीना था परन्तु वादल घिर कर जोर से वर्पा हो रही थी। सुवह ओले भी पड गये थे। वर्पा मे ही इधर-उधर घूमते रहने के कारण वर्मा के कपडे भीग रहे थे। पुर्जा पढते ही डाक्टर की आँखो के सामने चन्दा की चिन्तित मुद्रा फिर गई। सदा मुस्कान भरा, अरुण उज्ज्वलता लिये सलोना चेहरा, उसकी फैली हुई आँखो मे स्नेह के उच्छ्वास से छा जाने वाला गुलावीपन जो

देखने वाले के मन मे मधुरता भर देता है, रोग पीडित बच्ची को लिये वह सिर झुकाये चिन्तित बैठी होगी। डाक्टर तुरत साइकिल पर 'परमट' के लिये चल पडा।

दरवाज़ा भजन ने खोला। चन्दा प्रतिक्षण प्रतीक्षा कर रही थी। उठ कर उस ने आँगन मे झाँका। चेहरे पर वर्षा के जल की बूदे बहते, भीग कर शरीर से चिपके कपडे पहने खन्ना को सामने देख कर उस का हृदय धक से रह गया।

खन्ना ने भीगे हुये कपडो पर कुछ और बूंदे पड़ जाने की चिन्ता न कर आँगन से बढते हुए पूछा—"क्यो, क्या बहुत घबरा गई ?"

चन्दा कुछ उत्तर न दे सकी। वह असबाब रखने की कोठरी मे चली गई। उस के लौटने की प्रतीक्षा मे डाक्टर ने पलग पर लेटी शशि को सम्बोधन कर पूछा—"कहो क्या कर लिया तुम ने ?" बच्ची को नीद मे देख कर वह पीछे हट गया।

चन्दा लौट कर आई तो उस की बाँह पर पति के कपडो मे से निकली नयी कमीज-धोती और तौलिया सम्भला था। "पहले कपडे बदल लीजिये !" चन्दा ने गम्भीरता से कहा।

कपडे उसके हाथ से ले कर डाक्टर ने पूछा—"क्यो, क्या है ? आप उदास क्यो है ?"

"पहले कपडे बदल कर आइये ! ठड से कुछ हो जाय तो। ऐसे भीगते हुए आप आये क्यो ? टागा नही मिल सकता था ? जाइये, पहले कपडे बदल आइये !"

कपडे बदल कर खन्ना लौटा तो चन्दा तख्त पर चिन्तित भाव से मुह लटकाये बैठी थी। डाक्टर ने फिर पूछा—"हाँ, नाराज आप क्यो हो गई।" सोई हुई बच्ची के शरीर पर हाथ रख कर वह बोला, "ज्वर तो अधिक नही है। हो कैसे गया ?" अपनी गम्भीरता बनाये रख कर चन्दा ने उत्तर दिया, "ऐसे ही परसो वर्षा मे खेलती रही।"

"इसीलिये आप मेरे पानी मे खेलने से भी नाराज हो गई ?....शायद मुझे भी ज्वर हो जाता ?"

"यह आप कैसी बाते करते है ?" चन्दा ने मीठी झुझलाहट से कहा।

"हो जाता तो मै आप के पास आकर लेट रहता। मेरा सिर दबाना पडता।" तखत पर लेटते हुये डाक्टर ने कहा, "आप को जहमत होती और मुझे अच्छा लगता।"

चन्दा का हृदय छलक आया। डाक्टर की ओर स्नेह से देख कर उस ने कहा—"तो क्या यो नहीं यहाँ लेट सकते ?"

"यो तो लेटा ही हूँ परन्तु बीमार का अधिकार अधिक हो जाता है।"

"वैसे भी सब अधिकार है। तकिया ले आऊँ ?" चन्दा ने पूछा।

"नही।"

"जरा आराम मिलेगा ?" चन्दा ने कहा।

"तकिये को मुझ से क्या ममता है जो मै उस पर बोझ डालू ?" शिकायत के से ढग से डाक्टर बोला, "आप को खयाल है तो स्वयं सहारा दीजिये।"

"फिर वही आप ?" चन्दा ने टोका।

"जैसा कहेगी वैसा सुनेगी ?" खन्ना ने उत्तर दिया।

अपनी भूल अस्वीकार करने के लिये उस विषय मे चुप रह कर चन्दा ने दोहराया—"अच्छा तकिया ले आऊँ ?"

"नही रहने दीजिये।"

"तो पलग पर बिस्तर कर दू ?"

"मुझे यहाँ से उठाना चाहती है ?" खन्ना ने उस की ओर देखा।

"नही, बिना सहारे के आराम न मिलेगा।"

"तो सहारा दे दो।"

"कैसे ?" चन्दा ने आशका के से स्वर मे पूछा।

"अपनी गोद मे स्थान देकर।" खन्ना ने उस की ओर न देखा।

चन्दा चुप रह गई। खन्ना भी चुप था। उस ने अनुभव किया, उस की बात से चन्दा को चोट लगी पर तीर कमान से निकल चुका था। अपने विचार मे बुरा काम न करने पर भी चन्दा को चोट पहुँचाने का दुख था। कुछ सोच कर उस ने कहा—"अपने विचार मे मैंने कोई अनुचित बात नही कही परन्तु यदि मेरी बात से आप को दुख पहुँचा है तो उस के लिये मुझे खेद है।"

चन्दा सिर झुकाये चुप बैठी रही। डाक्टर की इस बात मे उसे अनौचित्य कुछ जान नही पडा परन्तु फिर भी वह वैसा कर नहीं सकी। एक सीमा थी, जिसे लाघ जाना उचित न था। ऐसा उस ने कभी किया नही था। साधारणत वह इसे बुरा ही समझती। केवल खन्ना के कहने का ढग ऐसा था कि बुरा मालूम न हुआ पर वह वैसा कर न सकी। उस के ऐसा न करने से और चुप रह जाने से डाक्टर को दुख हुआ। इस से उसे स्वय दुख हो रहा था। वह कहे भी तो क्या ?

खन्ना उठ बैठा—"सध्या तक दवाई पहुँचाने का यत्न करूँगा। वैसे भी चिन्ता का कोई कारण नही है। वह बात कह कर आप को दुखी करने के लिये मुझे खेद है ?" उस ने कहा और चलने के लिये खडा हो गया।

खन्ना के चेहरे की मुद्रा देख कर चुप रहना चन्दा के लिये सम्भव न रहा—"बैठो, जाते कहाँ हो ?" उस ने कहा, "अभी ठहर कर जाना।"

इस आग्रह से खन्ना के मन का अवसाद वहुत कुछ धुल गया। उसे आश्वासन मिला, जो कुछ भी हुआ चन्दा नाराज नही है।

अन्याय का प्रतिकार करने के लिये उस ने पूछा—"आखिर ऐसी अनुचित बात ही मैने कौन कही ? मुझे भ्रम था, आप मुझ से स्नेह करती है। मै आप के निकट कुछ हूँ, इसी से कह बैठा।"

खन्ना की ओर अधिकारपूर्ण दृष्टि उठा कर चन्दा ने उत्तर दिया—"ताँगे पर चले आते तो क्या था ? भीगने से बच जाते ?"

खन्ना ने समझा, वह चर्चा चन्दा को पसन्द नही। "टाँगा ढूढने जाने मे भी भीगना पडता ?" उदास होकर उस ने उत्तर दिया।

चन्दा चुप रह गई। कुछ सोच कर उस ने पूछा—"तो आप देहली क्यो नही चले जाते ?"

आरम्भ मे राज पर आने वाली आशका के विचार से चन्दा चाहती थी कि खन्ना देहली न जाय तभी राज की रक्षा हो सकती है। अब खन्ना को कष्ट सहते देखकर उसका जी चाहता था कि यह बेचारा क्यो मुसीबत सहे ? अपने घर मे आराम से रहकर अपना काम क्यो न करे ?

"क्यो देहली जाने से क्या होगा ?" खन्ना ने पूछा, 'क्या मुझसे भय लगता है ? मै वैसे ही न आऊँगा।"

"जान बूझकर ऐसी बात क्यो करते हो ?" चन्दा ने कातर आखो से उत्तर दिया, यह सब सकट वहाँ झेलने न होगे। वहाँ तुम्हारा घर है, सब कुछ है।"

खन्ना गम्भीर हो गया पूछा—"क्यो, अव राज का खयाल नही।"

"है तो पर दाये हाथ की पीडा के लिये वायाँ हाथ थोडे ही काटा जा सकता है। तुम्हे यहाँ क्या कम कष्ट है ? अपना सब कुछ छोडकर यहाँ पडे हो।"

"मेरा उसमे क्या है ?" डाक्टर ने पूछा, "अपने परिश्रम से मैने कुछ कमाया नही। दावा करने से मै बहुत कुछ पा सकता हूँ, यह ठीक है परन्तु

स्वयं आराम पाने के लिये किसी दूसरे का जीवन बर्बाद करने को जी नहीं चाहता। राज पर क्या बीतेगी ? विना अपराध किये वह अपराधिनी और कुलटा बन जायगी। उसका बद्री से प्रेम करना क्या पाप था ? किसी से भी प्रेम करना पाप हो सकता है ?"

चन्दा चुप रह गई। उत्तर देने की इच्छा भी नही थी।

खन्ना ने कहा—"तुम समझती होगी, मैं बडा त्याग कर रहा हूँ ? दुनिया जो चाहे समझे लेकिन तुम्हारे सम्मुख आडम्बर करने को जी नही चाहता। मैं देहली जा भी नही सकता। मेरे दिल्ली जाने से प्रश्न उठेगा कि मैं मर नही गया था तो सेना से भागकर चला कहाँ गया था ? और फिर आया तो किस राह ? मैं आया हूँ जाली पासपोर्ट से। वह स्वय एक अपराध है, जिसके लिये मुझे जेल मे सडना पडेगा।"

'यह सब इस तरह से बनाकर कहने की जरूरत क्या है ? तुम जो कुछ हो, म समझती हूँ।" चन्दा ने बात समाप्त कर दी।

"क्या मतलब ?" खन्ना ने करवट ले कर विस्मय से पूछा।

"यही कि तुम बडे डरपोक हो, जेल से डरते हो इसीलिये घर-बार जायदाद को लात मारकर बैठे हो। इसीलिये राज को दुख नही देना चाहता और इसीलिये अच्छी भली प्रेक्टिस चल सकती है, उसे चला कर रुपया नही कमाते ! मजदूरो के से बने रहते हैं। आज साफ कपड़े पहने है तो कितने अच्छे लग रहे है।"

खन्ना हसा नही—"अच्छा लग रहा हूँ, यह तुमने कैसे कह दिया। जैसे मुझे छूना या हाथ लगाना अनुचित है, वैसे ही मुझे अच्छा समझना भी उचित नही। इसी से शायद मेरी बाते भी तुम्हे निरर्थक जान पडती है ?" खन्ना अपने क्षोभ का बदला लेने के लिये चन्दा को शब्दो से बींधे जा रहा था। उसके माने और क्रोध भरे स्वर से चन्दा के हृदय मे गर्व और माधुर्य फूटा पड रहा था। वह जानती थी, यह सब उसकी गोद मे सिर रखने की प्रार्थना अस्वीकार करने का बदला है। खन्ना की उसके समीप आने की इच्छा उसे अपूर्व मानसिक सुख दे रही थी। उसे ✱ लेने को उसका हृदय व्याकुल हो रहा था।

"कुछ मालूम है; ये क्या कहते है ? तुम्हे तो खन्ना की बाते वेद-वाक्य मालूम पडती है" चन्दा ने मुस्कराकर बताया।

"क्यों, क्या बात हुई ?"

"यों ही तुम्हारी बाबत बात हो रही थी कि यदि ध्यान दे तो यहाँ भी प्रेक्टिस जम सकती है। दिल्ली मे चाहे तो वहाँ कर सकते हैं परन्तु चाहते ही नही, जाने क्या खप्त सवार है? मैंने कह दिया—सभी अपने पेट की फिक्र करने लगे? ऐसे खप्ती दुनिया मे न रहे तो दुनिया ही न रहे।" चन्दा सकुचाकर चुप हो गई।

उत्सुकता से खन्ना ने पूछा—"फिर क्या हुआ?"

'कहने लगे, तुम भी सन्यासिनी बन जाओ न? राज को ताने देने लगते हैं—मुझे नही अच्छा लगता।"

राज पर उनका क्रोध व्यर्थ है।" गम्भीरता से खन्ना बोला, "देश की सेवा करने वाले क्या मनुष्य नही होते?"

"यही मैंने भी कहा तो कहने लगे, पहले तो मै राज का पक्ष नही लेती थी। तुम्हारे लिये कहा कि उन्होंने राज का पक्ष लिया तो मैं भी लेने लगी।"

"भाई साहब को भला नही मालूम होता तो मेरे जैसी न कहा करो" खन्ना ने मुख फेर लिया।

लड़की ने करवट लेकर कपडा शरीर पर से हटा दिया था। उसे ठीक करने के लिये चन्दा को अपनी बात अधूरी छोड कर उठना पडा। उसे ठीक से ओढा कर तखत पर बैठने के लिये आते हुए वह समीप की आलमारी से सिलाई का एक काम लेती आई।

खन्ना करवट से तखत पर लेटा रहा परन्तु चन्दा से और परे हट गया। परे हटने की इस नाराज़गी को चन्दा कैसे न समझती? इस शिकायत की उपेक्षा करना भी सम्भव न था। साहस पाने के लिये सिलाई की ओर दृष्टि लगा चन्दा बोली—"मै यह तो नही कहती कि कुछ बुरा है। तुम्हारी तरह दुनिया को देखा-समझा भी नही, न इतना पढा है, न इतनी बुद्धि है। यो, जानते हो कि मेरे हृदय मे कितना आदर है परन्तु जो कुछ हमारे यहाँ उचित नही समझा जाता, उस से क्या लाभ? आदर और प्रेम मे शारीरिक निकटता ही तो सब कुछ नही ... तुम नाराज़ हो गये!"

खन्ना की रुखाई दूर हो गई—"दुख मुझे अवश्य हुआ परन्तु नाराज़ नही हू।" उस ने कहा, "तुम्हारे आदर और स्नेह से ही मुझे तुम्हारे समीप आने का साहस होता है। यदि मै कोई कुचेष्टा करूँ तो मैं स्वय अपने विचार मे तुम्हारे आदर के योग्य न रहूगा।"

दरवाज़े पर आकर भजन ने टोक दिया—"बीबी जी चाय बनेगी?"

नौकर इतने दिन मे सीख गया था कि चौथे पहर खन्ना के घर आने पर चाय जरूर बनती है। वह स्वयं खन्ना का आदर करता था। खन्ना उस हाल-चाल पूछता था, पीने के लिये सिगरेट दे देता और कभी बीडी माँग लेता। राजाराम से ऐसे भाई-चारे के नाते की कल्पना भी भजन न कर सकता था। नशे मे भाई-चारे का एक सम्बन्ध होता है जो छोटे-बडे का भेद क्षण भर में दूर कर देता है। राजाराम सिगरेट बहुत कम पीते थे और कभी पीते तो काम से थक कर अपनी बैठक मे ही। सिगरेट आने-जाने वालो के सत्कार के लिये उन की मेज के दराज मे बन्द रहते थे। सिगरेट का धुआँ चन्दा को पसन्द न था परन्तु यह प्रतिबध खन्ना के लिये शिथिल हो जाता था?

"हाँ, बना ला" चन्दा ने उत्तर दिया।

खन्ना फिर अपनी बात कहने लगा—"यह केवल विश्वास की बात है। हृदय मे आदर और प्रेम होना आप बुरा नही समझतीं। शरीर के सामीप्य से दोष मालूम होता है। मैं समझता हूँ, अच्छा या बुरा जो कुछ है विचार से है। मानसिक रूप से भले विचार का अर्थ है, मनुष्य की प्रवृत्ति का सुधार की ओर होना और बुरे विचार का अर्थ है, गिरावट की ओर चले जाना। शरीर तो केवल साधन मात्र है। उस से तो अच्छे बुरे सभी स्पर्श होते हैं। प्रश्न तो है, किसी बात को बुरा समझ कर करना अवश्य उचित नही है परन्तु प्रत्येक स्पर्श मे मनोविकार भी अवश्य हो, यह मैं विश्वास नही करता। न मैं यह विश्वास करता हूँ कि स्त्री को एक ही व्यक्ति के उपभोग की वस्तु बनाकर सुरक्षित रख लेना ही आचार निष्ठा का सब से बडा आदर्श है। पुरुष की वंश रक्षा के लिये सतानोत्पत्ति का साधन होने के अतिरिक्त स्त्री का अपना व्यक्तित्व और सन्तोष भी कोई चीज़ है।"

नौकर चाय ले आया। हाथ की सिलाई एक ओर रख कर चन्दा चाय बनाने लगी। उसने दो प्याले तैयार किये, एक खन्ना के लिये और दूसरा अपने लिये। खन्ना चाय का प्याला लेकर चुपचाप पीने लगा।

चन्दा ने पूछा—"ऐसे चुप क्यो हो गये?"

"कहिये क्या कहूँ?" अपने इस उत्तर से चन्दा को निराश होते देख कर वह बोला, "मुझे भय है कि मैं अपनी बातो से तुम्हारी नैतिक धारणा को चोट पहुँचाता हूँ।" खन्ना ने दृष्टि ऊपर उठा कर देखा।

खन्ना की प्रकट रुखाई से चन्दा ने मुस्करा दिया—"नही, मैं सुनना चाहती हूँ। इसी से तुम्हारा चुप हो जाना मुझे अच्छा नही लगता। जो कुछ मैं समझती

नही, उस के लिये तुम मुझ से नाराज कैसे हो सकते हो ?"

चाय पीकर खन्ना जाने के लिये उठ खडा हुआ ।

"इस समय कहाँ जा रहे हो ?" चन्दा ने पूछा, "फिर वर्षा आयेगी और भीगोगे । यही बैठो न !"

खन्ना बैठा नही । "नही कुछ जरूरी काम है ।" उस ने उत्तर दिया ।

उसकी आँखो मे देख कर चन्दा ने पूछा—"तो फिर सन्ध्या को कब आओगे ? मै अकेली बैठी रहूँगी ।"

"हाँ, शशि के लिये दवाई दे जाऊँगा !" चलते हुये उस ने कहा ।

"दवाई का तो नुस्खा लिख दो, भजन जाकर ले आयेगा लेकिन तुम आना जरूर । रेडियो पर खबरे नही सुनोगे ?"

"आज मन चाहता है सोने को । दो रात बिलकुल सो नही पाया । सिर भारी हो रहा है । जाकर लेट जाऊँगा ।" ड्योढी की ओर जाते हुये खन्ना पीछे देखे बिना ही कह रहा था । चन्दा उसे ड्योढी तक पहुँचाने आई । इस बात का उत्तर देते हुये उसे दुख हो रहा था, फिर भी उस ने आग्रह किया, "नही तुम अवश्य आना । मै खाने के लिये प्रतीक्षा करूँगी ।"

वर्षा से ठण्डी हवा मे दो घण्टे तक साइकिल पर 'डिप्टी का पडाव, 'गाधी नगर' और 'ग्वाल टोली' का चक्कर लगाते हुए, तग बाजारो मे वर्षा के कीचड को माँझते समय, दो रात के उनीदे खन्ना के मस्तिष्क मे लगातार द्वद चलता रहा, वह चन्दा के यहाँ जाय या नही ? गोद मे सिर रखने की प्रार्थना उस ने ठुकरा दी थी परन्तु आदर और स्नेह से बुलाया भी है । कितनी प्रकार उस ने अपनी ममता और स्नेह प्रकट किया है परन्तु सदा एक उचित अन्तर बनाये रखकर । यदि वह न गया तो चदा को दुख होगा और यदि वह अपना सिर उसकी गोद मे रखने की जिद्द कर बैठेगा तब भी उसे कष्ट होगा । यही स्वाभाविक वृत्ति और सस्कारो का सघर्ष है । चन्दा समझदार होकर इस प्रकार की सकीर्णता मे क्यो रहे ? यदि वह वास्तव मे उस की मित्र है तो परस्पर सतोष के लिये उन के सामीप्य मे दोप क्या ? वे दोनो ही जिम्मेवार व्यक्ति है । वे जानते है, क्या करना चाहिये, क्या नही ?

वह जानता था कि उस के न जाने से चन्दा को दुख होगा । चन्दा की गोद में सिर रखने की प्रार्थना ठुकराई जाने के कारण स्वय पाये दुख का बदला लेने के लिये इच्छा होती कि न जाय । उस से अधिक बलवान इच्छा थी चन्दा के समीप जाकर सतोष पाने की । जान और न जाने की इच्छा के

द्वद मे वह सध्या साढे सात बजे के लगभग फिर चन्दा के यहाँ जा पहुँचा।

चन्दा बच्चो को खाना खिला रही थी। आँगन मे कदम रखते ही उसकी मुस्कान भरी दृष्टि ने खन्ना का स्वागत किया—"अभी खाना खा लीजिये, गरम है।"

"आप भी खायेगी ?" खन्ना ने पूछा।

"खाऊँगी क्यो नही ?" चन्दा ने हँसकर आश्वासन दिया।

राजाराम के यहाँ भोजन का ढग दोनो ही तरह चलता था, चौके में और मेज पर भी। खन्ना सदा मेज या तिपाई पर खाता। चौके का बन्धन उसे सुहाता न था। भजन ने दो कुर्सियो के बीच तिपाई रख दी।

भोजन के बाद चन्दा ने कहा—"तुम ऊपर चल कर रेडियो लगाओ। मैं पाँच मिनिट मे काम समाप्त कर आती हूँ। वह चौका समेटने लगी।"

बच्चो की शरारत और पडोस की चाँय-चाँय से बचाने के लिये राजाराम रेडियो ऊपर, सोने के कमरे मे रखते थे। खन्ना ने ऊपर जाकर गगा ओर की खिडकी खोल दी। लखनऊ रेडियो स्टेशन से सितार पर काफी की गत बज रही थी। थकी आँखो को बिजली का प्रकाश सुहाया नहीं। रोशनी बुझा दी। रेडियो का स्वर बहुत क्षीण कर दिया। जान पडता था, सितार कमरे में नही, कुछ दूर गगा के किनारे बज रहा है। वह क्षीण स्वर, महीनो सूर्य के ताप से तपी पृथ्वी के भीगने की सोंधी सुवास, नयी धुली बनस्पति और गंगा के वक्ष का स्पर्श और नये वर्षा की नमी लिये फरफराती वायु के साथ चला आ रहा है। खन्ना कुछ क्षण खिडकी के खुले किवाडो पर दोनो हाथ टिकाये वर्षा के जल से मटमैली गगा की ओर देखता रहा।

इस दृश्य को खिडकी से देख पाने के लिये तकिया पच्छिम की ओर कर वह लेट गया। वर्षा थम चुकी थी। आकाश मे पुर्वा के प्रहारो से धकेले जाते उमडे झीने और घने मेघ, शुक्ल पक्ष की दशमी के चद्रमा के सम्मुख गुजरते सयय, अपने घनत्व के अनुपात मे काले, मटमैले और उजले दिखाई पड रहे थे। मेघो के इस सिलसिले की ही भाँति खन्ना के मस्तिष्क में स्मृतियाँ आ-जा रही थी। दोपहर के समय चदा के व्यवहार से उसे बार-बार गुलशाँ की याद आ रही थी। मन मे विचार उठता, चदा के व्यवहार से जैसे आज वह स्वय कुण्ठित हुआ वैसे ही, शायद उस से बहुत अधिक, गुलशा उस के व्यवहार से कुण्ठित हुई थी।

रेडियो पर बजने वाली गत समाप्त हो गई। आगे क्या सुनाया जाने वाला

हैं, यह सूचना दी जा रही थी। खन्ना गत समझ नही रहा था। शायद अपनी स्मृतियो के सिंहावलोकन मे रत वह सुन भी न रहा था परन्तु गत समाप्त होने पर विचारो की शृङ्खला विछिन्न हो गई थी, जैसे समतल सड़क पर जाती साइकिल मार्ग मे गढा पड जाने से झटका खा जाय। रेडियो का स्वर बहुत क्षीण था। क्या सूचना दी गई, वह समझ न सका परन्तु सारगी की लय छिड जाने से, थके मस्तिष्क के लिये विश्राम आधार मिल गया। विचार की नौका स्मृति की धारा मे पुनः बहने लगी। कान सगीत की ओर थे। आँखें चाँद और मेघों के खेल देख रही थी। मस्तिष्क के पट पर आ जा रही थी, गुलशां ' चन्दा !

खन्ना को आहट न सुनाई दी। "नींद आ रही है ?" चन्दा ने पूछा। खन्ना उठ कर बैठने को हुआ।

"नही-नही लेटे रहो न। मै बैठी हूँ।" चन्दा ने आग्रह किया। समीप अपने पलग पर न बैठ कर वह खन्ना के सिरहाने बैठ गई। खन्ना ने दृष्टि उठा कर चन्दा की ओर देखा। मुस्कराकर चन्दा ने पूछा, "क्यो ?" और अपना हाथ उस के माथे पर रख दिया और बोली, "तुम्हारा माथा कुछ गरम है।"

"नही तुम्हारे हाथ शीतल है।" खन्ना ने दृष्टि उठा कर उत्तर दिया। इस उत्तर से चन्दा के हृदय का अन्तरतम तक छू गया।

"दोपहर में नाराज़ हो गये थे न ?" चन्दा ने प्रश्न किया।

अपना सिर चन्दा की गोद के समीप कर खन्ना ने उत्तर दिया—"किसी भी प्रकार के तिरस्कार से मनुष्य को सन्तोष नही हो सकता ?"

खन्ना के उत्तर से चन्दा के मन को जैसे ठेस सी पहुँची। धीमे, कुछ अधीर से स्वर मे उस ने प्रतिकार किया, यह तुम कैसी बाते करते हो ?" और खन्ना का सिर अपनी गोद मे लेकर उस का माथा सहलाने लगी। विश्राम की अनुभूति से खन्ना ने आँखे मूद ली।

रेडियो देहली से खबरे सुना रहा था। स्वर, नीचा होने के कारण अस्पष्ट था। कुछ समझ न आने पर भी ऐसा जान पड़ता था, कोई तीसरा आदमी कमरे मे बोल रहा है। आँख मूदे ही, हाथ उठा कर खन्ना ने कहा—"इसे बन्द न कर दो !"

चन्दा रेडियो बन्द कर देने के लिये उठी। "शशि को भी ले आऊँ" उस ने कहा और बच्ची को बाहो मे लिये लौट कर उसे अपने पलंग पर सुला कर

फिर खन्ना के सिरहाने आ बैठी। खन्ना ने अपना सिर उस की गोद मे रख दिया। चन्दा ने उस की आँखो पर हाथ रख कर कहा—"सो जाओ, बहुत थके हुये हो !"

"नीद नही आ रही है !" खन्ना ने उत्तर दिया।

"कहते थे, दो दिन से सोये नही !" झुक कर चन्दा ने पूछा।

"फिर भी नही आ रही ?"

'क्यो, ऐसे तबीयत खराब हो जायगी !"

"नही ऐसे नही होगी। बहुत दुख मे नीद नही आती, वैसे ही बहुत सुख मे भी नही आती।" खन्ना ने दृष्टि चन्दा के मुख की ओर कर कहा। चन्दा का मन चाह रहा था कि खन्ना कुछ बात करे। उस ने पूछा, "ऐसे तुम्हे सन्तोष होता है ?"

"बहुत ! अनुराग पाकर मन को सात्वना मिलती है। मानसिक सन्तोष के लिये मनुष्य क्या नही कर सकता ? करोडपति अपनी करोड की पूजी को अपने उपयोग के लिये खर्च नही कर सकता ? आखिर क्या खरीदेगा ? शारीरिक आवश्यकताओ की एक सीमा है। फिर भी वह उस पूजी को मानसिक सन्तोष के लिये बढाता है। जीवन-रक्षा के लिये सिपाही सेना मे नौकरी करते है पर जीवन मे सकट आया देख भाग नही खडे होते। उन के जीवन की रक्षा तो भाग खडे होने मे ही है ? ऐसा न करके वे कर्तव्य के लिये प्राण आहुति कर देते है क्योकि उस से उन की नैतिक धारणा पूर्ण होकर मानसिक सन्तोष होता है। मुझे तुम्हारी गोद मे सिर रख सन्तोष होता है। मै समझ सकता हूँ कि तुम मुझे अपना समझती हो। मन चाहता है कि जैसे शशि तुम्हारी गोद में छिप जाती है, वैसे ही शशि बन जाऊँ ?" खन्ना सामने देखता अपनी बात धीमे स्वर मे कह रहा था। अन्तिम वाक्य कह कर उस ने आँख उठा कर उत्तर की आशा से चन्दा की ओर देखा।

चन्दा उसके बालो मे अपनी उँगलिया चलाकर उसे शाति देने का यत्न कर रही थी। वह इतना सतोष दे सकती है, यह अनुभव कर उसका हृदय गदगद हो रहा था। खन्ना की बाते उसके हृदय के अतरतम को छू रही थी। वह चाहती थी, सामने बैठकर खन्ना अपनी बात कहता जाय और वह उसके चेहरे की ओर देखती निरतर उसकी बात सुनती रहे परन्तु उत्तर देना भी आवश्यक था। खन्ना के घुँघराले बालो के एक लच्छे को अपनी उँगली पर लपेटते हुए, सिर झुकाये अधमुँदी आखो से उत्तर दिया—"तो क्या उससे कम

हो ?" उसका मन चाह रहा था, खन्ना का सिर उठाकर हृदय से लगा ले।

समीप पलग पर सोई शशि ने हाथ-पैर पटक कर कपडे हटा दिये। खन्ना का सिर तकिये पर रखकर चन्दा लड़की को कपडा ओढा देने के लिये उठी। बच्ची के शरीर पर हाथ रखकर उसने चिंता से कहा—"इसका ज्वर तो बढ गया है।"

करवट लेकर खन्ना ने कहा—"थर्मामीटर लगाइये।"

चन्दा नीचे जाकर थर्मामीटर ले आई। बुखार तेज हो गया था। चन्दा ने थर्मामीटर देख चिंता से कहा—"१०४°।"

"घबराओ नही" खन्ना उठ बैठा, "क्या बजा होगा ?" उसने पूछा। टाइमपीस की ओर देखकर चदा ने उत्तर दिया, "पौने ग्यारह!"

खन्ना खडा हो गया—"मैं दूसरी दवाई ले आऊँ। दुकाने बन्द न हो जाय।"

खन्ना को जाते देखकर चन्दा ने आग्रह किया—"नुस्खा लिख दो। भजन ले आयेगा। कितने थके हो ?"

"नही, उसे शायद न मिले; अभी लौटता हूँ।"

खन्ना जीने की सीढियो मे धडधडाता नीचे जा पहुँचा और साइकिल निकालकर बाहर चला गया।

एक हाथ मे नई दवाई की शीशी और धोती के छोर में बरफ का बडा सा ढेला बाँधे, खन्ना घण्टे भर से पहले ही लौट आया। आते ही उसने पूछा—"भाई साहब अभी नही लौटे!"

आते ही होगे।" चन्दा ने घडी की ओर देख उत्तर दिया।

शशि को दवाई पिलाकर खन्ना ने बरफ की पट्टी उसके सिर पर रख दी। उसी समय नीचे से राजाराम की पुकार सुनाई दी।

"आ गये।" चन्दा ने कहा। भजन लेट गया था। उसके पुकार न सुनने पर चन्दा ने स्वय नीचे जाकर किवाड खोल दिये।

ऊपर आकर लडकी को १०४° ज्वर होने का समाचार सुन राजाराम घबरा गये। चन्दा ने तफसील सुनानी आरम्भ की, किस प्रकार खन्ना जी दो बजे से पहले नही आ सके। वह प्रतीक्षा में घबराती रही। सध्या आठ बजे से पहले दवाई न मिल सकी।

यह उपेक्षा राजाराम को बहुत बुरी मालूम हुई। "तुम किसी दूसरे डाक्टर को बुलवा लेती। खन्ना को खबर न मिली थी तो कोई दूसरा नही आ सकता था ? तुम्हारा क्या है, लडकी चाहे मर जाय प्रतीक्षा करती रहोगी! पहले

तो लड़की को भीगने दिया और इलाज का यह हाल है। मैं लखनऊ न जाऊँ तो मुसीबत। जाने पर एक दिन में यह हाल है ?" स्वय ऊपर आकर वे लड़की की नाडी देखने लगे। चन्दा अपराधिनी-सी चुप खडी रह गई।

खन्ना बरफ की पट्टी बदल रहा था। चन्दा की कातरता भरी चुप उसे सह्य न हुई। यह ज्वर तो इसी प्रकार ही बढ़ता है, चाहे पहले दवा देते या न देते। घबराने का कोई कारण नही है। शहर भर में सैकडो को यो ही बुखार आ रहा है। मेरा खयाल है कि कल तक ज्वर जरूर उतर जाना चाहिये। बहुत हुआ परसो तक।"

राजाराम विशेष चिन्ता के भाव से शशि के पलग पर बैठ गये। चन्दा ने उन्हे सम्बोधन कर कहा—"खाना भी रखा है, गरम है। चाहो तो दूध ले आऊँ ?"

"जरा सांस तो ले लेने दो। दिन भर घूम-घूम कर बदन काठ हो गया है। इन्हे पडी है, खाना पहले हो जाय।" विक्षिप्त होकर चन्दा ने कहा, "मै भी तो इसीलिये कह रही हूँ। हाथ-मुँह धोकर कुछ खा पीकर लेटो। थके हुये हो।"

राजाराम ने विरोध किया—"यह तुमने कब कहा ? तुम तो कह रही हो, खाना खतम हो जाय, तुम्हारा झगड़ा मिटे।"

चन्दा की ओर देखकर खन्ना बीच में बोल उठा—"लड़की की चिन्ता आप न कीजिये। इसे मै सम्भाले हूँ। आप हाथ-मुँह धोकर विश्राम कीजिये।' चन्दा सिर लटकाये बराम्दे मे चली गई।

नीचे जाकर कपडे बदल, कुछ खा-पीकर राजाराम चन्दा के साथ ऊपर आये तब तक एक बज गया था। शशि का ज्वर अब भी १०४° था। खन्ना प्रत्येक कुछ मिनट बाद बरफ की पट्टी बदल रहा था। चिन्ता के स्वर में राजाराम ने कहा—"अब तुम आराम करो। मै देखता हूँ लडकी को।"

"तुम क्या करोगे ?" चन्दा बोल उठी, दिन भर के तो थके हो। तुम लेटो, मै सब कर लूगी।"

उस बात का कोई उत्तर न देकर खन्ना ने कहा—"लडकी की चारपाई बाहर कर दीजिये। मै सब कुछ कर लूगा। आप दोनो आराम कीजिये। यह काम मेरा है। आप क्या जानते है, कब बरफ की पट्टी देना ठीक है और कब नही ? यदि आध घण्टे तक इस का ज्वर कुछ कम न हुआ, मै गीले कपडे से इस का शरीर पोछ दूगा। आप चिन्ता न कीजिये ?"

राजाराम बोले—"नीद नही आ रही है, बैठेंगे।"

चन्दा ने खन्ना से सो जाने का आग्रह किया—"तुम दो रात नही सोये, कैसे जागोगे ? बता दो, मै करती जाऊँगी। ज़रूरत पडने पर जगा लूगी !"

राजाराम को थकावट से जम्हाई आ रही थी। स्त्री की बात से सहमत होकर उन्होने कहा—"हाँ ठीक है! मै ज़रा लेटता हूँ। तुम मुझे जगा देना।"

चन्दा ने खन्ना की ओर देख अनुनय से कहा—"तुम सो जाओ भाई ! मै कह रही हूँ, कही तबीयत खराब हो गई तो ?"

राजाराम को सुनते न देख कर खन्ना ने चन्दा की आँखो मे सीधे देख कर कहा—"जैसे मै कहता हूँ वैसे कीजिये।" आगे कुछ कहना चन्दा के लिये सम्भव न था। वह समझती थी, वह बात केवल उसी के लिये कही गई है।

कुछ देर तक वह शशि के पैताने बैठी खन्ना का उपचार देखती रही। खन्ना के जाकर लेटने के लिये कहने पर उसे उठना ही पडा परन्तु नीद उस की आँखो मे कहाँ थी ? पति के खुर्राटे लेने का स्वर कमरे मे गूजने लगा। वह विना आहट किये उठ आई। खन्ना के समीप आकर बोली—"तुम आराम करते तो अच्छा था?"

खन्ना ने थर्मामीटर दिखा कर उत्तर दिया—"एक घण्टे मे ज्वर आधा दर्जा नीचे आ गया है। दो घण्टे मै बैठूगा, फिर तुम बैठ सकती हो। अभी जाओ।" चन्दा कुछ देर खडी रह वह फिर जा लेटी। घण्टे भर से पहले ही वह फिर आ पहुँची। ज्वर १०२° रह गया था। खन्ना ने पट्टी रखना बन्द कर दिया था।

चन्दा ने कहा—"अब तो तुम लेटो। मै बैठूगी। जानते हो, मुझे नीद नही आ सकती।" खन्ना मुस्करा दिया। सन्तान के प्रति चन्दा के स्नेह का यह प्रवाह जैसे किसी अश मे उसे भी मिल गया हो। "बहुत अच्छा" उस ने कहा, "तुम अपनी लड़की को देखो। मुझे भी नीद नही आ सकती, मै तुम्हे देखू ?" चन्दा ने केवल एक नज़र उस की ओर देख कर आँखे शशि की ओर कर ली। वह बैठी रही। खन्ना समरकन्द के शिशुगृह मे काम करने की कुछ बाते सुनाता रहा।

साढे चार बजे राजाराम उठ कर आये। ज्वर केवल १००° रह गया था। नीद से मुदती आँखे मलते हुये उन्होने कहा—"अब तुम दोनो सो जाओ। मै बैठता हूँ।"

"अब बैठने की जरूरत ही नही है।" चन्दा की ओर संकेत कर खन्ना ने कहा, "यह भी यो ही बैठी है, माँ के मोह मे और मै इसलिये बैठा हूँ कि अब नीद क्या आयेगी ? साढे छ बजे मुझे एक जगह जाना है।"

राजाराम फिर पलग पर चले गये। चन्दा माँ के अधिकार से बैठी रही। साढे छ' बजे खन्ना जा रहा था। चन्दा ने पूछा—"दोपहर मे आइयेगा न ?"

खन्ना ने जमहाई लेते हुये उत्तर दिया—"नही, आज तो सोऊँगा। हाँ, यदि स्नेह से गोद मे सुलाना हो तो आ सकता हूँ। खैर, हाँ तीन-चार बजे आऊँगा चाय के समय। इस दवाई की बची हुई खुराकें अब न देना। वह पहले वाली दवा देते रहना।"

खन्ना चला गया और चन्दा नीद से भरी पलको से निरन्तर उसी की बाबत सोचती रही, बिल्कुल तन्मय होकर।

"थर्मामीटर तो लगाओ जरा लडकी को" उठ कर राजाराम ने कहा। सचेत होकर चन्दा ने ज्वर देखा ९९° था।

"अब ठीक है। आओ नीचे चलो।" उन्होने चन्दा से कहा।

"भजन तुम्हे पानी-वानी दे देगा। मै जरा दो मिनिट पीठ सीधी कर लूँ ?" वह शशि के पलग पर ही लेट गई। उस का मन चाहता था, आँखे मूँद कर कुछ देर रो ले।

× × ×

सूर्यास्त हो गया था पर अभी उजाला था। जून के प्रचण्ड सूर्य की धरती मे गहरी समाई हुई किरणो पर रात की शीतलता और अन्धकार को सहसा छा जाने का साहस नही हो रहा था। घरो के आँगन और कोठियो के अहातो में छिडकाव करके ताप घटाने का उपाय किया जा रहा था परन्तु विस्तृत पृथ्वी को, साधनहीन जीवो की दुनिया को, कौन ठण्डा कर सकता था ? ग्वाल-टोली से शहर आने वाली सडक के किनारे नीम और बरगद के ऊँचे-ऊँचे वृक्षो की चोटियो पर कौवे और दूसरे पक्षी, सूर्यास्त के बाद भी अन्धकार की शीतलता न मिलने के क्षोभ मे चिडचिडा रहे थे।

खन्ना ग्वालटोली से लौट रहा था। विक्टोरिया मिल के समीप आ कर उस ने साइकिल 'परमट' की ओर घुमा दिया। उसे मालूम न था कि राजाराम घर मिलेंगे या नही। उन्हे सप्लाई के कुछ सदूक लखनऊ छावनी मे पहुचाने थे। सामान तैयार कराने से अधिक कठिन हो रहा था उसे पास करवा लेना।

कानपुर छावनी की बात दूसरी थी। लोग परिचित हो गये थे, लिहाज से काम हो जाता था। लखनऊ के अफसर बिलकुल बेमुरव्वत बन रहे थे। वे दूसरे-तीसरे लखनऊ चक्कर लगा रहे थे। कहीं अढाई हजार के माल पर पानी न फिर जाय।

साइकिल ड्योढी मे छोड़ कर खन्ना आँगन मे पहुँचा। चन्दा चौके मे व्यस्त थी। आँखे चार होने से स्वाभाविक मुस्कान उस के चेहरे और आँखो मे छा गई। उस मुस्कान की छाया मे भी चिन्ता का चिन्ह प्रकट था।

खन्ना ने पूछा—"भाई साहब अभी नही लौटे, क्या फिर लखनऊ गये है ?" लखनऊ जाने पर राजाराम रात साढे ग्यारह की गाडी से लौटते थे। उस समय खन्ना को काम से जाने की जल्दी न होने से वह और चदा राजाराम के लिये खाना ढक कर ऊपर छत पर प्रतीक्षा मे बैठे बात-चीत करते रहते थे या मकान के पिछवाड़े से गगा की रेती पर छाई अँधियाली मे, छिद्रान्वेषी दृष्टि से रक्षा पाकर कुछ देर चहलकदमी कर आते थे।

दिन भर कम्युनिस्ट पार्टी की नीति के अनुसार जनता के सगठन और कौमी-जग की भावना के विरोधियो से लडने मे व्यस्त रह कर खन्ना इस समय थक कर विश्राम चाहता था। वह चन्दा के मस्तिष्क मे अपने विचार ठूँसने से भी बाज न आता। गृहस्थ के झझट मे उलझ कर अपने आप को भूल गई चन्दा भी खन्ना की सगति मे अपना व्यक्तित्व अनुभव करती थी, वह अपनी इच्छा से कुछ पाकर, कुछ देकर सतोष पा रही है।

"नही, लखनऊ तो नही गये!" चन्दा ने उत्तर दिया, "परन्तु सुबह के गये लौटे ही नही। दोपहर का खाना भी नही खाया। दो-तीन दिन से परेशान है। वही बढैयो वाला झगड़ा है। उसी मे परेशान है। पहले उन लोगो ने वैसे झगडा किया, अब कह रहे है कि मजदूरी बढाओ! पहले सवा रुपया रोज ले रहे थे अब पौने दो माँग रहे है ।"

इस प्रसग मे अरुचि दिखाने के लिये सिर से रूखे बालो को झाड कर खन्ना ने कहा—"वह सब तो भाई साहब सुनायेगे ही। कोई दूसरी बात करो। खन्ना को खडे देख भजन ने कुर्सी लाकर आँगन में रख दी। शशि माँ के पास बैठी रोटी खा रही थी। वह उठ आई और खन्ना की धोती पकड कर उस ने अनुरोध किया, "बैतो।"

खन्ना बैठा ही था, ड्योढ़ी मे फिर साइकिल की आहट सुनाई दी। राजाराम चले आ रहे थे। चेहरे पर थकान और दिन भर खाई धूप और धूल

के चिन्ह थे। खन्ना को सामने वैठा देख कर उन्हो ने पूछा—"कव आये ?"
"वस यही, अभी-अभी !" खन्ना ने उत्तर दिया।

"अच्छा, अभी आये ?" कह कर रसोई मे वेठी चन्दा की ओर दृष्टि डालते हुए वे भीतर कपडे वदलने चले गये।

खन्ना को इस प्रश्न और राजाराम के स्वर में स्वागत की ध्वनि अनुभव न हुई। सोचा, दिन भर के थके है। पुकारा—"यहाँ वाहर हवा मे आइये। जरा पसीना सूख जाय तो कपडे वदलिये !"

भीतर से राजाराम ने उत्तर दिया—'अभी आता हूँ !" और साथ ही कुछ ऊँचे स्वर में उन्होने पुकारा 'घोती देना।' पुकार सुन कर चदा भीतर चली गई।

राजाराम नहाने और कपड़े वदलने में लगे रहे। चदा उन्हें आवश्यक वस्तुये मुहय्या कर रही थी। खन्ना आँगन में वैठा, रवि के लट्टु के लिये डोरी वटते हुए शशि की निरर्थक तोतली वातो पर हुकारा भर रहा था। नहाकर राजाराम कुर्ता-धोती पहन कर एक गिलास नीवू का शर्वत पीते हुये वात करने लगे। चदा तीसरी कुर्सी पर वैठी सुन रही थी।

पहले जव राजाराम पत्ती (Share) वेचने का काम करते थे, इधर-उधर लोगो से मिलते रहने के कारण राजनैतिक घटनाओ और वहस में भाग लेते रहते थे। म्यूनिस्पैलिटी के चुनाव के दगल में भी किसी न किसी दल से उनका सहयोग रहता था। जव से फौजी सामान के ठेके का काम आरम्भ किया उन्हे वह सव चर्चा व्यर्थ जान पटने लगी थी। खन्ना चदा से वैसी वातचीत करता भी तो वे वहुत उपेक्षा से उसमे भाग लेते, लिये विना भी न रहते।

राजाराम का फौजी काम का ठेका सीधा अपना ही न था। छावनी के दफ्तर से चार लाख वक्स एक वर्ष मे देने का ठेका जयराम-खेमचन्द वरजोरिया ने ले लिया था। उसी ठेके को उन्होने आगे, दस-दस वीस-वीस हजार वक्सो के ठेके मे वाँट दिया था। राजराम ने जे० के० वरजोरिया से पचीस हजार वक्सो का ठेका ले लिया था। माल को समय पर पहुँचाना और फौजी दफ्तर मे पास करवाना, यह सव उनके ही जिम्मे था। वरजोरिया ने उनसे अढाई हजार की जमानत प्रति मास माल ठीक पहुँचाते रहने की ले ली थी।

वरजोरिया कम्पनी सरकार को प्रति वक्स तीन रुपये के दर से दे रही थी। राजाराम और उनके साथ के ठेकेदारो को दो रुपया वारह आने फी वक्सा ठेका मिला था। आरम्भ मे नौ-साढे नौ आने फी वक्सा वचता दिखाई देता था परन्तु कब्जे और कीले महगी हो जाने पर वह सात साढे सात आने

रहा गया। लकडी का भाव भी तेजी से बढ रहा था। बारह आने फुट से एक रुपया फुट हो गया, लकडी का भाव अभी ऊपर जा रहा था।

बरजोरिया कम्पनी स्वय चोब की व्यापारी थी। उनकी अपनी आरा-मिले थी। उनके ठेकेदार उन्ही से लकडी खरीदते तो अदायगी मे कुछ दिन मिल जाते थे। ठेकेदारो के बहुत रोने-झीकने पर उन्होने एक आना बक्सा बढाया परन्तु लकडी का भाव चढा कर छ पैसा फी बक्सा मुनाफा भी बढा लिया।

राजाराम से एक दिन यह सब किस्सा सुन कर खन्ना ने कहा था, पूजी की शक्ति और है क्या? बरजोरिया को चार आना क्या, एक आना बक्सा बहुत है। अब एक लाख मुनाफा है, तब भी पच्चीस हजार तो होता ही। इसी ठेके पर तो उसका निर्वाह है नही? उससे लिये यह तो यो ही नून-फिट करी है। अपनी पूजी के बल पर वह चाहे आपको पॉच-छ आने फी बक्स खाने का मौका दे कर स्वय घर बैठा आपसे अपने लिये फी बक्सा चार आने लेता जाय या आपको चार-पॉच सौ रुपया माहवार पर नौकर रख कर अपना कारोबार चलवा ले? किसी भी ढग से हो, वह आप की मेहनत करने की शक्ति खरीदता है। आपकी और कारीगरो की मेहनत से जो कुछ पैदा होता है, वह सब आपको नही मिलता। यह आपका शोषण है? यह सब इसलिए कि आपके पास बरजोरिया जितनी पूजी नही। यदि मूल ठेका आप स्वय ले लेते तो वह लकडी का भाव चढा कर आपको एक बक्से की लकडी तीन रुपये मे देता। बाजार मे बरजोरिया का मुकाबला कोई कैसे कर सकता है? ऐसे ही आप अपने यहॉ काम करने वाले कारीगरो की बात समझ लीजिये। उस समय खन्ना की बातचीत से राजाराम को कुछ-कुछ सहानुभूति हुई थी।

बहस मे उन्होने कहा—"समाजवाद मे सब पूजी सरकार के ही हाथ मे होगी तो सरकार मुनाफा ले जायगी, हमे-तुम्हे गरीबो को क्या मिलेगा?"

"लेकिन सरकार की नीति गरीबो के हाथ मे होगी तो सरकार लम्बा-चौडा मुनाफा बचाने के बजाय मेहनत करने वालो की मेहनत का पूरा फल दे सकती है। यही फी बक्सा बारह आने मुनाफा यदि कारीगर की मजदूरी मे जाय तो कम से कम तीन चार रुपये रोज उसे और मिल जाय! उसे सवा रुपये के बजाय पाँच रुपये मिलने लगे।"

चन्दा हसकर बोली—"तो फिर मजदूरी करने मे किसी को बुरा काहे को लगे?"

"क्या कहने" हाथ उठाकर राजाराम ने कहा, "और इस इन्तजाम वगैरह में तो कुछ लगता ही नही होगा।"

खन्ना बीच में बोल उठा—"उसके लिये आप चार-छ आना फी मजदूर और निकाल दीजिये।"

फौजी ठेके के काम से राजाराम का बरसो से चला आया आर्थिक सकट दूर हो रहा था परन्तु उसके साथ ही इनकम टैक्स की मुसीबत आ गई थी। हाथ आया सैंकडो रुपया देने के लिये विवश हो जाना उन्हे अन्याय जान पडता। उन का विश्वास था कि इनकम-टैक्स अफसर मुसलमान है इसलिये हिन्दू व्यापारियो से ईर्षा करता है। प्राय ही वे इस विषय की चर्चा करते। कितने ही दिन इस कारण भी उन्हे लखनऊ दौडना पडा। झुँझलाकर कहते—"अब तो सोशलिज्म ही हुआ जा रहा है। बारह, बीस, पच्चीस, पैंतीस और पच्चासी फी सैंकडा तो सरकार टैक्स मे लिये ले रही है। नब्बे फी सैंकडा तक ऊँचे टैक्स मे जायगा। अब कसर क्या है?" उन्होने डाक्टर को ताना दिया, "और तुम कम्युनिस्ट ऐसे समय काग्रेस के खिलाफ सरकार की मदद करना चाहते हो?"

"तुम सरकार का ठेका लेकर सरकार की मदद नही कर रहे हो?" चन्दा बीच में बोल पडी।

राजाराम को अपनी स्त्री का यह आक्षेप अच्छा न लगा। नाराज़गी से बोले—"जिस बात को समझती नही, उस मे क्यो बोलती हो? तुम सब से पहले सोशलिस्ट बन जाओ। यह तो बिज़नेस है, इस में क्या है? हम नही करेंगे, दूसरा करेगा। बडे-बड़े काग्रेसी जिनके यहाँ महात्माजी ठहरते है, तुम्हारे बद्री बाबू जिनसे रुपया लेते है, वे सब अपनी मिलो से फौजी सप्लाई नही कर रहे है? इसमें क्या रखा है?"

चदा को बीच में न बोलने का सकेत कर, खन्ना बोला—"कम्यूनिस्ट सरकार की मदद तो क्या कर रहे है, वे फैसिस्टो से अपने देश की रक्षा करना चाहते हैं। हवाई आक्रमण से रक्षा का प्रबध तो काग्रेस भी करना चाहती है। हम कहते है कि सम्पूर्ण शक्ति से सीमा पर लडा जाय, हवाई आक्रमण हो न सके। उस के लिये खर्च तो होगा ही? पूजीपति युद्ध से फायदा भी तो कितना उठा रहे है? मरते तो गरीब ही है। पच्चासी फी सैंकडा टैक्स देकर भी यह लाखो बचा सकते है तो अनुमान कीजिये युद्ध से पहले यह लोग पूंजीवादी व्यवस्था मे देश की परिश्रम करने वाली जनता को कितना लूटते होगे? युद्ध

की स्थिति यह स्पष्ट कर रही है। ऐसे लोग युद्ध के समय देश के सकट से अनुचित लाभ उठा रहे है या नही ? गार्टन मिल ने एक करोड नौ लाख रुपया टैक्स दिया है तो इकतालीस लाख मुनाफे मे भी तो पाया है। यह वह है जो प्रकट है। यदि इतना टैक्स न होता तो पूजीपति तो देश भर को दो बरस मे ऐसे चूस ले जैसे गडेरी को चूस कर फेक दिया जाता है। इन्हे महँगी से क्या मुसीबत ?"

खन्ना को खयाल आया, राजाराम यह सब अपने प्रति ही ताना न समझ ले ? इस प्रकार की बात वह उनकी उपस्थिति मे न करता था। राजाराम नीबू के शर्बत का गिलास पीते-पीते थकावट से परेशान स्वर मे अपने कारोबार की कठिनाई का चर्चा करने लगे—"झगडा तो हुआ था एक बढई के गुस्ताखी करने पर। अब वे लोग इस बहाने मजदूरी बढा लेने पर डट गये है। आने दो आने की बात हो तो भी है। उनकी जिद् है, एक दम से आठ आने रोज बढाने की। सवा रुपये से एक दम पौने दो रुपये। लूट मच रही है क्या, अधेर है क्या ? फी बक्सा सात-आठ पैसे फरक पडता है, कुछ खेल नही है ?

शर्बत का गिलास खाली कर राजाराम ने चन्दा को दे दिया। गिलास फर्श पर रख कर चन्दा बैठी रही। राजाराम ने सुझाया—"उठाकर रख दो, टूट जायगा। आजकल आठ आने से कम न मिलेगा।"

"रखे देती हूँ" चदा ने कहा और बैठी रही, "हम कहते है किसी बच्चे की ठोकर से टूट जायगा, सुनती नही !" राजाराम बिगड उठे। चदा का मुख गम्भीर हो गया पर वह उठी नही। पुकारा, "भजन ! गिलास ले जाओ !"

गिलास को सुरक्षित चला गया देख कर राजाराम आगे बोले—"हम तो जैसे सब सिरदर्दी मुफ्त मे ही करते है। हम अच्छी तहर जानते है कि कारीगरो को सोशलिस्टो ने भड़काया है। अमजद और बूटासिह के यहाँ भी दो दिन से काम बद है। ऐसे तो दबने वाले हम भी नही, कच्ची कौडी नही खेले है।"

खन्ना इस विवाद मे न पडना चाहता था। गर्दन फिराकर उस ने कहा—"मेरा नही खयाल किसी ने भडकाया होगा। मजदूर महँगी के मारे परेशान है। अरे भजन, कहाँ गया, दोस्त एक बीडी तो दो।"

"क्या तमाशा करते हो ? ऐसा मत किया करो।" राजाराम ने टोक दिया। चन्दा की ओर देख कर कहा, "कोट की जेब से चाबी लेकर मेज के दराज से सिगरेट का डिब्बा ला दो !"

सिगरेट का डिब्बा लेकर चन्दा लौटी तो खन्ना कह रहा था—"अनाज और कपड़े का दाम अढाई गुना बढ गया है तो मजदूर का निर्वाह पहले की मजदूरी में कैसे हो सकता है ? वे भी देख रहे हैं कि एक जगह काम छूटने पर दूसरी जगह ज्यादा मजदूरी मिल सकती है, वे अधिक मजदूरी मांगेगे ही। बेकारी का भय था तो वे मजदूरी घटने पर भी गम खा जाते थे।"

अपनी कुर्सी पर बैठ कर चन्दा ने राजाराम को समझाना चाहा—"हटाओ परे, बढा दो मजदूरी। काम रुकने मे भी तो नुकसान ही है...... ।"

"वाह-वाह, मजदूरी बढा दो। क्या बक्सो का दाम भी बढ जायगा ? जो लोग अपने माल के दाम बढा सकते हैं, उन्हे मज़दूरी बढाने मे क्या डर ! हमारा नुकसान कहाँ से पूरा होगा ?"

"नुकसान तो है पर काम बन्द रहने से ही कौन फायदा हो जायगा ? मजदूरो को भी तो पेट भरना है।" चन्दा ने तर्क किया।

"मज़दूरो के पेट को हम क्या करे ?" राजाराम ने चन्दा की ओर देख कर खन्ना को सुनाया, "हमारे माल के दाम बढ जायें तो हमे मजदूरी बढाने मे क्या लगता है ? हमारा नुकसान कहाँ से पूरा होगा ?"

खन्ना सिगरेट से लम्बा कश खींच कर धुआँ छोडता हुआ चुप रह गया परन्तु चन्दा ने उत्तर दिया—"ऐसे फिर मजदूर तुम्हारे नुकासान को क्या करें ? उन का पेट कौन भरेगा ?"

राजाराम उत्तेजित हो गये—"क्या बेमतलब बकती जाती हो ? रोज़गार मे जैसा परता पडेगा, वैसी मजदूरी दी जायगी। कोई अपने घर से थोडे दे देगा ? बिजनेस की समझ भी हं, चली है सोशलिस्ट बनने।"

खन्ना चन्दा की ओर देख रहा था कि उसे बहस न करने का सकेत कर दे परन्तु वह भी पति की ही भाँति उत्तेजित होकर उत्तर देने पर तुली हुयी थी। "सोशलिस्ट बनना इस मे क्या" उस ने कहा, "मै तो कहती हूँ काम बन्द होने से अपना ही नुकसान हो रहा है • ।"

राजाराम ने कुर्सी पर करवट लेकर स्वर ऊँचा कर कहा—"हाँ नुकसान का तो तुम्हे बहुत खयाल है ? तुम्हे तो मज़दूरो की मज़दूरी बढाकर सोशलिस्ट बनना है। एक तो पहले मजदूरो को भडका कर मुसीबत खडी कर देना। फिर कहना, हमारा ही तो नुकसान हो रहा है।...... हम मज़दूरो के मजदूर बन जायें।"

पति से पाये तिरस्कार से तिलमिला कर चन्दा बोल उठी—"हाँ, मज़दूर

यो ही बहकाये मे आ जाते होगे ? तुम न बहका लो जाकर ।"

स्त्री द्वारा अपना यह खुला विरोध और चुनौती दिया जाना राजाराम को सह्य न हुआ । क्रोध मे उन्होने डाँट दिया—"तुम्हारा बीच मे बोलने का क्या मतलब ?"

चन्दा उठ कर भीतर चली गई । खन्ना विचित्र परिस्थिति में उलझ गया । राजाराम अपनी बात उसे ही सुना रहे थे । चन्दा से बहस बहाना ही था । राजाराम की अन्तिम बात से उत्तर देने और बहस मे कटुता आ जाने का सब उत्तरदायित्व खन्ना पर ही आ गया, इस के अतिरिक्त चन्दा को बहका कर अपना अनुचित समर्थन कराने का आरोप भी ।

राजाराम जिस प्रकार उत्तेजित हो गये थे, कोई बात आगे कहने का उपयोग न था । चन्दा के अपमान और क्षोभ की स्थिति मे उस की सहायता कर सकना भी खन्ना के लिये सम्भव न था । बिलकुल चुपचाप उठ कर वह चला जाय तो उस मे राजाराम का अपमान था । क्या करे ? सिगरेट से खूब लम्बे दो कश खीच कर उस ने कहा—"मजदूरो को भडकाने का आप का खयाल ठीक हो सकता है पर यह तो मालूम नही कि भडकाया किसने ? मजदूर सभा तो केवल मिलो और बडे-बडे ऐसे कारखानो मे दखल दे सकती है, जहाँ मिल कमेटियाँ हों ! आप के यहाँ तो कुल अठारह-बीस आदमी है । ऐसा भी हो सकता है, किसी दूसरे ठेकेदार या कारखाने वाले ने आप के मजदूरो को तोडने की चाल चली हो । आजकल कारीगर कम मिल रहे है । आप को तो मालूम ही होगा, 'अपर इण्डिया मैनुफैक्चरर्स कम्पनी' वाले कारीगर ढूढ कर लाने के लिये फी कारीगर पाँच रुपया दलाली दे रहे है । ऐसी हालत मे कारीगर अधिक मजदूरी माँगने लगे तो आश्चर्य क्या ?"

"हाँ और क्या ?" राजाराम ने स्वर नीचा कर कहा, "एक दूसरे का गला रेतने की फिक्र में है सब ! किसी का काम चलता इन्हे अच्छा थोडे ही लगता है ?"

खन्ना चलने के लिये उठ खडा हुआ । राजाराम ने ठहरने के लिये अनुरोध किया—"अजी खाना खाके जाना ऐसे कैसे जा रहे हो ?" वे स्वय भी जानते थे और खन्ना भी समझ रहा था कि जिस प्रकार तिरस्कृत होकर मूक विरोध के भाव से चन्दा उठकर भीतर चली गई है, खाने-पीने का काम शीघ्र न हो सकेगा ।

"नही, खाने के लिये तो आज एक जगह पहले से मान चुका हूँ । नौ

वजे एक मरीज़ को भी देखना है।" खन्ना ने ड्योढी की ओर कदम बढाते हुए कहा, "अब आज्ञा दीजिए, कल दोपहर मे आऊँगा !"

"यही खाकर जाते तो अच्छा था" कुर्सी से उठते हुए राजाराम कहते रहे परन्तु उनके उठ खड़े होने का अर्थ था, जा रहे हो सो ठीक ही है।

खन्ना के चले जाने के वाद आँगन मे अकेले वैठना राजाराम के लिये कठिन हो गया। एक सिगरेट सुलगाकर सिगरेट का डिब्बा हाथ मे सँभाले वे वैठक मे चले गये। पखा चलाकर वे अपने कागज़ पत्र पलटने लगे। ध्यान कागज़ो की ओर न था। वे सोच रहे थे कि अपनी स्त्री से इस प्रकार अपमान सहने के लिये वे तैयार नही। प्रत्येक वात मे खन्ना का ही समर्थन करने का अर्थ क्या है ? खन्ना मेरे वाहर रहने पर आकर यहाँ घण्टो जाने क्या-क्या वाते सिखाया करता है ? वह भी खन्ना ही से हर समय वात करना चाहती है। हम दिन भर भूखे, थके माँदे धूप में घूम-घूमकर हल के वैल की तरह जुताई करे और हमारा प्रत्येक वात मे अपमान ?

राजाराम हथेली पर ठोढी टिकाये याद करने लगे कि खन्ना किस-किस अवसर पर घर मे कितना-कितना समय वैठा रहा है। खन्ना के सभी कामो के लिये चन्दा वहुत तत्पर रहती है। पहले वह सिगरेट छूती तक न थी। खन्ना के लिये जरूरत हो तुरन्त उठा लाती है ? वह सदा उसी से वात करना चाहती है। अव हमारी कोई भी वात इसे अच्छी नही लगती। खन्ना ऊपर से सीधा वना रहता है और भीतर से जाने क्या-क्या पट्टी पढाया करता है ? इन कम्युनिस्टो के लिये पाप-पुण्य कुछ भी नही। जिसको कोई नियम, धर्म-कर्म न मानना हो, वह कम्युनिस्ट वन जाय। स्त्रियो को तो कम्युनिस्ट होना अच्छा लगेगा ही। न कोई वन्धन, न किसी का डर, न किसी का लिहाज। जव जिससे मन वहला, उसके साथ चल दिये। खन्ना का क्या है, उसका क्या जाता है, दूसरे का घर उजाडकर तमाशा देखो ! इन लोगो ने यमुना को भी विगाड दिया है। इतनी उम्र तक अच्छी भली औरत थी, अव रग देखो !

चन्दा खन्ना के सामने पति से डाँट खाकर, भीतर तखत पर जा लेटी थीं। अपमान और ग्लानि से मर जाने की इच्छा हो रही थी। ऐसा पहले कभी न हुआ हो सो वात नही। राजाराम स्वभाव के ही कुछ उग्र थे। स्त्री के व्यवहार मे कभी कोई वात अनुभव होने पर सामने फटकार देते थे। चन्दा के रो लेने के वाद वे उसे मना भी लेते थे। वह विवाहित जीवन के प्रेम का एक अग था। चन्दा के अभ्यास और प्रवृत्तियाँ राजाराम से कुछ भिन्न थी।

स्वाभाविक वृत्ति के प्रकट होने पर उसका व्यवहार और पसन्द पति से भिन्न जान पडती । इस वृत्ति को कुचल कर पति की इच्छा के अनुकूल बनाना विवाहित जीवन का क्रम था । इससे अपना जीवन कुचला जाता जान पडता था परन्तु इसके सिवाय मार्ग न था । यदि स्त्री की पसन्द के अनुकूल नही तो यह स्त्री का दोष है । पति का स्त्री के आधीन होकर रहना उचित नही ।

इस प्रकार के मतभेद या पति के व्यवहार में रुखाई अनुभव करती चन्दा बारह वर्ष तक अपने आपको गृहस्थ जीवन मे साधती आई थी । वह घर के बाग की बेल थी और पति माली । पति की पसन्द के प्रतिकूल फूट पड़ने वाले स्वभाव और प्रवृत्ति की कोपलो को काट-छाँट कर पति की पसन्द और गृहस्थ की परिस्थितियो के अनुकूल शाखाओ को बढाना ही स्त्री के जीवन का क्रम है । चन्दा भी यह विश्वास करती आई थी । उसकी अपनी स्वाभाविकता उसके सामने अपराध होकर बेबस हो जाती थी । कभी उसे अनुभव होता कि स्त्री होना ही अपराध है । इधर खन्ना के विचारो का विरोध करते रहकर भी उसका अन्त करण स्वय अपने अस्तित्व और अधिकार को स्वीकार करने का सतोष पाने लगा था । वह समझने लगी थी कि पति से मतभेद मे स्त्री की ही भूल या अपराध होना आवश्यक नही ।

चन्दा अभ्यास के कारण इस प्रकार के तिरस्कार की उपेक्षा कर जाती थी । पति का कुछ न कुछ कह देना नित्य की साधारण बात थी परन्तु खन्ना के सम्मुख यह अपमान असह्य जान पडा । मन मे सोच रही थी कि खन्ना क्या कहते होगे, इस का कुछ भी आदर नही ? आदर न मिलने पर उसे मनुष्य सह सकता है परन्तु मिला हुआ आदर छीना जाना असह्य हो जाता है । खन्ना से पाये सम्मान के सन्तोष से वह अपने प्रति सम्मान की धारणा बना रही थी । खन्ना के सामने ही मिट्टी कर दिया जाने से बढ कर दुख और कौन हो सकता था ? खन्ना के सम्मुख डाट खाते समय यदि पृथ्वी फट जाती तो वह सहर्ष उस मे समा जाती । खन्ना को अब वह क्या मुख दिखायेगी ? ये मुझे सब के सामने ऐसी नाचीज क्यो बना देना चाहते है ? मस्तिष्क पर लगे प्रबल आघात से वह निश्चेष्ट और निर्जीव-सी पडी थी ।

स्त्री से नाराज होकर राजाराम रूठ कर बैठ न जाते थे । नाराजगी के प्रसग को लेकर वे लम्बी बहस और जिरह करते थे । पति के आश्रय मे जीवन बिताने वाली स्त्री का पति के समान अधिकार का दावा उन्हे स्वीकार न था । उन का विचार था, प्रेम मे समानता का क्या प्रश्न । समानता के दावे का

अर्थ पति के अधिकार को चुनौती देना है। स्त्री को अपने उचित स्थान पर रखने के लिये वे उस से दैन्य स्वीकार करवाना आवश्यक समझते थे। चन्दा का अपने कुल और शिक्षा का अभिमान उन की दृष्टि मे कलह का मूल था। स्त्री के रोकर दैन्य प्रकट किये बिना उन्हे सन्तोष न होता था। झगड़े के बाद प्राय चन्दा ही जाकर मान-मनौती का प्रसग आरम्भ करती परन्तु उस दिन खन्ना के सामने अपमानित होकर उस का हृदय ग्लानि से खिन्न था। आधी रात तक वह भीतर कमरे में गरमी मे, तखत पर बिना पखे के पडी रही।

राजाराम को सुबह से भोजन न कर पाने के कारण भूख व्याकुल कर रही थी। अपनी भूख की उपेक्षा से उन्हे चरम तिरस्कार अनुभव हो रहा था। वे कारोबार के कागज़-पत्र पलट रहे थे परन्तु मस्तिष्क उन का अपने प्रति उपेक्षा और चन्दा के तिरस्कार के भाव से जल रहा था। वे सोच रहे थे कि जान लडा कर सब कुछ करने के बाद उन की यह कद्र है कि दिन भर के भूखे को खाना पूछने की सुध नही? उसी समय उन्हे चन्दा का मुस्कराकर खन्ना से भोजन किये बिना न जाने का आग्रह याद आ गया। अपना माथा दोनो हाथो मे दबा कर वे सोचने लगे—अब इस स्त्री की दृष्टि मे हमारे जीने-मरने की कोई चिन्ता नही! हमारे सामने खन्ना का मन रखने के लिये उसी की सी बात करना इसे अच्छा लगता है। भूख और मस्तिष्क विक्षिप्त होने के कारण सिर मे चक्कर आने लगा; मन में आवेग उठ रहा था कि इस सब स्थिति को स्पष्ट कर फैसला कर दे, यह मानसिक और शारीरिक यत्रणा सहना सम्भव नही परन्तु स्वय किस मुख से जाकर चन्दा को पुकारे?

घडी मे बारह बज चुके थे। राजाराम को विश्वास हो गया कि चन्दा उन्हे पुकार कर अपनी धृष्टता के लिये पश्चाताप नही करेगी। उसे अब उन की चिन्ता नही। वह शायद मन मे चाहती है कि यह झगडा दूर हो तो अच्छा ह। वह खन्ना के साथ स्वतन्त्र हो जाय। कहाँ पहले राज के विधवा विवाह की बात पर लज्जा से रो उठती थी, अब उसे इस में कोई दोष नही दिखाई देता। पहले वह किसी के विषय में ऐसी कोई बात सुन कर घृणा प्रकट करती थी। अब उसे यमुना के [illegible] में भी कोई शिकायत नही मालूम होती। कम्युनिस्ट लोग जो कुछ करें, उसे सब ठीक जँचता है। वह स्वय ऐसा क्यो न करेगी?

जब और अधिक धैर्य रखना सम्भव न रहा, राजाराम बैठक की बिजली

वुझा कर भीतर गये। चन्दा अब भी मुह आँचल मे लपेटे अर्ध-निद्रित-सी अवस्था मे तखत पर पड़ी थी। रूखे स्वर मे राजाराम ने पुकारा—"अमृतधारा कहाँ है ?"

करवट से उठ चन्दा ने पूछा—"क्या तबियत कुछ खराब है ?"

"चाहिये ?" दूसरी ओर देख कर उन्होने उत्तर दिया।

"क्या सिरदर्द हो रहा है ?" चन्दा ने चिन्ता से पूछा।

"हो रहा है तो तुम्हे क्या ?"

तिरस्कार के बावजूद पति के सिरदर्द की उपेक्षा करना चन्दा के लिये सम्भव न था। "तुम ने खाना नही खाया, दिन भर धूप मे फिरे हो, इसी से सिर मे दरद हो रहा है। अमृतधारा लगाये देती हूँ तुम खाना खा लो। उसी से ठीक होगा।" चन्दा अपनी सब ग्लानि भूल कर दवा की शीशी आलमारी से निकालने के लिये उठ खडी हुई।

"तुम्हे क्या फिक्र है, हम मरे या जिये। तुम्हें यह थोडे मालूम था हमने सुबह से रात के बारह बजे तक खाना नही खाया। तुम तो दूसरो के सामने हमें बेवकूफ बनाकर हमारी खूब बेइज्जती करो।"

चन्दा की रुलाई का बाँध फूट पडा—"मैने तुम्हारी क्या बेइज्जती की ? तुम्ही ने तो उल्टे मुझे उनके सामने इस बुरी तरह फटकार दिया। खाना अब तक वैसे ही चौके मे रखा है। मै डर रही थी, तुम और न बिगडो अभी लिये आती हूँ।"

अमृतधारा की शीशी निकाल चन्दा ने कहा—"लाओ लगा दूँ।" राजाराम हाथ बढाकर दवाई ले फिर बैठक मे चले गये। कुर्सी पर बैठकर वे अपने माथे पर अमृतधारा लगाने लगे। बर्तनो के खटकने की आहट से समझा, चन्दा खाना परोस कर ला रही होगी। उन्होने निश्चय कर लिया कि वे खाना नही खायेगे। जब इसका मन दूसरी ओर फिर गया, तब इसके हाथ का खाने से क्या मतलब ?

थाल बैठक मे लाकर चन्दा ने आग्रह किया—"खाना खालो ऐसे गरमी बैठ जायगी।"

"तुम खाओ।"

"मै भी खा लूगी, पहले तुम तो खाओ। मै कौन धूप मे घूमती फिरी हूँ।"

"हमारी ऐसी ही फिक्र होती तो अब तक क्या था ?" थाल की उपेक्षा कर और अधिक अमृतधारा माथे पर चुपडते हुए उन्होने कहा।

"तुम्हारे पाव पडती हूँ" गिडगिडाकर चन्दा बोली, "तुम नाराज़ हो गये तो मै भीतर जाकर लेटी रोती रही। मुझे मालूम भी न हुआ कि खन्ना जी चले गये। मै तो तुम्हारा इन्तजार ही कर रही थी कि पुकारो तो खाना दू।"

माथे पर अमृतधारा मलते हुये राजाराम ने कहा—"यही तो बात है। खन्ना जी चले गये तो फिर खाने की क्या फिक्र थी! फिक्र तो उन्ही की करनी चाहिये। वे बडे आदमी है कप्तान साहब थे, अब लीडर है, बडे विद्वान है। हम तो बेवकूफ है? मरे या जिये? हमारा क्या है? वे बगैर खाना खाये चले गये, इस बात का बडा दुख है खैर दोपहर मे तो साथ-साथ बैठकर खाया ही था। उसी समय बुला लिया करो। उन्हे ही कर लो। हम तो बेवकूफ है, छोटे आदमी है, कुछ समझते ही नही। हमसे क्या लेना है? हम अपने कही और जा रहेगे।"

चन्दा गम्भीर हो गई—"क्या कह रहे हो तुम?"

"उल्टे हमे ही धमकाती हो? हम ऐसे बच्चे नही कि तिरिया-चरित्तर न समझते हो। जो तुम्हारी राज ने किया, तुम्हारी यमुना ने किया तुम भला उनसे किस बात मे कम हो? तुम्हे खन्ना पसन्द है, उसका बहुत ख़याल है। उसी के सग जा रहो। ऐसे छिपे-छिपे कब तक चलेगा?"

राजाराम नाराजगी से आँखे फिराये, एक हाथ में अमृतधारा की शीशी थामे, दूसरे हाथ से माथा रगडते जा रहे थे। उनकी बात का कोई उत्तर न देकर चन्दा चुपचाप खडी थी। चन्दा से कोई उत्तर न पाना और उसकी ओर न देखना उनके लिये मानसिक यन्त्रणा बन रहा था। कई मिनिट वे इसी प्रकार दृष्टि फिराये रहे। उनका मन चन्दा से उत्तर पाने के लिये बेचैन हो रहा था। उससे पहले कभी चन्दा यो चुप न हुई थी। उसकी चुप का अर्थ राजाराम समझ रहे थे कि बिलकुल ठीक बात उन्होने पकड ली है। उसके पास कोई उत्तर नही।

घूम कर राजाराम ने चन्दा की ओर देखा। कुर्सी की पीठ का सहारा लिये, सिर झुकाये वह वैसे ही निश्चल खड़ी थी। यह चुप उन्हे उद्दण्डता जान पडी।

"यहाँ क्यो खडी हो?" उन्होने धमकाया।

लाल रूखी आँखे पति की ओर उठा चन्दा ने पूछा—"कहाँ जाऊँ?"

"जहाँ तुम्हारी इच्छा। जिसके पास तुम्हारा जी चाहे" राजाराम ने दृढता से उत्तर दिया।

"तुम्हे मुझ पर सदेह है ? इतने वर्ष मे तुमने यही देखा ?" स्थिर दृष्टि से राजाराम की ओर देख चन्दा ने पूछा ।

राजाराम आँख ऊपर न उठा सके । चन्दा के इस दुस्साहस से मन की प्रतिहिसा प्रचंड हो उठी । दृष्टि नीचे किये ही उन्होने उत्तर दिया—"सब देख लिया, ऐमे बेवकूफ नही है ।"

क्षण भर और खडी रह चन्दा बैठक से चली गई। राजाराम को भय था कि ड्योडी की साँकल की आहट आयेगी । उनके शरीर के रोम खडे हो गये । चन्दा के घर से बाहर कदम रख देने पर वे क्या करेगे ? परन्तु वह बाहर न जा कर आँगन की ओर गई । चन्दा के वैसा दुस्साहस न करने से उन्हे कुछ सान्त्वना हुई ।

राजाराम के कान आहट की ओर थे पर कुछ सुनाई न पड रहा था । कुछ देर मे जीना चढने का शब्द सुनाई दिया । डेढ बजे रात के सन्नाटे मे छत पर जान पडा कि चन्दा ऊपर घूम रही है । ऊपर के कमरे मे गगा की ओर की खिडकी खुलने का शब्द सुनाई दिया और साथ ही अस्पष्ट-सा, भारी चीज गिरने का दवा हुआ सा धमाका ।

राजाराम का माथा ठनका । झपटते हुए ऊपर पहुँचे । खिडकी से झाँक कर देखा । अधकार मे नीचे कुछ सफेदी सी दिखाई दी । माथा चकरा गया परन्तु साहस कर नीचे उतरे । बडे आगन से गाय बाँधने वाले छोटे आँगन मे जाकर बगल के बडे दरवाजे को साकल खोल बाहर गये । पिछवाडे जाकर देखा कि सूखी झाडियो और रेत मे चन्दा निश्चेष्ट पडी है ।

राजाराम ने सिर पर आ पडे सकट की गुरुता समझी । अपने को सम्भाल चन्दा के श्वास और हृदय की गति देखी शरीर मे प्राण थे परन्तु चेतना नही । कान के समीप मुख ले जा धीमे स्वर मे पुकारने और शरीर को हिलाने से भी चेतना का कोई चिन्ह प्रकट न हुआ । उसे उठा कर भीतर ले जाना हर हालत मे आवश्यक था । यदि कुछ हो भी जाय तो वहा उस अवस्था मे ?

राजाराम ने पूरी शक्ति से चन्दा का अचेत शरीर उठा कर उसे बैठाने का यत्न किया । सहारा देने के लिये पीठ के पीछे हाथ धरने पर देखा, पीठ लहू से तर थी । सूखी झाडियो के सेठे घुस जाने से पीठ पर गहरे घाव होकर खून बह रहा था । बैठाने पर चदा की गर्दन लटक गई । राजाराम सब प्रकार से असहाय और असमर्थ हो रहे थे । ऐसी अवस्था मे सहायता के लिये किसी को पुकारना भी सम्भव न था। बेबसी मे होठ दबा कर, गले से उमडते

आँसुओं को रोक कर पूरी शक्ति से उन्होंने चन्दा का शरीर कंधे पर उठा लिया और मकान के भीतर ले जाकर तखत पर लिटा दिया।

राजाराम ने नौकर को जगा कर तुरन्त साइकिल पर रामनारायण के बाजार से डाक्टर खन्ना को बुला लाने के लिये भेज दिया। चन्दा के आत्म-हत्या के प्रयत्न से उस के प्रति घृणा का भाव स्वयं ही मिट गया। ऐसी अवस्था मे सम्मान और लोक-लाज की रक्षा के लिये किसी दूसरे का आश्रय लिया कैसे जा सकता था ? डाक्टर को बुलाने के लिये नौकर को भेज कर राजाराम चन्दा को होश मे लाने के लिये उस के मुख पर छींटें देने लगे। उसकी पीठ से निकलता रक्त देख कर उन के पाँव लटखडा रहे थे। दम साधे, कपडे से पीठ को दबा कर रक्त का प्रवाह रोकने का प्रयत्न कर रहे थे। न रक्त का प्रवाह ही कता था न चन्दा को चेतना ही आ रही थी। एक-एक क्षण राजा-राम को पहाड़ हो रहा था।

खन्ना के पहुँचने मे देर न लगी। राजाराम के घर से लौट कर मन उद्विग्न होने के कारण उसे दिन भर की थकावट के बावजूद नीद आ रही थी। उसे उन दिनो चल रही स्टेफोर्ड क्रिप्स और कांग्रेस के बीच समझौते की चर्चा पर एक पर्चा लिखना था। नीद न आने के कारण खन्ना वही लिख रहा था। राजाराम के व्यवाहर से खाई चोट का प्रतिकार वह अपने विरोधी पक्ष के विरुद्ध अत्यन्त प्रबल युक्तियां और कडी भाषा द्वारा करना चाहता था। युक्ति और परिस्थिति को समझने से इनकार करने वाले उसे सब राजाराम ही जान पड रहे थे। ऐसे लोगो के प्रति मन का क्षोभ निकालने का वह यथा-सम्भव यत्न कर रहा था।

खन्ना ने चंदा के नौकर से सुना कि बीबी जी छत से गिर पड़ी और बेहोश हैं। आँगन पर सीखचो का जाल फैला रहने पर छत से गिरने का स्थान कहाँ है खन्ना सहसा सोचकर रह गया। अनेक दुष्कल्पनाये मन मे लपक गईं। कुछ समझ न सकने पर भी इतना तो निश्चय था कि चोट गहरी आई है, खून जा रहा है और चन्दा बेहोश है। दुकान खोल कर जो कुछ भी सामान उपयोगी हो सकता था लेकर वह तुरन्त चल पड़ा।

खन्ना के आने की प्रतीक्षा में राजाराम लगातार सोच रहे थे कि छत से यो गिरने और इस प्रकार की चोट लगने का वे क्या कारण बता सकेंगे। खन्ना के आने पर उन्हो ने कहा—"बच्चो ने ऊपर जाने क्या फेंक दिया था, वही देखने स्वयं छोटे जीने से चढ गईं। अँधेरे मे कुछ पता न चला। छत से गगा

की ओर की झाडियों पर गिर पडी" '। क्या कहे ?····अरे, नौकर से ही जाकर देखने को कह देती !"

अविश्वास की एक 'हूँ' से राजाराम की ओर देख कर खन्ना उपचार मे लग गया। तुरन्त एक दवाई पिचकारी से चदा के शरीर मे दी। रुई दवाई मे भिगोकर पीठ पोछी और फिर चन्दा को होश मे लाने का यत्न करने लगा। पीठ पर दवाई भरी रुई रहने के कारण उसे करवट से लिटाया गया था। राजाराम पीछे से सहारा दिये थे। खन्ना पलग की पटिया पर बैठ कर चन्दा के माथे और चेहरे को ठण्डे जल से पोछ कर शीशी सुघा रहा था।

चन्दा ने धीमे से आधी पलके उघाड़ी। खन्ना को सामने देख कर पहचानने के लिये ध्यान से देखा और फिर आँखे झपक कर इधर-उधर दृष्टि दौडाई।

खन्ना ने मुस्कराकर पूछा—"कहिये कैसी तबीयत है ?"

"हे ?" बहुत धीमे स्वर मे चन्दा ने प्रश्न किया, "यह क्या है ? तुम···? भाई तुम, कैसे आ गये ? क्यो आ गये · यहाँ कैसे बैठ गये ? दुनिया बडी खराब है। वे कहाँ गये ? सदेह करते है ?"

राजाराम ने तुरत पीठ पीछे से घबराहट मे सिर आगे बढा कर पुकारा—"चन्दा, चन्दा। घबराओ नही। ठीक है, सब ठीक है !"

पति की ओर देखने का यत्न करते हुये चन्दा कहने लगी—"मै कैसे आ गई ? तुमने मुझे निकाल दिया था। मै कैसे आ गई ? तुमने मुझे निकाल दिया था। मै कैसे आ गई, तुम्हारे घर मे " राजाराम ने होठ दबा कर रुलाई रोक कर चन्दा को आगे न बोलने देने के लिये, उस के मुख पर हाथ रख कर अस्पष्ट शब्दो मे कहा—"तुम्हारा ही तो घर है। तुम्हारे बच्चे ऊपर सो रहे है ? घबराती क्यो हो ? घबराओ मत !"

चन्दा की अस्थिर दृष्टि दीवारो और छत पर घूम रही थी। "मेरा घर!" वह स्वत. बोल रही थी, "मेरा घर ? मै कौन हूँ ? कोई नही ? मेरा घर होता तो मेरा अविश्वास होता ? मुझे जाने दो ···।"

राजाराम व्याकुल हो उठे—"होश करो चन्दा ! तुम्हारा ही तो घर है, पहचानती नही क्या ?"

"मेरा ? नही मै तो चोर हूँ !···· तुम ने मुझे चोर समझा !" चदा ने गहरी सास ली ? "अपने आप को चुराया मैने ? तुम्हारी हूँ मै तो ! देख लो उतनी ही तो हूँ ? हाय मैने क्या नही किया ? अपने आपको मारा, कुचला, तुम्हारे लिये। अब चोर हो गई !" वह रो पडी। वह बार-बार

पीठ के बल लेटने का यत्न कर रही थी ! राजाराम की आँखो से आँसू की बूदे टपक रही थीं। खन्ना की सहायता से वे चन्दा को चित्त लेटने से रोके थे।

चन्दा का बकवास बढता गया। वह सिर के बाल नोचने लगी—"हाय सारी आयु सब कुछ देकर एक इज्जत पाई थी, वह भी तुमने छीन ली ! वह तो तुम्हारी ही थी ! मेरा तो न कुछ था, न है ! · वह तो भाई हैं, · लडके की तरह है। हाय, वह कितना खयाल करते हैं ? और तुम ? · ·· मेरे हो ?" वह फिर बेहोश हो गई !

खन्ना ने चिंता से कहा—"इन्हे हस्पताल पहुचाना ही ठीक होगा।"

"हस्पताल ! यह कैसे ठीक होगा ?" राजाराम के स्वर मे बहुत घबराहट थी, "जो कुछ हो यहाँ ही करो रुपये की चिंता न करो।" खन्ना ने सोचा, समझा और बोला, "पट्टियो के लिये साफ कपडा दीजिये।"

राजाराम बक्स से धुली धोती निकाल लाये। खन्ना ने धोती फाड कर चन्दा को पट्टियो से जकड कर राजाराम की सहायता से पट्ट लिटा दिया—"आप इन्हे देखते रहिये, करवट न ले पाये।" राजाराम को उस ने समझाया, "मै अभी साइकिल पर एक दवा ले आऊँ। होश मे आने पर फिर बकने न लगे। पाँच बजने को है ? इनके बकने से बच्चे घबरायेगे। दवा से कुछ घण्टे के लिये यह सो जायँगी। नीद से दिमाग ठीक हो जायगा।"

दवाई की दुकाने बहुत जल्दी सुबह न खुलने के कारण खन्ना के लौटने मे देर हो गई। उस के आने से पहले ही राजाराम के यत्न से चन्दा की मूर्छा टूट गई थी। मूर्छा दूर हो जाने पर चन्दा पहले की भाँति चीखी-चिल्लाई नही। वह जिद्द कर रही थी—"इस घर मे अब न रहूँगी। रवि और कुसुम रह जायँगे। शशि को मैं साथ ले जाऊँगी।"

इधर तीन वर्ष से राज से पत्र व्यवहार प्राय बन्द था। अब वह जिद्द कर रही थी—"मैं राज के यहाँ जाऊँगी। उसे लिख दो, मुझे आकर ले जाय। मै इस घर मे नही रह सकती, कभी नही रह सकती।···· सहने की सीमा हो गई। अपने आपको मैंने पालतू पशु की भाँति बना दिया फिर भी मैं किसी को प्रसन्न न कर सकी। चाहो तो मै प्राण दे सकती हूँ परन्तु यहाँ नही रहूगी। जिसे मुझ पर विश्वास नही, वह मुझसे प्रेम क्या करेगा ? तुम्हारे बस हूँ, इसलिये जो चाहे कर सकते हो · ।"

राजाराम ने अपनी और बच्चो की कसम खाकर चन्दा को विश्वास दिलाया कि उन्हे सन्देह नही। जो कुछ हुआ, क्रोध मे हो गया। पर बात

मुख से निकल चुकी थी। चन्दा को दुख था कि क्यो वह झाडियो में उलझ जाने के कारण मर न सकी। यदि पृथ्वी पर सीधी गिरती तो कभी न बचती। राजाराम जब समझा कर थक गये तो उन्हे रोना आ गया। बहुत देर तक वे रोते रहे। चन्दा चुप हो गई। ज्यो-ज्यो समय बीतता गया। उसकी पीड़ा बढती गयी। राजाराम अपने दुख से आँसू भरी आँखे लिये बैठे थे और चन्दा अपनी पीड़ा से कराह रही थी।

बच्चे माँ की अवस्था देख घबरा रहे थे। वे बार-बार मा के पलग को घेर लेते। राजाराम उन्हे बाहर बैठक मे जाकर बैठने के लिये डाटते। नौकर उन्हे ले जाता। वे फिर माँ के पलग के समीप आ जाते। भजन बच्चो के लिये नाश्ता बनाने मे व्यस्त था। स्कूल जाने का समय हो गया था परन्तु वे अभी तैयार न हो पाये थे।

खन्ना दवाई लेकर लौटा। बच्चो को देखकर उसने पूछा—"स्कूल क्यो नही गये ?"

राजाराम ने परेशानी से कहा—"कैसे जाय ? न कपड़े बदले गये है, न लड़की की चोटी हुई है ?'

धीमी कराहट मे चन्दा ने कहा—"ऐसे ही भेज दो। अब उन्हे ऐसे ही जाना होगा !"

राजाराम की आँखे फिर गई। खन्ना ने दोनो की ओर एक निगाह डाली। चन्दा के शरीर मे सुई की पिचकारी से दवा देकर उसने पूछा—"इनके कपडे कहाँ है ?"

खन्ना उठ खडा हुआ। अटपटे हाथो से वह दोनो बच्चो को तैयार करने लगा। कुसुम की चोटी करने मे उसे काफी उलझन हुई।

राजाराम ने परेशानी से कहा—"आज रहने दो ! एक दिन न जायेंगे ?"

"वाह" खन्ना ने उत्तर दिया, "इन्हे सम्भालेगा कौन ? आप इनकी चिता करेंगे या बच्चो के पीछे-पीछे घूमेंगे।"

दवाई के प्रभाव से चन्दा की कराहट बन्द होकर आँखे झपक गई। बच्चो को स्कूल भेजकर खन्ना कमरा ठीक करने मे लगा। राजाराम बिलकुल निढाल हो रहे थे। खन्ना के कहने से उन्होने बडी कठिनता से एक गिलास दूध पिया और चन्दा के सिरहाने बैठे रहे। खन्ना दूसरी कुर्सी लाकर समीप बैठ गया।

खन्ना केवल डाक्टर की स्थिति से, रोग के उपचार से ही अपना सतोष न कर सका। इस भयकर काण्ड की तह मे उसे रहस्य दिखाई दे रहा था और

उस रहस्य से उसके अपने सम्बन्ध का आभास भी। अर्ध-मूर्छित अवस्था मे चन्दा की बकवास, उस ओर स्पष्ट संकेत था।

पति-पत्नी में झगडा होते अनेक बार देखा था। वह प्राय उसके सामने भी हो जाता था। इस झगडे के कारण से अपने सम्बन्ध का अनुमान कर उसे संकोच अनुभव हो रहा था। उसका मन न चाहता था कि अपने प्रति ऐसा भाव होने पर वहाँ रहे परन्तु चारा न था। राजाराम चन्दा को हस्पताल ले जाने के लिये तैयार न थे। चोट मामूली न थी। पीठ और गर्दन के घाव गहरे और बडे थे। ऐसी अवस्था मे हस्पताल का उपचार ही अधिक उचित होता। उसके बिना चन्दा जीवन मरण के कांटे पर थी। ऐसी अवस्था में खन्ना उसे कैसे छोड जाता ?

राजाराम से खन्ना कोई प्रश्न कर न सकता था। वह सोचता, सम्भव है कि चन्दा की इस अवस्था का उत्तरदायित्व मुझ पर ही हो ! ऐसी अवस्था मे वह उसे छोड जाय तो कैसे ? और इस सबके बावजूद राजाराम और चदा के बीच मे बना रहे तो कैसे ? दोनो ही कारणो से, हृदय पर सिल रखकर उसे डाक्टर का आचरण करना आवश्यक था।

चन्दा दवाई के प्रभाव मे सो रही थी। राजाराम बहुत धीमे स्वर में घावो और शेष अवस्था के विषय में बात कर रहे थे। कितना समय उपचार मे लगेगा, किस-किस वस्तु की आवश्यकता होगी ? कितना खर्चा लगेगा ? अर्धमूर्छित चन्दा की बकवास की स्मृति से स्वय ग्लानि अनुभव कर रहे थे। विशेष कर इस बात मे कि जो कुछ उन्होने चन्दा के छत से गिरने के बारे में कहा था, झूठ प्रमाणित हुआ। अपनी स्त्री की प्राणरक्षा और अपने सम्मान की रक्षा के लिये जिस व्यक्ति पर वे निर्भर थे, उसके सामने वे झूठे प्रमाणित हो गये और उसकी दया के भरोसे हैं। राजाराम ने सोचा—यदि चन्दा को मूर्छा का दौरा फिर आ जाय और वह बकने लगे तो उनकी क्या स्थिति रहेगी ? खन्ना की पूर्ण सहानुभूति और सहयोग के लिये उसे विश्वास में लेना आवश्यक था।

राजाराम ने स्वयं ही प्रसग छेड कर रात की घटना आवश्यक कतर-ब्योंत के साथ सुना दी। अभिप्राय था कि वे चन्दा से अधिक सौजन्य और सौहार्द्र की आशा रखते थे। इस मे चन्दा के नाराज हो जाने का कोई कारण न था। पागल बन कर उस के इस प्रकार चोट खा जाने पर उन से अधिक दुख और सकट किस को होगा ? भला बच जाने की ही क्या उम्मीद थी ?

यह तो भाग्य की बात समझो कि वह गिरी दायी ओर । उधर पिछली बाढ से पाच-छ फुट रेती चढ गई है उस पर ऊँची झाडियाँ है। खन्ना के कई दफे समझाने पर राजाराम ने विलकुल अनिच्छा से थोडा भोजन किया।

चन्दा लगभग पाच घण्टे तक वैसे ही सोती रही। खन्ना का कहना था कि शरीर और मस्तिष्क को साधारण अवस्था मे लाने के लिये नीद ही उपचार था। राजाराम को चिन्ता थी कि चेतना आने पर फिर तो चन्दा की अवस्था विक्षिप्त न हो जायगी ? खन्ना ने विश्वास दिलाया—आशा है कि इतना विश्राम पा लेने के बाद वे शान्त रहेगी ? सम्भव है कि वे अभी कुछ समय और इसी प्रकार सोये। थर्मामीटर लगाकर देखने से चन्दा को ज्वर जान पडा। खन्ना की राय मे वह विशेष चिन्ता का कारण न था।

राजाराम वढैयो के झगडे से अपने कारोबार मे आ पडने वाली कठिनाई और अप्रत्याशित विपत्ति का चर्चा करने लगे। घर मे इस सकट के समय कारोबार के झगडे को सम्भालना उनके वस की बात न थी। खन्ना से बात-चीत कर उन्होने निश्चय किया कि अब जो भी हो, चाहे नुकसान ही क्यो न सहना पड़े, वे वढैयो से समझौता कर लेगे। ऐसे समय जव रुपया पानी की तरह बहाने की ज़रूरत होगी। काम रुक जाने से निर्वाह कैसे होगा ? उन्होने निश्चय किया, चन्दा के आराम से सोते समय ही वे घण्टे भर के लिये बाहर हो आये और औपधि आदि भी लेते आये।

राजाराम के वाहर जाने के प्राय घण्टे भर बाद चन्दा की नीद टूटी। खन्ना ने पलग की पटिया पर झुक कर उसके माथे पर हाथ रख कर पूछा—"कैसी तबीयत है ?"

चन्दा ने पूछा—"ये कहाँ गये है ?"

"अभी कुछ समय पहले वहुत जरूरी काम से गये है, आते होगे....क्यो।"

"कुछ नही, ऐसे ही ? आप लोगो ने कुछ खाया भी ?" उसने पीड़ा और निर्बलता से क्षीण स्वर मे पूछा। खन्ना ने विश्वास दिलाया, जो कुछ भी आवश्यक था, सब हो गया है। अगर किसी ने कुछ नही खाया तो दूसरो की चिन्ता करने वाली ने ही ?"

खन्ना ने भजन से दूध मँगवाया और चन्दा को लेटे-लेटे ही चम्मच से पिलाने लगा। दूध पिलाकर तौलिया भिगो उसने चन्दा का मुख पोंछ दिया। कघी से वाल ठीक कर दिये। उसे हँसाने के लिये पूछा—"कहो तो बिन्दी भी लगा सकता हूँ ?"

चन्दा की आँखो और होठो पर क्षीण सी मुस्कराहट फिर गई—"तुम यहाँ मेरे सामने बैठे रहो !" उसने कहा और खन्ना की ओर देखती रही ।

खन्ना अपनी कुर्सी पलग के सिरहाने सटाकर बैठा था । चन्दा के सिर पर हाथ रख उसने पूछा—"यह क्या कर लिया ?"

"क्या कहू""बच जाऊँगी मै ?" चन्दा ने पूछा ।

"कैसी बात कहती हो ? ऐसी कोई बात नही ? तुम तो चाहती थी—न बचो !"

"हाँ !" चन्दा ने खन्ना की ओर बिना देखे स्वीकार किया—"बचकर ही क्या होगा ? मुझ से सभी को दुख ही होता है । केवल बच्चो का खयाल है नही तो है ही क्या ?"

झुककर खन्ना ने पूछा—"उस रोज़ तुमने कहा था, मै भी बच्चो से कम नही हूँ ?" खन्ना के हाथ पर अपना हाथ रखकर उदासी से चन्दा ने कहा, "तुम्हारे लिये मै क्या कर सकती हूँ ?"

"बहुत कुछ जो चाहो" खन्ना ने और भी झुक कर कहा ।

"अरे, मै तो सभी कुछ चाहती हूँ पर हूँ किसी लायक नही । जीवन भर किया ही क्या ? इन्हे खुश रख सकती, तब भी एक बात थी ।" दीर्घ-निश्वास लेकर चन्दा ने दृष्टि एक ओर कर ली ।

"अच्छा बताओ तो हुआ क्या ?" खन्ना ने उसके केशो को सहलाते हुये पूछा, "क्या करोगे सुनकर, तुम्हे भी दुख होगा ?" खन्ना के आग्रह से चन्दा ने बहुत कुछ दबाकर उसके समाधान के लायक हाल सुना दिया और साथ ही कहा, "पर तुम्हे मेरे सिर की कसम है । अगर मुझे जीते देखना चाहते हो तो हमारे यहाँ आते रहना । न आने का अर्थ होगा, पापी न होते हुये भी पापी बन जाना ?"

गम्भीर होकर खन्ना ने पूछा—"लेकिन इतनी सी बात पर उनके बिगडने का क्या मतलब ?"

खन्ना को अपनी बात का विश्वास दिलाने के लिये चन्दा ने कहा—"इन्हे ऐसे ही हो जाता है । पहले भी कई दफे इस तरह बिगड चुके है । कई बार मुझे मर जाने की इच्छा हुई । अब की बात अधिक बढ गई ।"

"तो तुमने कौन समझदारी की ?" खन्ना ने असतोष प्रकट किया ।

"क्या बताऊँ ? यो दिन कटते चले जाते है परन्तु कभी सोचने पर खयाल आ ही जाता है । इस जीवन मे सतोष है हो क्या । वैसे जीवित रहने का और

कोई उद्देश्य तो है नही ?"

"तुम स्वय जीवन के लिये उद्देश्य बनाना न चाहो तो कोई कैसे ज़बरदस्ती तुम पर लाद दे ? अपने जीवन का विकास या उसे सफल बनाना भी तो एक उद्देश्य हो सकता है ? खन्ना को ख़याल आया कि वह अवसर के प्रतिकूल गम्भीर होता जा रहा है ? बात काट कर और मुस्कराकर उसने कहा—"हाँ तो बताया नही, हमे बच्चो मे जगह मिलेगी या न ी !"

उसके हाथ पर हाथ रखकर चन्दा ने उतर दिया—"तुम उनसे बहुत आगे हो !"

अधिक बात कर चन्दा को थका न डालने के विचार से वह चुप रह गया।

बाहर से लौटकर राजाराम ने बढैयो के झगडे का लम्बा किस्सा सुनाया। उन्होने मजदूरी आठ आना रोजाना बढा दी थी—"किया क्या जाय ? ब्रिग कम्पनी वालो ने नये ठेके खूब अच्छे दर पर लिये है। वे दो-दो रुपये रोज पर रख रहे है। आज गये न होते तो सबके सब उनके यहाँ चले जा रहे थे, बडी मुश्किल से रोका। अरे भाई, भागते भूत की लँगोटी ही भली, जो कुछ बचे वही सही, और क्या, ऐसी मुसीबत के समय मे ?"

कुछ दिन चन्दा के लिये बिस्तर पर करवट बदलना या हिलना-डुलना तक सम्भव न था। घर मे कोई दूसरी स्त्री न होने से असुविधा होती थी। कुसुम बेचारी आखिर कर क्या सकती थी ? राजाराम विवाह के बाद अपने घर के पुराने तरीको और सम्बन्धियो की सकीर्णता से खीझकर पटकापुर का पुराना मकान छोडकर परमट पर आ बसे थे। चन्दा के कभी अधिक अस्वस्थ हो जाने या प्रसव के समय घर से कोई बडी-बूढी, महीने दो महीने के लिये आकर रह जाती थी। इस समय भी राजाराम किसी न किसी को बुलवा सकते थे; परन्तु बात फैल जाने की आशका थी।

राजाराम चन्दा की निजी आवश्यकताओ और पट्टी बँधवाने के लिये एक स्त्री का रहना आवश्यक समझते थे। सुबह पट्टी के समय भी उन्होने लेडी डाक्टर बुलवा लेने की राय दी थी। खन्ना ने निस्सकोच कह दिया—"लेडी डाक्टर यह काम कर न पायेगी। डाक्टर की वृत्ति के कारण उसे यह सकोच निरर्थक जान पडता था।

चदा अकेली होती तो खन्ना कह देता—"पागल हो, इसमे क्या रक्खा है ?'

राजाराम की भावना दूसरी थी। सोचकर खन्ना ने कहा—"कहो तो यमुना को बुला सकता हूँ परन्तु हर समय तो वह मोजूद न रह सकेगी।"

यमुना दो-तीन घण्टे के लिये नित्य संध्या समय आती और मरहम पट्टी करा जाती। खन्ना ने राजाराम के साथ समय ऐसे बाँट लिया कि उनके काम पर गये रहने के समय वह आकर बैठता। ऐसे समय सहायता की आवश्यकता होने पर भी चन्दा पुरुष से सकोच के कारण कतरा जाना चाहती। समझ पाने पर खन्ना मीठी झिडकी देता—"यह क्या तुम्हारा तरीका है? इस विषय मे सकोच कर तुम अपनी शिष्टता दिखाना चाहती हो? मै जानता हूँ, तुम बहुत शिष्ट हो और यह भी जानता हूँ कि तुम बीमार हो। मित्र के नाते यदि अपनी आवश्यकता के समय तुम मुझ से निस्सकोच नही हो सकती तो हमारी मैत्री और मेरा डाक्टर होना दोनो ही व्यर्थ है।"

डाक्टर की इस प्रकार की प्रकट रुखाई से चन्दा डाक्टर के और समीप आ जाती जैसे उस के भावो या जीवन की आवश्यकताओ का खन्ना से कोई पर्दा नही है। वह आँख मूद कर उस का सहारा ले सकती है। वह नन्ही-सी बच्ची की भाँति उस की गोद मे आश्रय पा सकती है और उसे अपनी गोद मे ले सकती है। मरहम पट्टी की दुस्सह पीडा को वह केवल उसी के हाथो सह सकती थी। उस ने अपने आप को उन विश्वस्त हाथो मे सौप दिया था जहाँ किसी भी प्रकार का धोका नही हो सकता था। बीमारी की ज़िद्द के कारण पति की बात अस्वीकार कर देने पर भी खन्ना के सामने आ जाने पर उस से इनकार न किया जाता।

राजाराम खन्ना पर विश्वास करने का यत्न करते थे परन्तु उस के प्रति चन्दा का आदर उन के हृदय पर अपने तिरस्कार की कोच लगा देता। वे एक प्रकार की विवशता मे चुप रह जाते। जैसे विधना ने उन के विरुद्ध षड़यन्त्र रच कर उन्हे चुप रह जाने के लिये मजबूर कर दिया हो। वे खन्ना का आदर करते थे। उस के प्रति कृतज्ञता भी अनुभव करते थे परन्तु अपने ही घर मे उस के सम्मुख अपदार्थ बन जाना सह्य न था।

चन्दा ने अपने विश्वास मे आत्महत्या की चेष्टा से अपने निर्दोष होने का प्रमाण दे दिया था। वह निस्सकोच खन्ना की अधिक आत्मीय बनने लगी जैसे उस के लिये कोई कुछ करता है तो खन्ना ही। पति यदि कुछ करते है तो उस ओर ध्यान देने की आवश्यकता नही, उन्हे तो करना ही चाहिये। बल्कि जितना करना चाहिये, उतना वे कर नही पाते। खन्ना आवश्यक से भी कुछ अधिक कर के राजाराम के कर्तव्य का भी भाग पूरा कर के अपना स्थान और अधिकार बढाता चला जा रहा था। मन और मस्तिष्क की निरन्तर

यन्त्रणा से राजाराम चुप से रहने लगे। चुप रहने के साथ ही उन की आँखे और कान अधिक सतर्क होते गये।

× × ×

फैसिज्म के विरुद्ध जनता का पूर्ण और गहरा सहयोग पाने के लिये ब्रिटेन की पार्लिमेण्ट ने अनेक एलान किये। मन्त्रि-मण्डल की नीति रूस के अनुकूल बनाने और जनता का विश्वास पाने के लिये भी कई परिवर्तन किये गये। भारत मे कम्युनिस्टो को आशा हो रही थी कि इस देश मे फैसिज्म-विरोधी मोर्चे पर सर्व-साधारण का सहयोग प्राप्त करने के लिये भारत सरकार भी अपनी नीति मे परिवर्तन करेगी। उन्हे कम्युनिस्ट दल पर से कानूनी प्रतिबन्ध हट जाने और जेल से कम्युनिस्टो की आम रिहाई की आशा होने लगी। फैसिज्म-विरोधी कौमी जग की नीति का प्रचार करने के लिये कम्युनिस्ट-दल अग्रेजी और अनेक प्रातीय भाषाओ मे एक पत्र प्रकाशित करने की योजना कर रहा था। खन्ना अपने कार्य के लिये सुविधाये मिलने और क्षेत्र विस्तृत होने की आशा करने लगा।

दूसरी ओर काग्रेस के नेताओ और ब्रिटिश पार्लिमेण्ट के प्रतिनिधि सर क्रिप्स मे कोई समझौता न हो सका। काग्रेस क्षेत्र मे फिर से आदोलन आरभ होने की सनसनी फैलने लगी। वर्धा मे काग्रेस की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति नये आदोलन की तजवीजो पर विचार कर रही थी। अहिसा के सिद्धान्त पर युद्ध विरोध के अधिकार के आदोलन की माग से राजनैतिक अधिकार प्राप्त करने के लिये व्यक्तिगत सत्याग्रह तक पहुँचे आन्दोलन का सिसकता शव उन की आखो के सम्मुख था। सरकार के पशु-वल से टक्कर लेकर काग्रेस का आत्मिक वल कुचला पडा था। इस अवस्था मे आन्दोलन के लिये नये ढग की जरूरत थी।

प्राय एक मास के उपचार के वाद चन्दा पलग पर वैठने योग्य हो गई थी। पीठ के अनेक जख्म अभी विलकुल भर न पाये थे, मरहम पट्टी जारी थी। खन्ना का पर्याप्त समय उसी के मकान पर कटता था। सुजान भी खन्ना के लिये अच्छी खासी समस्या बन गया था। यमुना से उस की मित्रता की चर्चा दिन पर दिन फैलती जा रही थी। शिवनाथ इस वारे मे स्वय परेशान था। उसे कम्युनिस्टो से सहानुभूति न थी, सुजान से वल्कि वह और भी चिढता था परन्तु इस मामले मे चिढ दिखाना, अपना तमाशा बनाना था।

खन्ना से मिल कर उस ने प्रस्ताव किया कि क्यों न इन दोनो का विवाह हो जाय ? ऐसा होने से लोगो का मुह तो वन्द हो सकेगा ।

खन्ना जानता था कि विवाह सुजान के वस की वात नही है । सुजान को यमुना से विवाह कर लेने की राय देने के वजाय उस ने इसे इस सम्वन्ध मे सयम से काम लेने को कहा । सुजान ने इस परामर्श की अवहेलना कर उत्तर दिया—"यह मेरा निजी मामला है ।"

खन्ना ने समझाया—"पार्टी का काम करते समय तुम्हारा कोई मामला, जिस से पार्टी पर प्रभाव पडे निजी नही ।"

सुजान और भी विगड उठा । उस ने कहा—"स्त्री-पुरुष के सम्वन्ध में विवाह की वूर्जुआ धारणा को मै नही जानता । मेरे लिये यमुना से प्रेम और मित्रता का सम्वन्ध पर्याप्त है । जिस धारणा मे मुझे तत्व नही जान पडता उस के अनुकूल व्यवहार कर उस का समर्थन क्यो करूँ ?"

खन्ना ने आग्रह किया—"सवाल समर्थन का नही । सवाल है, जव तक हम पूजीवादी व्यवस्था को तोड नही देते, हम उस के नियमो और सस्कारो की उपेक्षा नही कर सकते । पूजीवादी व्यवस्था में रह कर समाजवादी धारणा के अनुसार स्वतन्त्रता चाहोगे तो झझट होगा ही । जनता को सीधे मार्ग पर लाने के लिये, उन का विश्वास प्राप्त करने के लिये उन की धारणा के अनुसार तुम्हे उन के सामने सच्चरित्र भी वनना होगा । जनता का विश्वास खो कर अपनी वात उन्हे सुना सकने का अवसर खो देना वुद्धिमानी नही है । तुम दल की दृष्टि से अपने आप को पार्टी के लिये व्यर्थ वना दोगे ।"

एक दिन सहसा पुलिस ने सुजानसिह को गिरफ्तार कर लिया । प्रभावशाली व्यक्तियो द्वारा जमानत पर सुजान की रिहाई कराने का यत्न किया गया । मालूम हुआ कि सुजान की गिरफ्तारी वम्वई से आये वारण्ट के आधार पर हुई है । वह रहमत के नाम से फरार घोषित था । तहकीकात के लिये वम्वई भेज दिया गया । जितने दिन सुजान कानपुर जेल मे रहा, यमुना उस से मिलने का यत्न करती रही । उस की सहायता करने वाला कोई न था वल्कि होठ दवा कर मज़ाक करने के लिये लोगो को अवसर मिल गया ।

शिवनाथ इस सव की उपेक्षा कर एक दफे फिर काग्रेस के आने वाले आन्दोलन मे प्राणो की वाजी लगाने के लिये तैयार हो गया । उस का विश्वास था कि खन्ना नवीन आन्दोलन की व्यापक सम्भावना न समझ कर उस का विरोध कर रहा है । शिवनाथ वर्धा और दूसरे स्थानो पर जाकर नये आंदोलन

के विषय मे काग्रेस के उत्तरदायी नेताओ से मिल आया था। आदोलन आरम्भ हो जाने से पहले नीति की अनेक बाते सर्व-साधारण के सन्मुख प्रकट कर देना उचित भी न था परन्तु खन्ना के समान विश्वासी और गम्भीर आदमी को सब बात समझा कर कम्युनिस्टो के व्यापक और गहरे सगठन का सहयोग प्राप्त करने मे कोई हानि न थी। जुलाई १९४२ के अन्त मे कम्युनिस्ट पार्टी पर से प्रतिबन्ध हट जाने और कम्युनिस्टो की रिहाई हो जाने से ऐसे सहयोग का मूल्य और भी अधिक हो गया।

शिवनाथ चन्दा की बीमारी का हाल सुन कर उसे देखने के लिय दो-तीन बार गया। वही खन्ना और उस की बातचीत नये आन्दोलन के सम्बन्ध मे होती थी। आन्दोलन के कार्यक्रम और परिणाम से राजाराम का विशेष सम्पर्क न होने पर भी उन से पर्दा भी न था। बातचीत उन के सामने ही होती रहती। एक अनुभवी दुनियादार की तरह वे अपनी निष्पक्ष राय भी देने लगते। शिवनाथ ने सिद्धान्त पर तर्क छोड कर वास्तविक कार्यक्रम की ही बात की।

काग्रेस के नेता आन्दोलन से बचने के लिये जो सम्भव था कर चुके पर अब आन्दोलन रुक नही सकता था। इस बार आन्दोलन केवल वैधानिक रूप से विरोध प्रदर्शन मात्र न होगा बल्कि क्राति होगी। काग्रेस के नेताओ ने अनुभव कर लिया है कि वैधानिकता के बन्धन लगा कर आन्दोलन की रीति पूरी करने से जनता उस मे उत्साह से भाग नही ले सकती। इस आन्दोलन मे सब कुछ ध्वस कर के नयी व्यवस्था की रचना के लिये अवसर आयेगा। वाम पक्ष के लोगो को काग्रेसी-नेताशाहो से सदा शिकायत रही है कि वे आन्दोलन पर वैधानिकता के बहुत अधिक बन्धन लगा देते है। हम जनता को क्रान्ति के लिये प्रेरित नही कर पाते। इस बार वह बात नही। उन लोगो ने मान लिया है कि मौजूदा व्यवस्था से अराजकता भली! अपना उद्देश्य प्राप्त करने के लिये जनता सभी सम्भव उपाओ का उपयोग करेगी। अब पीछे हटने की गुजाइश नही! चाहे रक्त की नदियाँ वह जाय ।

शिवनाथ ने बताया वर्धा मे बद्री बाबू से भी बात हुई थी। उन्होने कहा है—अब देखना है वाम पक्ष वाले क्रान्ति के अरमान कैसे पूरे करते है? देश मे सरकार की मैशीनरी को बिलकुल ठप्प कर देना है! उस के बाद चाहे जो हो। इस बार कार्यक्रम मे रेल, तार, डाक, अदालत, खजाना, सरकारी सामान और इमारते सभी कुछ—जिन साधनो से सरकार शासन और दमन

करती है, सब उखाड देना है। सरकारी अफसरो को गिरफ्तार करके व्यवस्था का अन्त कर देना है। काग्रेस के बडे नेता स्वय इस दिशा में कुछ भी नही कर सकते। करना सब कुछ हमे तुम्हे है। मौजूदा शासन समाप्त कर देना ही पहला काम है। काग्रेस के प्रति लोगो की श्रद्धा बडी भारी शक्ति है। इस शक्ति के उपयोग का अवसर हमारे हाथ मे आ रहा है। आन्दोलन आरम्भ हो जाने पर काग्रेस गैरकानूनी सस्था हो जायगी। उस समय काग्रेस के प्रतिनिधि हम लोग ही होगे। तुम लोग देशव्यापी हड़ताल द्वारा शासन की व्यवस्था मेहनत करने वाली श्रेणी के हाथ में लेने की तैयारियाँ करते रहे हो। रेलवे और दूसरे कारोबार के मजदूरो मे तुम्हारा सगठन है। सब जगह काम बन्द कराकर तुम मौजूदा व्यवस्था का अन्त कुछ घण्टो मे ही कर दे सकते हो। ऐसा होने से सेना और पुलिस एक स्थान से दूसरे स्थान पर न जा सकेगी। एक स्थान से दूसरे स्थान का सम्बन्ध न रहने से सरकार क्रांति का दमन सगठित रूप से न कर सकेगी। सरकार की शक्ति जगह-जगह बिखर जाने पर जनता की शक्ति अधिक होगी और हम क्राति को सफल बना सकेगे। किसी न किसी प्रकार पुरानी व्यवस्था बनाये रखने का यत्न करने वाले इस आन्दोलन को रोकने का यत्न कर रहे है परन्तु काग्रेस के नेता लाचार है? उन की लगातार असफलताओ ने उन्हे कदम उठाने के लिये विवश कर दिया है। इस समय वाम पक्ष का कर्तव्य है कि अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के अधिवेशन में बम्बई चल कर अपनी सम्पूर्ण शक्ति आन्दोलन आरम्भ करने का प्रस्ताव पास कराने मे लगा दे . . ।"

रहस्य की बातें सुन कर राजाराम शका से बोले—"हाँ, हो तो सकता है, अगर ऐसा हो जाय तब! लेकिन तमाम गडबडी हो जायगी, बिजनेस तो सब चौपट हो जायगा।"

उत्साह से शिवनाथ ने कहा—"होगा कैसे नही, परिस्थितियाँ अनुकूल है। बरमा मे जो कुछ हो रहा है, उस से यहाँ लोगो पर सरकार का आतक कम हो गया है। शुरू करने की आवश्यकता है, फिर तो होता ही जायगा!" जूता फर्श पर उतार कर पाँव चन्दा के पलग की पटिया पर टिका कर हाथ की उँगलियाँ चटकाते हुये राजाराम ने सुझाया, "हाँ, पर लूट-मार मच जायगी। चाँदी-सोना तो कही है नही, सब नोट ही नोट है। सरकार नही रहेगी तो नोट को कौन पूछेगा? खरीद-बिक्री कैसे होगी? लोग हाथ पर हाथ धरे सूखे थोडे बैठे रहेगे? अपने आप लूट-मार होगी!"

चन्दा आँखे फैलाये आशका से पति की बात सुन रही थी—"हाँ सो तो होगा ही ?" उस ने समर्थन किया। इस आपत्ति की उपेक्षा कर शिवनाथ ने खन्ना की राय सुनने के लिये उसे सम्बोधन किया, "अरे यह सब तो क्रान्ति के समय होता ही है। हमारी शक्ति सगठित हो तो हम तुरन्त ही व्यवस्था कायम कर सकते है ।'

खन्ना विश्राम के लिये पाव पसारे बाये हाथ से सिगरेट पीता हुआ दाये हाथ मे थमी दियासलाई से कान खुजा रहा था। पॉव समेट कर और दियासलाई को उँगलियो मे तोडते हुये उस ने कहा—"भाई, हम लोग तो इस समय आन्दोलन के पक्ष मे नही है।"

"यह तो जानते हैं। तुम्हारे अखबार मे देखा है।" उतावली से शिवनाथ बोला, "मतलब है कि युद्ध के कारण सरकार पर आई कठिनाई का तुम लाभ नही उठाना चाहते यानी तुम उदार दल वालो से भी गये बीते हो। तुम में और राय की रेडिकल पार्टी मे भेद ही क्या है ?"

"हाँ ठीक तो है" राजाराम ने सिर हिला शिवनाथ का समर्थन किया, "इस का मतलब तो यही है।"

हाथ का समाप्त हो गया सिगरेट चन्दा के पलग के नीचे उगालदान मे फेक कर कुर्सी पर सीधे होकर खन्ना ने कहा—"नही, यह बात नही है। शासन देश के लोगो की सरकार के हाथ मे हो, काग्रेस की इस मॉग का हम समर्थन करते है क्योकि उसी अवस्था मे भारतीय जनता फैसिस्ट-विरोधी युद्ध को अपना युद्ध समझ सकती है परन्तु जनता के लिये शासन अधिकार प्राप्त करने का उपाय परिस्थितियो को ध्यान में रख कर ही किया जा सकता है। हम उसी उपाय पर निर्भर कर सकते है जिस की सफलता की आशा हम इन परिस्थितियो मे कर सके। ऐसे उपाय पर नही जो हमारे उद्देश्य को ही हानि पहुँचाये। अग्रेज सरकार से आत्म-निर्णय या स्वराज्य के अधिकार का हमारा तकाजा है। वह हम लेगे ही परन्तु आज दूसरी शत्रु-शक्ति हमारे देश पर चढी आ रही है। अग्रेजो मे झगडते-झगडते हम यदि इस दूसरी शक्ति के पजे मे पड जायं तो क्या होगा ? स्वराज्य तो मिलेगा नही, अलबत्ता शत्रु के आक्रमण से हमारा देश और जनता लाखो की सख्या मे बरबाद हो जायगी।

"आप व्यर्थ मे जापान को अपना शत्रु समझ बैठे है, यह आप की भूल है। वह तो भारत पर अग्रेजी साम्राज्य की शक्ति तोडने के लिये आक्रमण कर रहा है ? हमे गुलाम बना कर रखने वालो पर आ रही मुसीबत हम क्यो

अपने सिर ले ?" शिवनाथ ने राजाराम और चन्दा की ओर देख कर पूछा, "हमें अपनी लडाई अपने पुराने शत्रु से लडनी चाहिये, इस अवसर से लाभ उठाना चाहिये। रूस के युद्ध में पड़ जाने से हम अपनी स्वतन्त्रता के प्रश्न की उपेक्षा नही कर सकते।"

खन्ना बोला—"लेकिन यह मान लेना ही तो भूल है कि जापान अग्रेज़ो से कुश्ती लड़ने की बहादुरी दिखाने के लिये हमारे देश पर आक्रमण कर रहा है ? क्यो साहब, चीन पर जापान ने क्यो आक्रमण किया ? इण्डोचाइना, कोरिया, मगोलिया, मचूरिया को वह क्यो हडप गया ? सम्पूर्ण एशिया को अपने साम्राज्य में समेटने की महत्त्वाकाक्षा जापान की बहुत पुरानी है। वह केवल अवसर की प्रतीक्षा मे था। हमें भी अवसर पहचानना है। काग्रेस के बडे भारी राजनीतिज्ञ नेता फर्माते है कि हम अग्रेज़ो से लडेंगे, जापान से भी लडेंगे, जर्मनी से भी लडेगे। आप दुनिया भर से लडेंगे ? क्या है शक्ति आप की ? वही न जिस से व्यक्तिगत-सत्याग्रह का सग्राम आप ने जीत लिया ? अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र मे कोई तो आप का सहायक होना चाहिये ? इस ज़माने में कोई राष्ट्र अकेला खडा नही रह सकता। फैसिस्ट शक्तियो के सगठन के विरुद्ध रूस, इगलैड और अमेरिका तक तो अकेले खडे होना मूर्खता समझते है। आप उन तीनो से ज़बरदस्त है जो फैसिस्ट शक्तियो के साथ अकेले लडेगे और ब्रिटेन के साथ भी लडते जायगे। आत्मिक शक्ति की बात जाने दीजिये, ज़रा वास्तविकता की ओर देखिये " खन्ना कहता गया।

राजाराम बोले—"इस मे क्या है, यो कहने को आप जापान को ही सहायक समझ सकते है ?"

चन्दा बहस को बड़े ध्यान से सुन रही थी—"यह कैसे हो सकता है ?" उस ने चौंक कर पूछा।

"क्यो ?" राजाराम ने प्रश्न किया।

खन्ना उत्तेजना से अपनी कुर्सी पर आगे खिसक आया। हाथ उठा चन्दा को चुप रहने का संकेत कर बोला—"बस ठीक है, आप ने एक सीधी बात कही। यह बात सुभाष बाबू कह सकते है परन्तु समाजवादी ऐसा नही कह सकते। जापान या फैसिस्ट शक्तियो से सहयोग का अर्थ है, फैसिज्म के सिद्धात और उस की अन्तरराष्ट्रीय नीति से सहयोग। फैसिज्म का पहला दावा यह है कि संसार के पराधीन और निर्बल राष्ट्र शक्तिशाली राष्ट्रो के उपयोग के लिये है ? फैसिस्टो की सफलता से आप अपनी किस्मत पर गुलामी की मोहर

उस समय तक के लिये लगा लेगे, जब तक कि फैसिस्ट साम्राज्य भी कमजोर होने लगे और उसे समाप्त करने के लिये अन्तरराष्ट्रीय शक्तियाँ उठ खडी हो ? क्या यह दूरदर्शिता है कि फैसिज्म का विरोध करने वाली जो अन्तरराष्ट्रीय शक्तियाँ आज मौजूद है, उन से हम सहयोग न करे, अपनी अवस्था को और गिरा ले और फिर फेसिज्म के विरुद्ध नई अन्तरराष्ट्रीय शक्तियो के पैदा होने और उन के सबल होने की प्रतीक्षा करे ?"

खन्ना के व्यवहार मे ऐसी तीव्रता चन्दा ने पहले न देखी थी। कौतूहल से उसे हल्की सिहरन-सी अनुभव हो गई और नेत्र प्रसन्नता से चमक उठे। उसी अवस्था मे वह खन्ना की ओर देखती रह गई। उसे जान न पडा कि राजाराम खन्ना की बात की ओर ध्यान देने की अपेक्षा स्वयं उसी की ओर ही ध्यान लगाये थे।

खन्ना की तीव्रता से विचलित न होकर शिवनाथ ने कहा—"अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति की चिन्ता मे अपने देश की परिस्थिति भूल जाना भी तो ठीक नही। हम स्वय गुलाम बने रह कर अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति की फिक्र करे, यह भी तो विचित्र बात है।"

खन्ना की उत्तेजना शात न हुई—"विचित्र बात कुछ नही है" उस ने कहा, "अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति की उपेक्षा न आप कर रहे है, न मै कर सकता हूँ, न काग्रेस कर सकती है। आप युद्ध की परिस्थिति से लाभ उठाना चाहते है, युद्ध अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति है या नही ? प्रश्न है कि इस अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति मे जिस नीति पर आप चलना चाहते है, वह देश के हित मे है या अहित मे ?"

सक्षेप मे अपनी बात कहने के सकेत मे हाथ उठा शिवनाथ ने कहा—"अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति से लाभ उठा कर हम अपनी गुलामी का बन्धन काटने का यत्न क्यो न करे ? अपने शत्रु पर चोट क्यो न करे ? आगे जो होगा, हम देख लेगे ?"

"ठीक तो है" बहस से ऊबने के भाव से उँगलियाँ चटकाते हुये राजाराम बोले। चन्दा को भी शिवनाथ के सक्षिप्त तर्क मे बल दिखाई दिया। ऊबने के भाव से नही बल्कि जिज्ञासु के भाव से उत्तर की आशा मे वह खन्ना की की ओर देखने लगी।

उत्तर खन्ना की जिह्वा पर प्रस्तुत ही था—"अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति से गुलामी का बन्धन काटने की नीति ठीक है परन्तु कार्यक्रम ऐसा होना

चाहिये जिस से गुलामी का वन्धन कटने की आशा हो, केवल वन्धन वदल कर कडा हो जाने की नही। वर्तमान अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति में भारत के लिये फैसिस्ट-विरोधी मोर्चे मे राष्ट्रीय रूप से अपनी जिम्मेवारी लेने के सिवा और कोई चारा नही है। इस नीति से हम फैसिस्ट-विरोधी युद्ध मे मित्रराष्ट्रो का हाथ वटाने के कार्य मे अपने शासन के उत्तरदायित्व को भी ले सकते है। इस समय मित्र-राष्ट्र फैसिज्म के विरोध के लिये सभी सम्भव उपायो की शरण लेने के लिये मजवूर है।

"मित्र-राष्ट्र चाहे अपने स्वार्थ के लिये ही हो, भारत को राष्ट्रीय रूप से जिम्मेवारी दे कर फैसिस्ट-विरोधी मोर्चे पर खडा होने मे सहायता दे, पर हमारा स्वार्थ भी उस से पूरा होगा। यदि हम एक ओर फैसिज्म का ज़वानी विरोध करे और दूसरी ओर फैसिस्ट-विरोधी युद्ध का भी विरोध करे तो वह वास्तव मे अप्रत्यक्ष रूप से फैसिज्म की सहायता करना होगा। ऐसी अवस्था मे अग्रेज सरकार को नैतिक अधिकार होगा कि अपने फैसिस्ट शत्रु को सहायता देने वाले हमारे प्रयत्नो को पूरी शक्ति से कुचल दे। अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति मे आप अग्रेज़ सरकार को चोट पहुँचाने की वात सोच सकते है परन्तु उस से केवल प्रतिहिंसा की भावना मूर्खता और वचपन होगा, राजनीति नही। हम अपनी गर्दन कटा कर प्रतिहिंसा की भावना पूरी करना नही चाहते। हमें मनुष्य की किसी जाति से द्वेष नही, हमे गुलाम वनाने वाले तरीको से विरोध है, जिस का सव से भयकर रूप फैसिज्म है।"

अपनी कलाई की घड़ी की ओर देख कर राजाराम ने टोक दिया—"पाँच वजने को हो रहे हैं। इन लोगो को कुछ चाय-वाय पिलवाओगी या नही ?"

चन्दा वीमारी के कारण गाव तकिये के सहारे पलग पर करवट से वैठी थी और दूसरे लोग उस के पलग के चारो ओर कुर्सियो पर थे। अपने घर मे, अपने विस्तर के समीप राजनीति और तर्क की ऐसी महत्वपूर्ण वाते होते देख कर उसे प्रसन्नता और गर्व हो रहा था। विशेष कर खन्ना को यो खुल कर वोलते देख कर। "क्यो नही, पर यह सव वाते क्या चाय से कम मजेदार है ?" उस ने मुस्कराकर कहा और भजन को पुकार कर चाय ले आने का आदेश दे दिया।

भजन ने चन्दा के पलग के सम्मुख तिपाई पर चाय की ट्रे रख दी। अपने स्थान से हिले विना वह प्यालो मे चाय और दूध डालती गई और फिर प्रत्येक व्यक्ति की रुचि के अनुसार पूछ कर चीनी के चम्मच। राजाराम प्याले थमाते

जा रहे थे। अपना प्याला दाये हाथ से थाम कर उस मे चम्मच चलाते हुये शिवनाथ ने कहा—"पर यही क्यो मान लिया जाय कि जापान भारत पर आक्रमण कर ही देगा और उस भय से हम अपनी आजादी का आन्दोलन क्यो छोड़ दे।"

खन्ना चाय के प्याले को भूल कर बोला—"आज़ादी के आन्दोलन को हम छोडे क्यो, फैसिस्ट-विरोधी युद्ध आजादी का ही तो युद्ध है। उस मे आत्म-निर्णय का अधिकार पाने का प्रयत्न है। बाकी रहा, जापान आक्रमण करेगा या नही ? वह तो आक्रमण कर ही रहा है। ऐसे समय देश मे अराजकता फैला कर यदि हम जापान को रोकने वाली शक्ति को निर्बल कर दे तो यह जापान के आक्रमण को सहायता देना है। वह अपने साम्राज्य-विस्तार के निमन्त्रण को ठुकरायेगा क्यो ?"

चन्दा अपना प्याला तिपाई से उठाना भूल कर तन्मयता से खन्ना की बात सुनने लगी थी। उस की बात समाप्त होने पर मुस्कराकर चन्दा ने अपना प्याला हाथ मे लेकर कहा—"खन्ना जी, कहते खूब है आप।"

"बस, तो यह आखिर को ही बात आप को पसन्द आई ?" खन्ना ने निराशा के भाव से पूछा।

"और क्या ?" चन्दा ने खन्ना के विनोद के उत्तर मे हँस दिया।

"तब तो बहुत ठीक है।" सिर हिलाकर बेबसी सी दिखाते हुये उस ने प्रत्युत्तर दिया, "इत्र को चख कर पहचानती है आप।"

चाय का घूट मुख मे लिये ही चन्दा को ज़ोर से हँसी आ गई। प्याला हिल जाने से कुछ चाय उस की साड़ी के आचल पर ढरक आई। प्याले को तिपाई पर रख कर उस ने क्रोध प्रकट किया—"बडे वैसे है आप।"

"कैसे ?" खन्ना ने गम्भीरता से पूछा।

"बहुत खराब। ·· चाय गिरवा दी।" पति की ओर देख चन्दा ने शिकायत की।

राजाराम ने उस हँसी मे योग न दिया। उन की दृष्टि नीचे फर्श की ओर चली गई। उस से पहले वे चन्दा की आह्लाद से चमकती आँखो की ओर देख रहे थे। शिवनाथ ने भी उधर ध्यान न दिया। वह चाय का घूट भरना भूल कर प्याले मे चम्मच चलाते-चलाते कुछ सोचने लगा। खन्ना और चन्दा का वह विनोद दूसरे लोगो का सहयोग न पा कर उन की निजी बात रह कर एक क्षणिक माधुर्य उत्पन्न कर गया।

× × ×

कांग्रेस के नये 'भारत छोड़' आन्दोलन का भविष्य बम्बई अधिवेशन के निर्णय पर निर्भर था। उग्र कांग्रेसवादियों में आन्दोलन के जुहार की तैयारी आरम्भ हो रही थी। वैधानिकता के पक्षपाती मुस्लिम-लीग से समझौता कर, कांग्रेस और लीग का सम्मिलित मन्त्रिमण्डल स्थापित करके राष्ट्रीय-सरकार बना सकने की आशा कर रहे थे। कांग्रेस की सर्व-साधारण जनता आन्दोलन में कूद पड़ने के लिये पंतरा कर रही थी परन्तु चोटी के लीडर कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि महात्मा गांधी और वायसराय में होने वाली मुलाकात के परिणाम की प्रतीक्षा में थे। उन्हें आशा थी, शायद सरकार कांग्रेस की शक्ति और प्रभाव का विचार कर किसी रूप में कांग्रेस की माँगों को स्वीकार करने का आश्वासन दे दे।

राजनैतिक क्षेत्र में साम्प्रदायिक समस्या की उपेक्षा करने वाले कम्युनिस्ट हर हालत में कांग्रेस-लीग समझौता कर लिया जाने की पुकार लगा रहे थे। वे पाकिस्तान की माँग स्वीकार करने के लिये भी तैयार थे—'बिना किसी शर्त के फैसिस्ट-विरोधी युद्ध में सहयोग और बिना किसी शर्त के कांग्रेस-मुस्लिमलीग समझौता !' कम्युनिस्टों की यह दो पुकारें थीं। कम्युनिस्टों से सहानुभूति रखने वाले लोग भी इस से विस्मित रह गये। कम्युनिस्ट विचार-धारा को बिना समझे भी राष्ट्रीय भावना रखने वाली जनता को कम्युनिस्टों से सहानुभूति थी क्योंकि सरकार द्वारा कम्युनिस्टों का सब से अधिक दमन हो रहा था और वे साम्राज्यवाद के उग्रतम विरोधी थे पर अब उन से सहानु-भूति रखने वाले लोग भी कम्युनिस्टों पर रूस के लिये अपने देश को बलिदान कर देने और सरकार के हाथ बिक जाने का लांछन लगाने लगे।

खन्ना और उस के साथी अपनी सम्पूर्ण शक्ति से जनमत परिवर्तन करने के काम में लगे थे। उन के सम्मुख प्रश्न था कि अपने देश को चीन और बरमा की भाँति आग की ज्वाला में जलने और रक्त की नदी में डूबने से बचाने के लिये मित्र-राष्ट्रों के फैसिस्ट-विरोधी मोर्चे में समान उत्तरदायित्व पाने का यत्न किया जाये। पाकिस्तान की समस्या उन्हें साम्प्रदायिक भावना से प्रेरित मुस्लिम जनता की आत्मनिर्णय की माँग जान पड़ती थी। वे इस माँग को आत्मनिर्णय के सिद्धांत पर स्वीकार करके फूट का आधार मिटा देना चाहते थे। इस प्रकार वे राष्ट्रीय-सरकार की स्थापना के मार्ग में सरकार की ओर से पेश की जाने वाली साम्प्रदायिक भेदभाव की आपत्ति को दूर कर देना चाहते थे।

कम्युनिस्ट पार्टी के कानूनी सस्था बन जाने से डाक्टर वर्मा के कार्य का क्षेत्र बहुत विस्तृत हो गया था। दूकान के आडम्बर की चिन्ता छोड कर वह राजनैतिक कार्य मे भाग लेने वाले लोगो से सम्पर्क बढाने मे लगा था। विचार विनिमय के लिये उस से मिलने वालो की सख्या बढ गई थी। स्वय अपना स्थान न होने के कारण दिन भर दूसरी बस्तियो मे घूमते रहने से समय बरबाद होता था। मिलने वाले यदि उस के यहाँ आकर मिल जाते तो समय की बचत और सुविधा से काम हो सकता था।

राजाराम ने परामर्श दिया—"तुम्हे ही क्या सब के यहाँ मारे-मारे फिरने की पडी है। जिसे ज़रूरत हो वह तुम से मिलने आ सकता है।"

खन्ना ने हँस कर उत्तर दिया—"दूसरो को जरूरत न होने पर भी मुझे तो है ही, और फिर रामनारायण के बाज़ार के अपने महल मे मै लोगो का आतिथ्य कैसे करूँ? वहाँ दो लोहे की कुर्सियाँ है और एक खाट। जाने कब से झाड़ू भी नही लगा? मै दूसरो के यहाँ जाता हूँ तो लोग कुछ खिलाते-पिलाते है। मेरे यहाँ आने लगे तो उन की आवभगत कहाँ से करूँगा?"

"तो क्या यह घर आप का नही है?" शिकायत कर चन्दा ने अनुमोदन की आशा से पति की ओर देखा।

राजाराम ने उदासी से समर्थन किया—"यह शायद नही समझता तभी ऐसी बाते करता है।"

डाक्टर वर्मा से बातचीत करने आने वालो के कारण राजाराम के अतिथियो की सख्या बढ गई। स्वय राजाराम की सहानुभूति कम्युनिस्टो से न होने पर भी खन्ना की मार्फत सहसा अपनी सामाजिक स्थिति और जनप्रियता बढना उन्हे बुरा न लगा।

चन्दा चगी हो जाने पर भी अभी निर्बल थी। खन्ना की महफिलो के लिये काफी झझट उसे उठाना पडता। खन्ना टोकता—"इस सब की क्या जरूरत है?" परन्तु चन्दा को अभ्यागतो के सत्कार मे स्वाभाविक उत्साह था। वह चाहती थी कि उस के यहाँ जो आये, असन्तुष्ट न जाय। राजाराम भी घर का व्यवहार मर्यादा के अनुकूल ही रखना चाहते थे।

कार्य का क्षेत्र बढ जाने पर खन्ना की उलझने भी बढ रही थी। बिना यत्न के भी जो कुछ डाक्टरी की प्रैक्टिस जम पाई थी अब समाप्त हो गई। नये-नये कार्यकर्ता बढ रहे थे। ऐसी अवस्था मे सुजान की कमी उसे खल जाती। दूसरे कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओ के जेल से छूट जाने पर भी उस की

रिहाई न हुई थी। यमुना उस से मिलने बम्बई गई थी। उस से पाई खबरों से खन्ना और भी निराश हो गया। सुजान के बारे में तहकीकात करने के लिये पुलिस ने उस का पता ठिकाना कानपुर ढूंढा पर उन्हें कुछ पता न मिला। बम्बई की पुलिस ने उसे रहमत के नाम से पहचान लिया। तहकीकात आगे बढ़ी, आखिर दो-दो नाम से रहने वाला यह व्यक्ति है कौन ? इस विषय में पुलिस का सन्तोष कराना, सुजान के बस में न था। ऐसे संदिग्ध व्यक्ति की रिहाई कैसे होती ? उस का हुलिया और फोटो सभी प्रान्तों में भेजकर तहकीकात हो रही थी।

पहली अगस्त के दिन 'तिलक-हाल' में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की बरसी के अवसर पर कांग्रेस कार्यकारिणी के चौदह जुलाई के प्रस्ताव के समर्थन में अनेक व्याख्यान हुये। सरकार से असहयोग करके शासन व्यवस्था को स्थगित कर देने और खुली बगावत के लिये जनता को ललकारा गया। सभा में उपस्थित कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं ने युद्ध के समय इस व्यवहार को आत्म-हत्या की नीति और जापान के आक्रमण को प्रोत्साहित करना बता कर बिना किसी शर्त के साम्प्रदायिक समझौता करके राष्ट्रीय सरकार स्थापित करने के कार्य-क्रम की अपील की। आन्दोलन के पक्षपाती उग्र विचार के लोगों ने कम्युनिस्टों को गद्दार और देशद्रोही कह कर सभा से निकाल देने का प्रयत्न किया। मारपीट हो गई। इस मारपीट की अफवाहें शहर भर में फैल गई। कांग्रेस से सहानुभूति रखने वालों ने समझा कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिये लड़ने वाली कांग्रेस का विरोध देशद्रोह के अतिरिक्त और क्या हो सकता है ? किसने क्या कहा ? कैसे कहा ? क्यों कहा ? इस गहराई में गये बिना ही कांग्रेस प्रेमियों में, कम्यूनिस्टों को कांग्रेस-विरोधी समझ कर उन के प्रति विरोध भावना फैलने लगी।

कार्यकारिणी के बम्बई अधिवेशन की तारीख निकट आने से राजनैतिक सनसनी बढ़ रही थी। कम्युनिस्टों को विश्वास था कि अन्तिम निर्णय हो जाने पर भी आन्दोलन तुरन्त आरम्भ न होगा। कांग्रेस के प्रतिनिधि की हैसियत से महात्मा गांधी वायसराय से फिर कुछ दिन पत्र-व्यवहार करेंगे' शायद एक मुलाकात की प्रार्थना करें। अनेक बार ऐसा हो चुका था। इस बीच में कोई न कोई उपाय आन्दोलन टालने का निकल आयेगा और कम्युनिस्टों को अपनी नीति जनता के सम्मुख स्पष्ट करने का कुछ समय मिल सकेगा। कांग्रेस के प्रति जनता के विश्वास के कारण, कांग्रेस की नीति में भूल दिखाना

कठिन कार्य था; विशेषकर, जब कम्युनिस्ट स्वयं कांग्रेस के स्वराज्य की मॉग के प्रस्ताव का समर्थन कर रहे थे।

देश भर के कान बम्बई से आने वाले समाचार की ओर लगे हुये थे। नौ अगस्त को खन्ना रेडियो पर कांग्रेस के निर्णय की खबर सुनने के लिये बहुत जल्दी सुबह ही राजाराम के यहॉ पहुँच गया था। समाचार मिला—'कांग्रेस ने सरकार द्वारा अपनी मागे पूरी न होने पर असहयोग और विद्रोह का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है और कांग्रेस के प्रमुख नेता गिरफ्तार भी कर लिये गये हैं।' चौबीस घण्टे के भीतर देश भर मे सभी स्थानों पर गिरफ्तारिया हो गई थी। सरकार का कार्यक्रम पहले से तैयार था। वह कांग्रेस के निर्णय की ही प्रतीक्षा कर रही थी।

अगले दिन से ही समाचार पत्रो मे नेताओ की गिरफ्तारी पर विरोध-प्रदर्शन के समाचार और सरकार द्वारा इन प्रदर्शनो को गैरकानूनी करार देकर इनके दमन के समाचार आने लगे। इसके बाद स्थान-स्थान पर रेल की पटरी उखाडे जाने, सरकारी इमारतो को जलाने और पुलिस तथा विद्रोही जनता के सघर्ष की घटनाये होने लगी।

पुलिस ने शिवनाथ की गिरफ्तारी के लिये उसके मकान पर छापा मारा। वह आशका मे पहले ही फरार हो गया था। कांग्रेस की नीति के विषय मे अधिकार मे कुछ कह सकने वाले सभी नेता जेलो मे बन्द हो गये थे। दो-एक स्थानीय नेता समय पर फरार हो जाने से बच गये थे। समाचार पत्रो मे कांग्रेस के प्रस्ताव या परिस्थिति के विषय मे नेताओ के सन्देश छप न सकते थे परन्तु गुप्त रूप से छापे गये पर्चे जगह-जगह दिखाई देने लगे। इन पर्चो मे जनता को विद्रोह और बगावत के लिये उकसाया जाता था दूसरे स्थानो पर बगावत हो जाने के अतिरजित बयान रहते थे। सर्व-साधारण भोली जनता ने इन पर्चो को ही कांग्रेस की आज्ञा मान लिया और विध्वसक कार्यो को अपनी आजादी का युद्ध समझ बैठी।

कम्युनिस्ट लोगो के विचार मे इन कामो मे क्रांति की योजना नही, जनता की शक्ति की बर्बादी हो रही थी। उन के विचार मे फैलती अराजकता, आने-जाने के साधनो का नाश और युद्ध के लिये आवश्यक कामो मे रुकावट डालना स्वय अपने देश पर शत्रु के आक्रमण को निमन्त्रण देना था। देश की जनता से एकत्र किये गये टैक्सो से बनी राष्ट्रीय सम्पत्ति का ध्वस उन्हे अपने ही देश की हानि दिखाई देती थी। यह देश की उत्तर-पूर्व की सीमा पर

पहुँची हुई शत्रु की सेना का सामना करने वाली अपने देश की रक्षक शक्ति को कमजोर करना था। विध्वंस के अतिरंजित समाचारो से, अपनी विजय के भ्रम में पागल हो रही जनता को कुछ समझा सकना कठिन काम था परन्तु खन्ना और उस के साथी जनता के लाछनो की पर्वाह न कर, दिन-रात अपने काम मे जुटे रहते थे।

राजाराम के घर जुडने वाली राजनैतिक चर्चा की महफिले समाप्त हो गईं। काग्रेस के नाम पर बगावत का कार्यक्रम आरम्भ हो जाने और काग्रेस-जन की आम गिरफ्तारी होते ही राजाराम अपने यहाँ की राजनैतिक महफिलो से घबराने लगे। उन्हे कुछ कहने की आवश्यकता भी न पडी। महफिलें स्वय ही तितर-बितर हो गईं। विद्रोह के प्रदर्शनो के साथ ही मिलो में हडताल कराने के भी प्रयत्न हुये। मिल-मजदूरो को और विशेषकर रेलवे के मजदूरों को बगावत के प्रदर्शनो और ध्वसक कार्यों के लिये उत्तेजना से रोकना बहुत कठिन कार्य था। काग्रेस इस समय शहीद बन रही थी। काग्रेस के शहीदो के नाम से कोई भी अपील जनता के हृदय मे सहानुभूति पैदा कर देती थी परन्तु भावुकता मे या देशभक्ति की भावना से आँख मूद कर कुछ कर डालने के लिये तैयार हो जाने की अपेक्षा, भावुकता रोक कर तर्क से देश-हित की बात सोच कर, फैसिस्ट शत्रु के विरुद्ध लडाई की तैयारी के लिये, दूरदर्शिता और धैर्य की आवश्यकता थी।

मजदूर अब तक कम्युनिस्टो का विश्वास करते आये थे। सदा खतरे मे आगे रह कर इन्होने मजदूरो की सहायता की थी। अब कम्युनिस्टो द्वारा मजदूरो को खतरे से बचे रहने की सलाह दी जाने पर और शिवनाथ के साथियो द्वारा विध्वसक कार्य के लिये भडकाये जाने पर मजदूर कम्युनिस्टो से तर्क करने लगे—'हम अपने राष्ट्रीय नेताओ की पुकार की उपेक्षा कैसे कर सकते है? क्या अपने देश के प्रति हमारा कुछ कर्तव्य नही? जिन लोगो ने बीस वर्ष तक देश का राजनैतिक नेतृत्व किया है, हम उन की पुकार की उपेक्षा कैसे कर सकते है?'

ऐसी परिस्थिति मे कम्युनिस्ट मिलो और मजदूरो के मुहल्लो मे घूम-घूम कर समझाते थे कि—'काग्रेस की कार्यकारिणी समिति के सभी मेम्बर जेल मे है। उन की अनुपस्थिति मे काग्रेस की नीति और कार्यक्रम हमे कौन बता सकता है? उन की अनुपस्थिति मे गैर-जिम्मेवार लोग या फैसिस्टो की सहायता कर देश को हानि पहुँचाने के लिये तैयार लोग, काग्रेस के नाम से जनता

को बहकाने की कोशिश कर रहे है।' कम्युनिस्टो की इस सतर्कता के कारण मिलो और रेलो मे हडताल कराने के प्रयत्न असफल रह गये।

ज्यो-ज्यो आन्दोलन का संघर्ष बढता गया, खन्ना का राजाराम के घर जाना कम होने लगा। कभी बहुत थकावट अनुभव होने पर वह घटे आधे-घटे के लिये चन्दा के समीप आकर तखत पर लेट जाता। चदा का हाथ अपने माथे पर अनुभव कर उसकी गोद मे अपना सिर रख कर आँखे मूँद लेट जाने मे उसे विश्राम और स्फूर्ति मिलती। चन्दा उस के घुँघराले बालो मे उगलियाँ चलाते हुये उस से उस के खाने-पीने, सोने-जागने के विषय मे अनेक प्रश्न करने लगती।

खन्ना झुँझलाहट दिखा कर कहता—"बस यही? किसी और बात से तुम्हे मतलब ही नही? आखिर स्त्री ही हो न?"

खन्ना की झुँझलाहट पर रीझ कर चदा स्नेह से उस की ओर देखने लगती। इस दृष्टि का अर्थ था—तुम तो जानते हो मेरी समझ कितनी है, बेबस हूँ? उस दृष्टि के सम्मुख कुछ कह सकना खन्ना के लिये सम्भव न था।

यमुना कुछ दिन कानपुर मे रह कर स्कूल का काम छोड कर फिर बम्बई चली गई थी। उस ने निश्चय कर लिया था कि वह ऐसे स्थान पर रहेगी जहाँ वह सुजान से मिल सके। यमुना के कानपुर रहते समय खन्ना को उस से अपने काम मे सहायता मिलने लगी थी। सन्देश पहुँचाने अथवा सम्बन्ध कायम रखने के लिये कई जगह उस का जाना सन्देह के बिना हो सकता था। उस के बम्बई चले जाने पर खन्ना को काम मे परेशानी होती। चन्दा से इस परेशानी का जिक्र कर खन्ना ने कहा—"तुम तो कुछ कर नही सकती।"

बेबसी से उस की ओर देख कर चन्दा ने उत्तर दिया—"मै क्या करूँ?··· तुम जैसे कहो मै करने को तैयार हूँ? पर इस घर मे रहते क्या कर सकती हूँ? ····इन से लड कर मै घर मे कैसे रह सकती हूँ?'

चन्दा की बेबसी से खीझ कर खन्ना ने कहा—"तो ऐसे घर से हो क्या जिस मे तुम्हारा अपना कुछ भी व्यक्तित्व नही? जिस मे तुम्हारी इच्छा का मूल्य नही, वह घर तुम्हारा तो न हुआ? तुम घर की एक वस्तु मात्र हो?" खन्ना चुप हो कर सोच रहा था, ऐसी कडी बात क्यो कह गया? चन्दा ने अप्रसन्नता का कोई चिन्ह प्रकट न किया। वह खन्ना का सिर उसी प्रकार गोद मे लिये रही। सहसा माथे पर टपटप दो बूँद गिरने पर खन्ना ने आँखे खोल कर देखा कि चदा स्थिर आँखो से सामने आँगन की ओर देख रही थी।

आँखो में छलछलाये आँसू वह कर टपक पडे थे। खन्ना ने सहसा अपनी बाँह उसकी गर्दन मे डाल कर उसका सिर अपने हृदय पर रख लिया, "यह क्या करती हो चाँद !" उस के मुख से निकल गया। चन्दा का मुख उठा उस ने उसकी आँखो के आँसू चूम लिये।

"ना !" चन्दा काँप सी उठी।

'क्यो ?" खन्ना सहम गया।

"ऐसा नही करते। " ' वह रूस मे ठीक हो सकता है, यहाँ नही।" चन्दा हँस पडी।

"क्यो इस मे क्या है ?"

"कुछ न सही,""मेरे सस्कार। ' मै अच्छा नही समझती !" चन्दा ने खन्ना के सिर पर हाथ रख कर कहा।

"लेकिन मुझे इसमे नाराज होने की कोई वात नही जान पडती।"

"यदि ऐसी बात होती तो तुम मेरे पास यो वैठ पाते ?"

"अच्छा तुम रोई क्यो ?"

"क्यो कि तुम्हारी वात ठीक थी।" चन्दा ने मुस्करा दिया।

खन्ना गम्भीर हो गया—"जव यह वात ठीक है तो अपनी मनुष्यता खोकर इस घर मे रहने का क्या अर्थ है ?" उसने चन्दा की आँखो मे देख कर पूछा।

"वच्चे कुल का सम्मान !" क्षण भर चुप रह कर उस ने सिर झुका कर उत्तर दिया, "और फिर जैसे तुम कहो परन्तु एक दफे कदम घर से वाहर रख लेने पर फिर लौट न सकूगी। प्राण चाहे चले जायँ !"

"तुम्हारे वारे मे कुछ नही कह सकता !" उठ कर वैठते हुए खन्ना ने चन्दा की ओर न देख कर कहा, "यदि कोई दूसरी स्त्री होती तो मै कहता कि कुल के सम्मान के लिये तुम गल रही हो, अपने वलिदान से नारी-समाज के वन्धन दृढ कर रही हो। वच्चो के प्रश्न पर मै कहता कि एक घर से वढकर देश और मनुष्यता का ध्यान होना चाहिये परन्तु तुम से कुछ न कहूँगा। यह मेरी कमजोरी है, मानता हूँ।"

काम अधिक रहने से खन्ना इच्छा होने पर भी राजाराम के यहाँ अधिक देर न ठहर पाता। राजाराम की प्रतीक्षा मे वैठ रहने के लिये न समय था, न इच्छा ही थी। चन्दा से जो सान्त्वना राजाराम के वर न होने पर मिलती थी वह उनके सम्मुख न मिल सकती थी। दो-तीन वार वह आया और राजाराम से मिले विना ही चला गया। खन्ना के आने का चर्चा करने पर पति

का कुछ उत्साह इस विषय मे न देख कर चदा ने भी फिर चर्चा न की।

एक दिन सध्या समय राजाराम कुछ जल्दी ही लौटे। आँगन से भीतर आते हुए दो अधजली बीडियाँ देख कर उन्होने भजन को डाट दिया—"यह क्या बत्तमीजी है। बीडी बाहर नही फेंक सकते।"

भजन लपक कर जली बीडी उठा ले गया। नौकर की सफाई मे चन्दा ने कहा—"इस ने नही फेंकी खन्ना जी आये थे, अभी-अभी यही खडे-खडे बीडी पीते रहे।"

राजाराम 'हूँ' कर भीतर चले गये। बदलने के लिये कपडे स्वयं ढूँढना उन्हे अखर जाता था परन्तु उस समय उन्होने चदा को न पुकारा। एक गहरी साँस लेकर स्वय ही कपडे निकाल लिये। इस से पहले दिन भी खन्ना के आने के बारे मे प्रसग ही से पता चला था। चन्दा ने स्वय जिक्र न किया था। आज भी ऐसे ही पता चला। उन के कपडे वदलने के विषय मे स्त्री की उपेक्षा की ओर भी उन का ध्यान गया। इस अत्याचार को चुपचाप सहकर वे स्नान के लिये गुसलखाने मे चले गये। आवश्यकता पडने पर उन्हो ने भजन को ही पुकारा और भोजन भी बहुत देर से, अनमने से ढग से किया। चदा के पूछने पर टाल गये—"कुछ नही ऐसे ही काम की परेशानी है।"

चन्दा इस चुप को देखती और सोचती। पति के स्पष्ट रूप से कुछ न कहने पर भी वह भाँपती कि खन्ना के प्रति इनका सदेह दूर नही हुआ। मन मे कहती—बिना कारण नाराज होने का क्या उपाय करूँ? पति को दुखी करने के अपराध का दण्ड वह स्वय दुखी होकर पा लेती।

× × ×

राजाराम दोपहर की गाड़ी से लखनऊ गये थे। लौट कर अभ्यास के अनुसार उन्होने भजन को न पुकारा, किवाडो पर दस्तक दी। किवाड तुरन्त न खुले। ड्योढी के किवाड़ खुलने की प्रतीक्षा मे उन्हे सन्देह हुआ कि कोई बैठक मे था और किवाड खटखटाने पर वह दबे पाँव भीतर चला गया है। इस के कुछ क्षण बाद, जीने से कोई ऊपर चढा और तब ऊपर की खिडकी से चदा ने पुकारा—"कौन?"

"हम है" राजाराम ने गम्भीर स्वर मे उत्तर दिया। उस से पहले उन के मस्तिष्क मे शका उठ चुकी थी कि बैठक मे कोई था अवश्य, चन्दा ने जीना चढ कर और ऊपर जाकर क्यो प्रश्न किया। बैठक की खिडकी खोल कर भी

तो पूछा जा सकता था परन्तु उस से राजाराम जान जाते कि भीतर कौन था ? अपने घर में अपने विरुद्ध षडयन्त्र का प्रमाण पाकर राजाराम का मस्तिष्क क्रोध से भन्ना गया। होंठ चबाकर रह गये। किवाड़ खुलते ही उन्होंने उग्र दृष्टि से चन्दा की आँखों में देख प्रश्न किया—"कौन था बैठक में ?"

"भीतर आजाओ बताती हूँ।" चन्दा ने आश्वासन देते हुए उत्तर दिया।

आश्वासन देकर उन्हें मूर्ख बनाने के इस प्रयत्न से उत्तेजित होकर उन्होंने कड़े स्वर में पूछा—"बोलती क्यों नहीं ?"

चंदा सहम-सी गई। बहुत धीमे स्वर मे उत्तर दिया—"शिवनाथ आये थे।"

अप्रत्याशित दाँव में फँस गये पहलवान की भाँति एक क्षण स्तब्ध रह कर उन्होंने सहसा प्रश्न किया—"कहाँ हैं ?"

"छोटे आँगन के रास्ते गंगा की ओर चले गये।"

चन्दा की ओर देखे बिना राजाराम उस ओर चल दिये। देखा किवाड़ बन्द थे—"यह तो बन्द हैं ?" उन्होंने कहा।

चन्दा सिर पर आपत्ति देखकर गम्भीर हो गई। संक्षेप मे उत्तर दिया—"उन्होंने कहा था कि यह सांकल बन्द करके ड्योढ़ी खोलना ताकि अँधेरे में निकल जायें।"

लौटते हुये राजाराम ने पूछा—"तो मुझसे छिपाने की जरूरत क्या थी ? क्या मेरे ही घर में मेरा विश्वास नहीं ?" राजाराम के स्वर का आवेग शांत न हुआ।

अनुनय के स्वर में चन्दा ने कहा—"कैसी बातें करते हो ? तुमने पुकारा होता तो पता चलता ? यों क्या मालूम था कि कौन है ? वह पुलिस से फरार है। पुलिस ही होती तो क्या करते ? तुम पुकार लेते तो क्या डर था ?"

राजाराम निरुत्तर हो गये। दो क्षण सोचकर उन्होंने पूछा—"क्यों आया था ? उसका यहाँ क्या काम ?"

पति के कठिन स्वर और शंकित प्रश्नों से चन्दा डर गई थी। सच कह कर पति की शंका दूर करने के सिवा उपाय न था—"परसों से पहले रोज़ भी आये थे। कह गये थे कि एक बार खन्ना जी से बहुत जरूरी काम से मिलना चाहते हैं। कह गये थे कि आज इस समय ग्यारह बजे आने के लिये कह देना।"

"तो खन्ना भी आया था ? उसका क्यों नहीं बताया ?" राजाराम ने चन्दा की ओर देख पूछा।

इस दृष्टि के उत्तर मे गम्भीर हो चन्दा ने उत्तर दिया—"नही, खन्ना नही आये। वे कल दिन मे आये थे। उन्होने कहा था—शिवनाथ से कह देना, मै आज ही रात इलाहाबाद जा रहा हूँ। उधर रेल लाइन उखड गई है। कह नही सकता कब लौटू।"

राजाराम चुप रह कर भीतर जा तख्त पर बैठ गये। बहुत थकान अनुभव हो रही थी। एक असफलता का सा शैथिल्य शरीर पर छा गया था—"भजन सो गया? एक गिलास जल पीता!" उन्होने कहा।

राजाराम आधीरात मे नीद खुलजाने पर सिरहाने रखा जल का गिलास लेने के लिये भी गहरी नीद मे सोई चन्दा को अनेक बार पुकारकर जगा देते थे। इस समय पत्नी के सम्मुख खड़े रहने पर भी पानी के गिलास के लिये सोये हुए नौकर को याद करने का क्या अर्थ था, यह समझ कर चन्दा का हृदय मुँह को आ गया। छलक आये आँसुओ को छिपाती हुई वह जल लेने चली गई।

जल पीकर राजाराम ने कपडे बदले। चन्दा दीवार के सहारे चुपचाप खडी रही। कपडे बदल कर छत पर सोने के लिये वे जीने की ओर जा रहे थ। चन्दा ने पूछा—"खाने के लिये ऊपर ही ले आऊँ?"

अनिच्छा से पीछे न देख उन्हो ने कहा—"भूख नही है!"

"तो दूध ही ले लो!"

"कुछ इच्छा नही है" स्वर को बदलते हुए उन्हो ने कहा, "अच्छा ले आओ।"

चंदा और राजाराम अपने-अपने बिस्तर पर चुपचाप लेट गये। राजाराम जानते थे कि चन्दा को नीद नही आई है। गहरी नीद मे सोई शशि को मच्छरो से बचाने के लिये उस का आचल बार-बार हवा मे फहरा जाता था। उन्हे खयाल आ रहा था कि शायद चन्दा समझती है कि मै सो गया हूँ। वह मुझ से बात नही करना चाहती। स्त्री को यह जताने के लिये वे वास्तव मे सो नही गये, पति के दिन भर बाहर रहकर लौटने पर स्त्री को कुछ बात करनी चाहिये, वे बार-बार खखार देते, करवट बदल लेते, या कही खुजाने लगते। चन्दा इन सब सकेतो के बिना भी जानती थी कि पति सो नही रहे। उन के खुर्राटे का स्वर सुनाई न देना उन के जागते रहने का अचूक प्रमाण था, जिसे वे स्वय न जानते थे।

चन्दा सो नही रही थी। जानती थी कि पति भी जाग रहे है परन्तु हाल

की घटना के बाद कुछ बात करने का साहस न था। सन्देह ! असतीत्व का सन्देह ! इस से बढ कर अपमान और यन्त्रणा पति अपनी स्त्री को और क्या दे सकता है ? अपने आत्म-सम्मान और गर्व पर प्रथम बार ऐसी चोट खाकर चन्दा के लिये जीवन असम्भव हो गया था। जीने का उत्साह तभी से न रहा था। जब चोट नई थी तो उस के विरोध मे प्राण देकर भी आत्म-सम्मान की रक्षा का महत्व था। तब उसे अपमानित करके मरने भी न दिया गया। पति के विश्वास का गौरव समाप्त हो जाने पर न आत्म-सम्मान रहा, न जीवन का मूल्य। गौरव और जीवन के मूल्य की रक्षा के लिये मरने का महत्व था। जब जीवन का मूल्य न रहा तो उस के गौरव की रक्षा के लिये मरने का भी क्या मूल्य होता ? वह जीवित थी; अपनी दृष्टि मे गौरवहीन, मरी हुई से बदतर। पति ने ही उसे मार डाला, जिस के लिये वह जीवित थी !' ... किस अपराध मे ?'' अपना अपराध ही तो वह जान न पाती थी। ' इसलिये कि मैंने खन्ना को आदर और स्नेह के योग्य समझा ? परन्तु क्या वह वास्तव मे इस योग्य नही है ? यदि वह इस योग्य है तो इस में मेरा अपराध ? ' इस मे मैंने इन का कौन अपराध किया ? ' इन का जितना आदर और स्नेह कर सकती थी किया और करती हूँ। यह स्वय ही इस प्रकार की बातें कर देते है तो मेरा क्या बस ? मै क्या करूँ ? यदि मै खन्ना के प्रति आदर और स्नेह प्रकट न करती तो शायद कुछ न होता परन्तु मैंने समझा कि इन से कुछ भी छिपाना उचित नहीं। छिपाती तो वह पाप ही होता ! मैंने इस का विश्वास किया इसलिये इन्हे मेरा विश्वास न रहा। जब मेरा विश्वास ही नही, तो क्या करूँ ?"

राजाराम पर काम का बोझ अधिक था। शरीर का बोझ काम के बोझ को और बढा देता। एक निद्रा से बची थकान का कुछ अश दूसरी नीद की आवश्यकता बनाये रहता। वे दिन मे भी सोते थे और रात में थकान से चूर होकर प्राय शीघ्र ही सो जाते थे। उस घटना के बाद की मानसिक उलझन मे गहरी नीद सम्भव न थी। अपने प्रति सन्देह का विरोध पत्नी ने जिस ढग से किया, उस से उन्हे तिरस्कृत होना पडा। उन्हे स्त्री से क्षमा माँगनी पडी। स्त्री की आत्महत्या के प्रयत्न से एक बार वे विचार मूढ हो गये थे, मन मे लज्जा अनुभव हुई थी परन्तु चन्दा के इलाज के लिये खन्ना के निरन्तर घर पर बने रहते समय और नित्य के व्यवहार में खन्ना के प्रति चन्दा का जो आकर्षण वे देखते थे, उस के लिये प्रमाण की आवश्यकता न थी और ऐसे

कौन पुरुष है जो स्त्री के आत्म-समर्पण के सम्मुख झुक न जायगा ? खन्ना से ऐसे समय दृढता और निष्ठा की उन्हे आशा न थी वल्कि वह अपने व्यवहार से चन्दा को आकर्षित करता था। अवसर मिलने पर भी आकर्षण का परिणाम न हो; यह कैसे सम्भव है ?

राजाराम का हृदय सन्देह प्रकट करने के अपराध मे अपमानित होकर प्रतिहिंसा से जल रहा था। वे निरन्तर पत्नी और उस के प्रणयी को रंगे हाथो पकड कर, एक दिन सचाई का प्रतिकार करने की चिन्ता मे थे। अपने हाथो अपने सम्मान और अपने घर को फूक कर भी प्रतिहिंसा द्वारा अपने अहकार का सन्तोष प्राप्त करना चाहते थे। आज अवसर समझ वह चिन्ता फूट पडी थी परन्तु असफल होकर रह गई। जैसे पूरी शक्ति से लाठी क। प्रहार किया जाने पर लक्ष सामने से हट जाय और मनुष्य स्वय अपने धक्के से गिर पडे। अपने अभिमान का मस्तक ऊँचा करने के प्रयत्न मे वे भूमि पर गिर पडे, अपनी वात निभा न सके, चोट खा कर जर्जर अवस्था में शिथिल पड गये।

खन्ना आता है, शिवनाथ आता है, वाते होती है, चन्दा उस मे भाग लेती है। सब कुछ होता है लेकिन उन्हे परे रख कर। वे जैसे विलकुल अपदार्थ है, कुछ समझते ही नही, विश्वास के योग्य नही है। वे इस वात पर भी आपत्ति कर सकते थे परन्तु उन्होने वहुत वडी वस्तु पर लक्ष्य किया था। उस वडे दाँव मे गिर जाने के वाद यह छोटी-मोटी वाते उठाना और अधिक अपमान कराना था लेकिन उन लोगो के आने की वात उठ जाने पर उस विषय मे विलकुल चुप रह जाने का अर्थ होगा, उस विषय मे अपना कोई अधिकार न मान लेना।" पिछली रात की ठण्डक मे वहुत देर तक करवटे लेते रहने और वाहो और पीठ पर गरमी मे फूली हुई घाम खुजाते रहने से मन कुछ शात हो जाने पर बीती हुई अप्रिय घटना की अप्रियता घटाने के लिये राजाराम ने स्वर को साधारण बना कर पूछा—"नीद नही आ रही ?"

"अभी तो नही आई ' " चन्दा ने उत्तर दिया। उसे समय याद था कि वह घडियाल पर तीन की टकार भी सुन चुकी है।

राजाराम ने अपनी वाँह खुजाते हुये चन्दा को नीद न आने की सफाई दी—"वहुत गरमी है" और प्रश्न किया, "शिवनाथ और खन्ना आये, तुमने जिक्र ही नही किया ?"

चन्दा कुछ न बोली। अभिप्राय था—तुम्हे उन की चर्चा सुहाती नही

परन्तु यह कैसे कह सकती थी ?

राजाराम ने पूछा—"शिवनाथ कहता क्या था ?"

"कहते थे कि उन का फिर यहा आना ठीक न होगा। खन्नाजी से कहने को कहा है कि उन के विचार यदि कांग्रेस के इस आन्दोलन से नही मिलते और कम्युनिस्ट इस से अलग रहना चाहते है तो बेशक अलग रहे लेकिन जो लोग जान की बाजी लगाकर अपने देश के लिये कुछ करना चाहते हैं, उन के काम मे रोडे अटका कर उनका विरोध करने और उन से लडने न जायँ। कम्युनिस्ट भी तो देश के लिये आजादी चाहते है। आजादी के लिये हमारे प्रयत्न मे साथ न देना हो तो न दें परन्तु सरकार की ओर से हम से लडने तो न आए ·· "

करवट ले राजाराम ने पूछा—"क्या मतलब ?"

चन्दा के स्वर की रुखाई कुछ कम हो गई—"मिलो के झगडे की बाबत कह रहे रहे थे कि हम हडताल जरूर करा देते, सब ठीक था। देशी मिलो वाले खुद तैयार थे। हडताल हो जाने पर चालीस-पचास हजार लोगो का समूह बेकार होकर बगावत में जुट पडता। सरकार थर्रा जाती परन्तु कम्युनिस्टो ने प्रचार कर मजदूरो मे फूट डाल दी। हडताल हो नही पाई। ऐसे ही यहा और लखनऊ मे कम्युनिस्टो ने कालेज बन्द होने का विरोध किया · ··।"

"हूँ" राजाराम ने हुँकारा भरा, "तुम्हे क्या लेना-देना है इस से ? खन्ना की और बात है परन्तु शिवनाथ फरार है। कही कुछ हो जाय तो हम व्यर्थ म रगडे जायँ। लोग कहे कि गिरफ्तार करा दिया और पुलिस कहे हम बागियो के साथ है। इस मे क्या फायदा ?'

"हाँ !" चन्दा ने स्वीकार किया, "खुद ही कह रहे थे कि उनके आने में खतरा है वे अब नही आयेंगे। मै खन्ना जी के आने पर उन से कह दू ।"

राजाराम चुप रह गये। खन्ना के आने के विषय में उन्हो ने कुछ आपत्ति न की। अभिप्राय था कि चन्दा समझ ले कि खन्ना के विषय मे उन्हें कोई एतराज नही और न शंका का कारण है। जो कुछ हुआ था आकस्मिक रूप मे हो गया। कोई बात खन्ना के विषय मे उन्हो ने नही कही जिस के लिये चन्दा को शिकायत होती। अगले दिन से उन का व्यवहार बिलकुल साधारण हो गया। अपनी रात की खिन्नता के कारण चन्दा के मन मे शंका का चिन्ह मिटाने के लिये कई बार दोहराया—"जाने क्यो, लखनऊ में टण्डन के घर खाने में क्या था, दिन भर तबीयत गिरी रही। रात मे नीद भी न आई।'

रात की घटना से चन्दा ने सोचा—"मैं स्वय खन्नाजी से कह दूँगी कि वे न आया करें। जब यही होना है तो किसी दिन अपमानित होकर वे क्या अनुभव करेंगे ? एक दफे तो बात किसी तरह ढक गई, बार-बार थोडे ही ऐसा हो सकता है ?"

खन्ना उस दिन आया नही, अगले दिन भी न आया। चन्दा के मन से वह उधेडबुन एक क्षण को भी दूर न होती। सोचते-सोचते उस के तर्क की धारा और भावना बदलने लगी, इस विषय मे कुछ कह कर उनका मन दुखाने से क्या लाभ ? वे आते है तो उन के आने से कुछ क्षण के लिये शाति प्राप्त होती है। उन के आने की प्रतीक्षा ही रहती है, फिर क्या रह जायगा ? जो कुछ भी उस ने जाना, अनुभव किया, खन्ना की मार्फत ही। उसे खोकर सब कुछ खो जायगा। जिस नये अपरिचित ससार का उस ने परिचय पाया है, उस से वह बिछुड जायगी। इस ससार की झलक पाने की इच्छा एक यत्रणा बनकर रह जायगी। जब तक उस ससार की झाँकी न मिली थी, कुछ न था परन्तु उसका परिचय पा लेने के बाद, उसका बिछोह असह्य जान पडने लगा।

वह सोचती कि यदि मै कुछ न जान पाती, तो मुझे कोई दुख न था। यदि अपने यहाँ काम करने वाली महरी और नाउन की भाँति अपने माना-पमान का विचार न करती तो मेरे जीवन मे कोई कमी न थी। मनुष्य जैसे असतोष अनुभव करता है, पशु उसे नही करते। क्या पशु का जीवन ही मनुष्य से अच्छा है।··· न जानती तब तो ठीक ही था परन्तु जान लेने के बाद अब कैसे भूल जाऊ ?···· पशु कैसे बन जाऊँ ? ·· मानसिक मृत्यु।

पति के साथ जीवन चल रहा था। उस में असतोप भी जरूर था परन्तु वह जैसे जीवन का ही अग था। उस के प्रति शिकायत न थी। पति के अतिरिक्त 'मनुष्य' और 'मनुष्यत्व' को पाकर उसे छोडने मे अब असह्य असतोप की विभीपिका से मन काँप उठता। पति का विश्वास छिन ही गया। उस दुख से दुखी रह कर भी यदि मनुष्य समीप बना रह सके तो जीवन बीत ही जायगा और यदि मनुष्यत्व का अधिकार और समीपी के रूप मे मिला मनुष्य भी छिन गया।

चौथे दिन खन्ना आया। आत्मीयता भरी मुस्कान से उसका स्वागत कर चन्दा ने शिकायत की—"इतने दिन आये नही ?"

खन्ना इलाहाबाद से लखनऊ की राह लौटने की कहानी सुनाता रहा—अधिकाश गाडियाँ बन्द हो गई थी। जगह-जगह बलवाइयो के लाइन तोड़

देने के कारण बीच मे कई जगह इक्के पर और कई जगह पैदल चलकर तीन दिन में वह मुसीबत से कानपुर पहुँचा था। उस ने स्वय ही पूछा—"शिवनाथ फिर आया था क्या ?"

चन्दा ने शिवनाथ का सन्देश कह सुनाया। गम्भीर चिन्ता से खन्ना ने कहा—"यह कैसे हो सकता है ? हमे जिस नीति से देश की हानि होती दिखाई दे, उस के विषय मे चुप कैसे रहा जा सकता है ? हम यह कैसे स्वीकार कर ले कि देश के भले बुरे से हमे कुछ लेना-देना नही ! लाइन या पुल टूट जाने का अर्थ सरकार को धक्का पहुँचना ही नही है। वह तो लाइन फिर बनवायेगी। उस का खर्चा देश के सिर तो पडेगा ही, इस के अतिरिक्त लाइन टूटने का अर्थ जनता के दृष्टिकोण से देखना हो तो इन दिनो स्टेशनो पर जा कर देखो। लाखो व्यक्ति असाधारण सकट और मुसीबत मे पडे है। आने-जाने के सकट की बात जाने दो, बडा सकट है सीमा पर होने वाला युद्ध ! देश भर से युद्ध के साधनो का अटूट प्रवाह शत्रु का मुकाबिला करने के लिये सीमा पर पहुँचना आवश्यक है। शत्रु का सामना कर सकने योग्य शक्ति यदि युद्ध के मैदान से दो-तीन सौ मील पीछे पडी रहेगी तो उस का उपयोग क्या होगा ?

"शत्रु का सामना करने की अपनी शक्ति को निर्बल कर देने का अर्थ शत्रु को चौगुना बलवान बना देना है। उन के हवाई जहाजो, टैंको, तोपो और मैशीनगनो के लिये मार्ग साफ कर देना है और वे सब हमारे ही सीने पर चले ? आजादी के स्वप्न मे अपना ध्वस करने की इस नीति का विरोध न करना कैसे सम्भव है ? यदि अपने देश के लोगो के जीवन का कुछ मूल्य हमारी दृष्टि मे है तो उन्हे आग मे झोक देने के प्रयत्न को रोकने के लिये हमे अपना जीवन खतरे मे डाल कर भी इस नीति का विरोध करना होगा। हम किसी हालत में शिवनाथ की बात स्वीकार नही कर सकते। अपनी धारणा से वे लोग देशभक्ति कर रहे है परन्तु हम उस के दुष्परिणाम की उपेक्षा कैसे कर सकते है ?"

चन्दा ने सोचा था कि वह खन्ना से कहेगी कि देश का काम करने वाले दलो मे फूट डाल कर झगडा करने से क्या लाभ ? परिस्थिति देख कर चुप रह जाना ही ठीक है परन्तु खन्ना की बात सुन कर वैसी बात कहने का साहस उसे न हुआ। वह सोचने लगी—ठीक कह रहे है। उस मे खतरा है तो क्या ? किसी निजी बात का प्रसग चलने का अवसर न रहा। खन्ना नार्वे, पोलैण्ड

और रूस मे नाज़ियो और चीन, स्याम, जावा मे जापानियो के अत्याचारो के वीभत्स काण्ड का चर्चा करता रहा। चन्दा अनुभव कर रही थी कि देश की सीमा पर शत्रु का आक्रमण वही सब विध्वस और यत्रणा इस देश मे भी लिये आ रहा है। देश की रोक-थाम करने वाली शक्ति को नष्ट करना, बकरियो के बाड़े की दीवार तोड़ कर भेडिये के लिये राह बना देना है। खन्ना दीवार तोड़ने के प्रयत्न को रोक रहा है, वह प्राण रहते ऐसा होने न देगा।

चन्दा से बात करते हुये खन्ना ने समझाया—'बगावत का यह व्यर्थ प्रयत्न काफी मूल्य देकर ठण्डा पड जायगा। सफलता की आशा इस मे हो नही सकती। ससार की कोई क्राति सैनिक शक्ति के सहयोग के बिना सफल नही हुई। यदि बगावत की शक्ति किसी चमत्कार से देश की व्यवस्था को वास्तव मे स्थगित कर दे तो उस अव्यवस्थित अवस्था मे शत्रु की व्यवस्थित और सशस्त्र शक्ति का सामना कौन करेगा ? खन्ना को देश भयकर सकट मे दिखाई पड़ रहा था। देश की सशस्त्र शक्ति सरकार के हाथ मे थी, जनता की राष्ट्रीय भावुकता और सहानुभूति काग्रेस की ओर। इन दोनो मे विरोध था। इस का अर्थ था, देश का निशक्त हो जाना।

खन्ना को देश की रक्षा का एक ही उपाय दीखता था कि काग्रेस और सरकार मे सहयोग हो। काग्रेस के नाम पर होने वाले विध्वस को रोक कर फैसिज्म-विरोधी युद्ध मे काग्रेस अपने राष्ट्रीय उत्तरदायित्व को सम्भाले। कम्युनिस्ट दो मोर्चो पर लड़ रहे थे। एक ओर काग्रेस के नाम पर होने वाले विध्वस के विरुद्ध दूसरी ओर नोकरशाही की दमन नीति के विरुद्ध और काग्रेस के नेताओ की रिहाई से काग्रस को देश की रक्षा और व्यवस्था का उत्तर-दायित्व सौंपे जाने के पक्ष मे। विध्वस को काग्रेस की नीति समझने वालो की दृष्टि मे कम्युनिस्ट देशद्रोही थे और दमन की नीति पर निर्भर करने वाली नौकर-शाही की दृष्टि मे वे अविश्वास और सन्देह के योग्य थे। कम्युनिस्ट देश की समृद्ध पूजीपति और धनी श्रेणी की दृष्टि मे पुराने शत्रु थे। सब ओर से विरोध पाकर भी वे अपने काम मे लगे थे।

इतनी परेशानियो के कारण खन्ना का चन्दा के यहाँ आना बहुत कम हो पाता। कभी वह राजाराम के रहते आ जाता तो यो ही इधर-उधर की बाते और विनोद कर चला जाता। कभी चन्दा के अकेले रहते आता तो उसके समीप लेट जाता या मचल कर उसकी गोद मे सिर रख लेता और चाहता कि कुछ क्षण के लिये भूल जाय। चदा अनुभव करती कि खन्ना के काम मे सहयोग

देकर वह उसकी सहायता नही कर सकती। इसके लिये वह अपनी दृष्टि में ही अपराधी थी। वह इस अपराध का प्रायश्चित खन्ना को व्यक्तिगत स्नेह और विश्राम देकर करना चाहती थी, खन्ना के लिये हृदय में इतना आदर और स्नेह होते हुए भी चन्दा का व्यवहार सकोच से मुक्त न हो पाता था। खन्ना को अपने अत्यन्त समीप पाकर उसके सिर पर हाथ रखने में और उसका सिर गोद में लेने में एक झिझक वनी ही रहती तो खन्ना कुण्ठित हो जाता। उसका असतोष देख उस दिन चदा दुखी होकर कहती—"जाने क्यो मन मे भय सा बना रहता है?"

"किस बात का? पाप का?" खन्ना ने पूछा

"नही, पाप तो नही। पर फिर भी कोई देख ले तो बिना पाप किये पाप ही हो जाय।......डरते हुये कुछ करने मे अच्छा नही लगता। जैसे चोरी हो! चाहती हूँ, उनके सामने भी तुम्हारे साथ इसी प्रकार निस्सकोच बैठ पाती। तब कितना सतोष होता?" चन्दा ने समझाने का यत्न किया।

"जरूर होता परन्तु कोई व्यवहार लोगो को पसन्द न आने से ही तो बुरा नही हो जाता? यदि कोई हमारे स्वाभाविक अधिकार को छीने तो मै यह स्वीकार न कर लूगा कि मेरा अधिकार है ही नहीं!"

खन्ना जब कभी राजाराम की अनुपस्थिति मे आता तो चन्दा पति से जिक्र कर देती। राजाराम मन मे सोचते कि क्या इतने दिन आया ही न होगा? प्रकट मे उस सूचना को वे कुछ महत्व न देते परन्तु मन मे खन्ना के आने का हिसाब सा याद रहता। लखनऊ जाने पर अवश्य ख्याल आता कि आज शायद खन्ना घर पहुँचे। सितम्बर का अन्तिम सप्ताह था। सध्या तक तीखी धूप बनी थी। खन्ना ग्वाल-टोली जाता हुआ राजाराम के यहाँ पहुँचा। ड्योढी मे बिलकुल सन्नाटा देखकर उसने ही पुकारा—"भजन! कहाँ गये सब लोग?"

आँगन तक पहुँचते-पहुँचते चन्दा का शब्द सुनाई दिया—"आइये-आइये!" चन्दा भीतर सामान रखने के कमरे से नई साडी और बदलने के दूसरे कपडे बाँह पर लिये निकल रही थी। सिर के बाल अस्त-व्यस्त और साडी मुसी हुई, कुछ मैली सी थी।

खन्ना को देखकर उसके नेत्र खिल गये—"कहाँ थे इतने दिन? आये ही नही? भजन जरा शशि को ले लकडी वाले के यहाँ गया है। ये तो सुबह से लखनऊ गये है। आज भीतर की कोठरी की सफाई कर रही थी। तमाम

ई से भर रही हूँ पसीने से भरी हूँ। पांच मिनट मे अभी नहाकर चाय यार कर दूँगी। भजन भी आया ही चाहता है। मैं नहा डालू। बच्चे भी ाते ही होंग। बैठो तुम्हे भी कितना पसीना आ रहा है पखा चला दूँ ?"

"मैं चला लूगा तुम नहा डालो !" खन्ना ने उत्तर दिया, "पर देर न ागाना।"

गुसलखाने जाने के लिये चन्दा ने आँगन मे कदम रखा ही था कि सामने ेखा पति को आते हुए।

राजाराम के ड्योढी से आने की आहट सुनाई न दी थी। धूप से आने े कारण नेत्र उन के कुछ लाल-लाल, और मुद्रा गम्भीर थी। चदा की आखो ने विस्मय देख कर उन्हो ने पूछा—"क्या हो रहा है।" एक नजर से उन्हो ने देखा, चन्दा का स्नान का सरजाम बाँह पर लिये गुसलखाने की ओर जाने का उपक्रम। दूसरी नज़र से, खन्ना के माथे पर पसीने की छलकी बूंदे। सहसा उन्हे देख खन्ना का विस्मित रह जाना।"

"भजन कहाँ गया है ?" राजाराम ने पूछा। उन के स्वर मे कडाई थी।

'लकडी की टाल पर गया था। अभी आता होगा क्यो ?" मै जल्दी से नहा डालूं बैठो तो !" चदाने कहा। पति की रुखाई से आशकित हो कर चदा मुस्करा न पाई।

"नही तुम ज़रा भीनर चलो !" राजाराम ने खन्ना की उपस्थिति की उपेक्षा कर कहा।

"अभी आती हूँ पॉच मिनिट मे !" चदा ने उत्तर दिया, "तब तक बैठो न, बडी गर्द पडी हुई है !"

"तुम पहले भीतर चलो !" दृढता से राजाराम ने गुसलखाने की राह रोक कर कहा। चदा लौट पडी।

खन्ना की ओर देखे विना राजाराम भीतर के कमरे मे चले गये और चन्दा बाँह पर कपडे लिये उन के पीछे-पीछे। राजाराम ने किवाड बन्द कर लिये। उन के चुप, स्वर की कठोरता और किवाड जोर से बन्द होने के ढग से खन्ना आशकित हो गया, क्या करने जा रहे है ?

किवाड बन्द कर राजाराम ने पूछा—"वह यहाँ कितनी देर से है ?"

"अभी आये है, दो मिनट हुए होगे" चन्दा ने उत्तर दिया।

"हूँ, तुम्हारे कपडो और बालो को क्या हो रहा है ?"

"इसी कमरे की सफाई कर रही थी !"

"जरा कपडे तो दिखाओ अपने !"

"चन्दा सिर से पैर तक कांप उठी। बाँह पर से नई साडी ब्लाउज, तौलिया गिर पडे। वह मूर्ति सी सामने देखती खडी रही।

"सुना नही, मै क्या कह रहा हूँ ?" कठोर स्वर में राजाराम ने धमकाया, "सौ दिन चोर का तो एक दिन साहू का भी आता है।"

चन्दा वैसे ही निश्चल खडी रही। राजाराम का स्वर और भी कठोर हो गया—"सुना नही !"

"तुम जैसे चाहो देख सकते हो !" निढाल और बेबस चन्दा ने उत्तर दिया।

चन्दा की बेबसी से राजाराम परास्त न हुए। चन्दा के निश्चल रहने पर उन्हो ने अपनी आज्ञा स्वयं पूरी कर ली। उन्हो ने सब देख लिया। उन का आवेश ठगे जाने की ग्लानि और तिरस्कार मे बदल गया। दीवार की ओर मुख कर पिटे से वे जडे रह गये। पथराई दृष्टि फर्श की ओर लगाये चन्दा ने फिर वही मैले कपडे पहन लिये। खडे रहने में असमर्थ होकर वह कपडो के बक्स पर बैठ गई।

बन्द किवाडो के उस पार क्या हो रहा है, इसका कुछ आभास न मिलने से खन्ना घबरा रहा था, यो उपेक्षित होकर बैठे रहना कठिन था और उठ कर चले जाना भी। वह अपनी उपेक्षा के प्रति मान कर सकता था परन्तु चन्दा पर जाने क्या बीत रही थी, और क्यो ? किवाडो के परे होने वाली बातचीत का शब्द भी सुनाई न पड रहा था। उस का मस्तिष्क सनसना रहा था। उसे जान पड रहा था कि किवाड जाने कितनी देर से बन्द है, उनकी आड मे जाने क्या हो रहा है ? वहाँ क्या अत्याचार हो रहा है यह न जान सकना स्वयं उसी के लिये यंत्रणा हो रही थी।

आठ-दस मिनिट बाद किवाड़ खुले। राजाराम खन्ना की ओर देखे बिना बाहर बैठक मे चले गये। चन्दा सिर लटकाये कपडो के बक्स पर बैठी थी। दो दफे उस ओर खन्ना ने देखा। चन्दा निश्चल थी। वह कुछ जान सकने की प्रतीक्षा कर रहा था। कुछ देर वैसे ही बैठी रह कर चन्दा ने रूखी आँखे उसकी ओर उठा कर कहा—"तुम जाओ " अब यहाँ मत आना !"

आहत बेबस की भाँति उठ कर वह आँगन से चला जा रहा था। शशि को गोद में लिये ड्योढी से आते हुये भजन ने हँस कर कहा—"अजी बाबू जी चल भी दिये !'

"हाँ" कठिनता से खन्ना उत्तर दे सका। उसकी दृष्टि बैठक में गई। राजाराम सिर हथेली पर रखे कुर्सी पर बैठे थे। आहट सुन कर भी उन्हो ने देखा नही। वे लज्जित क्षुब्ध और अपमानित थे। अपने अपमान का प्रमाण ढूँढने के यत्न मे वे असफल हो गये इसलिये उन्हे ग्लानि अनुभव हो रही थी। यदि वे सफल हो जाते तो अपने और चन्दा के कत्ल करने के सिवाय उस की दृष्टि में दूसरा कोई उपाय न होता।

खन्ना क्या कर सकता था ? वह साइकिल ले कर चल पडा। आँखो के सामने सडक बादलो के भाफ की भाँति द्रवित-सी जान पडती थी और दोनो ओर के मकान हिलते हुए।

× × ×

स्थान-स्थान पर रेल की पटरी उखड जाने से सवारी गाडियो और माल गाडियो का चलाना प्राय बन्द हो गया था। जैसे-तैसे एक आध ट्रेन आती-तो सरकार के लिये सब से महत्वपूर्ण काम पूर्वी सीमा पर युद्ध क्षेत्र मे सेना और युद्ध का सामान पहुचाना था। जनता के लिये आने-जाने और व्यापार के मार्ग बन्द हो गये थे।

युद्ध के समय सरकारी खरीद के कारण गल्ला और बाजार भाव मे तेजी आ रही थी। नगरो मे देहात से गल्ला और दूसरी मण्डियो से सामान न पहुँचने के कारण, लोगो को जीवन के अत्यन्त आवश्यक पदार्थ मिलना भी दुष्कर था। मूल्य बहुत बढ गये थे। व्यापारी मुनाफा समेटने का स्वर्ण अवसर सामने देख कर एक दूसरे की होड मे कीमते बढा रहे थे। गोदामो मे सामान भरा रहने पर भी माल न होने की अफवाह उडा दी जाती और मनमाने दाम वसूल लिये जाते। बाजार की इस तेजी को सट्टा और तेज कर रहा था। चढे दर पर बिका माल, बिना उपयोग मे आये गोदामो से बाहर निकले बिना ऊँचे दामों मे बिकता चला जाता। मुनाफे की रकमे और हुँडिया इधर से उधर चली जाती। माल के बिना मरने वाले गरीब आँखे फाड़े देखते रह जाते, जीवन रक्षा के लिये आवश्यक पदार्थ उनकी पहुँच से बाहर होते जा रहे थे।

लम्बी-लम्बी रकमो की हुँडी काट सकने वाले माल को बाजार मे जाने से रोके थे। व्यापारियो की आँखो में सरूर था, बाँछे खिली हुई थी। दबी ज़बान में वे कहते---'कूडे की चाँदी हो रही है!' गरीबी और साधनहीनो

की धंधों मे निगाहा थी। जनता ने अपने परिश्रम से जिस माल को पैदा कर अपने पूँजीपति-सरक्षकों के यहाँ धरोहर के रूप मे रखा दिया था, उसके लिये उन्हे दुगने-चौगुने दाम देने पड रहे थे, जो उन के पास न थे। गोदामों के मालिक गाव तकिये का सहारा लिये धैर्य से चुनौती दे रहे थे—कब तक तुम खरीदने न आओगे ? माल धरा है। अपना गुजारा चलता है। आज नही कल बिकेगा।

गल्ले की दूकानो पर भीड़ के कारण मार-पीट हो जाती। एक रुपये का गल्ला खरीदने के लिये दिन भर की मेहनत दरकार थी। महँगी के उस दुष्काल मे दिन भर की नफरी से हाथ धोना गरीब मजदूर की मौत थी। गल्ले के लिये कई जगह लूट हो गई। पेट की ज्वाला बगावत की आग का रूप ले लेना चाहती थी। परिस्थितियाँ, अव्यवस्था और अराजकता का रूप धारण कर रही थी। यह अव्यवस्था और अराजकता जनता को विश्रृंखल कर, असहाय बना कर तडपा देने के सिवा और क्या करती ? डाक्टर वर्मा और उस के साथी 'तोड-फोड रोको !' 'मनाफा खोरी बन्द करो !' के नारे लगाते हुए, असहाय निर्बल जनता को अपने सकट का उपाय करने के लिये खुराक-कमेटियो और आत्म-रक्षा दलो मे सगठित कर रहे थे।

जिस काम को सरकार अपनी नौकरशाही की सगठित शक्ति, असीम अधिकार और आज्ञा के बल से करने का एलान कर रही थी, उसी कार्य को कम्युनिस्ट जनता मे आत्म-निर्णय के भाव और स्वयसेवकों के सगठन से करना चाहते थे। अपनी लगन और मेहनत के अतिरिक्त उन के पास दूसरी शक्ति न थी। साधनो की कमी के कारण उन के कार्यकर्ताओ के परिश्रम का परिणाम आधे से भी कम होता। कांग्रेस से सहानुभूति रखने वाली जनता उन्हे सरकार के हाथ बिका हुआ समझ कर ताने देती। नौकरशाही कम्युनिस्टो के कांग्रेस नेताओ की रिहाई की माँग उठाने के कारण उन की ओर शका की दृष्टि से देखती। कम्युनिस्टो की फैसिस्ट-विरोधी मोर्चे की पुकार मे सरकार को छिपे विद्रोह की तैयारी की गन्ध आ रही थी। रैडीकल-डेमोक्रेटिक-पार्टी कम्युनिस्ट होने का दावा कर, हँसिया-हथौडे का लाल झण्डा उठाकर कांग्रेस नेताओ को फैसिस्टो के एजेण्ट बता कर राष्ट्रीय सरकार की स्थापना का विरोध कर रही थी। रैडिकल-पार्टी के झण्डे और 'रूस जिन्दाबाद' के नारो के कारण राजनैतिक सिद्धातो और नीति के भेदो की ओर ध्यान न देने वाले लोगो की दृष्टि मे उन के प्रचार की जिम्मेवारी भी कम्युनिस्ट पार्टी के सिर थी।

डाक्टर वर्मा और उस के साथी बिना साधन अपने सामर्थ्य से बहुत बड़े काम की जिम्मेवारी अपने कन्धो पर उठाये, देशद्रोह का कलक माथे पर लिये, देश की रक्षा के प्रयत्न मे बावले थे। चिल्ला-चिल्ला कर उन के गले बैठ गये, आँखे निद्रा के अभाव, धूल और धूप के प्रभाव से लाल बनी रहती। रूखे बाल और मैले कपड़ो से पहचाने जाने वाले कम्युनिस्ट जनता की आँखो मे शका और सन्देह देख कर भी उन्हे अपनाने के यत्न मे पागलो की भाँति गलियो का चक्कर लगाते फिरते। उन का रूप आवारागर्दों जैसा था परन्तु माथे पर उत्तरदायित्व के बोझ की रेखाये थी और वे राजनीतिज्ञो की भाँति बहस करते थे। सार्वजनिक कार्य के इस आत्म-विस्मृति पैदा कर देने वाले भँवर मे खन्ना अपने आप को सम्भालने का नही, डुबा देने का ही यत्न कर रहा था। उस दिन राजाराम के घर लगे आघात ने उसे बेध दिया था।

राजाराम की तिरस्कारपूर्ण उपेक्षा का अर्थ था—निकल जाओ इस घर से!

चन्दा ने स्पष्ट ही कह दिया—"तुम जाओ! यहाँ मत आना!"

किवाड़ मूद कर राजाराम ने उस के विषय मे चन्दा से जाने क्या कहा? जिस बात पर विश्वास कर चन्दा ने उसे निकल जाने और कभी न आने के लिये दुत्कार दिया। खन्ना सोचता—मेरे विषय मे राजाराम ने ऐसी क्या शिकायत सुनी होगी? शायद यह कि मै छिपे-छिपे लाखो रुपया खाकर अपना देश सरकार के हाथ बेच रहा हूँ। क्या राजाराम जैसा व्यवहारिक व्यक्ति यह नही समझ सकता कि रुपये को खर्च करने या उस का स्वामी होने का गर्व भी मै नही कर सकता तो रुपये के प्रति मुझे क्या आकर्षण हो सकता है? एक बार मुझ से पूछ तो लेते। वे स्वय क्या कर रहे है? शायद बिज़-नेस! बिजनेस के रूप मे चाहे जो किया जाय! कम-से-कम चन्दा से यो पागल बन जाने की आशा न थी। सब स्नेह और आदर की सीमा क्या यही थी? यदि उस ने मुझे 'देशद्रोही' ही समझा तो अपनेपन के अधिकार से लानत-मलामत करती।··· शायद यह सब नही, दूसरी ही बात थी? ···· राजाराम के मन मे पुरानी शका जाग उठी हो, परन्तु किस व्यवहार से? ऐसा कौन अवसर या प्रत्यक्ष कारण था?

खन्ना को बार-बार याद आ जाता, चन्दा का स्नेह से उस का सिर हृदय पर रख कर कहना—"तुम्हारे लिये जो कहो कर सकती हूँ।" और ठुकराया तो कैसे! एक बात भी करने का अवसर न दिया। वह तर्क करता—स्त्री क्या प्रकृति से ही अस्थिर है? या परिस्थितियो से दब कर वह कभी अपनी

इच्छा, अपना मत और स्वभाव प्रकट नही कर पाती ? विवशता की परिस्थितियो मे स्त्री का आचरण और कभी उस की इच्छा और स्वभाव का प्रकट हो जाना, और प्राय विवशता मे ही प्रसन्नता दिखाना, यही तो स्त्री का रहस्यमय चरित्र है। कभी चन्दा के उन शब्दो—'तुम जाओ ! यहाँ मत आना' के अर्थ की अपेक्षा चन्दा की बेबसी की मुद्रा के प्रति वह क्रोध या शिकायत न कर पाता। एक मूढता उस के मस्तिष्क को परेशान कर देती और निराशा हृदय को परास्त।

खन्ना की मानसिक पीड़ा का एक ही उपाय था कि अपने आप को भूल जाने के लिये अपने काम की धुन के मार्फिया का इंजेक्शन के नशे मे बेसुध हो जाना। काम मे आत्म-विस्मृति का यह इंजेक्शन अत्यन्त तीव्र होने पर भी बीच-बीच मे स्मृति की पीड़ा की लपटे उठ ही आती थी। चन्दा के निराश होकर घृणा करने लगने के कारण उसे चन्दा से, स्वय अपने से भी अरुचि और वितृष्णा होने लगती। वह अपने आप को भूल जाना चाहता। चन्दा की याद कर वह क्रोध से कहता—तुम्हे सदा अज्ञान का ही अभिमान और भरोसा रहा। चन्दा से निराश हो उस से बदला लेने के लिये वह उस की दृष्टि मे देशद्रोही परन्तु अपनी दृष्टि मे देश-हित के अपने कार्यक्रम में डूब जाना चाहता।

खूराक-कमेटियो के झझट मे खन्ना दो दिन तक अपनी दूकान और चौबारे मे बिलकुल न जा पाया। तीसरे दिन धूप से आँखो में कष्ट अनुभव कर, अपनी दवाइयो की आलमारी से दवा निकालने के लिये चौथे पहर उस ने दूकान के किवाड खोले। फर्श पर एक बन्द लिफाफा पड़ा था, बिना किसी पते के। आंख मे दवा छोडने से पहले ही लिफाफा खोल कर उस ने पत्र निकाला। सम्बोधन पढ विचित्र अनुभूति से शरीर रोमाचित हो गया। दृष्टि पत्र के दूसरी ओर अन्तिम पक्तियो पर गई—जिसे अपनी समझ कर तुम स्नेह से चन्दा पुकारते थे।

खन्ना एक साँस मे पत्र पढ़ गया —

मेरे अत्यन्त आदर और स्नेह के पात्र !

"किस मुँह से तुम्हे पत्र लिखूँ ? उस दिन तुम से चले जाने और न आने के लिये कह दिया था। बिना एक शब्द कहे तुमने वह अपमान सह लिया। किस अवस्था मे वह शब्द मेरे मुख से निकले थे ? मानसिक उत्तेजना कम होने पर उन शब्दो के लिये कितना परिताप हुआ ?

"यदि तुम जान सकते, मुझ पर क्या बीती, विश्वास है अवश्य क्षमा कर देते। तुम्हारे अतिरिक्त मै न्याय की आशा और किस से कर सकती हूँ ? यदि मुझे अपराध का दण्ड ही मिलना चाहिए तो वह भी तुम्हारे ही हाथो मिले। मुझे यदि भरोसा है तो केवल तुम्हारे न्याय पर। आश्चर्य है, पुरुष होकर भी तुम दयालु हो। दस दिन हो गये तुम्हारा दर्शन पाये। मेरे यह दस दिन कैसे कटे ? इससे अधिक मानसिक यंत्रणा की कल्पना मै नही कर सकती। सबसे बढी यत्रणा थी, मै अपना दुखडा तुम्हारी गोद मे सिर रख रो भी न सकी।

"उस समय अपने आप मे न थी। कह दिया था—तुम जाओ यहाँ मत आना ? इस समय यदि प्राण देकर भी तुम्हे बुला सकूँ तो भी तैयार हूँ। यदि तुम आते रहते, मेरा सकट सह्य हो जाता। मेरे अत्यन्त 'अपने' मेरे भाई, गुरु, मित्र तुम एक दफे तो आओ और नही तो तुम्हारे चरणो मे सिर रख कर क्षमा तो माँग लूँ ?

"उस दिन मर जाने का यत्न किया था। तुम आ गये और इलाज करके मरने न दिया। वह दुर्भाग्य था। शायद मरे बिना चारा नही ? सोचा था, मरकर किसे गर्व दिखाऊँ ? परन्तु अब देखती हूँ कि जीवन सह्य नही इसलिये मरना होगा। तुम एक बार आकर बता दो, क्या करूँ ?

"वे आज एक सप्ताह के लिये सवा छ की गाडी मे लखनऊ होकर हलद्वानी गये है। आज यह पत्र तुम तक पहुँच नही सकता। कल सुबह ही भिजवाऊँगी तुम्हे इस घर से चले जाने के लिये कह कर यहाँ फिर बुलाने का साहस नही होता। ऐसे अपवित्र स्थान को तुम्हारे पवित्र चरणो के स्पर्श का अधिकार भी नही। तुम कल रात साढे-नौ बजे इस मकान के पीछे रेती पर आ जाना। एक दफे तुम से मिल कर बात कर लेना चाहती हूँ। आशा है, मेरी कायरता और नीचता के बावजूद मेरी यह अन्तिम प्रार्थना न ठुकराओगे। एक बार मेरी सुन लो, फिर चाहे क्षमा करना, चाहे दण्ड देना। तुम ने कई बार विश्वास दिलाया था, तुम मुझ से नाराज नही हो सकते क्यो कि तुम्हे मेरे स्नेह पर विश्वास है। सच मानना, मै अब भी विश्वास के योग्य हू। मेरे हृदय का बोझ उतर जाय। यह बोझ लिये मृत्यु भी सम्भव न होगी।

तुम्हारी वही—
जिसे अपनी समझ स्नेह से
चाँद पुकारते थे।"

एक बार, दो बार, चार बार खन्ना ने पत्र पढा। कुछ अधिक वह समझ

न सका । इतना समझा कि चन्दा उस से अब भी उतना ही स्नेह और आदर करती है । वह असह्य संकट मे है । आर्त स्वर मे उसे पुकार रही है । चाहे जो परिणाम हो, वह जायगा । रात के साढे नौ बजे क्यो वह अभी जायगा । चन्दा के यो बुलाने पर मान-अपमान का ढोंग क्या ? " संसार में वह अकेला नही है । कोई उस का है, चन्दा उस की है । वह उसकी बहिन, माँ और शिष्या सभी कुछ है, परम मित्र है ।

खन्ना आँख मे दवाई डालना भूल कर, साइकिल दुकान से नीचे उतार कर चल पडा । सोचता जा रहा था कि राजाराम ने क्या कहा होगा, मेरे प्रति उसे क्या शिकायत हो सकती है ? इस समय मुझे देख कर चन्दा क्या सोचेगी ? उस ने साढे-नौ बजे बुलाया है हो सकता है उस समय उस स्थान पर बुलाने का विशेष कारण हो ? खन्ना की साइकिल ग्रीन-पार्क की बगल से ढलवाँ पर जा रही थी । परमट बाजार की चढाई के मुहाने से कुछ ही कदम इधर उस ने ब्रेक दबा कर साइकिल रोक पीछे घुमा दी । सोचा, अभी जाना शायद उचित नही । चन्दा ने साढे-नौ बजे नीचे रेती पर बलाया है । सम्भव है कोई कारण हो । यो शीघ्रता और अविचार से वह चंदा को किसी असुविधा मे डालने की सम्भावना क्यो पैदा करे ? वह लौट गया । अभी साढे पाँच बजे थे, चार घण्टे वह क्या करे ? पिछले दिनो एक सन्ध्या भी फुर्सत न थी । अब कठिनाई अनुभव हो रही थी कि चार घण्टे क्या करे ?

डाक्टर को तुरत ख़याल आया कि ग्वालटोली से मुहल्ले भर के हस्ताक्षर करवा कर कलक्टर के यहाँ दरख्वास्त भिजवानी है कि गल्ला बाँटने का काम खूराक कमेटी को सौंपा जाय । उस विषय में बशीर ने कुछ खबर नही दी । वह ग्वालटोली चला गया । साथियो और मजदूरो से घिर जाने के बाद समय काटने की कठिनाई न रही । साढे-आठ बजे ध्यान आया कि नौ बजे तक उसे काम समाप्त कर देना है । नौ बजे ही वह परमट के लिये चल पडा । मार्ग में सोचा कि ग्यारह बजे 'सेमेरिन' मिल के मजदूरो से भी मिलना है । मिल मे हडताल कराने का प्रयत्न असफल हो जाने पर शिवनाथ के अनुयायी चुप न बैठ गये थे । आस-पास और मुफस्सिल मे होने वाली तोड-फोड का प्रभाव उन लोगो पर भी पड रहा था । अपना राजनैतिक असतोष प्रकट करने के लिये वे लोग भी अपनी मिल मे इस प्रकार की गुप्त आयोजना कर रहे थे । विशेशर से यह समाचार पाकर खन्ना ने अपने साथी मजदूरो को इस प्रकार के विध्वंसक कामो की अदूरदर्शिता समझाने के लिये बुलवाया था ।

खन्ना अपने विचारो मे डूबा परमट की चढाई-चढकर दाई ओर के मकानो के बीच से निकल कर राजाराम के मकान की बगल से होता हुआ गगा किनारे आगया। उसने साइकिल ढलवान पर उगी हुई झाडियो मे रख दिया और रेती पर उतर गया। राजाराम के मकान की खिड़की खुली थी परन्तु खिडकी मे प्रकाश न था। अधेरे के कारण अपनी कलाई की घडी आँखो के समीप उठा उसने समय देखा, साढे-नौ बज रहे थे। उसने फिर खिडकी की ओर दृष्टि उठाई। उसी समय अपने पीछे-पीछे आती चन्दा दिखाई दी। वह दो कदम उसकी ओर वढ गया। समीप आकर चन्दा ने बाँहे उस के गले मे डाल दी। खन्ना के हृदय से लग कर वह रो पडी। रोने का स्वर श्वासो की दीर्घता मे दबा हुआ था परन्तु चन्दा के वक्ष के ऊपर नीचे उठने और डाक्टर की कमीज तुरत तर हो जाने से उच्छवास की तीव्रता और गहराई प्रकट हो रही थी। जाने कितने दिन का रुका हुआ रोना मार्ग पा कर वर्साती गगा की भाँति उमड पडा था।

"ऐसा क्यो चाँद ?" उसे आलिगन मे लेकर ख ा ने आश्वासन दिया। उसे अनुभव हुआ, जैसे चदा गिर पडेगी। खन्ना ने उसे बाहो मे ले लिया। चन्दा को गोद मे लेकर वह झाडियो के बीच मुलायम रेत पर वैठ गया। रोने का आवेग उतरने पर भी चन्दा खन्ना के गले मे बाँहे डाले कई दिन से बिछडे बच्चे की तरह सिसक रही थी। चन्दा को स्नेह से दाई बाह मे समेट, उस के केशो पर हाथ फेर कर खन्ना ने पूछा—"हुआ क्या ?"

"पहले बताओ मेरी धृष्टता क्षमा की ?" चन्दा ने प्रश्न किया।"

"क्या कहती हो चाँद, ऐसी वात होती तो मै आता ही क्यो ?" खन्ना ने आश्वासन दिया।

वहुत देर तक आँचल से आँखे पोछ चदा, वोली—"इस घर मे रहना अब सह्य नही। जानते हो उस दिन क्या हुआ ?" सिर झुकाये चन्दा ने अपनी उस दिन की यत्रणा और अपमान की वात सुना दी, "ऐसी अवस्था मे वह वात मेरे मुँह से निकल गई। बुरा न मानना। वहाँ तुम्हारा बैठना मुझे तुम्हारा अपमान जान पडा।"

"मै तो तुम्हारा पत्र मिलते ही साढे पाँच वजे ही आ रहा था। फिर यह सोच कर टाल गया कि शायद किसी कारण से ही तुमने वहाँ आने को न लिखा हो।"

"न, वहाँ तुम न आना। बच्चे तुम्हारे आने का जिक्र करेगे। मै नही

चाहती कि कोई तुम्हारी बावत कुछ कहे। मुझ से सहा न जायगा।"

"परन्तु यों तुम्हारे यहाँ आने से.......?" खन्ना ने पूछा।

"उसमे क्या है ?" चन्दा बीच ही में बोल पड़ी, "अब तक मैं उचित अनुचित से डरती थी। मर्यादा के पालन का विचार था, एक धारणा की रक्षा की जिम्मेवारी थी....अब कुछ नही। उनका विचार है कि मेरा चरित्र उन्हो ने अपनी मिल्कियत और चौकसी से सम्भाल कर रखा है। मेरे किसी अनुचित काम के करने की, मर्यादा की रक्षा न करने की जिम्मेवारी उनकी ही है। मैं अपनी इच्छा से नही बल्कि उन के भय से सदाचारी रही। ऐसा है तो वे अपनी शक्ति भर अपनी दौलत सम्भाल लें। उनका जो बस चलता है, कर लें !... जैसे मेरा बस चलेगा, मैं कर लूंगी। जब मुझ पर विश्वास था, मेरी जिम्मेवारी थी। मेरा विश्वास ही नही तो मेरी जिम्मेवारी क्या ? तुम मेरा विश्वास करते हो, अविश्वास की आग से तडप कर तुम्हारे पास आई हूँ !"

चन्दा चुप हो गई, जैसे किसी दुस्साहस के विचार मे डूब गई हो ! बाँह मे उसे समेटकर खन्ना ने पूछा—"चाँद यों कैसे निर्वाह होगा।"

"क्या कर सकती हूं, कुछ भी नही कर सकती। आज निश्चय किया था कि इस समय यहाँ आकर तुमसे कहूँगी, अब लौट नही सकती। अपनी बहिन, माँ, बेटी जो कुछ भी समझो, मुझे ले चलो। तुम्हारे सिवा मुझे शांति नही मिल सकती। इस जीवन में कुछ न कर सकी, किसी काम न आई। तुम इतना कुछ कर रहे हो यदि किसी तरह तुम्हारे किसी काम आ सकू तो वही संतोष होगा। तुम्हारे सिवा कोई विश्वास न करेगा या फिर सामने गंगा है। कभी से तैयार बैठी थी। इनके न रहने से भजन आज छुट्टी लेकर सिनेमा देखने चला गया है परन्तु सोये हुये बच्चो को देखकर वह साहस टूट गया...। चंदा की आँखो मे फिर आँसू झरने लगे। खन्ना के कंधे पर सिर रख कर वह रो पडी।

खन्ना ने समझाने का यत्न किया—"चाँद, स्त्री की स्थिति ही समाज मे ऐसी है। जब तक उसे जीवन के साधन जुटाने का स्वतंत्र अवसर और अधिकार नही, उसकी स्वतन्त्रता, प्रेम और आचार सब पुरुष का खिलौना है। तुमने अपने आप को बलिदान कर सब सहा, अब उस के प्रति विद्रोह भी करो तो क्या कर सकती हो ? जब तक जीवन के संघर्ष में अपने पैरो पर खड़े होने का साधन तुम्हारे पास न हो।.......।"

कितनी ही देर वे बिछुड जाने की आशंका में, परस्पर चिपटे हुए बैठे रहे।

"अच्छा फिर मिलोगे ? ...अब चले।"

"हाँ जब भी कहोगी। तुम जानती हो मेरे लिये तुम्हारे सिवा अपना कौन है और अपने के बिना जीवन जैसे निशक्त होने लगता है। मनुष्य के अपने जीवन की भी अनुभूति होती है।"

चन्दा को बाँह का सहारा देकर मकान के पिछवाड़े के दरवाज़े तक पहुँचा कर खन्ना अपनी साइकिल उठा कर बाँस मण्डी की ओर चल दिया। कई दिन की थकान और अनिद्रा के कारण शरीर और मस्तिष्क का भारीपन चन्दा ने उसके सीने पर सिर रख कर अपने आँसुओ से धो डाला था।



देशद्रोही

शिवनाथ के प्रभाव मे काम करने वाले मज़दूरो ने कम्युनिस्टो की वात सुनने से इनकार कर दिया था। विशेशर के कहने सुनने से जगराम अकेला आया। उसकी मार्फत दूसरे आदमियो से वातचीत करने का प्रयत्न विफल ही रहा। जगराम ने कहा—"शिवनाथ भैया मने कर दीन है। जो कम्युनिस्टन की वात सुनै, ऊका गगा जी की कसम धराइन है।"

मराठे और खन्ना न समझाया—"गगा जी की कसम तोड़ने से वडा पाप तव होगा जब यह लोग मिल मे आग लगाकर चार हज़ार मज़दूरो को वे-रोज़गार कर देगे। इन सव मजदूरो के वाल-वच्चे, उनके अपने वाल-वच्चे इस महँगी मे अनाज के दाने को तरसेगे, तव क्या पाप न होगा। भैया, मिल मज़दूरो की अपनी चीज़ हैं। उनकी मेहनत से खड़ी की गई है। उसे फूक कर अपने घर आग लगाने से वढ़ कर पाप क्या ? हमे तो चाहिए कि अपनी चीज़ साहूकारो के हाथ से अपने हाथ मे ले कि उसे फूँक डाले ? इस से साहूकार थोडे भूखे मरेगे ? भूखे तो हम-तुम मरेगे।"

जगराम न विभीपिका सिर पर देख कर भेद खोल दिया कि आज ही रात के शिफ्ट मे आग लगाने की वात है। पहले वह वहुत डरा कि विध्वस के काम मे भाग लेने वालो ने माँ, वहिन की कसम खाई थी कि जो कोई भेद खोलेगा, उसका मूँड काट लेगे। सहारा पाकर वह आग लगाने वालो से लडने और मरने-मारने के लिये तैयार हो गया।

खन्ना के साथी सक्सेना ने राय दी—"पुलिस को खवर देकर ऐसा इतज़ाम करवा दो कि झझट होने ही न पाये।"

खन्ना को यह राय न जँची। उसने कहा कि मिल के गेट-पास लेकर खुद भीतर चला जाय और वहाँ उन लोगो को समझा कर रोका जाय। पुलिस को वीच मे डालने से मज़दूरो के दिलो मे वैर जम जायगा। कल वे भी कोई

शिकायत बना कर पुलिस को बुला लायेंगे। एक नई बीमारी लग जायगी। वे पुलिस की धौंस से एक दिन दब जायँगे, दूसरे दिन दूनी प्रतिहिसा से उठ खडे होगे। जगराम पर उन का सन्देह हो गया तो और भी खून खराबी होगी। उन्हे सीधी राह लाने का उपाय यही है कि वे समझे कि वे मजदूरो का अहित कर रहे हैं। मजदूर उन की बात से सहमत नही। तोड-फोड का विरोध एक स्थान पर मजदूरो द्वारा होने से देश भर के मजदूरो पर उस का प्रभाव पडेगा?

मराठे और खन्ना कारीगरो का गेट-पास लेकर रात के शिफ्ट मे मिल मे चले गये। विशेशर के साथी गडबड की आशका मे सतर्क थे। वे आग लगाने के लिये तैयार मजदूरो को खोज ही रहे थे कि 'आग-आग' को पुकार सुनाई दी। हरनाम ने धुनिया-घर मे ज्वालासिह और आबिद को आग लगाते देख लिया था। वह उस की राह रोक 'आग-आग!' 'पकडो-पकडो!' चिल्ला उठा। ज्वालासिह और आबिद के साथी भी प्रतीक्षा मे थे। वे लोग मैशीने तोड डालने को दौड पडे। विशेशर का गिरोह अपनी मैशीनो की रक्षा करने और आग बुझाने के लिये लपका। दोनो दलो मे सघर्ष हो गया।

शिवनाथ के साथियो को आशका न थी कि स्वय मजदूर उन का विरोध करके मिल की सम्पत्ति की रक्षा के लिये लडने को खडे हो जायगे। उन का विचार था कि एक बार बगावत आरम्भ हो जाने पर भय से पीछे रहने वाले मजदूर भी विनाश के कार्य मे आगे बढेगे। अधिकाश मजदूरो पर मजदूर-सभा का प्रभाव था। अपनी सभा को मिल की रक्षा करते देख कर वे भी उस के लिये तैयार हो गये। मिल की अधिक हानि न हो सकी। विनाश के नशे मे उन्मत्त मज़दूर अपना विरोध होता देख कर, विशेष कर मराठे और खन्ना पर टूट पडे। लकडी का टुकडा, लोहे का डण्डा, मैशीनो के भारी पुर्जे जो कुछ हाथ आया, हथियार के तौर पर चलने लगा। विशेशर, जगराम और उन के दूसरे साथी भी चोट का उत्तर चोट से दे रहे थे। खन्ना और मराठे खाली हाथ मार-पीट शात कर देने का यत्न कर रहे थे।

मिल के चौकीदारो और सशस्त्र पुलिस के आ जाने से पहले ही लडाई समाप्त हो गई। भयभीत मज़दूर दगे के परिणाम की आशका से भागने लगे थे। मराठे खूब जख्मी हो गया और डाक्टर खन्ना निशस्त्र होकर भी अपने दल मे सब से आगे रहने के प्रयत्न मे अनेक चोटे खाकर गिर पड़ा था। आग और दगे से चारो ओर खलबली मच गई थी। निकलने के लिये राह कम और मज़दूरो की भीड अधिक होने से मिल के फाटक की खिडकियाँ टूट गईं

थी। दगे के वाद पुलिस झगडे में भाग लेने वाले सभी जख्मी मजदूरो को ढूढ कर गिरफ्तार कर रही थी। मिल मे आग लगा कर तोड़-फोड करने वाले और मिल की रक्षा के लिये चोट खाने वाले सभी मजदूर गिरफ्तारी से घवरा कर भाग निकले थे। विशेशर और उस के साथियो ने खन्ना को उठा लिया और भीड़ मे से वच कर ले भागे। जैसे-तैसे खन्ना को उस के चौवारे मे खटिया पर लिटा कर वे लोग अपने स्थानो पर जा छिपे।

खन्ना अर्ध-मूर्छित अवस्था मे अपनी खटिया पर पड़ा कराहता रहा। चेतना आने पर उसे अपना सम्पूर्ण शरीर जकडा हुआ अनुभव हुआ। वड़ी कठिनता से वह शरीर का कोई अग हिला पाता। दाई आँख विलकुल न खुलती थी। वह फूट गई है या चेहरे और माथे पर लगी लाठी की चोट से मास सूज कर खुल नही पाती, यह निश्चय करना कठिन था। अवखुली वाई आँख से दिखाई पड़ा कि वाहर धूप निकल आई थी। छत के समीप झरोखे से धूप की किरणें कमरे में प्रवेश कर छत से लटकते मकड़ी के जाले पर झिल-मिला रही थी। अपने शरीर पर दृष्टि जाने से फटे कपड़े रक्त के दाग से भरे दिखाई देते थे।

खन्ना को असह्य पीडा हो रही थी। वायाँ हाथ हिल न पाता था। दाये की भी उँगलियाँ जड थी। चेहरे पर हाथ छुआने से उँगलियाँ और चेहरे दोनो मे चीसे उठने लगती, होठो पर रक्त का स्वाद था, प्यास से गला खुश्क। पुकारे तो किसे? सोचता ज़ख्मो को धोकर पट्टी वाँधी जानी चाहिये परन्तु यह कैसे हो? उसे खयाल आया कि क्या वह ऐसे पड़ा-पड़ा, भूखा सड कर मर जायगा? उसे यहाँ तक किस ने पहुँचा दिया? इस समय यदि सुजान होता? यदि चन्दा आ सकती? उसे खवर भी कैसे दी जाय? असह्य पीडा, प्यास और मानसिक घवराहट से दिल डूवने-सा लगता। जान पड़ता कि प्राण निकल रहे है। धीमी कराहट उस के मुख से निकल जाती। वह अपना सिर दाये-वाये हिलाने लगता। कोहनी से ऊपर दाये हाथ को उठा कर कभी सीने पर कभी पेट पर रख लेता। पीडा से व्याकुल होकर खाट की वरदावन से एड़ी रगड़ने लगता। आशा थी तो केवल यही कि कही से कोई आ जाय।

× × ×

राजाराम सस्ते दाम पर सन्दूक वनवा लेने का प्रवन्ध करने हलद्वानी गये थे। उन की अनुपस्थिति में चन्दा की रात कुछ भय और सतर्कता मे कटती

थी। ज़रा-ज़रा-सी आहट पर वह चौंक उठती। सुबह अभी उस की नींद न खुल पाई थी कि नीचे ड्योढ़ी पर दस्तक सुनाई दी। महरी मुह अँधेरे ही ड्योढ़ी खटकाती थी और साथ ही भजनसिह को पुकारती—"पहाड़ी, खोलो।"

चन्दा ने अनुभव किया कि अभी सवेरा है और महरी की पुकार भी सुनाई नही दी। सोचा, इतने तड़के कौन होगा ? क्या 'ये' लौट आये ? अभी तो चौथा ही दिन है ? आहट फिर सुनाई दी। आँख मलते हुए कुछ शका से नीचे झाँक कर पुकारा—"कौन है ?"

नीचे से एक आदमी ने उत्तर दिया—"बाबू जी से काम है ?"

चन्दा पहचान न सकी। पूछा—"कहाँ से आये है ।"

"एक चिट्ठी देनी है।"

चन्दा ने सोच कर कह दिया—"किवाड मे से डाल दीजिये।"

चन्दा ने देखा, किवाड़ो के समीप खड़ा एक आदमी दराज मे से चिट्ठी भीतर छोड कर चला गया। आशका हुई, कैसी चिट्ठी ? सोचा, भजन को जगा कर चिट्ठी मँगा कर देखे। फिर स्वय ही नीचे उतर गई। ड्योढ़ी मे एक लिफाफा किवाड़ो के पास पड़ा था। बैठक मे जाकर बिजली जला कर चन्दा ने लिफाफा देखा।

लिफाफे पर अंग्रेजी मे नाम था—डाक्टर भगवानदास खन्ना। लिफाफे के कोने पर लाल स्याही से लिखा था—'अर्जेण्ट' (जरूरी)। सोचा भजन से भिजवा दूगी। उसी समय ख़याल आया, इस नाम से उन्हे यहाँ कौन जानता है ! हम लोग और शिवनाथ, बस। बहुत जरूरी हो तो अभी भिजवा दू ? देख न लू ? मुझ से क्या पर्दा है ? मुझ से उन्हे क्या हानि हो सकती है ? उतावली मे लिफाफा फाड़ लिया। पत्र हिन्दी मे ही था।

भाई खन्ना,

"नितान्त विवश होकर यह पत्र लिख रहा हूँ। विश्वास है, मेरा अभिप्राय गलत न समझोगे। समझो तो भी अब दूसरा मार्ग नही है।

"मित्रता का हमारा सम्बन्ध अब तनाव की सीमा पर पहुँच गया है। सिद्धान्तो और राजनैतिक मतभेद को मैंने विचार स्वतन्त्रता के नाते सह लिया था। मेरा विचार था कि हमारी व्यक्तिगत मित्रता सब कुछ सह लेगी। विश्वासघाती तुम मुझे नही कह सकते। इस का प्रमाण १९३५ मे गिरफ्तार होने पर ही मैं दे चुका हूँ परन्तु मित्र से बड़ा देश और कर्तव्य है। हमारे आन्दोलन का विरोध न करने के मेरे अनुरोध की उपेक्षा कर तुम ने स्वय भी

यह बात दिखाई है। मेरे लिये भी वही बात है। तुम ने जो कर्तव्य समझा, उस के लिये कांग्रेस और राष्ट्रीय भावना तक का विरोध करने में नही हिचके। मेरे लिये भी अवसर आ गया है कि अपना कर्तव्य चुन लू, मित्र या देश ! मैं देश के सामने सिर झुकाने के लिये बाध्य हूँ।

"हम लोग जो कुछ कर रहे है, हमारे विश्वास से देश के लिये है। इसीलिये हम पुलिस और सरकार से लड रहे है। तुम लोग भी देश के नाम पर हम से लड रहे हो। बाहर के शत्रु से घर का शत्रु भयकर होता है। हमारी दृष्टि मे तुम देश के शत्रु हो और इस समय देशद्रोह का काम कर रहे हो। मित्रता का नाता एक ओर छोडकर तुम्हे और तुम्हारे दल को मार्ग से हटाना आवश्यक हो गया है। नितान्त विवश होकर तुम्हे मार्ग से हटाने का उपाय मैंने सोचा है—एक बेनाम पत्र द्वारा पुलिस को सूचना दी जाय कि डाक्टर बी० डी० वर्मा कम्युनिस्ट लीडर एक फरार व्यक्ति है जो रूस से जाली पासपोर्ट बना कर भारत मे आया है। पुलिस तुम्हे गिरफ्तार कर लेगी। गिरफ्तार होकर तुम सार्वजनिक और राजनैतिक क्षेत्र से हट जाओगे। यही हम चाहते हैं। हमारा उद्देश्य व्यक्तिगत रूप से तुम्हे कष्ट पहुँचाना नही है। मिल के झगडे मे तुम्हे जो चोट लगी है, उस के लिये भी हमे दुख है परन्तु यह युद्ध, युद्ध है। हम युद्ध की अवस्था मे है। तुम शत्रु की ओर से हम से लड रहे हो।

"यदि तुम गिरफ्तार न होना चाहो तो कानपुर छोड कर फरार हो जाओ। राजनैतिक क्षेत्र से दूर रहकर चाहे जैसे अपना समय बिताओ। यह पत्र तुम्हे नौ अक्तूबर सुबह आठ बजे तक मिल जायगा। पुलिस को तुम्हारे बारे मे सूचना देने के लिये बेनाम पत्र रात के आठ बजे पोस्ट किया जायगा जो दस तारीख सुबह पुलिस को मिलेगा। इस प्रकार चौबीस घण्टे का समय तुम्हे गिरफ्तारी से बचने का प्रबन्ध करने के लिये हम दे रहे है।

तुम्हारा—
शिवनाथ"

बैठक में बिजली जल जाने से दीवारो और कोनो मे बसेरा करने वाले मच्छर विक्षिप्त होकर चन्दा के सिर पर समूह बाध कर भनभना उठे। उसे जान पड़ा, शिवनाथ के पत्र के अक्षरो ने ही उस के मस्तिष्क में कोलाहल मचा दिया। बार-बार सुनाई दिया—'तुम्हे जो चोट लगी है !' तीन दफे उसने पूरे पत्र को पढा और चोट लगने का समाचार प्रत्येक बार दो-दो दफे।

चन्दा का मस्तिष्क विक्षिप्त हो गया। पेट मे खलबली अनुभव हुई। एक दर्द सा उठा। लेट रहना सम्भव न था। यन्त्र की तरह वह नित्य-कर्म मे लग गई परन्तु मन मे निरतर वही विचार था क्या करना होगा ?

चदा ने सोचा, दिन चढते ही भजन को भेज उन्हे वुलवा लूँ। खयाल आया—उन्हे चोट आई है !' जाने कैसी चोट है ?'' यदि बाद मे पुलिस ने यहाँ भी पूछताछ की ?

भजन पाँच साल से उस के यहाँ था। उसकी स्वामिभक्ति पर विश्वास किया जा सकता था परन्तु वुद्धि पर नही। सोचने पर चन्दा अनुभव करने लगी कि खन्ना के चोट खा जाने और गिरफ्तार हो जाने से केवल उसके खन्ना पर ही नही वलिक देश के कार्य पर भी सकट होगा। वे तो देश के लिये ही जीवन दे रहे हैं, उसी के लिये सब कुछ छोड कर सब कुछ सह रहे है। जिस ध्येय के लिये खन्ना जीवन उत्सर्ग कर रहे हैं, उस के प्रति वह कैसे निरपेक्ष रह सकती है ? कितनी ही वार वह उन से कह चुकी थी कि वह तैयार है, जो कहो ? फिर सोचा, जाने कैसी चोट आई है ! वहा स्वय जाना ही ठीक होगा। 'ये' यहाँ होते तो देख आते। इस समय पूछूँ भी तो किससे ? भजन से टाँगा मँगा कर चली जाऊँगी।

चंदा को कल्पना मे रामनारायन का वाजार दिखाई देने लगा। उजडा-उजड़ा सा है। होली से कुछ पहले कपडे और बच्चो के जूते खरीदने पति के साथ उस बाज़ार मे गई थी। राजाराम ने दिखाया था—यहाँ रहता है तुम्हारा खन्ना, देख लो ! चन्दा ने वन्द दुकान पर काला वोर्ड भी पढा था, वर्मा-मेडिकल हाल।'' चौबारे मे ऊपर रहते है। शायद चोट अधिक आई हो और वेचारे अकेले पड़े हो। ऐसा हुआ तो क्या करना होगा ? यहाँ कैसे लाऊँ, पुलिस का डर है ? देखा जायगा ? चौबीस घण्टे है ? उसे शिवनाथ पर क्रोध आने लगा कि विश्वासघात किया और ऐसे समय।

सब काम वहुत जल्दी-जल्दी सम्भाल कर चन्दा ने सूरज निकलते भजन को टाँगा वुलाने भेज दिया। टागा उस समय न मिलने पर इक्का ही मँगवाया। भजन को बच्चो का खयाल रखने के लिये कह कर धडकते हृदय से इक्के पर वैठ कर वह रामनारायन के वाज़ार की ओर चल दी। मन अनेक दुष्कल्पनाओ से भरा था। वह साहस का सहारा मन मे लिये थी। खन्ना ने भगवान पर उसका विश्वास शिथिल कर दिया था। इस समय वह भगवान से ही खन्ना की सहायता के लिये प्रार्थना कर रही थी।

चदा ने डाक्टर की दुकान के सामने इक्का रुकवाया । दुकान मे ताला लगा था । साथ के जीने मे भी किवाड वन्द थे परन्तु पुराने पड जाने के कारण हाथ धरते ही खुल गये । जीने की तगी और दीवारो के गन्देपन की ओर ध्यान न देकर चदा छोटा सा जीना चढ गई । ऊपर से कराहट की धीमी आवाज कान मे पडने से उसका हृदय धक्क से रह गया । समीप जाकर जो कुछ देखा, उस से कँपकँपी आ गई । पहचान सकना कठिन था परन्तु था खन्ना ही । चन्दा खडी न रह सकी । खन्ना की नीची खटिया के समीप, पटिया का सहारा लेकर वैठ गई । हृदय से उठते उवाल को होठो पर दवा कर आखों मे आँसू भरे खन्ना के सर पर हाथ रख पूछा—"भाई, इधर देखो, सुनो !"

खन्ना कराह रहा था । माथे की चोट से रक्त वह कर चेहरे पर जमकर सूख गया था । माथा और गाल सूज जाने के कारण दाईं आँख खुल न पाती थी । वहुत थोड़ी सी खुली वाईं आँख सूजी पलको के वीच केवल लकीर सी जान पडती थी । चेहरा सव लाल-नीला पड गया था और सिर के वाल स्थान-स्थान पर खून से जम गये थे । कान मे चन्दा का स्वर और सिर पर उसका हाथ अनुभव कर खन्ना का अवरुद्ध श्वास कुछ सरल हो गया । अस्पष्ट स्वर मे उसने कराहा—"हूँ ?"

चन्दा ने खन्ना की आँख खुलती न देख, विह्वल होकर उसके सूजे हुये चेहरे को हाथो मे लेकर पुकारा—"सुनो, देखो मैं हूँ""चन्दा !"

"हाँ" अपना जख्मी हाथ खन्ना ने अपने चेहरे पर झुके चन्दा के सिर पर रख दिया । सूजे हुए सूखे होठो को सूखी जिह्वा से तर करने का यत्न कर फुसफुसाया, "पानी पानी"

होठो के ठीक से न मूँदने के कारण चन्दा ने सुना—"आनी ।" जल के लिये उसने चारो ओर दृष्टि दौडाई । सूखा घडा कोने मे पडा था और खाट के नीचे आलमीनियम का खाली लोटा लुढका हुआ था । जल वह कहाँ से पाये ? यदि उसके हृदय का रक्त जल वन सकता तो वह खन्ना को तर कर देती ।

चन्दा ने खुली खिडकी से वाजार मे झाँका । सामने ही गली के मोड पर म्युनिसिपैलिटी का नल था । लोटे मे जल ला सकती थी जैसे स्टेशन पर मुसाफिर गाडी से उतर कर जल ले लेते हैं । जल सामने था परन्तु जल वह कैसे लाये ? वाजार मे लोटा लेकर जल लेने जाना ? उसने ऐसा कभी किया नही था । किसी भले घर की स्त्री को ऐसे करते देखा नही था । वह क्या

करे ? उसी समय मन मे एक धिक्कार उठा; क्या वह एक असहाय के लिये, खन्ना के लिये इतना भी नही कर सकती ?

चन्दा जीना उतर लोटा भर जल ले आई परन्तु पिलाये किस तरह। पूरी शक्ति से खन्ना की पीठ के पीछे दोनो हाथ लगा कर उठाया। अपने सहारे उसे बैठाकर लोटा उसके होठो से लगा दिया। खन्ना बहुत प्यासा था। वह वडे-वड़े घूट भर कर जल पीने लगा। गले मे जल लगने से खाँसी आ गई। चन्दा स्वय भी खास उठी, जैसे वच्चो को उछू आने पर माँ से हो जाता है। लोटा भर जल पीकर खन्ना ने कहा—"बस ?"

चन्दा जीना उतर एक लोटा जल और लाई। साडी का छोर भिगोकर खन्ना के चेहरे, सिर और शरीर को उसने साफ कर दिया। आधी रात से मूर्छित, अर्ध-मूर्छित, उठ सकने मे असमर्थ, खाट पर पडे खन्ना की दुर्गति हो गई थी। अधिक जल लाकर चन्दा ने जव तक खन्ना का शरीर साफ न कर दिया तो उसे ध्यान आया, कुछ गरम दूध या और कोई वस्तु खन्ना को खिला-पिला सके परन्तु मन मसोस कर रह गई। प्यास भर जल पी लेने से खन्ना सचेत हो गया।

खन्ना की खाट की पटिया के सहारे वैठकर चन्दा ने पूछा—"किसी डाक्टर को वुलवाकर दिखा दूँ ?"

"हा, डाक्टर वुलाने की अपेक्षा हस्पताल पहुँचा दो तो अधिक अच्छा हो !" खन्ना ने उत्तर दिया।

चन्दा चुप रह गई। शिवनाथ के पत्र की वात उसकी जिह्वा पर आ रही थी परन्तु खन्ना की अवस्था देखकर साहस न हुआ। खाट की पटिया पर सिर रखकर कुछ क्षण वह सोचती रही। उस भय की उपेक्षा तो की नही जा सकती थी। उस भय को समझ कर ही जो निश्चय किया जाये, ठीक होगा। पहले खबर न देन के कारण वाद मे पछताना न पडे। हस्पताल जाने को कहते है, क्या ठीक होगा ?

चन्दा ने सम्पूर्ण साहस एकत्र कर शिवनाथ के पत्र की बात सुना दी। सूजे हुये विकृत चेहरे पर किसी विचार या भाव की छाया प्रकट न हो सकती थी। खन्ना का सिर कुछ क्षण के लिये एक ओर स्थिर देखकर चन्दा ने समझा सोच रहा है।

स्वय ही खन्ना ने कहा—"नही हस्पताल न जाऊँगा। गिरफ्तार नही होना चाहता। यदि वच गया तो फिर फरार रहकर ही काम करूँगा। किसी

तरह मुझे कानपुर से निकाल दो। उठ भी तो नही सकता। कैसे होगा ? विशेशर और मराठे का जाने क्या हुआ ? तुम तो किसी को जानती भी नही। यहाँ रहने से गिरफ्तार हो गया तो फिर नासिर की तरह रिहाई नही होगी।" जख्मी हाथ सीने पर टिकाकर खन्ना सोच मे पड गया।

चन्दा ने खन्ना के सिर पर हाथ रख कहा—"तुम जो भी कहो, मै करूँगी। घबराओ नही। जहाँ कहो ले चलू ?"

"मेरे लिये कहाँ जगह है ? उन लोगो मे से कोई होता तो कही देहात मे या और कही जगह बताता, जहाँ कुछ दिन छिप कर इलाज हो सकता ? ... रुपया भी नही है।"

कुछ देर सोच कर चन्दा ने कहा—"क्यो नही राज के यहाँ चले, उस से अच्छी जगह और कौन होगी ? मै स्वयं जाकर तुम्हे छोड आऊँगी।"

"वहाँ कैसे जा सकता हूँ ?" खन्ना ने आपत्ति की।

बद्री बाबू तो जेल मे है। क्या वह तुम्हे कुछ दिन के लिये शरण न देगी ? तुम उसे ऐसा मत समझो ! मै साथ जाकर तुम्हे छोड आऊँगी। पहले डाक्टर को बुलवाकर तुम्हारी पट्टी करवा दू। आज ही शाम की गाडी से, पुलिस तक खबर पहुँचने से पहले ही, मै तुम्हे यहाँ से ले जाऊँगी.... घबराओ मत ?"

चन्दा ने जीवन मे कभी अकेले घर से बाहर कदम न रखा था, न मायके मे, न ससुराल मे। राजाराम प्राचीन परिपाटी पसन्द न करते थे परन्तु उस से अधिक घृणा उन्हे बिलकुल नवीन ढग से थी। वे दोनो मार्गो के बीच चलते थे। पर्दा उन्हे बेहूदा जान पडता था और स्त्री का अकेला आना-जाना निर्लज्जता और आवारापन। इसी ढग से चन्दा ने अपना जीवन बिताया था। वचन और विचार मे स्त्री के लिये पुरुष के समान अधिकार का दावा करके भी समाज और ससार मे अकेले खडे होना उसे भय और असम्मान का कारण जान पडता था। समाज मे अपना व्यक्तित्व अनुभव करने की न कभी उसे इच्छा हुई थी, न साहस था। अप्रत्याशित परिस्थिति मे पडकर सब कुछ करने के लिये विवश थी।

चन्दा खन्ना के यहाँ से घर लौटी। भजन को बच्चो का ध्यान रखने और खाना तैयार कर लेने के लिये कह कर वह थर्मस बोतल मे गरम दूध, प्याली, चम्मच, तौलिया, साबुन, एक दरी, दो चादर, तकिया और राजाराम के कपडो मे से धुली कमीजें-धोतियाँ लेकर उसी टाँगे पर फिर खन्ना के यहाँ लौट गई। सब आवश्यक सामान उस ने इस स्वाभाविक ढग से चुन लिया जैसे

कभी सफर के लिये चलने पर वह अपने बच्चो के लिये आवश्यक वस्तुयें साथ ले लेती थी।

खन्ना को दो प्याली गरम दूध पिला कर उस ने पूछा—"डाक्टर को क्या कहना होगा ?" सोच कर खन्ना ने किसी अत्यन्त विश्वासपात्र डाक्टर को लाने की राय दी। दोनो ने निश्चय किया, डाक्टर से कहा जाय कि बीमार को लखनऊ मेडिकल कालिज के हस्पताल मे ले जाने लायक मरहम-पट्टी कर देना आवश्यक है।

चन्दा स्वयं जाकर डाक्टर शिवानन्द को बुला लाई। शिवानन्द राजाराम के पुराने अन्तरग मित्र थे। चन्दा को भावी पुकारते थे। खन्ना की अवस्था देख कर उन्होने सफर न करने की ही राय दी। चन्दा को एकान्त मे ले जाकर उन्होने कहा कि दायी बॉह और बाई जॉघ की हड्डी उतर गई है। पसलियो मे भी जरब आई है। माथे का घाव टॉके लगाने लायक है। उन के विचार मे बीमार को हस्पताल पहुॅचा देना ही बेहतर था। डाक्टर घावो को धोकर पट्टी बॉध कर चले गये।

डाक्टर की राय के बावजूद सफर किये बिना उपाय न था। दोनो ने मिल कर निश्चय किया कि कानपुर की पुलिस की दृष्टि से बचने के लिये वे किराये की मोटर से लखनऊ जायें और वहॉ से काठगोदाम तक रेल मे, आगे फिर मोटर पर रानीखेत। चन्दा रानीखेत कभी न गई थी। दो बरस पहले तक उस ने जो पत्र राज को लिखे थे, उस मे उस ने पता लिखा था, ग्रामो-द्योग आश्रम, रानीखेत। भाग्य और साहस के भरोसे वह क्षत-विक्षित खन्ना को बाहो मे लिये चली जा रही थी।

सब्जी-तरकारी के मामूली खर्च के अतिरिक्त रुपया-पैसा राजाराम अपने ही हाथो मे रखते थे। अपने कारोबार की भॉति वे घर का हिसाब भी चौकस रखते। कारोबार की सहूलियत के लिये रुपया बैक में ही रहता। आती-जाती रकम घर मे रह जाने पर या चन्दा के गहने और जरूरी कागजो के लिये भीतर की कोठरी मे छोटी तिजोरी थी। तिजोरी की चाबी चन्दा के पास सुरक्षित रहती थी और हिसाब राजाराम के पास।

युद्ध के समय रुपये के बजाय नोट का चलन अधिक हो जाने से कारोबार मे जो चॉदी का नकद रुपया हाथ आ जाता राजाराम तिजोरी मे रखते जाते और नोट बैक भेज देते थे। रुपये के लिये चन्दा ने तिजोरी खोली। उस का कलेजा धडक रहा था, जैसे वह अपने ही घर मे चोरी कर रही थी। तिजोरी

से नया वह सदा पति की आज्ञा से उन के हाथ मे देने के लिये ही निकालती थी। आज स्वय अपनी इच्छा से तिजोरी खोली थी। सकोच और भय से हृदय धडकने पर भी दूसरा उपाय न था। कुछ नोट और रुपये मिला सवा तीन सौ थे। सभी रुपया चन्दा ने अपने वडे वटुए में भर लिया।

खन्ना को राज के यहाँ पहुँचाने का निश्चय करके खन्दा सोच रही थी, तीनो वच्चो को भजन के पास छोड कर जाना पडेगा, पर जो भी हो ! दिल घवरा रहा था, लहू ओर आसुओ के घूंट भर कर वह उसे कडा किये थी। वह मन को समझा रही थी, जल्द ही लौट आयेगी, दो ही रात की वात है। यदि ये मेरे लौटने से पहले न आ जायँ तो मै आकर जैसा भी होगा, देख लूँगी और पहिले ही आ गये तो भगवान की इच्छा। इतना तो वे भी समझेंगे कैसी हालत मे जा रही हूँ। यो उन्हो ने कर क्या नही लिया। घर से निकाल देगे, गङ्गा तो है ही।

पति का भय और वच्चो की ममता दोनो ही चदा को दवा रहे थे। वह दोनो की ओर से आँख मूँद कर दोनो की ही वात न सोचने का निश्चय किये थी। वे जो कहेगे देखा जायगा। वच्चो के लिये दो रात कौन वडी वात है। भजन से हिले है, वह सम्भाल लेगा। खन्ना को राज के हाथ सौप कर उसी समय लौट पडूँगी। ग्यारह तारीख को सुवह ही यहाँ आ जाऊँगी।

चदा के घर से चलते समय शशि चिपट गई और रोने लगी। चन्दा का दिल उसे पीछे छोडने को न हुआ। सोचा इसे ले चलूँ, है भी वहुत छोटी। उदास होकर वीमार हो जाय तो ?

खन्ना के आराम के लिये चन्दा ने लखनऊ से फर्स्ट-क्लास के टिकट खरीद लिये। स्टेशन पर उसे डोली में ले जा कर गाडी मे लिटा दिया। दूसरे वर्थ पर शशि के लिये विस्तर था। शशि उत्साह से खेलती रही और फिर सो गई। खन्ना ऊँघता-जागता, कभी दो-चार वात करता, सफर काट रहा था। चौकसी और चिन्ता के कारण नीद चन्दा से कोसो दूर थी। वह दवाई की खूराक और दूध के चम्मच लिये तत्पर थी।

मोटर पर विस्तर लगाकर खन्ना को यत्न से सम्भाल कर वह वैठी। मोटर की तेजी और पहाड के चक्करो से वीमार की तवीयत परेशान होने लगी। वार-वार गाडी खडी करवानी पड़ी। खन्ना की तवीयत सम्भलने पर गाडी चलती परन्तु कुछ ही देर वाद गाड़ी फिर रुकवानी पडती। गाडी को धीमी चाल से चलाया गया। चन्दा ओर खन्ना ने हिसाव लगाया था कि वे

लोग एक वजे रानीखेत पहुँच जायँगे परन्तु सध्या चार बजे से पहले पहुँच न सके।

रानीखेत पहुँचने पर मालूम हुआ कि ग्रामोद्योग-आश्रम छ. मील दूर 'रगोडा' की पहाड़ी पर है। चन्दा घबरा गई परन्तु घबराहट के सामने सर झुकाने से उसने इनकार कर दिया। रात भर रेल के सफर और लगभग पचास मील पहाडी रास्ते पर मोटर के सफर के पश्चात जर्जर शरीर खन्ना को विश्राम के स्थान पर पहुँचाना आवश्यक था। चदा स्वय क्लान्त थी, थकान से बेहाल थी परन्तु खन्ना को ठिकाने पहुँचाना ही था। मजिल पर पहुँचे बिना खन्ना के पीडा से कराहते शरीर को आराम कैसे मिलता ? सफर की थकान से उस का शरीर ज्वर से तप रहा था।

यात्राओ के अनुभव से हीन और स्थान से अपरिचित चन्दा को ग्रामोद्योग आश्रम तक खन्ना को पहुचाने के लिये डाण्डी ढूँढने मे काफी समय लग गया। बहुत ढूँढने पर भी एक हो डाण्डी मिल सकी। स्वय उस के लिये कोई सवारी न मिली। जीवन मे पहली वार वह वीहड पहाड मे पैदल चली। शशि को खन्ना के पैताने डाण्डी पर बिठा दिया। वीहड चढाई के छ मील समाप्त होने मे न आते थे। चन्दा के चल न पाने के कारण कुलियो को डाण्डी बार-बार रोकनी पडती। सहारे के लिये चन्दा एक कुली से लाठी लेकर चलने लगी। सूर्य की किरणे ऊँचे पहाडो पर खडी वनराशि के पीछे शीघ्र ही विलीन हो गईं। अँधेरे के कारण भय और घबराहट और भी अधिक हो रही थी। जीवन मे पहली वार बिना किसी पुरुष रक्षक के वह घर से निकली। उस के साथ पुरुष था परन्तु स्वय ही मरणोन्मुख और गोद की बच्ची जो भय से काँप कर उस के शरीर से पृथक न होना चाहती थी। छ अपरिचित पहाडी कुलियो को साथ लिये वह सध्या के अँधेरे मे, वीहड पहाडो और घने वन मे चली जा रही थी जहाँ कोई भय कल्पनातीत न था।

चन्दा खन्ना को भय से बचाने के लिये प्राणो की बाजी लगा कर अपने आप को प्रत्येक पद पर भय के मुख मे झोकती जा रही थी। राह वह जानती न थी। उजड्ड अपरिचित कुली पचमी के चाँद के क्षीण प्रकाश मे राह टटोलते हुये उसे लिये जा रहे थे। पहाड की ठण्डी हवा शरीर मे बिधने लगी थी। वायु की साय-साय, वृक्षो के मर-मर और कुलियो के हाँफने के शब्द को सुनती वह राह समाप्त होने की प्रतीक्षा कर रही थी। सब कुछ भुला कर केवल एक ध्यान था कि खन्ना किसो प्रकार रक्षा और शरण पा सके।

चंदा निरंतर आँखें फाड-फाड कर खन्ना की डाण्डी की ओर देखती हुई, होंठ दबाये दम साधे चलती जा रही थी। जब रहा न जाता तो कातर स्वर मे पूछ बैठती—"कितनी दूर है ?" पहले उत्तर मिला, "अभी बोत है"

कई बार सुना—"अभी आधा है।"

फिर सुना—"थोडी दूर है।"

"बस आगया।" पेडो के बीच से सहसा प्रकाश दिखाई दिया। फिर एक मकान की आकृति। चन्दा को अपने ही घर पहुँच जाने की सान्त्वना अनुभव हुई। सफलता के सतोप से डाण्डी अहाते के बाहर रुकवा कर चन्दा राज को पुकारने आगे बढ गई।

× × ×

बद्री बाबू की सार्वजनिक सेवा और त्याग पर देहली को गर्व था। देहली के उस सुपूत के सम्मान मे देश का सिर झुकता था। स्वय बद्री बाबू के पिता लाला रघुनाथदास और माँ के लिये पुत्र का यह सम्मान हृदय का शूल था। इस सम्मान के मूल्य मे उनका होनहार बेटा छिन गया था। उनका वंश निर्मूल होने जा रहा था। पिता-प्रपितामह से चली आई लक्ष्मी, जिसकी सेवा और रक्षा मे जीवन देकर उन के दादा और पिता ने उसे बढाया था, जिसकी वृद्धि के लिये उनका सम्पूर्ण जीवन अर्पण हो गया था वही लक्ष्मी अब अनाथ होने जा रही थी, उन्हे श्राद्ध की अंजली देने वाला तक कोई न था।

बद्री बाबू के सब से बडे भाई तीन कन्याये, दूसरो के वंश की बढती के लिये पैदा करके अपने वंश के लिये उत्तराधिकारी प्रस्तुत करने की आशा छोड बैठे थे। मँझले भाई पिता को विधवा बहू का दुखडा देखने के लिये छोड कर चले गये थे। बद्री बाबू पूर्ण यौवन प्राप्त होते ही विधुर हो, सन्यास की वृत्ति बना बैठे थे। बद्री बाबू का घर छोड कर सेवाश्रम मे जा रहना उन के लिये असह्य आघात था। इस के बाद जब बद्री बाबू ने 'बावन-घर' की बिरादरी से बाहर, पिता की राय की चिन्ता किये बिना राज से अदालती-विवाह कर सन्यासी जीवन बिताने के लिये पहाडो की शरण ले ली, तो उन के पिता शरीर मे प्राण रहते भी निष्प्राण से हो गये।

उत्तराधिकारी के बिना वंश की दीपशिखा बुझते देख कर दुस्साहस पर कमर बाँध बैठे। अपने जवान पुत्र से निराश होकर उन्हो ने अधेड उम्र के बेटे, केदार बाबू के लिये एक और बहू ढूंढ निकाली। भाग्य की विडम्बना ने

उनका यह प्रयत्न भी विफल कर दिया। देहली की बिरादरी चालीस पार कर चुके केदार बाबू से अठारह बरस की कुमारी के विवाह के विरोध मे खडी हो गई। केदार बाबू के पाँव डगमगा गये। विवाह न हो सका। लाला रघुनाथदास अपनी आँखो अपने वश निर्मूल होने का दुखान्त नाटक देख रहे थे।

कुल की रीति के विरुद्ध, बिरादरी को परिधि के बाहर बद्री से व्याह कर लेने वाली राज के प्रति बद्री के पिता को वितृष्णा की सीमा न थी। केदार के विवाह के प्रति बिरादरी के विरोध और बद्री के बिरादरी के बाहर विवाह पर बिरादरी का चुप रह जाना, उन्हे अन्याय जान पडा। बद्री बाबू के प्रति समाज के इस पक्षपात को वे चुप-चाप सह गये। न कभी उन्होंने उनका नाम लिया और न किसी ने राज के कभी 'लोहे वालो' की ड्योढी लाघकर हवेली मे कदम रखने की कल्पना की। वह विवाह बद्री बाबू का घर से खो जाना था।

लाला रघुनाथदास के कानो तक समाचार पहुँचा कि भगवान ने बद्री बाबू और राज के विवाह से प्रसन्न होकर रानीखेत के ग्रामोद्योग आश्रम मे उन्हे पुत्र रूप मे आशीर्वाद दिया है। वे समाज के अन्याय से खिन्न हुए थे परन्तु भगवान के अन्याय के सम्मुख परास्त हो गये। समाचार के प्रति उपेक्षा दिखा कर भी उन्हो ने मन मे कहा—लडका चाहे रानीखेत क्या, काले कोसो दूर लका मे पैदा हो, है तो हमारा ही पोता। घर मे चर्चा हुआ। अनिच्छा होने पर भी कर्तव्य की अवहेलना नही की जा सकती थी। लालाजी के भय से बद्री-बाबू की माँ के कुछ न कहने पर भी समाचार फैलने पर बधाई देने वाली आ बैठी। उनका सत्कार कैसे न किया जाता। लडका चाहे जहाँ पैदा हुआ, पोता था, और घर मे अकेला लडका।

बद्री बाबू की माँ पहाड जाने के लिये छटपटाने लगी। अनाडी बहू जाने क्या करे, कैसे करे, उन के जाये बिना कैसे होगा? लाला रघुनाथदास कतई नही जाना चाहते थे लेकिन न कैसे जाते? जिम्मेवारी तो सब उनकी ही थी। ऐसी हालत मे माँ और बच्चे को इतनी दूर से लाया भी कैसे जा सकता था?

लाला रघुनाथदास ने क्रोध प्रकट किया—"बद्री मुँह जोर है। उससे कहने सुनने से कुछ लाभ नही, न हम उस से बोलेगे लेकिन लल्ला के बारे मे उसे कुछ मतलब नही।" पहाड की कडी सर्दी मे माँ और बच्चे को बनजारो की सी हालत मे रानीखेत मे कैसे रहने देते? राज के जिद्द करने पर उन्हो ने कहा, "अगर बहू का सिर फिर गया है तो हम बूढे तो बच्चे नही बन जायँगे रगोडा मे जगह घेर कर ढग से एक बगला बनाया गया। राज उसी मे रहने

लगी। बद्रीबाबू की माँ को विश्वास था कि उन के लडके के बद्रीधाम की राह मे आ टिकने से ही घर मे पुत्र न होने का श्राप दूर हुआ है। बद्री के प्रासाद पोते की ममता मे वे देहली छोडकर बद्रीनारायण भगवान के जितना समीप सम्भव था, उनके चरणो मे आबसी।

लडके की आदत थी कि दिन भर नौकर और नौकरानियो की गोद मे खेलते रहने के बाद जहाँ रात हुई, सोने का समय आया, वह माँ की गोद न छोडता था। प्रसाद को सुलाना राज के लिये समस्या हो जाती थी। वह सोता तो माँ के अग मे चिपट कर। उसके शरीर को हाथ से पकडे रहता। प्रासाद के आँखे झपक लेने और उसकी नीद गहरी हो जाने तक राज को घण्टे-आधे घटे के लिये उसके साथ लेटे रहना पडता। नीद कच्ची रहते राज के समीप से उठ जाने को शका होते ही वह चीख उठता। तब राज को सास के कितने उपालम्भ सुनने पडते।

राज प्रसाद के सो जाने की प्रतीक्षा मे थी कि उठकर खाना खा ले और चौका उठे। घर भर की सम्भाल करने के बाद उसके पलग से पीठ लगाने की घडी आये। प्रासाद की खिलावी (आया) सूबी ने धीमे से आकर खबर दी—"कोई मेहमान आये है, एक बीबी जी है।"

राज विस्मित थी—रात के नौ बजे मेहमान? कैसी बीबी जी? प्रासाद के नीचे से साडी का आँचल सतर्कता से खीच कर वह उठी और बाहर के कमरे में गई। राज मेहमान महिला को पहचानने के लिये ध्यान से देखती हुई अपनी स्मृति कुरेद रही थी।

मेहमान ने पहचाने जाने की प्रतीक्षा न कर पुकार लिया—"पहचाना नही, राज?"

"बहिनजी!" राज लपक कर चन्दा के गले लिपट गई। आनन्द के अतिरेक से मन चाहा कि जोर से रो दे, चिल्लाये पर कुछ भी न कर सकी। चन्दा ने दोनो बाँहो से बहिन को आलिगन मे ले लिया। दोनो बहने कई क्षण उसी अवस्था मे रही।

स्त्री मेहमान के आने का समाचार सुन कर कौतूहल न रोक सकने के कारण राज की सास पीछे-पीछे चली आ रही थी। सास की उपस्थिति मे बचपन न दिखाने के सकोच मे राज सम्भल कर खडी हो गई। समीप खडी स्तब्ध शशि की ओर दृष्टि जाने पर गोद मे उठाकर बच्ची को हृदय से चिपका लिया। बहन के प्रति उमडे उदगार को वह उसकी सन्तान पर उड़ेलने लगी।

"यहाँ क्यो खडी हो ? आओ, अन्दर चलो !" शशि को गोद मे उठाये राज चन्दा के उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना उसे भीतर खीच ले गई। आल्हाद के उस प्रवाह का भाग लेने के लिये राज की सास ने भी कहा—"हाँ, अन्दर चल के बैठो न।" वह भी बहनो के सग भीतर चली आई।

"जीजा जी कहाँ है ?" राज ने पूछा।

"वे नही आये ?"

"क्या अकेली आई हो, इस समय ? हाय मै मर गई !" राज ने आँखें फैला कर गाल पर उँगली रख ली।

"नही एक है साथ" चन्दा ने राज की सास के कानो तक न पहुच सकने लायक अस्पष्ट स्वर मे कहा, "हाँ, बच्चा कहा है, पहले उसे तो देखूँ !"

चेहरे पर गर्व और स्नेह का उन्माद लिये राज चन्दा को प्रसाद के पलँग के पास ले गई। प्रसाद की दादी को चिन्ता थी कि अल्हड लडकियाँ कही लल्ला की नीद न खराब कर दे, उसकी नीद यो भी कच्ची है। आहट न करने के लिये चेतावनी देती हुई वह साथ-साथ चली।

चन्दा ने पलग पर झुक कर प्रसाद को चूमा, उस के शरीर पर हाथ फेरा, शशि से प्यार कराया। पलग के समीप खडी होकर दोनो बहने लडके के सम्बन्ध मे बात कर रही थी और दादी उस बातचीत मे आवश्यक सशोधन कर रही थी।

बच्चे के पलग के समीप से स्वय चल देना या दूसरा प्रसग छेड देना मातृ-आचार के विरुद्ध होता। उस सब बातचीत मे उत्साह दिखाते हुए चन्दा का हृदय उस प्रसग के सम्बन्ध मे बातचीत करने के लिये बेचैन हो रहा था। जिस के लिये घरबार, लोकलाज, पति के अक्षय क्रोध और अपनी जान तक की बाजी लगा कर दिन और रात का सफर तय कर, वह यहा तक शरण माँगने पहुची थी। चन्दा सब कुछ भूल कर सब से पहले वही बात कहती परन्तु राज की सास की उपस्थिति से लाचार थी ? उस का हृदय उबल-उबल कर रह जाता था। बाहर पेडो के नीचे, हड्डियो को छेदती हवा मे, बुखार से जलता, क्षत-विक्षत शरीर लिये, खन्ना सर्दी मे पडा था। कैसे वह उसे इस घर की छत के नीचे, विश्राम मे उठा लाये ? जैसे चदा को अपना शरीर घर के भीतर आ जाने पर भी पीडा से धडकता हृदय उसे बाहर ही छोड आना पडा हो और उसे भीतर ले आने की आज्ञा के लिये प्रार्थना का शब्द भी जिह्वा पर नही ला सकती हो !

राज की सास अपनी कौतूहलपूर्ण निर्बल आँखें और कान निरंतर चंदा के मुख से निकलने वाले शब्दों की ओर लगाये थी। चन्दा का हृदय उबल रहा था, आवेग और उन्मेष के बुलबुले हृदय की तह से उठ-उठ कर फूट रहे थे परन्तु उनका शब्द, वह अपने हृदय मे औचित्य की तलवार भोंक कर दबाये थी। उस के होंठो पर मुस्कराहट थी, हृदय मे क्रन्दन और चीत्कार।

मिनिट पर मिनिट गुजरते जा रहे थे परन्तु राज की सास चिपकी हुई थी। सास चंदा को गरम पानी से हाथ-पाँव धो लेने के लिये, धोती बदलने के लिये कह रही थी। खाना खा लेने के लिये आग्रह कर रही थी ताकि चौका उठ पाये। शशि को दूध पिला देने के लिये कह रही थी। इस बुढ़िया को व्यर्थ इतनी चिन्ता क्यों है? यहाँ से जाती क्यों नहीं! यह हटती क्यों नहीं? बाहर उस बेचारे का क्या हो रहा होगा? यह बुढ़िया सिर पर ही खड़ी है। आखिर क्यों पीछे पड़ी है? चन्दा छटपटा रही थी कि धक्का दे कर बुढ़िया को दूर कर दे परन्तु उसे स्नेह और भद्रता से मुस्कराना पड रहा था। व्यर्थ मे 'जी, जी नहीं, नहीं जी।' करना पड रहा था और भीतर कलेजे पर छुरियाँ चल रही थी।

राज इसी बीच मे दो बार पूछ चुकी थी—"तुम्हारा असबाब?... साथ के आदमी?"

चन्दा हृदय मे दाँत गडा कर अनसुना कर गई। मन कह रहा था, हाय इस भयंकर सर्दी मे खन्ना को बाहर आधी रात गुजर गई, उस के बुखार का क्या हाल होगा, उस के जख्म जकड गये होंगे? पर राज की सास के सामने कैसे बात करे? राज की सास ने जैसे लडकियों के अल्हड़पन से ऊब कर ऊँचे स्वर मे कहा—"तो बातें, तो सारी रात होती रहेंगी, अब जाकर हाथ-पाँव धुला कर कपडे तो बदलवा दे पेट मे अन्न का दाना तो जाये।"

बाढ के वेग मे बहती चन्दा ने त्राण के लिये सामने सहारा देख कर तुरन्त उस पर हाथ रख दिया। राज के कन्धे पर हाथ रख कर उसने कहा—"हाँ चल, कपडे बदल डालूँ।"

राज की सास को पीछे छोड दूसरे कमरे मे जाते ही चन्दा गम्भीर स्वर मे बोली—"राज, जानती है मै इस समय किसलिये आई हूँ? भीख माँगने।" चन्दा के स्वर और मुद्रा से राज के नेत्र विस्मय, आशंका और प्रश्न के भाव मे खुले रह गये। वह कुछ कह न सकी।

"जानती है मेरे साथ कौन है, किस के लिये तेरे घर मे शरण माँगने

आई हूँ ''''?" चन्दा के स्वर मे कम्पन था, वह बात कह न पायी ।

राज का विस्मय और आशका से भरा मौन कह रहा था कि वह कुछ समझी नही ?

स्वय चदा की जिह्वा पर शब्द न आ रहे थे । कह सकने के प्रयत्न मे उसे पसीना आ रहा था—"तू कल्पना नही कर सकती । वह आदमी, जिस ने तेरे सुख के लिये सर्वस्व त्याग दिया, भिखारी बन गया, तेरे दरवाजे पडा है, मौत के मुँह मे है ।"

राज का विस्मय और आशका भय मे परिवर्तित हो कर वह सिहर उठी—"क्या बहन जी ?"

"डाक्टर खन्ना मरे नही थे, वही बाहर है ?" साहस कर चन्दा ने कह डाला ।

"क्या ?" राज का सिर घूम गया ।

राज को लडखडाते देख कर चन्दा ने सहारा देकर फर्श पर बैठा दिया । राज की गर्दन झुक रही थी । उसे थामे सामने बैठ कर चन्दा बोली—"वे मरे नही थे । तेरे व्याह की भी उन्हे खबर न थी । पठान उन्हे चुरा ले गये थे । वहाँ से भाग कर विलायत चले गये । लौट कर तुझ से मिलने के लिये आ रहे थे । तेरी आत्महत्या और फिर विवाह की बात सुनी तो कहने लगे कि उसका जीवन बरबाद न करूँगा । भेस बदले भिखारियो की तरह कानपुर मे पडे रहे । अखबार मे तूने कम्युनिस्ट डाक्टर बी० डी० वर्मा का नाम सुना होगा, वही है । अब जख्मी और बीमार होकर तेरे दरवाजे पडे है, शरण के लिये ' ।" चदा एक साँस मे कह गई । चन्दा ने देखा, बेहोश राज उसकी बाहो से गिरी जा रही थी ।

उस असहाय अवस्था मे चन्दा का मन हुआ कि अपना सिर पीट कर रो दे । राज बेहोश हो गई । खन्ना बाहर मरणान्तक पीडा से छटपटा रहा होगा । क्यो वह उसे यहाँ लाई ?'' कुली कितनी ही बार पुकार चुके थे कि उन्हे भाडा और छुट्टी मिले । राज के नौकर भीतर खबर देते और चन्दा से—जरा ठहरो ' । उत्तर पाकर विस्मित होकर लौट जाते ।

सास पूछ रही थी—"ये साथ कौन है ?" चन्दा क्या कहे ? अपना हृदय चीर कर खन्ना को उस मे रख ले'' ? मर जाय ? प्रत्येक क्षण भय लग रहा था कि बुढिया फिर न आ जाय ? राज को बेहोश देख कर क्या कहेगी ?

बुढिया खाँसती हुई फिर चली आ रही थी—"अरे तो ये बातचीत फिर

कर लेना भाई। खाने को तो हो जाय ? अरे कोई सुनता भी है ? बुढिया ने कमरे के दरवाजे पर आकर दोहराया, "अरे मैं कह रही हूँ · ·· ।"

चदा ने अपराधी की भाँति सकोच से कहा—"यह तो बेहोश·······"

"हो गई न ?" फर्श पर पडी राज की ओर देखने के लिये झुक कर बुढिया ने कहा। जैसे उन्हे इस बात की आशका बनी ही थी—"इसे यह दौरा हो ही जाता है ? मैं तो समझाते हार गई कि दवाई खा, पर मेरी सुने भी ? ज़रा सीधे लिटा कर इसकी नाक तो पकड़ ले मेरी बिटिया ! अभी ठीक हो जायगी।"

चन्दा ने बुढिया का बताया उपचार किया। सास रुकने की पीडा से राज कुछ ही क्षण मे सचेत हो बैठ गई। चन्दा का मन भय से काँप रहा था, जाने क्या बक देगी ? परन्तु राज दीर्घ श्वास लेकर चुप रह गई। क्षण भर मे परिस्थिति याद कर उस ने निर्बल स्वर मे कहा—"मा जी, मैं इन्हे धोती बदला कर अभी लाती हूँ। तुम थाली परसवा दो ?" राज के परिस्थिति सम्भाल लेने पर चन्दा की जान मे जान आई।

सास चली गई। राज को चुप देख कर चन्दा ने पुकारा—"राज ?"

दृष्टि झुकाये कुछ देर सोच राज ने कहा—"बहिन क्षमा करना, मैं क्या कर सकती हूँ। मैं बडी पापिन हूँ, अपराधी हूँ, पर अब कुछ नही कर सकती। घर मे नौकर-चाकर है, माँ जी है, मैं क्या कर सकती हूँ ? वे जेल में है, मैं क्या कर सकती हूँ ! कहो, अपने पाप के लिये मैं जान दे दूँ पर प्रसाद के लिये कलक कैसे लगा लूँ ? एक के जीते जी दूसरा बाप कैसे लाद दूँ ? उस बेचारे का क्या कसूर ? अपने पाप के लिये उसकी ज़िन्दगी कैसे बरबाद कर दूँ ? मैं तो तभी मर रही थी, किसी ने मरने भी न दिया। अब कहाँ मुँह दिखाऊँगी।" लम्बी साँस लेकर राज चुप हो गई।

चन्दा असहाय होकर अवाक् रह गई। मन चाहता था कि एक क्षण भी वहाँ न ठहरे, उठकर चली जाय परन्तु शरीर निशक्त हो रहा था। साहस कर उस ने एक बार पूछा—"तो क्या आज रात भर नही रख सकती ?"

"मैं कुछ नहीं कह सकती। मैं किस-किस को क्या-क्या कहूँगी ? तुम मुझ से पूछ तो लेती !" राज ने कातर स्वर मे कहा।

चन्दा उठ खडी हुई। "शशि कहाँ है ?" उस ने पूछा, "चलती हूँ, देखा जायगा। भगवान मालिक है !"

चन्दा चल दी। साडी का छोर पीछे खिचने से उस ने घूम कर देखा।

राज उसे जाने नहीं देना चाहती। "बहिन क्या कर रही हो ?" राज ने गिडगिडा कर पूछा।

"कुछ नही, जा रही हूँ। तुम्हारे यहाँ जगह नही है।"

"इस समय न जाओ। इस अधेरे मे, इस सर्दी मे बीमार और गोद की बच्ची को लेकर। इस कमरे मे पलग गिरवाये देती हूँ। सुबह चली जाना।"

चन्दा खडी-खड़ी सोचती रही, 'अच्छा' बेबसी से उस ने स्वीकार कर लिया। राज ने भीतर जाकर एक खाट और बिस्तर भिजवा दिया। डाण्डी अहाते के बाहर रुक गई थी। कुलियो ने अपनी समझ से साथ के कपडे बीमार को सर्दी से बचाने के लिये ओढा दिये थे। डाण्डी भीतर लाई गई। कुलियो ने मिल कर बीमार को उठाकर भीतर पलग पर लिटा दिया। खन्ना का शरीर ज्वर से जल रहा था। वह गम्भीर और चुप था। उसकी दृष्टि निरतर चन्दा के मुख की ओर थी। वह मार्ग की थकान और चिन्ता से ही परेशान न थी खन्ना और भी कुछ कारण भाप रहा था। राज सामने नही आई। वह सोच रहा था, यहाँ क्यो आगया ?

खन्ना को लिटा कर चन्दा बाहर गई। कुलियो से उस ने डाण्डी छोड जाने को कहा। तिगुनी मजदूरी देकर उसने प्रार्थना की कि सुबह ही हम लोग लौट चलेगे तुम आकर ले जाना। राज की सास की इच्छानुसार चन्दा चौके मे भोजन न कर सकी। न रात मे उन के समीप बैठ कुछ बात कर सकी। सास सोचती रही, जाने यह कौन बीमार उस के साथ है, जिसे लिये वह अलग कमरे मे पडी है ? राज को भी तब से क्या हो गया ? भीतर जाकर लेटी तो फिर दौरा आ गया। वह अलग कमरे मे जा लेटी। नौकर परेशान थे, मामला क्या है ? राज की सास इस सब चक्रव्यूह को कुछ न समझ कर बुडबुडाती हुई पोते के पलग पर जा लेटी। उन के मन मे बार-बार शका हो रही थी' इस जमाने के रग जाने कैसे है ?

खन्ना को पलग पर लिटा-ओढा कर चन्दा उस के सिर पर हाथ रखे सिरहाने बैठी रही। उस की आँखो मे बार-बार आँसू छलक आते थे। खन्ना की दृष्टि बचाकर वह उन्हे पोछ लेती। किसी भी लक्षण से वह प्रकट न होने देना चाहती थी कि वह रो रही ह, दुखी है, निराश है।

खन्ना बार-बार पूछता—"क्या बात है ? बताती क्यो नही ?"

"कुछ खास नही। हमने पहले खबर नही दी। यहाँ प्रबन्ध नही हो सकता। हम सुबह ही चल देगे। किसी और जगह चले जायँगे। तुम घबराओ नही।

प्रबन्ध हो जायगा। मैं तुम्हारे साथ हूँ। तुम भरोसा करो !" चन्दा के उत्तर से समाधान न होने पर भी खन्ना बोल न पाने के कारण चुप था। बोल न पाने पर मन बेचैन था—मैं राज के लिये शत्रु हो गया ? वह दीवार की ओट पडी है। मुझे देखने भी नही आ सकती ? वह तो मेरे प्रेम में प्राण न्योछावर कर रही थी ! आज क्या हो गया ? ....हाय रे स्त्री ! तेरा प्रेम भी मजदूरी का है, गुलामी का है परन्तु इस निराशा मे भी सिरहाने बैठी चन्दा का भरोसा था कि वह अनाथ नही है। स्नेह की गोद में ही तो वह लेटा है। उस स्नेह को पुकारने के लिये उस के मुख से निकल जाता—'चाँद !'

चन्दा उस के चेहरे पर झुक कर उस के सीने पर हाथ रख कर उसकी पीडा को आश्वासन देने के लिये विह्वल स्वर मे उत्तर देती—"हाँ मेरे लाल ! भैया, बेटा.. ! घबराओ नही। देखो, मैं तुम्हारे साथ हूँ !"

सफर की थकान और पहाडी टीलो पर छ मील पैदल चलने से चन्दा का शरीर चूर-चूर हो रहा था। अंग-अग मे पीडा फूट रही थी परन्तु उस के ध्यान मे बसी थी खन्ना की पीड़ा और चिन्ता, वह उसे कहाँ ले जाय ?

खन्ना के सो जाने की प्रतीक्षा मे रात चदा की आँखो में बीत गई। बन्द खिडकी के काँच से काली वनराशि के ऊपर आकाश मे पौ फटने के चिन्ह दिखाई देने लगे। सूर्य की किरणे आकाश-व्यापी, सुनहरी मोरपखो की भाँति फैल गई। धूप मे हरी सुनहली वनराशि झलमलाने लगी। चन्दा खन्ना के सिरहाने बैठी थी, उसे चिन्ता हो रही थी कि कुली नही आये।

राज की रात करवटे बदलते गुजरी। सम्पूर्ण जीवन एक दुखमय घटना की भाँति आँखो के सामने बार-बार नाच जाता था। अब चैन के क्षण आये तो यह मुसीबत !... उस के प्रसाद पर यह आघात ! उस पर अपने शरीर की आड देकर, हृदय का रक्त बहाकर भी वह अपने बच्चे की रक्षा करेगी। चाहे जो हो, उसका जीवन वह बरबाद न होने देगी।

सूबी जगाने आई। राज ने कहा—"अभी नही उठूँगी, सिर दरद कर रहा है।"

सास के आकर हल्ला करने हर वह उठी और मुँह हाथ धोकर फिर लेट रही। सूबी से उस ने कहला दिया कि वह नही उठ सकती, उस का जी अच्छा नहीं है।

तडके सुबह आने का वायदा कर कुली ग्यारह बजे आये। चदा ने खन्ना को फिर डाण्डी मे लिटाया। भीतर जाकर राज से उस ने कहा—"अच्छा जाती हूँ, क्षमा करना ?" उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना वह चल दी। थकान

की पीड़ा से जर्जर और पिछली रात की ठोकरो से घायल उस के पैरो के लिये चलना सम्भव न था, फिर भी वह चल दी। उसे चलना ही था, ठहरने का स्थान न था, उपाय न था।

घर के नौकर-चाकर और सास इस रहस्य से परेशान थे। राज सब की दृष्टि और हाव-भाव मे सन्देह देख रही थी। सन्देह, जो उसे निगल जाना चाहता था। सब प्रश्नो का एक ही उत्तर उस के पास था—"मै क्या जानू ?"

चन्दा घृणा और निराशा के आवेश और उत्तेजना मे राज के घर से चल दी थी। पाँव उठते न थे। शरीर मे शक्ति न थी। वह अपने आप को घसीटे लिये चले जा रही थी। वह बार-बार बैठ जाती। उस के पीछे रह जाने कारण डाण्डी के कुलियो को बार-बार डाण्डी नीचे रख कर रुक जाना पडता। खन्ना की पुकार सुन कर चन्दा उस की डाण्डी के समीप आकर अपनी अधीरता छिपाये पूछती—"कहो; घबराओ मत !"

"चाँद, अच्छी मुसीबत मे डाल दिया तुम्हे ?" कातर दृष्टि से उस की ओर देख कर खन्ना क्षमा सी माँगता।

"पागल ! क्या कहते हो ? घबराओ नही" मुस्कराहट का असफल प्रयत्न कर चन्दा आश्वासन देती। फर्लाग-फर्लांग पर चन्दा के ठहर जाने से कुली परेशान थे। इसी तरह वे लोग रानीखेत को लौट रहे थे। सफर की परेशानी मे शशि का चेहरा भी उतर गया था परन्तु नये स्थान और खेल-तमाशे के उत्साह मे वह प्रसन्न थी। खन्ना की डाण्डी के पैताने आदमियो के सिर चढ कर चलना नया और अद्भुत खेल था। वे लोग लौट रहे थे। शशि को चिन्ता न थी वे कहाँ जा रहे है, और क्यो ? चन्दा और खन्ना भी न जानते थे, कहाँ जाना होगा ? परन्तु उन के लिये यह जीवन-मरण का प्रश्न था।

× × ×

लकडी के महगे होने जाने और कानपुर मे मजदूरी के बढते निरख से राजाराम परेशान थे। उन्होने अपना नाम सरकारी ठेकेदारो मे दर्ज करवा लिया था। यदि कम निरख पर लकडी का प्रबन्ध कर सकते तो बक्सो के ठेके मे और बाद मे भी अच्छे मुनाफे की आशा हो सकती थी। हलद्वानी जाने का यही प्रयोजन था। हलद्वानी मे लकडी मद्दी थी परन्तु उसे कानपुर पहुँचाने मे मालगाडी की कठिनाई थी। राजाराम को आशा थी कि सात-आठ दिन इस झंझट मे लगेगे ही।

हलद्वानी में चोखेमाह के यहाँ बेकार खड़ी आरा मिल देख कर राजाराम की व्यापारी सूझ जाग उठी। लकड़ी के लट्ठे कानपुर ढोने के बजाय लकड़ी कट और चिर कर पहुँचे, और क्यों न लकड़ी के बड़े-बड़े तख्तों के बजाय आरा मिल पर सन्दूक बना कर ही भेज दिये जायँ? सेना के दफ्तर के नाम बिल्टी करवाने पर रेल वाले झख मार कर गाड़ी देंगे। राजाराम ने चोखेमाह से बने बनाये बक्से कानपुर तक बिल्टी करा देने का और बैंक को हुण्डी में रेल रसीद पर अदायगी कर देने का सौदा कर लिया। इस सौदे में राजाराम बढ़ई लगा कर बक्से बनवाने के झंझट से बच गये और फी बक्सा डेढ़ पैसा अधिक बचत हो गई। सोचा, अपने कारीगरों को किसी दूसरे काम में लगा देंगे।

राजाराम काम समाप्त कर तीसरे दिन संध्या की गाड़ी से ही लौट पड़े। छोटी लाइन की गाड़ी लखनऊ लेट पहुँची। वे पौने दस की डाक से चल कर ग्यारह बजे कानपुर आये। परेड पर से उन का टाँगा जा रहा था। अचानक पुकार सुनी—"महरोत्रा, महरोत्रा सुनना!"

डाक्टर शिवानन्द अपनी साइकिल से उतर कर बाँह उठाये पुकार रहे थे। टाँगा रुकवा कर राजाराम ने पूछा—"कहो, ज़रा बाहर गया था, हलद्वानी; अभी आ रहा हूँ।"

शिवानन्द ने राजाराम की बाँह थाम कर सड़क के एक किनारे खींच कर कान में गिला किया—"वाह यार, तुम बाहर चले गये और भाबी ने हमें मरवा दिया होता!"

"क्यों ·······क्या हुआ?"

"अरे कल सुबह ही खुद आकर बुला ले गईं। डाक्टर वर्मा था न कम्युनिस्ट, तुम्हारे यहाँ बहुत आता था; कहीं बुरी तरह पिट के आये थे हज़रत। उसी की पट्टी करवाने के लिये। हमने कहा हस्पताल में भरती हो जाओ। बोले, नहीं लखनऊ मेडिकल कालिज जायेंगे। आज सुबह पुलिस वर्मा को गिरफ्तार करने गई, पट्ठा फरार हो गया है। तुम्हारी कसम, यार समझ नहीं आता, कमबख्त बिस्तर से उठा कैसे होगा? कूल्हे पर जोड़ उतरा हुआ; दायाँ कन्धा उतरा हुआ, पसलियों पर चोट और चेहरा तो जैसे कीमा हो रहा था······ पट्ठा भाग गया। यार, भाबी को समझा देना, कहीं किसी से हमारा नाम-वाम न ले दे कि पट्टी बाँधी थी! भैया, और गवाही में रगड़े जायँ!"

राजाराम सोचने लगे, चार दिन के लिये बाहर गये थे इस बीच यह हो

गया। यह औरत घर बरबाद करने पर तुली है। जाने खन्ना को घर ले जाकर डाल लिया है। पुलिस आ जाय तो क्या हो ? परेट से परमट तक की राह उन्हे लखनऊ और कानपुर के अन्तर से अधिक जँच रही थी। टाँगे वाले को डाँट दिया—"क्या खिट्ट-खिट्ट लगाई है; चलता क्यो नही ? यो बारह आने से कम नही लेगे, चलने के नाम पर सरक रहे है।"

घर पहुँचे तो ड्योढी की साकल भीतर से लगी थी। दिन दोपहर यो साकल बन्द होने का मतलब ? असन्तोष से किवाड पीट कर पुकारा—"भजन ! भजन !"

नीद से लाल आँखे मलते और अपनी जुल्फे टोपी के भीतर सम्भालते हुये भजन ने किवाड खोले। राजाराम सीधे भीतर चले गये। देखा कमरे सब बाहर से बन्द और सुनसान।

"कहाँ गई है ?" राजाराम ने पूछा।

"बीबी जी बाहर गई है। कल आने को कह गई है। छोटी मुन्नी को ले गई है। कुसुम बीबी और भैया स्कूल गये है।" भजन ने उत्तर दिया।

पतलून की जेब मे हाथ डालते हुये राजाराम ने पूछा—"बाहर कहाँ ?"

शायद लखनऊ गई है। कह नही गई। कल सुबह आने को कह गई है, या परसो ?"

"हूँ" राजाराम ने कहा और सिर झुका कर आगन मे आगे-पीछे चहल-कदमी करने लगे।

भजन ने चाबी का गुच्छा दिखाया—"चाबी दे गई है, तिजोरी की चाबी भी है।"

तिजोरी की चाबी नौकर को दे जाने की बात से चौक कर राजाराम ने गुच्छा हाथ मे ले लिया। चाबी पहचान कर उन्होने कहा—"किवाड खोलो !"

भजन ने भीतर के कमरो की साँकल खोल दी।

राजाराम ने तिजोरी खोली। पहले उन की दृष्टि गहनो के छोटे बक्स की ओर गई। दस्तबन्द, चम्पाकली, सिगारपट्टी, घडी-चूडी सब चीजे मौजूद थी। रुपयो और नोटो वाले खाने मे देखा, सब खाली। दूसरे कागज-पत्र अपनी जगह पर थे। राजाराम को अनुमान से याद था कि तीन सौ से ऊपर रुपया था। सब गायब ! गई कहाँ ? जाने का मतलब क्या ? हम कुछ हुए ही नही ! ऐसी आजादी नही चलेगी। हम से पूछे बिना रुपया निकालने का मतलब क्या ? खुद डूबना-मरना था तो लडकी को ले जाने वाली कौन

होती है ?……… यह सब बदमाशी नही चलेगी ।

राजाराम ने तिजोरी बन्द कर गुच्छा जेब मे रखा । उतावली मे टाँगे वाले को दाम देना भूल गये थे । वह पुकार रहा था । भजन से कहा—"कह दो खडा रहे !" स्वयं वे पतलून की जेब में हाथ डाले खडे हुये सोचते रहे । भजन के लौटने पर उन्होंने कहा—"देखो, बच्चो को सम्भाल कर रखना । हम जा रहे है, चाहे शाम को आ जायँ, चाहे कल परसों ।"

ड्योढी से बाहर जाते-जाते फिर खयाल आया । लौट कर भजन को सम्बोधन कर कहा—"देखो, अगर बच्चे घबराने लगे तो पटकापुर पहुँचा देना । कह देना आगरे से तार आया था । बीबी जी, बाबू जी छोटी लडकी को लेकर गये हैं ।" ……समझे !"

राजाराम टाँगे पर जा बैठे । भजन के हाथ असबाब भीतर भेज कर उन्होने टाँगे को वापस लौटने का हुक्म दिया और हाथ का अगूठा दाँत मे दबा कर गूढ चिन्ता मे मग्न हो गये । वे अपना कार्यक्रम निश्चित कर चुके थे, अब कल्पना में उस का परिणाम देख रहे थे । चन्दा के अपने आप को स्वतन्त्र समझ कर पति पर आ सकने वाले सकट और अपमान की चिन्ता न करके अपने मित्र के साथ जहाँ इच्छा हुई चल देने पर उन्हे क्रोध था । वे सोच रहे थे कि उसे लौट कर आना पडेगा । इस उच्छृङ्खलता का फल भोगना पड़ेगा । यह स्वतन्त्रता देने का फल है ? उन के प्रेम का यह प्रतिफल है ? ' विश्वासघातिनी ! जब उस का चलन ऐसा है तो उन्हे ही क्या चिन्ता है ? कल तक हम सर्वस्व, प्राणाधार, हृदयेश्वर थे, अब खन्ना है ' ' कल और कोई ? जो पसन्द आ जाय । मन मे इच्छा हुई घृणा से थूक दें ? वह गई जहन्नुम मे परन्तु उन की लडकी को ले जाने वाली वह कौन ? ' ' न होगा बच्चो की देख-रेख के लिये किसी और को रख लेगे ।

राजाराम ने स्टेशन पर लौट कर देखा कि लखनऊ के लिये दो बजे की ट्रेन तैयार थी । वे लखनऊ मेडिकल कालिज मे जाकर पता लेना चाहते थे । मेडिकल कालिज मे पता लगा कि पिछले दिन से कोई व्यक्ति कधे और कूल्हे की हड्डी उतरे भरती नही हुआ ।

राजाराम का सन्देह चन्दा की नीयत के बारे में और बढा, राज ' ! उन्होंने भाप लिया । गाडी रात में पौने दस बजे चलकर सुबह दस बजे काठगोदाम पहुँचती थी । स्टेशन पर पहुँच कर उन्हो ने पता किया कि रात की एक्सप्रेस से बरेली जाकर वहाँ से पहली ट्रेन पकडकर काठगोदाम सुबह छ वजे पहुँच सकते हैं ।

राजाराम काठगोदाम में समय नष्ट न कर, खर्च की परवाह न कर टैक्सी ले रानीखेत के लिये चल दिये। रानीखेत में रगोडा के लिये सवारी ढूँढते समय उन्हो ने मेट से पूछा—"जानते हो रगोडा कहाँ है ?"

"काग्रेस वालो का आसरम ?" मेट ने उत्तर दिया, "हुजूर कल साम को तो एक मेम शाब और उस के बीमार शाब को डाण्डी मे भेजा है। ' .... दो डाण्डी माँगता था। शाम मे बडा मुस्किल एक मिला।"

राजाराम ने सतोष अनुभव किया कि उनका निशाना गलत नही हे। लखनऊ में चूक गये तो क्या ? अब कहाँ जायगी ?

"छोटी लडकी भी साथ थी ?" उन्हो ने पूछा।

"हाँ हुजूर, एक बाबा लोग साथ मे था" मेट ने हामी भरी।

राजाराम घोडा लेकर रगोड़ा के लिये चल दिये। घोडे पर सवार होकर भी उन्हे पैदल चलते घोडे वाले की चाल से चलना पड रहा था। वे खीझ उठते—"तो ऐसे हम पैदल नही चल सकते थे ? घोडे की चाल तेज करना उन के बस का न था। घोडा पैदल चलते अपने मालिक के इशारे पर चल रहा था और वह उसे अपने पैदल चलने की सामर्थ्य के अनुसार हाँक रहा था। राजाराम खीझ-खीझ कर घोडे को तेज करने के लिये एड लगाते जा रहे थे। उन के सम्मुख पेडो के झुर्मुट की ओट मे छिपी पगडण्डी पर कुछ लोग आते दिखाई दिये। जान पडा कि एक डाण्डी उतरती आ रही है। कुछ कदम आगे बढने पर डाण्डी पर एक बच्चा पेड की टहनी से खेलता हुआ दिखाई दिया।

राजाराम ने पहचाना, शशि थी। डाण्डी से चालीस-पचास कदम पीछे लाठी टेकती, असम भूमि पर उल्टे-सीधे लडखडाते कदमो से चन्दा चली आ रही थी बहुत जीर्ण, बिलकुल पीली, चेहरे पर निराशा और असफलता की श्यामलता लिये।

राजाराम अपनी अनुपस्थिति मे भाग आई चदा को देख कर क्रोध से भभक उठा। उन्हो ने घोडे को जोर से एड दी। डाण्डी के कुली पगडण्डी छोड कर एक ओर बच गये। घोडा अपनी ओर बढता आता देख कर चदा भी एक ओर बच रही थी। राजाराम भी उस के सामने आकर घोडे से कूद कर चिल्ला उठे—

"किस से पूछ के आई तुम ?"

चन्दा ने पति की आवाज पहचान कर पगडण्डी से आँखे उठा कर देखा।

राजाराम ने दो कदम आगे बढ और भी उग्र स्वर में पूछा—"किस से पूछ के आई तुम ?" आवेश मे उन का हाथ चल गया। चन्दा गाल पर ज़ोर से पड़े थप्पड से पत्थरो पर गिर पड़ी।

राजाराम क्रोध में जिह्वा पर नियत्रण न रख पाते थे परन्तु कभी स्त्री पर हाथ न उठाया था। क्रोध और आवेश मे हाथ चल जाने से सीमा टूट गई। जीवन भर अपने ऊपर सहा जब्र टूट गया। खूब ज़ोर मे दो लातें उन्हो ने भूमि पर गिर पडी चन्दा को मारी।

चन्दा अवाक् और निश्चल थी। "किस से पूछ कर आई तू ?" उन्होंने दो दफे दोहराया, "और चोरी करो ! खूब आजादी लो ! चार दिन की गैरहाजिरी में ही समझ लिया कि हम मर गये।"

डाण्डी की ओर से शशि के बहुत ज़ोर से चिल्ला कर रोने की आवाज सुन कर भी राजाराम ने उस ओर नही देखा। हृदय के आवेग से बेबस वे कहते जा रहे थे—"हमें बेवकूफ बना कर मज़े करो और आज़ादी लो। समझ लिया, हम मर गये, बदमाश !"

शशि के रोने की आवाज़ से विवश होकर उन्हे डाण्डी की ओर देखना पडा। कुली इस काण्ड से सहम कर थम गये थे। डाडी की ओर जाकर राजाराम ने हाकिमाना लहजे मे धमकाया—"डाण्डी उतारो।"

डाण्डी धरती पर उतार दी गई। शशि का चीत्कार जारी था। राजाराम ने लडकी को डाटा—"चुप रहो।"

बच्ची सहम गई। आँसू उसकी आँखो से टपक कर गालो पर बह रहे थे। उस का छोटा सा सीना हिचकी से उछल रहा था परन्तु रोने का स्वर मुख से निकल न पाता था। राजाराम फिर चन्दा की ओर लौटे। चन्दा पगडण्डी पर पड़ी थी, अवाक निश्चल आँखे मूँदे।

"उठो।" राजाराम ने गरज-गरज कर हुकुम दिया। चन्दा को निश्चल देख कर उन्होने अपनी आज्ञा और भी ऊँचे स्वर मे दोहराई। झुक कर उस की बाँह पकड़ कर झटके से खीचा। चदा मे चेतना की कोई चेष्टा प्रकट न हुई। उस का सीना श्वास की गति से स्पन्दन कर रहा था। राजाराम ने दुबारा चन्दा का हाथ झटक कर उठने की आज्ञा दी। उन्हे मानना पडा कि वह बेहोश हो गई थी।

राजाराम डाण्डी की ओर लौटे। खन्ना अपना विकृत चेहरा उठा कर अधखुली आँख से उनकी ओर देख रहा था। समीप आने पर उसने पूछा—

"यह क्या कर रहे हो ?"

राजाराम ने सुर्ख आँखो से डॉट दिया—"चुप ! बदमाश !"

"तुम मनुष्य हो या पशु ?" खन्ना का स्वर कॉप उठा।

आपे से बाहर हो हाथ का घूसा बाँध कर राजाराम ने स्वर की ऊँचाई की सीमा पर पहुँचा कर उत्तर दिया—"चुप धूर्त ! देहद्रोही ! बदमाश ! दूसरो के घर आग लगा कर तमाशा करने वाले बेशरम !" बड़ी कठिनता से वे अपने फडकते हुए घूँसे को खन्ना के सूजे हुए विकृत चेहरे पर आघात करने से रोक सके।

राजाराम ने चन्दा की ओर लौट कर उसे फिर बाँह से पकड़ कर झकझोरा।

चन्दा ने एक दीर्घ श्वास लेकर आँखे खोली।

"चलो वापिस ! जहाँ से आई हो ! मरना हो तो उसी घर मे चल कर मरो ! तुम्हारी ऐयाशी के लिये मै अपना मुह काला नही करूँगा। तुम्हारी चिता उसी घर मे बनेगी। और अब देखना आज़ादी !"

'बाँह खीची जाने पर भी चन्दा उठ न सकी। राजाराम को स्वीकार करना पडा कि वह उठ न सकेगी। कुछ क्षण वे खडे सोचते रहे। डाण्डी के समीप जाकर उन्होने कुलियो को हुक्म दिया—"डाण्डी खाली करो।"

कुलियो ने एक दूसरे की ओर देखा और शब्द के सकेत से चलने वाले यत्र की भाँति मिल कर खन्ना को डाण्डी से उठा कर पत्थरो के बीच समतल भूमि पर लिटा दिया। राजाराम के हुकुम से अवाक, निश्चल चन्दा को उठा कर डाण्डी मे लिटा दिया गया और उस के साथ शशि को उस के पुराने स्थान पर बैठाया गया। राजाराम के हुकुम से डाण्डी रानीखेत की ओर चल दी। राजाराम की आज्ञा के विपय मे एतराज की गुजाइश कुलियो के लिये न थी। जिस मेम साहब की आज्ञा से वे बीमार साहब को उठा कर चल रहे थे, उसी मेम साहब को जो पुरुष थप्पड और लात मार कर हुकुम दे सकता था, उस पुरुप की आज्ञा का उलघ्घन किस प्रकार किया जा सकता था ?

× × ×

पेड़ो के नीचे पत्थरो के ऊपर पडा खन्ना, अधखुली आँख से घोड़े पर चढ कर चले जाते राजाराम की ओर उनकी ओट मे द्रुतिगति से रानीखेत की ओर उतरती जाती डाण्डी की ओर देख रहा था। उमका हृदय निराशा और

अवसाद से मुह को आ रहा था, उस निर्जन स्थान में निस्सहाय, अकेले छोड़ दिये जाकर, भूखे-प्यासे और पीडा से छटपटा कर मर जाने के भय से या स्वामी के हाथो पिटकर तिरस्कृत, अपमानित, बेबस उठाकर ले जाई जाती हुई चदा की अवस्था देख कर···· ··· ···?

दोपहर के बाद सध्या और सध्या के बाद रात्रि। बीतते हुए समय के साथ क्षीण होती जाती खन्ना की जीवन-शक्ति, भूख, प्यास, पीडा और ज्वर का प्रबल उत्ताप। निर्बलता से उसका चैतन्य घट कर पीडा की अनुभूति कम होती जा रही थी।

षष्ठी के चन्द्रमा की हिमशीतल, क्षीण ज्योत्सना मे खन्ना की प्राण-शक्ति की ऊष्णता प्रत्येक श्वास के साथ क्षीण होती जा रही थी। चेतना और अनुभूति क्षीण होते जाने के कारण वह मूर्छा की निद्रा मे निश्चेष्ट और अचेत होता जा रहा था। उसका सिर पत्थरो पर टिका था परन्तु मन में विश्वास था कि चदा उसका सिर गोद मे लिये है, जीवन-सग्राम मे फिर लड़ने के लिये वह स्वास्थ्य लाभ कर रहा है ·· ··

खन्ना बडबडा रहा था—"चाँद, मैं देशद्रोही नही' ' ··

"चाँद उन से कहना···· ·

"हा, साहस से ' ' '

